

दानशील - साहित्यरसिक - संस्कृतिप्रिय
ख० बाबू श्री वहादुर सिंहजी सिंघी



अजीमर्जा-कलकत्ता

[जन्म ता. २८-६-१८८५]

[मृत्यु ता. ३-७-१९४४]

सिं धी जै न ग्रन्थ माला

*****[ग्रन्थांक ५]*****

महामात्य - वस्तुपाल - कीर्तिकीर्तनस्वरूप
सुकृत की रिंग के लिए लिखा गया
वस्तुपालग्रन्थस्तिसंग्रह



SINGHI JAIN SERIES

*****[NUMBER 5]*****

SUKRTA KIRTIKALLOLINI

AND

Other panegyric and historical records describing the good deeds
of the great minister Vastupal of Gujarat by various authors

क छ क चा नि चा सी
साहुचरित-ओडिवर्य श्रीमद् डालचन्द्रजी सिंधी पुण्यसृतिनिमित्त
 प्रतिष्ठापित एवं प्रकाशित

सिंधी जैन ग्रन्थ माला

[जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, कथात्मक-इत्यादि विविधविषयगुणित
 प्राकृत, संस्कृत, अपञ्चना, प्राचीनगूर्जर, -राजस्थानी आदि चाना भाषानिवृद्ध सार्वजनीन पुस्तक
 वाचन तथा नूतन संशोधनात्मक साहित्य प्रकाशिती सर्वभेद जैन ग्रन्थावलि]

प्रतिष्ठाता

श्रीमद्-डालचन्द्रजी-सिंधीसत्पुत्र

ख.० दानशील - साहित्यरसिक - संस्कृतिप्रिय

श्रीमद् बहादुर सिंहजी सिंधी



प्रधान सम्पादक तथा संचालक
आचार्य जिनविजय सुनि
 अविष्टाता, सिंधी जैन शास्त्र शिक्षापीठ
 निष्ठुत ऑनररी डायरेक्टर
 भारतीय विद्या भवन, बम्बई

*

ऑनररी फाउंडर - डायरेक्टर

राजस्थान ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, जोधपुर (राजस्थान)

ऑनररी मैंबर जर्मन ओरिएण्टल सोसाईटी, जर्मनी; भाण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना
 (दक्षिण); गुजरात साहित्यसभा, अहमदाबाद (गुजरात); विश्वशरानन्द वैदिक
 शोध प्रतिष्ठान, होलियारपुर (पश्च.) इत्यादि ।

*

संस्करक

श्री राजेन्द्र सिंह सिंधी तथा श्री नरेन्द्र सिंह सिंधी
 उद्योगस्थापक
अविष्टाता, सिंधी जैन शास्त्र शिक्षा पीठ
 भारतीय विद्या भवन, बम्बई

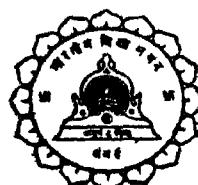
महामात्य - वस्तुपाल - कीर्तिकीर्तनस्त्रूप
 उदयप्रभाचार्यादि - अनेक - कविविरचित
**सु कृत की र्ति क छोलि न्या दि
 वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह**

❀

संपादकर्ता

अनेकग्रन्थमाण्डागारोद्धारक - विविधतुर्लभ्यग्रन्थसंशोधक
 जिनागमप्रकाशकारि - प्रतिष्ठानप्रबर्तक

आगमप्रभाकर - मुनिप्रवर - श्रीपुण्यविजय सूरि ।



प्रकाशनकर्ता

**अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षा पीठ
 भारतीय विद्याभवन, बम्बई**

❀

[लिखितम् २०१६]

प्रथमांकि

[लिखितम् १९९९]

[प्राप्त्यांक ५]

सर्वाधिकार सुरक्षित

[मूल्य ३० ३/३०]

SINGHI JAIN SERIES

३६ अद्यावधि मुद्रितग्रन्थ नामावलि ३६

- | | |
|--|---|
| १ भेदभावाचार्यरचित प्रबन्धविज्ञानमणि
मूल संस्कृत ग्रन्थ.
२ पुरातनाचार्यरचित बहुविध ऐतिहासिकपरिपूर्ण
अनेक प्राचीन निबन्ध संचय.
३ राजकोशरसूरिरचित प्रबन्धकोश.
४ खिनप्रभसूरिकृत विविधतीर्थकथा.
५ भेदविजयोपाध्यायकृत देवानन्दमहाकाव्य.
६ यशोविजयोपाध्यायकृत जैनतर्कभाषा.
७ हेमचन्द्राचार्यकृत भ्रमाणमीमांसा.
८ भद्राकल्पदेवकृत भद्राकल्पप्रम्भकथा.
९ प्रभान्धविज्ञानमणि - हिन्दी भाषांतर.
१० प्रभाचन्द्रसूरिरचित प्रभावकथारित.
११ चिदिचन्द्रोपाध्यायरचित भानुचन्द्रगणिचरित.
१२ यशोविजयोपाध्यायविरचित शालविज्ञुग्रकरण.
१३ हारिणोनाचार्यकृत शूद्रतरकथाकोश.
१४ जैनपुस्तकप्रकाशितसंग्रह, प्रथम भाग.
१५ हरिभद्रसूरिरचित भूतोक्त्यान. (प्राकृत)
१६ दुर्गविवकृत रित्यसुखाय. (प्राकृत)
१७ मेघविजयोपाध्यायकृत शूद्राप्रसादित.
१८ कवि अब्दुल रहमानकृत सन्देशारासक. (अप्रभंश)
१९ अर्थदृष्टिरकृत शासककथादि सुभाषितसंग्रह.
२० शान्त्याचार्यकृत ध्यायावताराचारिक-हृति.
२१ कवि धाहिलरचित पठमस्तीचरित. (अप०)
२२ महेश्वरसूरिकृत नाणपंचमीकहा. (प्रा०) | २३ श्रीभद्रबाहुभाचार्यकृत भद्रबाहुसंहिता.
२४ जिनेश्वरसूरिकृत कथाकोषप्रकरण. (प्रा०)
२५ उदयप्रभसूरिकृत भ्रमाम्बुद्यमहाकाव्य.
२६ जयपिंडसूरिकृत धर्मोपदेशमाला. (प्रा०)
२७ कोङ्कलविरचित लीकाळाई कहा. (प्रा०)
२८ जिनद्वारात्मानदूष. (प्रा०)
२९. ३०. ३१ स्वयंभूविरचित पठमचरित.
भाग १. २. ३ (अप०)
३२ सिद्धिचन्द्रकृत काम्यप्रकाशसंग्रह.
३३ दामोदरपिंड कृत उकिल्यफिल्मप्रकरण.
३४ भिजभिज विद्युत्कृत कुमारपाल चरित्रसंग्रह.
३५ जिनपालोपाध्यायरचित खरतरगच्छ शूद्रदुर्वादिलि
३६ उक्षोतनसूरिकृत कुबलयमाला कहा. (प्रा०)
३७ गुणपालसुनिरचित जंबुजरियं. (प्रा०)
३८ पूर्वाचार्यविरचित जयपायद्व-लिमित्तशास्त्र. (प्रा०)
३९ भोजनुपतिरचित शुक्रारमजरी. (संस्कृत कथा)
४० घनसारागणीकृत - भर्तुहरिशतकब्रह्मटीका.
४१ कौटल्यकृत अर्थशास्त्र - सटीक. (कतिपयअंश)
४२ विज्ञालिलेखसंग्रह विज्ञालिमहालेख - विज्ञालित्रिवेणी
आदि अनेक विज्ञालिलेख समुच्चय.
४३ महेन्द्रसूरिकृत नर्मदासुन्दरीकथा. (प्रा०)
४४ हेमचन्द्राचार्यकृत - छन्दोऽनुशासन.
४५ वस्तुपालगुणवर्णनात्मक काव्यद्वय
कीर्तिकौमुदी तथा सुहृतसंकीर्तन
४६ सुहृतकीर्तिकौमुदी आदि वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह. |
|--|---|

Shri Bahadur Singh Singhi Memoirs

Dr. G. H. Bühler's Life of Hemachandrāchārya.

Translated from German by Dr. Manilal Patel, Ph. D.

- स्व. बाबू श्रीबहादुरसिंहजी सिंची स्मृतिप्रम्भ [भारतीयविद्या भाग ३] सन १९४५.
- Late Babu Shri Bahadur Singhji Singhi Memorial Volume BHARATIYA VIDYA [Volume V] A. D. 1945.
- Literary Circle of Mahāmātya Vastupāla and its Contribution to Sanskrit Literature. By Dr. Bhogilal J. Sandesara, M. A., Ph. D. (S.J.S.33.)
- 4-5 Studies in Indian Literary History. Two Volumes.
By Prof. P. K. Gode, M. A. (S. J. S. No. 37-38.)

—♦—♦—♦—

३७ संप्रति मुद्र्यमाणग्रन्थनामावलि ३७

- | | |
|---|--|
| १ विविधाचार्य पद्मावलिसंग्रह.
२ विनपुस्तकप्रकाशितसंग्रह, भाग २.
३ अमरसोमनिरचित मंजीकर्मचार्यसंग्रहकथा.
४ गुणप्रभाचार्यकृत विनपुस्त्र. (बौद्धशास्त्र) | ५ रामचन्द्रकविरचित-मणिकामकरन्द्यामिलादक्षसंग्रह.
६ तस्माप्राभाचार्यकृत पठाकाम्यवाक्याक्षरोक्तुरिति.
७ प्रभुजस्त्रिकृत शूलसुहितप्रकरण-सटीक.
८ तुष्टलयमाला कथा, भाग २
९ तिहातिलक्ष्मसूरिरचित भगवान्नदात्म. |
|---|--|

वि व या नु क म

किंचित् प्रास्ताविक

१	वस्तुपालवर्गुह नागेन्द्रगच्छीय श्रीउद्यप्रभूरिविरचित	सुकृतकीर्ति कंडोलिनी, पद सं. १७९	पृ. १-१६
२	उद्यप्रभूरिकृत वस्तुपालस्तुति, पद संख्या ३३	„ १७-२०	
३	मलधारगच्छीय श्रीनरेन्द्रप्रभूरिकृत वस्तुपालप्रशस्ति, पद सं. २६	„ २१-२३	
४	मलधारगच्छीय श्रीनरेन्द्रप्रभूरिकृत वस्तुपालप्रशस्ति, पद सं. १०४	„ २४-२९	
५	नरेन्द्रप्रभूरिविरचित द्वितीय प्रशस्ति, पद सं. ३७	„ ३०-३३	
६	श्रीजयसिंहस्त्ररिविरचित वस्तुपाल-तेजःपाल प्रशस्ति, पद सं. ७७	„ ३४-३९	
७	वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद सं. १३	„ ४०	
८	नरनारायणानन्दकाव्यप्रान्तलिखित वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद सं. १८	„ ४१-४३	
९	उपदेशतरङ्गिणीग्रन्थगत वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद १	„ ४३	
१०	गिरनारतीर्थस्य वस्तुपालप्रतिष्ठित नेमिनाथप्रासादप्रशस्ति क्रमांक १	„ ४४-४६	
११	„ „ क्रमांक २	„ ४६-४८	
१२	„ „ „ ३	„ ४८-५०	
१३	„ „ „ ४	„ ५०-५३	
१४	„ „ „ ५	„ ५३-५५	
१५	गिरनारतीर्थस्थित अन्य प्रकीर्ण लेख ४	„ ५८	
१६	अर्द्धाचलतीर्थस्य लूणवसहिकागत लेखसंग्रह	„ ५९-७५	
१७	तारणदुर्गस्य लेख	„ ७५	
१८	शशुंजयपाजस्थित लेख	„ ७५-७६	
१९	अणहिलपुरस्थित शिलालेख	„ ७६	
२०	अर्द्धाचलस्थित अन्यलेख	„ ७६-१	
२१	संभतीर्थीय शिलालेख	„ ७६-२	
२२	गणेशरामगत शिलालेख	„ ७६-३	
२३	नगरामगत शिलालेख	„ ७६-४	
२४	वस्तुपालतीर्थयात्रा लेख	„ ७७	
२५	उद्यप्रभाचार्यकृत उपदेशमालाकण्ठिका दृतिगत वस्तुपालवर्णन	„ ७८-८०	
२६	शोमेश्वरकविकृत सुरयोत्सवकाव्यगत वस्तुपालवर्णन	„ ८१-८७	
२७	वस्तुपालविरचित नरनारायणानन्द काव्यगत प्रशस्त्यात्मकवर्णन	„ ८८-९०	
२८	वस्तुपालविरचित आदिनाथ स्तोत्र	„ ९१-९२	
२९	„ नेमिजिनस्त्र	„ ९३	
३०	„ अविकारेवीस्तोत्र	„ ९४	

३१	महामात्य वस्तुपालकृत आराधना	पृ.	९५
३२	वस्तुपाल संबन्धित ग्रन्थान्तरपुण्यकालेख	"	९६-९८
३३	विजयसेनखारि रचित रेवंतगिरि रास	"	९९-१०३
३४	पाल्हणपुण्यकृत आदूरास	"	१०४-१०८
परिशिष्ट			
१	सुकृतकीर्तिकल्लोलिनी आदि प्रशस्ति पदानुक्रमणिका	"	१११-१२६
२	सुकृतकीर्तिकल्लोलिनी आदि रचनागत विशेषनामानुक्रमणिका	"	१२७-१३७

किंचित् प्रास्ताविक

*

प्राचीन महागुजरातके महामात्य वस्तुपाल (दोनों बन्धु) के नाम बहुविकृत हैं। इनके जीवन वृत्तान्तके विषयमें इंग्रजी, जर्मन, गुजराती एवं हिन्दीमें बहुत कुछ लिखा गया है। इन सबमें विशेष रूपसे उल्लेखयोग्य इंग्रेजी ग्रन्थ डॉ. भोगीलाल सांखेसरा, एम्. ए., पीएच. डी. (डायरेक्टर ओरि-एप्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बडौदा युनिवर्सिटी) का लिखा हुआ 'लिटरेरि सर्कल ऑब महामात्य वस्तुपाल एण्ड इट्स कोन्ट्रीभ्युशन दु संस्कृत लिटरेचर' (Literary circle of Mahāmatya Vastupāla and Its contribution to Sanskrit Literature) है, जिसमें इस विषय पर बहुत ही प्रमाणभूत एवं गंभीर अध्ययनपूर्ण विवेचन किया गया है। सिंघी जैन ग्रन्थमालाके ३३ वें ग्रन्थके रूपमें, कोई ९—१० वर्ष पहले हमने इसे प्रकाशित किया। इसके पूर्व ही, सन् १९४९ में, हमने इसी ग्रन्थमालाके चतुर्थ ग्रन्थके रूपमें, वस्तुपालके मुख्य धर्मगुरु आचार्य उदयप्रभ मूरिका बनाया हुआ संस्कृत काव्यात्मक बड़ा ग्रन्थ 'धर्माभ्युदय महाकाव्य' प्रकाशित किया, जिसका संपादन विद्वद्वर्थ्य मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज और इनके दिवंगत गुरुवर्थ्य श्री चतुरविजयजी मुनिमहाराजने किया है।

इस 'धर्माभ्युदय महाकाव्य' के प्रास्ताविक वक्तव्यमें, हमने वस्तुपाल मंत्रीके जीवनवृत्त और तत्कालीन ऐतिहास पर विशिष्ट प्रकाश डालनेवाली, तथा उस मंत्रीके समयमें विद्यमान एवम् उससे संबन्धित जिन विद्वानोंने काव्य, प्रबन्ध, प्रशस्ति, रास आदि जो रचनाएं की हैं, उनका संक्षिप्त परिचयात्मक निर्देश किया था और साथमें यह भी सूचित किया था कि— हम भविष्यमें वस्तुपाल विषयक यह सब फुटकल ऐतिहासिक साहित्य, संकलित कर, एक या दो भागोंमें, प्रकट करना चाहते हैं। हमारे इस विचारको मुनिमहोदय श्री पुण्यविजयजी महाराजने भी बहुत पसन्द किया और इन्होंने खर्य इसका संपादन कार्यभी सहर्ष स्वीकार किया। प्रस्तुत संप्रह उसी विचारके फल खरूप तैयार हुआ है।

इस संप्रहमें वस्तुपाल विषयक जितने भी प्रशस्तात्मक प्रबन्ध, शिलालेख, ग्रन्थपुष्टिकाएं एवम् रास आदि कृतियां मिल सकीं, उन सबका एकत्र समावेश कर दिया गया है। आशा है कि ऐतिहासिक तथ्योंकी खोज करने वाले अभ्यासियोंके लिये यह बहुत उपयुक्त संकलन सिद्ध होगा।

इस संप्रहका संपादन कार्य तो प्रायः सन् १९५० में पूरा हो गया था। इसका मुद्रण कार्य भावनगरके एक प्रेसमें कराया गया था; पर बादमें इसके सब छपे फर्में बंबईमें भारतीय विद्या भवनम मंगवा लिये गये थे। स्थान बैराहकी ठीक सुधिधा न होनेसे अनेक वर्षों तक ये फर्में इधर उधर धूमें-फिरते रहे और फिर हमारा भी स्थानान्तरण होता रहा। इससे, उक्त धर्माभ्युदय महाकाव्यके प्रास्ताविकमें उल्लिखित कथनानुसार हम इसे शीघ्र प्रकाशित करनेमें असमर्थ रहे। पर हर्षका विषय है कि इतने वर्षोंके बाद भी, अब यह संप्रह समुचित रूपसे प्रकाशमें आ रहा है। पूर्व पुरुषोंके उग्रकीर्तनात्मक पुण्य कभी बासी नहीं होते। जब भी वे गुणप्राहकोंके हाथोंमें उपस्थित होते हैं तब शिरोधार्य ही होते हैं।

इसके संपादन कार्यके विषयमें मुनिमहोदय श्री पुण्यविजयजी महाराजके प्रति, उक्त धर्माभ्युदय काव्यके प्रास्ताविक वक्तव्यके अन्तमें, जो अपना हार्दिक कृतज्ञ भाव हमने प्रकट किया है—वही यहां मुनिमहोदित करना चाहते हैं कि—“इस संप्रहका संपादन करके इस प्रन्थमाला के प्रति अपना जो विशिष्ट ममत्व भाव प्रदर्शित किया है और उसके द्वारा सौहार्दपूर्ण सहकार प्रदान कर मुझको जो उपकृत किया है, उसके लिये सौजन्यमूर्ति परमज्ञेहास्पद मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराजका मैं अल्पन्त कृतज्ञ हूँ।”

इस संग्रह के साथ ही इसका समानविषयक एक अन्य संग्रह प्रकट हो रहा है जिसमें महाकालि सोमेश्वर विरचित की तिंडौ मुद्री तथा अरिसिंह कविकृत सुकृत संकीर्तन काव्य संकलित है। इसका संपादन कार्य भी इन्हीं मुनिबरने किया है। पहले ये दोनों संग्रह एक ही प्रन्थके रूपमें प्रकाशित किये जानेकी कल्पना रही थी, पर पीछेसे इसके साथ डॉ. व्याघ्रलर आदिके लिखित उन प्रन्थोंके संबन्धके इंप्रज्ञी लिखन्थ भी उसमें सम्मिलित करनेकी कल्पनासे उसको अब पृथक् प्रन्थके रूपमें प्रकट किया जा रहा है।

अनेकान्तविहार, अहमदाबाद,
काल्युकी पृष्ठिमा, दं. २०१७
ता. २, मार्च, १९६१.

}

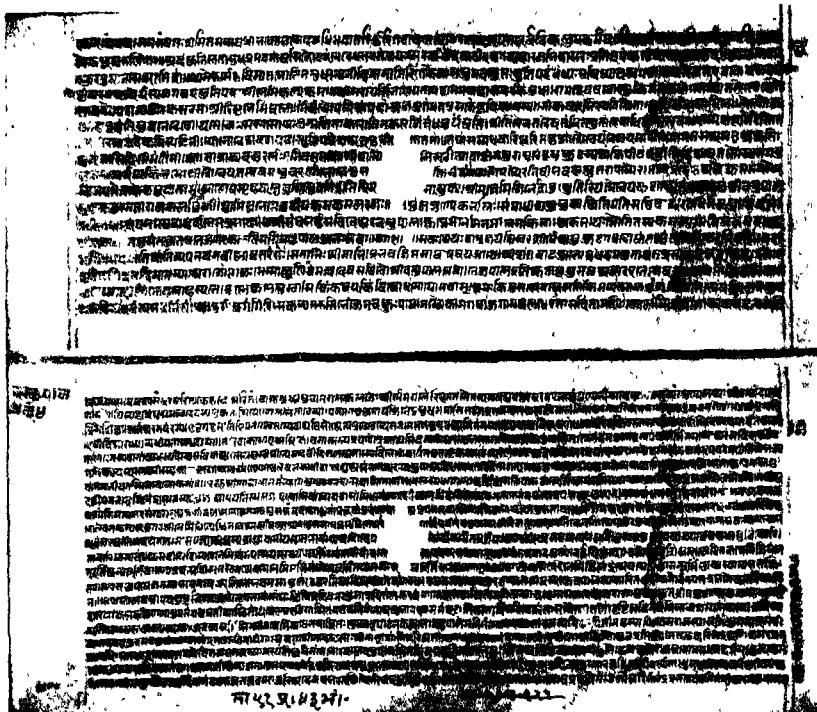
— मुनि जि न वि जाय

— आभार प्रदर्शन —

प्रस्तुत वस्तुपाल प्रशस्त्यात्मक संग्रह ग्रन्थके प्रकाशन व्ययमें भारत सरकारकी ओरसे आधा हिस्सा सहायताके रूपमें मिला है, तदर्थं हम भारत सरकारके प्रति अपना साभार कृतज्ञमान प्रदर्शित करना चाहते हैं।

[वस्तुपाल प्रशस्तिसंग्रह]

सिंधी जैन ग्रन्थमाला]



अहमदाबादस्थि - डेहलासंक्षानभंडारोपलध्य वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह की
प्रति के आद्यन्त पत्र

प्रथमं परिशिष्टम् ।

कर्मेन्द्रमनुभवामाभिमिः शीघ्रदृश्यत्वात्परिरभित्ता
—वसुपालान्वयप्रशालितरण—

सुकृतकीर्तिकल्पोलिनी ।



पश्चिमस्तुतिरूपं भज्जलम्

किन्तातीतफलमदः स दिशतु अयो शुगादिप्रभुर्ज्ञेज्ञन्मनि वस्य कल्पतरयः सर्वेऽप्युपाधानतात् ।
नेत्रं चेत् कष्मयन्वया वसुभतीमस्मिन्नलक्ष्मीति, त्रैलोक्यैकगुरो न गोचरममी जगमुर्जग्न्यासुशाश् ॥ १ ॥
पापं पङ्कजयन् त्रुटं कुमुदयन् भोहं तमःस्तोमयन्, त्रुदिं तोवैष्ययन् नतिष्ठणयिनां चन्द्राशयन् लोकयन् ।
पीयूषप्रतिमङ्गनिर्भूगबीप्रकालितस्थापत्यापदपास्तयेऽस्तु बगतः श्रीमान् शृगाम्बो जिनः ॥ २ ॥
श्रीनेत्रिनीलनीरजसचिः अयांसि निःअयस्मीविआन्तरनुस्तनोतु कृतिनां सौभाग्यभर्तीगुरुः ।
सज्जः काञ्जलकालिमा त्रिजगतीलीलाकृतीनेत्रदोर्यद्वाशुतिपानचिह्नवदसावदायि विद्योतते ॥ ३ ॥
परमपदपुरामद्वारमूलो विमूलै, स भवतु भवभाजां पार्श्वनाथो जिनेन्दुः ।

यदुपरि परिणामं तोरणसगदलानां, कलयति नहेत्तुर्भोगिनेतुः फणाली ॥ ४ ॥
छद्योत्सेकितनोरशीरधिनमोर्मर्म सगर्भाकृतच्छायस्य च्छविभिः सुरस्य फिरसि स्वर्णधुतिः शैलवे ।
वीक्षेव श्रणतः प्रदक्षिणविष्णिपदेषु वैमानिकयाभारेषु सुपर्वर्षततुलां धीरः अपन् वः अये ॥ ५ ॥

सरस्वत्याः स्तवनम्

पुष्टैकहेतुं रसिनीरजन्मप्रभापद् लक्ष्मितप्रभावैः ।
श्रीवर्द्धनवस्य जिनेश्वरस्य, वाचः कमी वक्त्रमपि स्मरामि ॥ ६ ॥
सीखसंकरणं च न् पुररथल्कारत्रियं च स्वयं, चोहुं साधु निवेष्यते लगकुलोत्सेन हंसेन या ।
किंतास्वयमनप्रस्तुतामनस्तस्यैव हेतोः करे, कुवाणा कमलं सैतां भवतु सा जाही परत्राणी ॥ ७ ॥

स्तुतिः

श्रीवास्तुः श्वेतो लक्ष्मयुग्मामाभिरामविष्यः, सर्वे जातारत्निशीपरिष्ठूलासैकचन्द्रोदयाः ।
तेषां श्रीसिद्धदुर्दीप्तामायामीत्यक्षमायामीक्षेत्रम् उम्मेतु पश्चमप्तोराविष्यं गहते ॥ ८ ॥

१ अं श्रिये ॥ २ अं श्रिये ॥ ३ अं श्रिये ॥ ४ अं श्रिये ॥ ५ अं श्रिये ॥ ६ अं श्रिये ॥ ७ अं श्रिये ॥ ८ अं श्रिये ॥

चापोत्कटवंशीयराजवर्णनम्

राजा श्रीवनराज हत्यभिधया चापोत्कटः कोऽप्यमूद्, गोत्रेण क्रियया च कक्षन बनाद् वीरः समभुत्तिः ।
सर्वेणापि जितेन यस्य महसा बाल्येऽपि दोलातरुच्छाया नाम न नामिता दिशि दिशि कोषारुणं धावता ॥९॥
सूर्यो-चन्द्रमसौ कदाऽप्युदयत्वेत् पश्चिमायां ततो, राज्यं स्थादिह सन्धयेति सुतया देशं समुद्घाहयन् ।
येनास्यां दिशि वर्धमानमहसा राजा च द्वरेण च, प्रासेनाभ्युदयं महोदयपतिः पूर्णप्रतिज्ञः कृतः ॥ १० ॥
शूषा भुवोऽणहिलपाटकनामधेया, येन व्यधायि किल शूर्जरराजधानी ।
यत्रोदयन्नवनवाङ्गुतमोगमाग्नश्रीणां नृणां बहुतृणं त्रिदशोकसोऽपि ॥ ११ ॥
एकाऽपि प्रमदा मदालसवपुर्वत्र प्रपापालिका, विभ्राणा करकैरवेण करकं पूर्णं जलैरज्ज्वलैः ।
रत्नस्तम्भमवशिजप्रतिकृतिप्रान्ते कृतप्राञ्जलीन्, यूनो वीक्ष्य मृदुस्मितेन तनुते लज्जाविलक्षस्थितीन् ॥ १२ ॥
अस्मिन्नुच्छतवेशमीलिषु भवान् भावी सखेदः सखे ।, चक्रप्रस्वरुनाकुलीकृतरथस्तस्मादितो गम्यताम् ।
भिजान्तस्तमसः सुवर्णकलशाश्वेत्यालिचूलाजुषः, संज्ञां चक्रधीरकेतनकरैर्यत्रेति मित्रं प्रति ॥ १३ ॥
स्फूर्जवृष्टूर्जरमण्डलावनिवधूवक्त्रोपमेऽस्मिन् पुरे, चैत्यं किञ्च विशेषकं व्यरचयत् पश्चासराहं नृपः ।
यस्योच्चैः कलशश्चकास्ति रुचिभिः किञ्चिद्विभिज्ञाम्बरश्यामत्वव्यपदेशकेशपदवीसीमन्तसीमाभणिः ॥ १४ ॥

धात्रीधुरीणभुजनिर्जितभोगिराजः, श्रीयोगराज हति भूरमणस्ततोऽभूत् ।

यस्य प्रतापतरणिस्तरवारिमेघमूर्त्यन्तरेण नवकीर्तिजलं वर्वर्ष ॥ १५ ॥

आसीदीशो दोष्मदादित्यरत्नादित्यो रत्नादित्य हत्यस्य पट्टे ।

तीव्रं तेजोवहिमहाय यस्यापर्वत् सङ्गः शत्रुसंवर्तकाङ्गः ॥ १६ ॥

जातः करीन्द्रोऽनुरवैरिसिंहः, श्रीवैरिसिंहस्तदिलाविलासी ।

यत्कीर्तिकुरुया स्तुतिकैतवेन, चिक्रीड लोकानकाननेषु ॥ १७ ॥

श्रीक्षेमराज हति तद् विरराज राजा, येनोदृतेऽपि भुवने कृश एव शेषः ।

विस्मृत्य नृत्यदुरगीभरगीयमानतत्कीर्तिपानरसिको रसनं सुधायाः ॥ १८ ॥

राजा चामुण्डराजस्तद्, मूमण्डलमण्डयत् । ससर्पे विश्वे यस्याऽङ्गा, नरेन्द्रैरप्यलङ्घिता ॥ १९ ॥

चौलुक्यवंशीयनरपतिवर्णनम्

आहडस्तदजनि क्षितिनेता, यस्य बाहुरिह नृतनराहुः ।

एकाकालगिलितौ रिपुतेजः-कीर्तिसूर्य-शशिनौ न सुमोच ॥ २० ॥

नग्रारीन्दुमुखीमुखेन्दुविजयस्मेरकमाम्बोरुहः, श्रीभूमिर्षुवैकभूषणमभूतैः तद्विभूष्मटः ।

यत्कीर्तिर्गनेऽपि पुष्पनिकरः स्वर्गेऽपि दुरधोदधिः, क्षमाखण्डेऽपि हरस्मितं विलसति शशेऽपि चन्द्रप्रभा ॥ २१ ॥

पीनश्चीर्जुपक्षगोऽजनि यशोवार्धिर्जर्जम्भे मुहुः, कम्पं सङ्गलता ततान परितो जज्वाल तेजोज्जलः ।

यस्य क्षुण्णविक्षर्वर्ववनितानिःश्वासावातोमिभिर्जेतुः केतुवलाऽप्यभूदविचल विन्द्रं जयश्चीरसौ ॥ २२ ॥

स्त्रीयः श्रगति स्म तस्य पदवी चौलुक्यलक्ष्मीशिरोमाणिकमं हिमवद्विजिष्णुमहिमा श्रीमूलराजो नृपः

रेजे यस्य तमोरिपुलिपुरुषप्राप्तादकेतुच्छलादाकाशोऽपि विकाशिकाशविशदा कीर्तिक्षिमार्गा नदी ॥ २३ ॥

१ शुब्रया अ० ॥ २ अ शूरैः मुद्रिते ॥ ३ खेत्रैः मुद्रिते ॥ ४ “द पहूविशु” अ० ॥

स्विकान्तसिन्धुपतिरक्षसमुद्रतशीकोटिर्दीयतरवारिवारितौजाः ।
कीर्त्याऽहसद् दिवि हरि सुर-दैत्य-शेषक्षुब्धैकसिन्धुकल्पैकमसिङ्गिं तम् ॥ २४ ॥
तेजःस्फूर्जितदीपदीपिनि सुषाशोभैर्यक्षोभिः शुभे,

विश्वच्छशनिवाससधनि वशी भूमि भुनक्ति स्म यः ।
शशुक्षीनयनोदविन्दुजतुणस्तोमेन रोमाञ्चितां,
सेनाभिः परिकर्पिनीं परिवृद्धो बोदा नवोदामिव ॥ २५ ॥
पाण्डवः पालण्डिवेषं वहति नवहतिवातसम्पातभीरुः,
कीरः कर्णाटवीरस्त्यजति रणसुवं व्याकुलो मालवेन्द्रः ।
वाच्यं किञ्चित्त कान्तीश्वरचरितमसावातुरः कस्तुरेष्वः ।
क्षमाचकाक्षन्तिभीमे प्रसरति सततं यत्यापयभावे ॥ २६ ॥

मैजे तेजोगगनगहने यस्य पिङ्गलुलिङ्गाभान्ति बालारुणमणिहृचं प्राप कीर्त्यनामाम् ।
ईशो भासामपि दिवि दिवा किञ्च स्थोतपोतच्छायामायात् प्रतिनृपघटादुर्बृशोदुदिनेषु ॥ २७ ॥
युद्धोद्धामरमण्डलाग्रदलितोद्धण्डारिमुण्डोद्देतिकीडास्पिष्ठतकाण्डमण्डपसुरप्रत्यक्षदोष्ठम्भरः ।
चण्डांशुशुतिचण्डिमा तदभवश्चामुण्डराजः क्षमाजानिर्यस्य विभात्यखण्डविभुतापाखण्डमाखण्डः ॥ २८ ॥

रोदःक्षीरोदनीरैरविलदिग्बलानव्यनिर्वृतचरै-
दिंग्रागस्फारहौरैरमरपतिपुरकोडपुष्पोपहौरैः ।
क्षोणीचन्द्राशमशालैरपि भुजगजगच्छन्द्रिकाचक्वालैः,
फुलत्काशप्रकाशैखिभुवनमभितो भाति यत्कीर्तिहासैः ॥ २९ ॥

मेरुश्वेत् परिकम्पते जलपतेर्मुखन्ति चेद् वीचयो, मर्यादां शुतिमर्यमा त्यजति चेदुर्बीं दिवं याति चेद् ।
तद् भज्येत् पैरेसाविति सतां सन्धां मुधा यो व्यधात्, सङ्घशक्षोभविघृणितावनिरजः कूसेऽपि तचाहशे ३०
स्वेलत्सङ्घष्टंहिवेलितभुजावलिर्मुवो वलभः, श्रीमान् वलभराज इत्यजनि तद् यत्तेजसा ताढितम् ।
शीतं स्फीतमभूत् तमस्य जगतः प्रस्तर्थिसार्थं गतं, नेदं चेदिह कम्प-कालिमगुणौ कस्मादकस्मादिमौ ॥ ३१ ॥
श्वरं सिन्धुरभुम्या वसुधया भूमि भट्टैर्वैदिवं, ससिक्षिसरजोभरेण पिदधे सोऽयं जगज्ज्ञम्पनः ।
यः श्रीमालवभूपभालफलकप्रस्वेदविन्दुच्छलप्रत्यग्रप्रथितप्रशस्तिविकसद्विर्विकमोपक्रमः ॥ ३२ ॥
तस्मादेश्वरमुधाङ्गानं समजनि श्रीदुर्लभो मणिकाफुलोत्कुलयशा विशामधिपतिर्जीमूतपूतोक्तिः ।
येनोर्वैस्तरवारिवारितपरक्षमाभूतमतापामिना, विश्वाधासकरेण सूरमहसामन्तदेष्ये मण्डलम् ॥ ३३ ॥
केराभ्योजं मैजे सततविततं यस्य कमला, प्रियारागादागादनु दनुजमेता स्वयमसिः ।
यशश्चनुर्वैनं तदज्जिति तयोरअजकथासदर्पः कन्दर्पद्विषमपि रुषाऽधो व्यथित यः ॥ ३४ ॥
तस्माद् भस्मीहृतरिपुनुपः क्षमापतिः शौर्यसीमा, भीमः श्रीमानजनि यजनैर्यस्य नश्यत्तमोभिः ।
शास्त्रस्तुसि दिवि विविषदो नेन्दुमास्त्रादयन्ते, लोकः शङ्कामिति समतनोद् कीर्तिभिर्विप्रलङ्घः ॥ ३५ ॥

१ °हवक्षीतसि° कं० ॥ २ °मुद्रत° मुद्रिते ॥ ३ काञ्चीभू° मुद्रिते ॥ ४ °द्विः मुद्रिते ॥
५ पश्चिमे उदयप्रभीयशस्तुपालस्तुतौ दशप्रवशतवाऽपि दद्यते ॥

शशारिकावगोक्रशब्दकरणरणादैतवैतपिंडकेऽपि,
स्मापालाः कुद्दकालादिव निरगुरसेर्यत्प्रसादेन वेगात् ।

तावंही नम्रदेहाः करपरिमलैर्मानयन्तो नयन्तो,

मूर्धोऽप्यूर्ध्वं लच्छीयसिद्धशृगृहगुहागर्भगुप्ताः प्रसुपाः ॥ ३६ ॥

सेवालन्ति पथः समुद्रति दिशामन्तेषु मध्येन अः, सारङ्गन्ति क्षशाहति शुभुवने दानन्ति दन्तीन्द्रति ।

पुष्पस्तोमति षट्पदन्तमनुलतास्पदं सुधाकुण्डति, शशान्तर्मुजगन्ति यस्य वशसि प्रत्यर्थितुष्कीर्तयः ॥ ३७ ॥

तत्कामश्चीरजनि जगतीकामुकः कर्णदेवः, किं वर्णन्ते सुकृतसुकृता यस्य शुद्धान्तवध्वः ? ।

अस्मन्नीभिर्मनुजसुहशो बहमन्यन्त धन्वमन्या ध्यानव्यसनजनितैस्वप्नयद्वोगभाजः ॥ ३८ ॥

कान्तं यं वीक्ष्य यान्तं प्रणवमवृष्टा स्वप्नलब्धं प्रवृद्धा-

स्तहुच्छथा न्यस्तहस्ता लिखितरतिपतेरञ्जले चक्षलाक्ष्यः ।

मूर्छालिक्षित्रशालासुवि भवति विभुनार्यमित्यर्थहस्त-

स्तत्ता हन्ति स्म मूर्तः स्वपरिभवमवन्मानभूमिर्मनोभः ॥ ३९ ॥

कान्ते कृष्णोऽभिभूते जगदवनपुषा वाहुना विग्रहेण, क्षिसे सूनावनज्ञे पितरि जलपतौ निर्जिते सैन्यपूरैः ।

न्यन्धी दोषाकरे तु प्रथममपि मुखालोकभग्नप्रभावे, लक्ष्म्यास्तेनेह तेने हरणमुख्यशोदैत्यदचस्पृहायाः ॥ ४० ॥

मौक्तिकश्चुतिजलोज्जवलमन्तर्मूर्धिं कुम्भयुगलं कल्पद्विः ।

योऽवरोधविधुरैर्मैलिनाङ्गैर्वैरिभिः करिकुलैश्च सिवेवे ॥ ४१ ॥

अर्धव्यर्थितदुस्थदुर्विधिलिपिंदूकुभिर्मन्त्रिलिङ्गासिहः श्रीजपसिंहदेवनृपतिः श्रीवेशम तस्मादभृत् ।

सज्जुयासज्जपहतावनीधवनवस्वर्वासिसन्तुष्टये, चक्रे यः कतुचक्रवालमवनीशक्रो न शक्तिष्ठये ॥ ४२ ॥

पद्मा पद्ममपास्य पङ्कजनितं यस्यारिकेशावलीरोलम्बप्रविरोलदकुलिदर्लं भेजे कराम्भोरुहम् ।

शेषं वायुवशं विसृज्य सब्लं दोर्नागमागादसिः, कृष्णोऽपि प्रियमेलकाभिधमभूत् तसीर्थमेवद्गृजः ॥ ४३ ॥

न्यस्यावश्यं शिरसि विरसं कन्दतां पादमेषां, राज्यं ग्राहां द्रुतमिति रणे यः प्रतिज्ञां प्रतेने ।

एतत्पादोपरि तु परितः स्वं परिन्यस्य मौलिं, प्रीतैरन्तः प्रतिनृपतिभिः प्रस्तुतं प्राप्य लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

दाज्ञाजितवाजिराजिचरणक्षुण्णक्षमामण्डलप्रोद्धस्त्वोदकदम्बदरपरिच्छाम्बरे सङ्गरे ।

यत्कौक्षेयकदण्डस्तपिंदितरिपुक्षमापालमालावृतिव्यासका न परं पुरन्दरपुरीनार्थः स्वकार्यक्षमाः ॥ ४५ ॥

शोषः सैष जवाद् यशोजलनिधि शान्तिः प्रतापानले, शत्रूणां शिरसि च्युतेऽपि हसितं नृतं कवन्वेष्यपि ।

सत्यं सज्जरस्त्ररस्य महिमा सोत्साहमन्त्रस्थितेर्थस्योदैः करवाल एव स कथं सिद्धो न सिद्धाधिष्ठः ॥ ४६ ॥

शिद्धौजसि गते भयादनिविडौजसि स्वर्णीर्णि, तदीयदिशि यः स्फुरक्षिह महो-यशःक्षमारुही ।

अरोपयदहो ! पयःपतितेऽबुनाऽप्यन्वहं, ततोऽभ्युदयतो नवौ रवि-निशाधवौ पल्लवौ ॥ ४७ ॥

क्षत्यां रक्षितुमक्षमे दिशमपि इयामे सदुःस्वे यमे, यद्गृत्यैरमिभूतदक्षिणकुठभागैर्द्विषो भाविनीः ।

मास्म द्राक्षमहि दुःसहैरिति नताः पाराय वारान्निधेर्मेजुः सेतुभुवं ततः कपिमयाच्चुक्षोम रक्षोभरः ॥ ४८ ॥

१ पश्येद उदयप्रभीयवस्तुपालस्तुतौ अष्टमपद्मस्तेनापि वर्तते ॥ २ शुभिष्ठिमे उदयप्रभीयवस्तुपालस्तुतौ ॥

३ विलं स्वं कां ॥ ४ स्तहस्ताहस्तां मुद्रिते ॥ ५ शुरैर्मैलिनाङ्गैः, मुद्रिते ॥ ६ अर्थिव्यं मुद्रिते ॥

७ विभिः मुद्रिते ॥

विद्वासाशः पाञ्च लिङ्गनुचिनाशाय वर्णयः, मुचा तेजे विप्रत्वपरद्विरितो यत्र विमुताम् ।
किमन्वचन्नाकर्षिति विशि गतौ यस्य च यशः-प्रतापाभ्यामम्बः परिपथसि ढीनौ निपततः ॥ ५३ ॥
यदिमन्वुपरदिग्मते बलचलकूर्णविश्वेभिः स्थलीभूवं मेति नदीषतिर्द्वितमयं मेरोः परेणागमत् ।
तेने किञ्च निकेतनं धनवितिः कैल्यशैले सुखग्राह्यमन्यमना मनागपि न चामुक्तत तदं शृणिनः ॥ ५० ॥
तेजोविद्विताष्टविमन्युपसमित्यज्ञानशूपरेपमैर्वेदक् कोऽपि पतिः क्षितेरिति विशास्त्रद्वितुलीसमितिः ।
आलानप्रतिसैर्दिगीशकरिणां विमण्डपोतम्भनस्तमस्तोमनिमैश्य यस्य विजवस्तम्भैर्दिगन्ता वमुः ॥ ५१ ॥

शङ्खं शार्ङ्गधरस्य शेषरमणि शूलायुधस्य द्विपं,
वज्रायास्य रदं परधधमृतः स्वर्लोकलीलाजये ।
उत्कर्षार्थितया विद्वम्पतु भैटो विष्वेकधामा यशो,
नामा[५५]यस्य हहा ! जहार तु कुतो युग्मं जरद्वाणः ॥ ५२ ॥

अस्य त्रिकमविकमस्य न मुदे शाधा जगज्ञाहिकी,
लक्षणानामपि कष्टमष्टककुमां जेताऽप्यमेतावती ।
क्षोणीकम्पिनि धूतधूलिनि बले यस्याहि विशेष्यरः,
शेषो नाम ननाम धाम मुमुक्षे भानुर्नभोभूषणम् ॥ ५३ ॥

क्रोन्तशकबलो भग्नभोगिलोकः क्षिर्ति जयन् । येन अर्द्धरदैत्येन्द्रः, पुरीपरिसरे हतः ॥ ५४ ॥
हष्टोऽभूमुशलध्वजः स्वकुशलध्यानेन जिष्णुः स्मयग्राजिष्णुर्मुदितः समुद्रशब्दनो रुद्रोऽपि मुद्रामुदा ।
उत्क्षिप्ते किल वर्षरस्य शिरसि कूरस्य विश्वत्रयीजेतुर्येन तदा विद्वन्तु दधिया भीतस्तु शीतश्चुतिः ॥ ५५ ॥

संज्ञे नृपतिशतैः कृतांहिसेवः, क्षमापालस्तदनु कुमारपालदेवः ।
निर्विराविभवमुचाऽपि येन मुष्टा, निर्विरा रिपुवसुधा नितान्तपुष्टा ॥ ५६ ॥
सैन्यप्रकम्पितधराविधुरात्मकेषु, पोतैरलङ्घ्यसलिलेषु धुनीधवेषु ।

श्रीजैनचैत्यरचनेन शिलोऽचयेषु, यस्याजनिष्ठ चरणः शरणं रिपूणाम् ॥ ५७ ॥
यस्य सद्यनि सदा हयहेतोः, स्वाध्यमुद्वलयं दलयद्विः ।

सिद्ध्यते सुचिरसञ्चितशोकैर्वैरिमिनयनवारिमिरेव
दास्यवर्तिन इवाऽस्यसमुत्थश्वासनाशिततृष्णामु विपक्षाः ।

प्रातरशुसलिलेन यदीयद्वारभूमिषु रजः स्थगवन्ति
अग्रे हृषीद्वीरविधरमजिरमहीपादपः पादपद—

कीडामुडः कलिङ्गः सदनवदनगो मेदपाटः कपाटः ।
अन्धः कण्ठाट-लाटौ कुरु-मरु-कुरुला वङ्ग-शौडा-जङ्ग-चौडाः,

कोडस्तम्भाः सभायामिति नृष्टतिकूलराकुलैराकृतो यः ॥ ५० ॥

कथ्यन्ते न महीभूतः कति महीयांसो महीशेसराः, माहास्यं स्तुमहे तु हेतुनिगमादेतस्य चेतोहरम् ।
अर्थादामसिलकृयन् रसलसवद्वाहिनीवाहितोऽर्णोराजः स जगाम जाङ्गलमहीभागेषु भग्नोक्तिः ॥ ५१ ॥

१. पवित्रं वस्त्रमासीकवस्त्रमुपालस्तुतो सप्तमपरवेनापि वर्तते ॥ २. 'ठो निस्त्रीमध्यामा उदयग्रीष्म-
वस्त्रमालस्तुती ॥ ३. 'क्रीतशो' क्षं ॥

दर्श दर्शमसाहदर्शनकवं कल्पान्तशिष्यान्तकप्रकारीदद्रसनासनाभिमितो यत्सङ्गसेवां मुषि ।
विव्रस्तस्य चमूचरैः सह तथा प्रामिक्षलक्ष्मा सुजः, प्रस्वेदाम्बुजगाल जाङ्गलभुवेऽमृतनूया वद्धा ॥६२॥

क्षीणत्वं दायिणात्या व्यरचयदमुच्नमालवी बालवीक्षा-

दुःखादधूणि हृषी शुचमवित दधौ जाङ्गली नाङ्गलीलाम् ।

कुक्खाऽऽसीत् कन्यकुञ्जा शिरसि सुतभरात् कौड़णी कल्पानां,

इन्द्रं स्वेदाद् विभेदावनिभृति चलिते यात्रया यत्र जैवे ॥ ६३ ॥

कोदण्डं स्वकरे कुरुते सज्जं गलजाङ्गलस्तो वेति नितम्बतो न वसनं कीरो न वीरोचितः ।

शुद्धक्षोणिषु दक्षिणः क्षितिपतिर्न क्षोददक्षोदयद्वाहुर्मृत्युसहस्रचक्षुषि मुहुर्बस्तिमन् धनुर्धुन्वति ॥ ६४ ॥

जगद्धन्यमन्यः प्रबलजलदुर्गाऽर्जुनमडी, यदीयैस्थद्विर्बलपरिवृद्धैः पौरुषवृद्धैः ।

हयोत्सातकोणीविततरजसा सिन्धुपरिस्तां, स्थलीकृत्य क्रीडासमिति शमितः कौड़णपतिः ॥ ६५ ॥

पदं विजयसम्पदामजयपालदेवोऽसिलद्विषन्तृपतिमृत्युभूरथ बभूव भूलभः ।

रराज सुरराजवज्जगति यस्तनुडिभ्वितप्रियाचयविलोचनामुजसहस्रनेत्राञ्जितः ॥ ६६ ॥

यस्मिन् पश्यति वेशमोऽङ्गणमुवि आन्तेऽपि मत्तद्विष्टे, नेशुर्नाऽऽशु नृपा व्येषायरुचयः सेवामयत्रीडया ।

शोकश्यामतमानिमानपि पुनः प्रेक्ष्य द्विषो नापिष्टू, दग्धक्षमारुहस्तप्रस्तुप्रस्तु त्रुट्यनविधौ कुर्वन्नवज्ञामिव ॥६७

आजन्मत्रासहेतुश्रमसमदहृदः कण्टकाः कण्टकद्व—

द्रोणीचीकृत्वचोऽपि स्वलदुपलशिलाभोगभुग्नांह्रयोऽपि ।

अकृष्णं नर्तयित्वा भृतपदमभवन् यस्य सेनाभटानां,

निःस्वानध्वानजैत्रत्वरतुरगभृतां पश्यतामप्यदृश्याः ॥ ६८ ॥

तमहतमहं बद्धा वध्वा समं न समानये, यदि तदवनीनेता नेति प्रणीतरणो रिषुः ।

किमपि न पुनः कर्तुं भर्तुः स यस्य शशाक तनियतमसुचत् प्राज्यं राज्यं सतामचलं वचः ॥ ६९ ॥

सीरधवलबंशवर्णनम्

मूलं कीर्तिलतातते: समजनि श्रीमूलराजो नृपत्तप्तेहे करकेलिकन्दुककलक्ष्मैगोलको बालकः ।

अमै दण्डमसण्डहर्षकृतये हम्मीरभूमीरुहप्रस्वेदप्रभवं समर्पितवती मातेव कौतुहलात् ॥ ७० ॥

सन्तापं यत्प्रतापस्य, तुरुज्जैरसहिष्णुभिः । आपादमस्तकं चक्रे, भ्रवं वासोऽवगुण्ठनम् ॥ ७१ ॥

रिषुलीनेत्राम्भोधयरयनदीभागुक्यथा, विशामीशो भीमः समभवदुदाचास्तदनुजः ।

अलङ्घार्थिस्तोमः पुरन्तु विभक्तार्थिषु फलप्रदेषु प्रद्वेषं विरचयति दानैकरसिकः ॥ ७२ ॥

संलीनानामनुतटवनं तीरविश्रान्तनीरसीतुल्यानां यदरिषुद्धां दिषु रेजुर्दुखानि ।

उस्कलोलः सह बहुविष्वेव रत्नाकरोऽयं, रात्रौ रत्नान्यतनुत वहिः सोमनामानि मन्ये ॥ ७३ ॥

आमां धाम कूमारपालधरणीपालप्रसादास्पदं, चौलुक्यो धवलाङ्गभर्युरुमितिः श्रीभीमपलीपतिः ।

अर्जीराजन्त्रोपे व्यधस्त नृपतिं मामेतदीयः पिता, मत्तैवं लवण्यप्रसादनृपतौ क्षमाभारमेष व्यधात् ॥७४॥

१ 'र्गीलमवैर्यदी' मुद्रिते ॥ २ 'व्यधाय' मुद्रिते ॥ ३ 'क्षमापल' मुद्रिते ॥ ४ 'यो व्यध' मुद्रिते ॥

स्वस्त्रदण्डमधुनाम्भसि येदपास्त-चन्द्रावतीपुरपती विदिताय ममौ ।

चक्रांश चक्रमवनेरथ पूर्णमर्जोराज्ञस्य तस्य तनयो लवणप्रसादः ॥ ७५ ॥

पोरोरप्यविलङ्घनैरतिपनै रीणाऽप्यरिणामहो । राजिर्वाजिविजित्वरत्वरमतिरिच्छस्य वस्याऽऽहन्ते ।

स्वामास्वकमर्कमर्मरवानाकर्णभन्ती गता, प्राणत्राणवनावनावपि भिया मिशा न विश्वाम्यति ॥ ७६ ॥

कोपाग्निज्वलितास्तटस्थवृक्षारविस्फारिता, निर्भग्नाश्वरणेन काचकुतप्राया निकाया हिशम् ।

तदुच्छीर्तिविवद्वज्ञवस्त्रीचक्रेण चक्रेऽम्बरं, इयाम यस्य यशः प्रयोगिरभितः प्रक्षालितं निर्मलैः ॥ ७७ ॥

कि वर्षो लवणप्रसादनृपतिः ? पाणी कृपाणच्छलं, कालं बालमहो महोभरजितावादायं सुरादपि ।

यो मुष्टिग्रहलालितं प्रतिपदं कोपारुणः कम्पयन्, दिग्नेता रिपुमुण्डमोदकचैरहृषी रुचं नीतवान् ॥ ७८ ॥

नताशेषद्विविक्षिपकृतपूजः प्रतिपदं, तनूजस्तस्याऽस्ते भुजगजगदीशद्वियशः ।

अधीशो धीराणां ध्वलकुलधौरेयधवलः, श्रियां सौंखं धीमान् ध्वलचरितो धीरधवलः ॥ ७९ ॥

देशोऽरप्यपदेशो नगरमगरसा कन्दरा मन्दिराली,

तूली धूलीनिवेशस्तुणभृतकबरीधानमेवोपधानम् ।

कायच्छायाऽनुग्रही प्रतिदिनमशनं कन्दमूलं दुकूलं,

वल्कं दारिद्यकलं सचिव इति शुचिर्यद्विषां राज्यलक्ष्मीः ॥ ८० ॥

न कि स हरितुस्थतास्तुतिषु लज्जते ? यज्जितैररातिनिवैर्हमहागिरिगुहागृहैकस्पृहैः ।

विजित्य मृगवैरिणो निजपुरे नियुक्ताः स्वयं, गृहोपवनभूरुहां विरचयन्ति रक्षां किल ॥ ८१ ॥

दूरं दुर्लिलेन यस्य महसा शक्षेऽम्बरं त्याजिता, कीर्तिर्विरमहीभूतां तत्र भवद्वैलक्ष्यकृष्णच्छविः ।

गूदक्षमाधरकुञ्जपुञ्जसदनोत्सङ्गे तमश्छद्धना, चक्रे नाशविनाशमेव रुदतीवाष्पोपमैर्निर्शरैः ॥ ८२ ॥

अन्तर्व्योमं श्रवन्ती मधुरमधु विधुच्छद्धशुभ्रच्छदं दि-

कपत्रं नक्षत्रलक्ष्यच्छलजलकणिकं भानुमद्धापरागम् ।

आन्तर्ध्वान्तद्विरेफव्रजमजरगिरिव्याजकिञ्चलकमेत-

लीलां नीलाम्बुजस्य श्रयति वियदहो ! वद्यशस्तोयराशी ॥ ८३ ॥

अप्राप्ताद्वाशुगुणां युवति नितम्बस्तम्ब-स्तनस्तवकभारभृतोऽहसन् याः ।

प्राप्तामु यस्य पृतनामु पुरे रिपूणां, तास्त्रासकाललसिता हसितास्तयाऽपि ॥ ८४ ॥

प्रतिदिनमपि रौद्रैर्यस्य तसः प्रतापैरिति समिति समेतः संप्रविष्टोऽसिद्धे ।

जिगमिषुररिवर्गः स्वर्गमध्ये तडांगं, हिममयमिव मेने भानुमानन्दमम्नः ॥ ८५ ॥

यस्य न्यज्ञितचाप्यचापलचलजाराचवीचीचयव्यस्तत्रस्तसमस्तसैनिकजनव्यालोकशोकाकुडः ।

त्वेदस्त्वेदमयं पथः कणगणं भाले दधुर्भिरुषु, व्यक्तं मौक्तिकपद्मवन्धनमिव प्रत्यधिष्ठवीभुजः ॥ ८६ ॥

कुदे युदेषु यस्मिन् रिपुनृपनिकरः केशव-व्योमकेश-

ब्रह्मादीमां पदाब्जैरपि मनसि धूतै रक्षितो न क्षतेभ्वः ।

रक्षास्त्वान्मात्मकमक्षमल्युगप्राप्तवेगप्रसादा-

देताम्भो देवताम्भः कथमिव भुवने नाविकोऽभूत् प्रभावैः ॥ ८७ ॥

यस्तद्वाक्तुमिभूत्यविग्रहत्प्रियलक्षोऽिनीपञ्चर्वत्यद्योमहीरुहमहो ! निर्मूलमन्ती द्विषाम् ।
तेषामेष महोदयानलमरं शान्तिं नयन्ती यद्यौ, शुक्रामण्डलमण्डिताऽम्बुधिमात् तेनैष रत्नाकरः ॥८८॥
यद्वैर्मण्डलकुण्डलीकृतधनुः प्रोद्धीनकाण्डावलिन्यासश्चासपरा: परं प्रियतमा नेशुद्धिषां वक्षसुः ।
तासामप्युरसो रसोत्तरलसदुःस्थातुराणामयं, कन्दर्पः करकोटिकुट्टनदराद् दूरेण तूर्णं यद्यौ ॥८९॥
प्रत्यक्षाकारस्त्वच्छुद्धयुक्तदीर्निः सृतः श्वामकान्तिः, सर्पन् सर्पश्चियमकलयद् यस्य पाणी कृपाणः ।
यं व्यालोक्य प्रसुमरवशोराश्चिनिर्मोक्भाजं, द्वेषिक्षोणीपस्त्रिउद्महोदीषकः प्राप शान्तिम् ॥९०॥

युद्धपर्वणि कदापि न हृष्टं, यस्य पृष्ठमसुहजिकुरन्वैः ।
 सप्रतिज्ञमिव वीक्षितुमुत्कैस्तैश्चिरादनुचरत्वमभाजि ॥ ९१ ॥
 कुण्डलप्रतिभितस्वभुजाभ्यां, यश्चतुर्सुज इव प्रतिभाति ।
 चारुचक्रमनुबन्ध दधानो, बाणयुद्धजितकामविपक्षः ॥ ९२ ॥
 यत्पदाम्बुजयुगं रणधूलीघूसरं चिकुरमार्जनिकाभिः ।
 मार्जयन्ति विनता रिपुनार्थः, श्रीनिकेतमिव हस्तधृताभिः ॥ ९३ ॥

यद्वानप्रभवग्रमूतकनकप्रागभारसारस्फुरन्नेपथ्यप्रचयप्रकमिपतरुचः प्रेक्ष्य द्विजानां प्रियाः ।
 विन्ध्योल्लासभयाद् घटोद्भवमुैनेर्योऽप्युपेतो न यलोपामुद्रिकया तिरस्कृतिगिरा तस्मादुपाळभ्यते॥९४॥
 यस्मिन् दाननिदानकाश्चनचयस्मेरत्करे कणिकोचालस्तालदलं न वाङ्छति जनः प्राणप्रियाश्रीतये ।
 तस्मान्मूलपथेऽस्ति फलगलम्बैरेयसिकोलसत्तृष्णाभिस्तृणराज एष समशूत तथ्याभिधानस्ततः ॥९५॥
 अमृग्निप्रतिविभ्वतोरेणदलं प्रौढप्रतापच्छलप्रोद्यहीपमद्ब्रह्मुभ्यशसा लितं सुधास्पद्धिना ।
 पश्चासश विभाति वीरधबलक्षोणीशसङ्गं पुरो, युद्धकुद्धविरोधिरोधिपरिस्खाविस्फारधाराजलम् ॥९६॥
 उपार्जिं विभुताऽद्वृता वसुमैती च नीता वशं, क सम्प्रति महामतौ धृतभरे भवेयं सुखी ? ।
 अनेन गदितैरिति स्फृटसभाजनैर्भजनैः, श्रियाभिति सभाजनैः शशिविचारमूचे वचः ॥ ९७ ॥

परस्पारवंशवर्णनम्

वंशोऽयं प्रथितोऽति: प्रभवति प्राग्वाट इत्याह्या, पुण्यः पुण्यसुधारसेन शुचिना सोद्रेकसेकक्रियः ।
दिव्यामम्बरलम्बिनीं सुचरितप्रासादमासादयन्, कीर्ति केतनकौतुकेन तनुते यः स्वर्धुनीस्पद्धिनीम् ॥९८॥
अच्छिद्वो यदि तत्कृतो गुरुगुणध्वंजिर्जलस्तत् कुतस्तेजस्वी यदि धीमतां हृदि गतशूदामणिधेत् कुतः? ।
वंशोऽस्मिन्नजनिष्ठ विष्णुपत्रमल्कारीति कीर्तिप्रसादाभ्यो मौक्तिकरलवाङ्मानवशीमणिहस्तशब्दयः ॥ ९९ ॥

चप्पप्रसाद् इति तस्य सुतस्तोऽभूद्, यत्कीर्तिभिर्वलितेऽम्बरभित्तिभागे ।
 लीलां लङौ लिपिरथस्य रथाङ्गवन्धोः, क्रीडारथः प्रकटमेकरथाङ्गदोभी ॥ १०० ॥
 समजनि जिनसेवानित्यहेवाकवृत्तिः, प्रगुणगुणगणशीस्तस्य कान्ता जयशीः ।
 जगति धनसमोग्यिः कश्मले मानसान्तः, किञ्च विलसति अस्या; शुद्धहंसो विवेकः ॥ १०१ ॥

१ पश्चिमिदं उद्यप्रभीवकल्पालस्तुतो वष्टुपयत्यगाऽपि विषयते ॥ २ ऊतिग्रियाः सुविदेते ॥ ३ मुखिर्योऽन्तः ॥ ४ तापोरुद्युक्तयोऽपि भविते ॥ ५ तीव्रं तो वज्रं क्षां ॥

प्राणीको विनियोग द्वितीय विनाशकीः ।

સુરતાનુભોપસુક્ષમાવિભો નયમૂર્ખમૂ

એ ભીમાનુદ્ધરાચોજનલાચિમેન્યે દ્વારાનો જને, અરૂધ: કૃતમસમુદ્ધમિતાશૂર: કથ્ય વર્ણાતે ॥

अन्योन्यवितानसंस्थानीय व्योमचक्षुले पश्चात, तेजःकीर्तिमिश्रेण चक्रमिथुनं संयोजयामास दत्ता १० दृष्टि

आता वास्तवन् इब चिकां तस्य निःसीमकीर्तिस्तोमः सोमः समजनि जनालोकनीयः कलीभान् ।

देवा हवेष्विव जिनपतिमनसे मानसकाद्, वस्यावश्य नृपातेषु पातः सिद्धराजो राज ॥१०॥

विश्वानन्दकरः सदा युक्तचज्ज्यूतपूतमाति; सामः काठीप यावत्राचत्रावकसद्वद्यमाति:।

चक्र मायणपाणशुक्लकृहरयः स्वात्माष्टवज्यमात्करनमल शुचं यशा दिक्षामनाभूषणम् ।१०५॥

एतस्य विकसद्भासामस्याज्ञानं बलमा । सात्राऽभूतनवाड्यषा, न कुशालवसन्मातः ॥१०॥

आशाराज्ज इति व्यराजयदथ द्विमासपूर्णमासपृष्ठल-

क्रीडासन्वुरपश्यतोहरयशःस्तोमेन पुत्रस्तयोः ।

ਈਮਾਨ् ਸੋਮਸ਼ੁਦਕੋ ਨਿਜਭਵੇਤਮ੍ਬੋਧੀ ਗਿਰੀਆਨ् ਗੁਰੂਨ् ,

सेतुकृत्य तिरोदधे स्वकुलजाहङ्कारमुष्णव्युतः

प्रकरमकरोल्लोकनिर्माणकर्मालङ्करणीयो विधिरधिगतः सोऽभुजन्माङ्गजन्मा ।

तदपि विजितं यो विचिन्त्येति चिरे, भक्तिं धीमानकृत जननीपादयोरादरेण ॥ १०८ ॥

दत्तालोकेऽर्थिलोके सुरसुरभिरिव आजते यस्य वाणी,

चेतोदृष्टिश्च चिन्तामणिरिव फलदः कस्यशास्त्रीव पाणिः ।

स्तुत्योऽसौ कस्य न स्याद्भरगिरिसमः सुर-सोमप्रसर्प-

तेजःपुजामितश्रीर्लसितसितयशोदम्भजम्भारिकम्भी ॥

तस्य ग्रिया शुद्धमधुष पिनाकपाणेदेवी क्रमारजननीव क्रमारदेवी ।

इन्दः सदा रिपुरजीयत पङ्कजश्रीसर्वस्वदानमुदितेन मुखेन यस्याः

गोवर्णेकारा कृष्णदक्षपात्रजश्चेपीतिन्द्रतसमित्यद्वत्सिक्षिगोदचन्द्रश्चिः।

अशहिभविताशन्तयेभवाधः करभागीशी या सकामनिर्मलतिवाप्नियामिक्तिशक्तिर्थम् ॥ १११ ॥

अवार्तनया नपाहितम्: कंसरिदोर्बिकम् गोदावर्य इवोऽजल्ल दहितः सम प्रसन्नात्मयोः।

आत्मदावज्ञानं अदीयवदैत्येष मध्यादीषिति बृद्धस्पर्द इवामिलार्कम् गुरुत्वेऽप्यगत्योदयत् ॥ १३ ॥

स्वामीपर्याप्त इति ब्रह्मित्यातिकृष्णः सत्यमिथानोऽम्बवत् गच्छे शशकोपविषममग्रवासीदन्तः स्मः ।

१०८ विष्णु राम कुरुक्षेत्र विजय, तसे राजा विश्वामित्र विजय

१ इति राष्ट्रामरु उद्यमे प्रभावत्तमानवल्लता सतीषशाततमपयडाप दृश्यत ॥ २ द्वृष्टि मुद्दुः कृत्वा मात्रकलन-
मित्वं चिकित्सामो चिकित्सिणीप्रसादम् उद्यमसीयस्त्वायालक्ष्यते ॥ ३ द्वृष्टम् समिते ॥ ४ अः शीलोद्धः द्वृष्टम्

ना जिर्दिष्टं पाठमेहैन प्राचीनकेखसंग्रह भाग २ गत ४३ संख्याविरलारस

ग्राम इति सत्यविदिकरः सत्याभिवानोऽभवत्,

आता यस विद्यानिषान्विकसनम्

कर्त्ता भासुरकोपस्थितमरवदालीदग्धः स्मरः,

सर्वांगं सुभगोऽप्यमित्यनिमिषलैण्डेन बास्त्वे हस्तः, त्वचस्त्वा भूवलयं सुरेन्द्रसदसि कीरदात्मत्वं निर्मिते ॥१३३॥

महुदेव इति देवताविषयीरम् तदनुशर्विभूतिशः ।

धर्मकर्मविषयावशी यशोराशिदासितसितध्युतिध्युतिः ॥ १३४ ॥

तेऽः सद्गुतिकावभाजि चरणे स्मेरास्थपद्महमकीडत्परमेष्ठिवाहनतया प्राप्तः प्रतिष्ठां पराम् ।

स्वेलभिर्भक्तानसेन समयं कापि अथन् पद्मिलं, विष्णे राजति राजहंस इव यः संज्ञुद्धपद्मयः ॥१३५॥

आत्मै तस्य सुधारहस्यकवितानिष्ठुः कनिष्ठः कृती, बन्धुवर्वन्धुरबुद्धिबोधमधुरः श्रीवस्तुपालाभिषः ।

ज्ञानाभ्योरुहकोटे अभरतां सारङ्गसाम्यं यशः सोमे शौरितुलां च यस्य महिमकीरोदधी सं धी ॥१३६॥

हैस्तायन्यस्तसारस्वतरसरसनप्राप्तमाहात्म्यलक्ष्मी-

स्तेजःपालस्ततोऽसौ जयति वसुभैः पूरयन् वक्षिणाशाम् ।

यहुद्दिः कल्पितोरुद्धिपगहनपरक्षोणिभृद्धिसम्य-

लोपमुदाविर्येश स्फुरति लसदिनस्फारसश्चारहेतुः ॥ १३७ ॥

तदिमं मौलिषु मौलि, कुरुषे पुरुषेश ! सकलसचिकानाम् ।

क्षितिधव ! तत्र दोषोर्विष्णोरिव भवति विश्रामः ॥ १३८ ॥

श्रुत्वेति भुदितहृदयः, पुण्यप्रागलभ्यलभ्यसभ्यनिरम् ।

अनयोरनयोजिज्ञातयोर्धरणिधवं व्यवित धरणिधवः

सोऽयं प्रस्त्यातकीर्तिः सुजनजनमनःपद्मोर्धोषधामा,

श्रीतेजःपालनामा स्फुरति भतिलतास्थानक्लृष्टहृष्टः ।

पाठारम्भाय लक्ष्म्या दुहितुरिव दधत् पद्मिकां वर्णवर्णीं,

मुक्तादमेन गम्भीरिमगरिमगुणैर्यः पयोराशिरासीत्

दिँयात्रोत्सववीरवीरध्वलक्षोणीधवाध्यासितं,

प्राज्यं राज्यरथस्य भारमभितः स्कन्धे दधल्लिलया ।

भाति आतरि दक्षिणे समगुणे श्रीवस्तुपालः कथं,

न शाध्यः स्वयमश्वराजतनुजः कामं स वामस्थितिः ? ॥ १२१ ॥

अस्तीतिप्रसरैः परस्परपरिस्पर्द्धेऽर्द्धवर्द्धिष्णुभिर्दूरं दारितमेतदम्बरमिह अष्टं सुवो मण्डले ।

राशीभावचरिष्णुमीन-मकराश्चाकीर्णमर्णः पतिव्याजादजनमञ्जुलच्छविन कैः प्रत्यक्षमुलेक्ष्यते ॥ १२२ ॥

नीता वशं विषमवारिषुणेन वाहुस्तम्भे धृता कनकशृङ्गलिङ्गाभिषोगात् ।

श्रीर्येन सिन्धुरवधूरिव भूरिवर्षादानप्रमोदितघनोदितमार्गणालिः ॥ १२३ ॥

१ श्रीहो तस्तो निः क्ष० ॥ २ पद्मिदमुद्यप्रभनाम्ना प्राचीवलेष्टुर्मह भाग ३ मध्ये ४५ तमगिरिला-
रसत्कशिलालेष्टे इत्यते । पूर्वार्थं च तत्र पाठभेदेन वर्तते—रक्तः सद्गुतिभाववालिः वरये श्रीमलुदेवोऽपरो,
यज्ञाता परमेष्ठिः ॥ ३ पद्मिदमुद्यप्रभनाम्ना प्राचीनलेष्टुर्मह भाग ३ मध्ये ५३ तमगिरिलारसत्कशिलालेष्टे
वद्यमपक्षतया वर्तते ॥ ४ विषप्रस्त्य स्फुरं गिरिलारविलालेष्टे ॥ ५ “कोश्युज्ञा” शुद्धिः ॥ ६ “कम्भुक्षस्त्वा”
क्ष० ॥ ७ पद्मिदं उद्यप्रभनीववल्लुपालस्तुतौ एकादशप्रयत्ना, प्राचीनलेष्टुर्मह भाग ३ मध्ये ५३ तमग-
मिरिलाम्ना द्वतीयप्रयत्ना च वर्तते ॥ ८ धुर्ये आ० उद्यप्रभनीयवस्तुपालस्तुतौ ॥ ९ “कम्भुक्षस्त्वा” शुद्धि० ॥

शामि स्वर्णमित्तैर्ल विथवचसि शुभासानने शामिनीर्ष,
कण्ठे वैकुण्ठशङ्कुं शुभशिस्वरयुगे जंग्मजित्कुम्भिकुम्भौ ।
पुण्योत्पत्त्वस्य वस्य स्वयमसमचमलकरित्पत्त्व पाणौ,
प्रस्त्रक्षं कल्पवृक्षं जगति जनयत्प्रातुरी भातु भातुः ॥ १२३ ॥

लावप्यद्वकूपरूपसुभगे निःशेषचेतस्विना-
मन्त्रवासिनि वाग्वशंवदमधी राजप्रसादोज्ज्वले ।
एतस्मिन् शुभनोमनोरमगुणैर्विश्वं च विश्वत्रयं,
वश्यकुर्वति सोऽपि सम्प्रति पदभ्रष्टो मनोभूरभूत् ॥ १२४ ॥

अस्मोदभ्रमवाजि दुर्जनजने इथामायमानद्युतौ,
तन्वाने शुभनेषु दुस्तमतमःस्तोमं कुकीर्तिच्छलात् ।
लब्धोषश्चश्रमरमसार्गणमुखस्यातश्रुतिद्वारत-
स्तुर्णं शानसमानशे शुभनसां हंसोज्ज्वलैर्यद्गौः ॥ १२५ ॥

महात्म्यलहरित्करित्थरपदं शुभप्रभं भूमिभृदभस्तमभरं नभःसुरसरिद्वयाजध्वजभ्राजिनम् ।
तन्वाने शान्तीतले तुल्यशःप्रासादमासाध यश्चिन्तातीतफलपदोऽवनिजने देवोऽस्तु सेवोन्मुखे ॥ १२६ ॥

ईन्दुर्बिन्दुरपां सुरेश्वरसरिद्विणीरपिण्डः पति-
भासां विद्वमकन्दैलो विभु नभः श्रीवत्सलक्ष्मा किल ।
कैलास-त्रिदशोभ-शम्भु-हिमवत्मायास्तु शुक्लाकल-
स्तोमः कोमलवालुकाऽस्य च यशःक्षीरोदधौ कौमुदी ॥ १२८ ॥

कौमुदीकरे शुरजति मौढोर्मिभिर्नृत्यति, क्षीराढ्यौ कलहंसिकाकलकर्णिकाजले गायति ।
इथामाकाशुकपारिपार्थकयुतो विश्वत्रयीसम्मदकीडानाटकसूत्रधारपदवी यत्कीर्तिपूरो यवौ ॥ १२९ ॥

उद्भूतप्रतिभावुतस्य मतिमञ्चन्द्रस्य चिदूपता-
माहात्म्यं स्तुमहे किमस्य निखिलग्रन्थाभिधमन्थास्मनः ? ।
दुःस्थानां प्रतिभूर्णतां च विदवे भालस्थलस्थापिता,
दक्षपातैर्विद्वैर्यै येन कविता काऽपि त्रीलोकीकवे: ॥ १३० ॥

मतकीर्तेः स्वैरमैरावणमदसमदआन्तभृकालिगीर्त-
स्तर्जन्दज्जन्मनिनादस्फुरदुरुमुरजोलासितायाः सितायाः ।
नित्यं नृंचं सुबन्त्याः शिरसि सुरगिरेश्वारुचारीप्रचार-
स्पष्टप्रशष्टहारावलिगलितमणिभ्रान्तिमायान्ति ताराः ॥ १३१ ॥

१ 'मजित्कु' शुद्धिते ॥ २ 'प्रश्नमित्कुद्यप्रयनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनकेखसंग्रह भाग २ मध्ये ५३ संख्य-
यिरितारस्त्करित्वाकेवे सप्तमपथत्यक्षेष्व वर्तते ॥ ३ 'न्दलः' किल विभुः श्रीवत्सलक्ष्मा नभः निरितार-
किलाकेवे ॥ ४ 'इत जारभ्यं श्रीर्मिपद्यानि उदयप्रभीयवस्तुपालस्तुतौ क्रमशः १३-१२-१४ पदसम्बन्धे वर्तते ॥
५ 'श्वर्णद्वयं उदयप्रभीयवस्तुपालस्तुती ॥ ६ 'भृतीव विदधौ या' शुद्धिते ॥ ७ 'व कालव लिपिर्वैर
निर्देशीकरेः उदयप्रभीयवस्तुपालस्तुती ॥ ८ 'मीर्तेः स्त्र॒' शुद्धिते ॥ ९ 'जम्बूद्रक्षविभिरित लसुल्लासि'
उदयप्रभीयवस्तुपालस्तुती ॥ १० 'इत्यं स्त्र॑' उदयप्रभीयवस्तुपालस्तुती ॥

अस्मद्दोत्रैकमित्रं त्वमसि निशि शशी कीडया पीडयेतः,
शङ्के पहुँचे हैः श्रीरिति गदितुमिव मीतियुक्ता नियुक्ता ।
तेचस्या यस्य ताप्रः कुपित इव करो दानशोभी यशोभि-
भृत्यैश्चके तथेन्दुं त्रिजगति स यथा लक्ष्यते नेत्रितोऽपि ॥ १३२ ॥

जाता कृष्णपदात् प्रिया जलनिधेरुष्कर्मभिनिझगा,
बहुवं परिभाव्य यत् किल दधौ झम्पां पुरा वै भवे ।
तन्मन्येऽस्य कराअसम्मृतजनिर्भूत्वा गुणश्रेयसी,
कीर्तिः स्वातिमवाप्य काऽप्यभिनवा गङ्गेयमुज्जृभते ॥ १३३ ॥

भैरुर्बेषमयं विधाय कितवः कोऽप्येति मासुन्मना-
स्तेनामुं विजये ! निवारय यतो मे नीलकण्ठः प्रियः ।
जस्यन्तीति सती यदीययशसा शुभ्रीकृते सर्वत-
सैलोक्येऽपि पिनाकिना सशपथं प्रत्यायिता पार्वती ॥ १३४ ॥

श्रीराज्ञिर्घुठति क्षितौ फणिपतिः स्फारस्फुरत्स्फुर्तिर्गङ्गा निन्नमुखी करोत्तलिवधूलौकै रवं त्रैमयै
अन्तः सन्ततमङ्गपङ्गमिष्टत्वन्द्रोऽपि तदोपितम्लानिर्दानिवरस्य यस्य यशसा तूर्णं हृते त्रैमयै
प्रतीता नीतीनामुपरि परिपाकेन रमते, मतिदेवे सेवा सकलकरणैकान्तकरणम् ।
अहो ! यस्यावश्यं शठरिपुहठमाणहरणं, रणं दीने दानं सपदि विपदेकक्षयलयः
कोपाटोपपैः पैरेश्वलचमूरज्जतुरज्जक्षतक्षोणिक्षोदवशादशोषि जलघिर्यैः स्तम्भतीर्थं पुरे
स्वेदाम्भस्तटिनीधटाधटनया श्रीवस्तुपालस्फुरते जस्तिगमगर्भस्तितसत्तुभिस्तैरेव सम्पूरितः ॥ १३५ ॥
वः प्रत्यर्थिक्षितिपतिकरिच्छेदमेदस्विशक्तिर्मुक्तागौरैरवनिवलयं कीर्तिपूरैरपूरि ।
तं बलगन्तं युधि विषुरयामास संग्रामसिंहं, निखिलो यत्करपरिचितः कृष्णसारोऽपि चित्रम् ॥ १३६ ॥

स्वातः सङ्क्रामसिंहो वा, शङ्को वा सिन्धुराजसूः ।
संयुध्य भज्यमानोऽस्य, युद्धे सत्याभिधोऽभवत् ॥ १३७ ॥

भग्नः शङ्को इति स्वरैर्दिविषदामाक्षिप्य लक्ष्मीमुखं,
लक्ष्मीदा : किल शङ्कलक्ष्मणि करे चिक्षेप चक्षुश्वलम् ।
कीर्त्या लुप्तमवीक्ष्य शङ्कममलं यस्य स्वयं विस्मयं,
गच्छन् कश्मलसिन्धुराजतनुभूकीर्त्या कृतार्थीकृतः ॥ १३८ ॥

असौ शीर्तीः स्वका मन्त्री, कामं श्रीणि जगन्त्यनु । वस्तुपालोऽरिसामन्तयशसामन्तकोऽक्षिपत् ॥ १३९ ॥
पैद्याभिरामहस्तेन, महस्तेन प्रतन्वता । रविणेव तमःस्तोमः, समस्तो महसा हृतः ॥ १४० ॥

१ तत्त्वास्या यस्य नामः उप्रिते ॥ २ गुणिप्रेयसी कां० ॥ ३ पद्मिदं उदयप्रभीयवस्तुपालसुतौ
तंवमवेष्यतयाऽपि वर्तते ॥ ४ "कृते निर्भरं, त्रैलो" उदयप्रभीयवस्तुपालसुती ॥ ५ पद्मिदं उदयप्रभीयवस्तुपालसुता निर्दिष्टं
आशीनकैवल्यसेव्य भाग २ मध्ये ४३ संख्याग्निरिनारसत्कृष्णालोके द्वितीयप्रदत्यगाऽपि उदयते ॥ ६ "मालितवा
ग्रहसु" भुविते ॥ ७ पद्मिदं उदयप्रभीयवस्तुपालसुतौ आषाहशपदयत्वा वर्तते ॥

संवेदितेन मणिमणिडतशालकुम्भकुम्भतिवा शुचिनसेन करद्युयेन ।

मौलिकितिवेन जिननाथसनाथमध्यप्रासादवद्विनमुखे क्षणमीक्ष्यते यः ॥ १४३ ॥

यस्तिव्यं मुख्ये जगज्ञशुचेरेन्दुमन्दाकिनीसम्पकादपि यत्र दुर्ब्रह्मतमः सम्बन्धवन्धुकृतम् ।

आकाशेन तत्प्रमुच्यते चिरं यतीर्थयात्राराजः, स्नात्राहश्यतदात्वनिर्मलमिहत्कीर्तिशुतिषोलिमा ॥ १४४ ॥

मा गूम्बद्वनेऽपि दुस्तरतमः स्तोमस्तथा मासम् भूज्ञेऽपि बुसदां सदाविकसिते समीक्षनं मर्त्यवद् ।

इत्युद्गामिरजः समुच्छ्रूयभयाद् दृम्पोलिपाणिर्महीमम्पोभृद्विरसीषिचत् प्रतिदिनं यतीर्थयात्रोध्यमे ॥ १४५ ॥

बहिकुम्भ-कुलाद्वि-कोल-कमठ-व्यालेश्वरोः, खेचराः,

कष्टादेव दधुस्तलं तदवनेविष्णुश्वतुर्भिर्मुजैः ।

तेत् स्वाक्षरमुजेन वीरधवलो मुद्राकुलीलीलया,

तेजःशालकरस्तदेव सबलः स्वातो बलिम्पोऽप्यसौ ॥ १४६ ॥

सहोऽधिरोहणिह रैवताद्रौ, वस्त्रापथस्थानतपोधनानाम् ।

ददौ यदौचित्यधियाऽपि किञ्चित्, कालेन नीतं करतां तदेतैः ॥ १४७ ॥

यात्रापर्वणि रैवतक्षितिधरे प्राप्तोऽत्र मन्त्रीधर-

स्तेजःपाल इदं निशम्य जनतोऽथाऽऽह्य तांस्तापसान् ।

सार्द्धं द्रम्पसहस्रयमुचितं दत्त्वोत्तमर्णवजात्, ॥ १४८ ॥ युग्मव् ॥

किञ्चैतेन गुणैः शशाङ्कशुचिभिः कृष्टः सुराष्ट्रापतिः,

पित्रोः पुण्यकृते जिनेश्वरकरं श्रीमीमर्सिंहोऽशुचत् ।

तीर्थरक्षकहेतवे तु कृतिना देवादितो दापिता,

सेयं पञ्चशती सुराष्ट्रपतये तस्मै पुराऽम्बर्यनम् ॥ १४९ ॥

बमूव गोवैकुण्ठर्गीयानेषामशेषागमपारहश्वा ।

नागेन्द्रगच्छे स महेन्द्रसूरिमहेन्द्र-नागेन्द्रयशा मुनीन्द्रः ॥ १५० ॥

कर्मसाक्षिभवतापीडनं, क्रीडितं शमरसौघपलवे ।

क्षालितास्तिलमद्य स्य दन्तिवद्, यं त्यजन्ति खलु कश्मलालयः ॥ १५१ ॥

पन्था ग्रन्थाटवीनां मुनिरजनि ततः कोऽपि कस्याणवह्याः,

कन्दः कन्दपर्दपद्मवनदहनश्रान्तिसुः शान्तिसूरिः ।

प्रत्यग्रस्तुष्वदुग्धार्थवनवलहरीकस्पजस्येन यस्मिन्,

जल्याके कोविदेशो मतिमकृत कृती को विदेशे न गन्तुम् ? ॥ १५२ ॥

आनन्दचन्द्र-ऽमरचन्द्रस्त्री, तत्पट्टलक्ष्मीशुचिभूषणाभौ ।

अन्तःस्फुरद्वलसंपत्त्वमूतगुरुकमाम्पोजनस्तावमूताम् ॥ १५३ ॥

१ पश्यमिदं उद्यममीमस्तुपालस्तुतौ एकोनविशपथतयाऽपि वर्तते ॥ २ 'जेषु युसदां सदाविकसिते-
प्राप्तिपदं' उद्यममीमस्तुपालस्तुतौ ॥ ३ 'मुक्तय' का० मुक्तिते च ॥ ४ 'प्रतिपदं' य० उद्यममीमस्तुपाल-
स्तुतौ ॥ ५ 'प्राप्तिपदः' का० ॥ ६ 'आकाशम्' मुखेन शुद्धिते ॥ ७ 'प्राप्तोऽत्र' मुक्तिते ॥

दन्ती वर्षमत्तद्वय दुरितशोणीकृच्छेक्षे,
मच्छव्योगतस्त्वं सोम-तरशी मोहान्वकारव्यये ।

सम्बन्धवक्षितिपस्य दुर्दमरिपुर्वंशे मुज्जीक्षासना-

रप्पस्थौ प्रतिवाविकुम्भिदल्ले वौ व्याघ-सिंहौ शुहौ ॥ १५५ ॥

शीमास्ततोऽजनि सुनिः स तदीयपहुश्रीपहुन्वसुकुटो हरिमद्वारिः ।

एकत्र सोम-शतपञ्चगुणी मुखाये, शश्विष्वोषमधुरौ समासासद् वः ॥ १५६ ॥

नृणां अत्पदपश्योर्मुचि भवत्यौक्तव्येतुर्निर्भाल्यन्स्तरजोग्रजो चित्तुते शर्ववक्षेविक्षः ।

आषचे च नसेन्दुदीचितिभरः पश्चाकरोक्षासनं, स्तौमि शीहरिभद्रस्त्रिसुरोत्तस्याङ्गुतं वैसवम् ॥ १५६ ॥

जयति विजयसेनसूरिरूरीकृतसुकृतस्तद्यं तदीयपहुः ।

जितजगदपि मन्मथो न यस्य, व्यधित तनुप्रतिपक्षिनोऽपि तापम् ॥ १५७ ॥

इन्दुः पत्रावलम्बं व्यधित कुवलये दुर्मदात्मा प्रपेदैः

गैरिः पर्जन्यदन्ती व्यतनुत जगति स्तम्भभावं फणीन्द्रः ।

चिक्षेप क्षीरसिन्धुदिशि विदिशि तृणैः संयुतं वारिजातं,

यस्योद्दामप्रमाणे यशसि विस्तुमरे ते तु सन्तोऽप्यसन्तः ॥ १५८ ॥

यस्मादभ्युदयं भजेन्ननु जनो धर्मस्य तस्याप्यसौ,

दूराद् दूरतरं चरत्यनुदिनं संवर्धमानः श्रिया ।

दुर्दैवव्ययमानवैभवभरस्ताद्वक्षलक्ष्मीकृते,

तस्यैवामिमुखं हि धावति सुधाभानुर्यथा भास्वतः

दोपोन्मुद्रणमुदितेऽपि दिवसारम्भास्मितेऽपि स्थिते,

भाग्याभ्योरुहि निर्विशेषितमनःसन्तोषोषस्थितिः ।

अन्तः सन्ततधर्मनिर्मलमधुस्वादैकतानाशयः,

साधुर्माधुकरी विभर्ति विरलो वृत्तिं जनः कश्चन

आयुर्वायुहतोर्मिवत् तरुणिमा धूर्मिभ्रमत्कम्बुवत्,

कम्बुप्रसवदम्बुद्धुदकवलक्ष्मीलबोऽप्यन्वहम् ।

सधो त्रुद्धुदविन्दुमेदकणवत् तोषोऽपि दोषादिक-

कूरग्राहनिधौ कुर्कर्मजलधौ साक्षादिव प्रेक्ष्यते

ईहगूरुपगूरुपदेशविशदस्वाभाविकस्वच्छधी-

स्तेजःपालनिजानुजानुचरितः शीवस्तुपालः कृती ।

शुभ्रादभयशःप्रसूनसुभगश्रीवल्लिकन्दोपमां,

धर्मस्तानपरम्परां रचयितुं वर्तेतमासुधमम् ॥ १५९ ॥

१. परमिदं उदयप्रभीयस्तुपालस्तुती सप्तदशप्रथमतयाऽपि निरीक्ष्यते ॥ २. गर्जद्वयः शुभ्रादभयशःप्रसूनसुभगश्रीवल्लिकन्दोपमां एव उदयप्रभीयस्तुपालस्तुती ॥

मैल्लन्तीमिवनीमवेदय दुरितास्योधी नवं भूषण-
श्राम्भारं रचयाम्भकारं यैमसौ तीर्थेश्चैत्यच्छलाम् ।

तवैनःप्रतिद्वन्द्विनाशासुभगः मेषामृद्ग्रस्वनै-
र्वर्जन् विष्वजैर्यी जयत्वमुदिनं वर्मद्विपो मूले
स्तुत्यमनुष्टुत्यैवतमिहिदैवतचैत्ये प्रपञ्चिते येन ।

शुद्धारकीर्तिशब्दसूचिपाठी ॥ १६३ ॥
शुद्धारकीर्तिशब्दसूचिपाठी ॥ १६४ ॥
शुद्धारकीर्तिशब्दसूचिपाठी ॥ १६५ ॥

व्याघ्राय भवत्योविलमार्थतीर्थं, येनेन्द्रमण्डपमखण्डपदं व्याघ्राय ।
तस्मात्तुरःकरभूषाङ्गुत्तकुम्भशत्र्या, तीर्त्वा तमोजलमयन्ति जना जिनाग्रे

अस्मिन्नाभिखूवः प्रभोस्तनुभवश्चकी स चके पुरा,
चैत्यं श्रीभरतः परे तु सग्रहक्षमापालमुख्या व्याघ्रः ।

देवो दाक्षरथिः पृथग्सुतपतिः प्राग्वाटभूर्जांवडिः,
शैलमदित्यनृपः स वाग्भटमहामन्त्री च तस्योद्गुतिम् ॥ १६६ ॥

व्यातन्वशमरेन्द्रमण्डपमयं श्रीरैवत-स्तम्भना-
लक्ष्मारप्रसुनेमि-पार्श्वसहितं तीर्थेऽत्र शुद्धारये ।

प्राग्वाटान्वयवार्धिवर्धनविभुर्धात्रीशमन्त्रीशिता-
स्त्वाध्यः सङ्घपतिः सतां विजयते श्रीवस्तुपालोऽवुना ॥ १६७ ॥

किं चित्रं यदि वत्सवत्सलतया स्वच्छाइममूर्तिच्छला-
दत्राऽखण्डलमण्डपे सुरपुरादभ्याययुः पूर्वजाः ।

एतस्य प्रतिपन्नस्य नुपदवीभाजोऽपि येनाङ्गुत-
प्रीत्या वासमिह व्यधाद् विधिपुरं त्यक्त्वाऽपि वाग्देवता ॥ १६८ ॥

एषे काञ्चनपट्टिं जिनपतेरावस्य भामण्डल-
श्रीहुत्यं पुरतोऽपि सत्यपुरभूवीरावतारं मुदा ।

कुम्भान् पञ्च च पञ्चपातकतमश्चण्डद्युतीन् मण्डपे,
श्रीशुद्धारकीर्तिद्वन्द्वाननदवच्चके तडागं च यः ॥ १६९ ॥

चके च यो घबलके विमलाद्रिचैत्यं, पञ्चासरं च पुरि गूर्जरकणिकायाम् ।

तत्केतुकैतवकरद्वयनर्तनेन, शुभ्रप्रभां नभसि नर्तयति स्म कीर्तिम् ॥ १७० ॥

प्रतिष्ठाप्य च मन्त्रीशास्तीर्थेऽं शुचिसुशत्र्य । योऽशावतारतीर्थस्य, मन्दिरं विदधे हृती ॥ १७१ ॥

शासनदत्ते च, विदधे योऽर्जपालिते । तडागं सागराकारममात्यः प्रपया सह ॥ १७२ ॥

व्याघ्रात् श्रीवस्तुपालानां, नास्त्वयचिचेष्टिः । यः पापोवशशालानां, श्रेणि श्रीमानकारवद् ॥ १७३ ॥

१. व्याघ्राय उद्यग्नेऽपि विष्वजैर्यी एव विष्वातितमप्यत्तवाऽपि दद्यते ॥ २. वाग्देवते उद्यग्नेऽपि विष्वजैर्यी एव विष्वजैर्यी ॥

३. विष्वजैर्यी एव विष्वजैर्यी एव विष्वजैर्यी ॥

वेन स्तुत्यनकाधिदैवतजिनप्रासादसुकृत्य तं,
तत्तेने किमपि प्रपाद्यमपि क्षेत्रं गुण्डप्रभम् ।
यत् पश्यन्ति पुरो जिनेश्वरपदानुध्यानयात्राधना,
धीमन्तो निजमूर्तिकीर्तिसुकृतं च अद्वयाद्भुजा) उभरम् ॥ १७४ ॥

श्रीमालवेन्द्रसुभटेन दुवर्णकुम्भानुरारितान् पुनरपि क्षितिपालमन्त्री ।
श्रीवैद्यनाथसुरसञ्चनि दर्भवत्यामेकोनविशतिमपि प्रसम्बन्धवत् ॥ १७५ ॥
तत्रैव श्रीश्वरलक्षितवल्लभस्य, मूर्ति तदीयसुदृशोऽपि च जैव्रदेवता ।
स्त्रीयानुजस्य च निजस्य च महुदेवमन्त्रीश्वरस्य च चकार स मूरपमस्त्री ॥ १७६ ॥

नृत्यन्त्या व्योमरङ्गे क्रमकटकज्ञाणत्कारतारं द्वागङ्गा-
रङ्गाकाङ्गनादं सचिवकुलपतेर्वस्तुपालस्य कीर्तेः ।
खेदप्रस्वेदविन्दुश्रियमियमयते पद्मतिस्तारकाणां,
यावत् तावत् पताकाश्वलचलनविधि चैत्यमाला विधत्ताम् ॥ १७७ ॥

इमामकृत सद्गुरोर्विजयसेनसुरिप्रभोः, क्रमानुजरजोमृजा विमलमानसोङ्गासभृत् ।
प्रशस्तिसुदृशप्रभः प्रभवदद्वृतप्रातिभप्रभमावभरभासुरः सुकृतकीर्तिकल्पोलिनीम्
प्रसादादादिनाशस्य, यक्षस्य च कपर्दिनः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशाळिनी ॥ १७८ ॥

॥ समाप्ता सुकृतकीर्तिकल्पोलिनीसंज्ञकेयं प्रशस्तिः ॥

॥ कृतिरियं पण्डितपुण्डरीकश्रीमद्वृद्धप्रभस्य ॥

॥ सद्गुर्या ग्रन्थाङ्गं ४०० ॥ शुभं भवतु ॥

॥ लेखकपाठकयोऽथ कल्पाणमस्तु ॥

—●—५—●—

१ श्रीवैद्यनाथवरेश्वरनि दर्भवत्यां, याम् उमेशी सुमटवर्मनूरो वाहन ।

ताम् विशति द्विलिमतहतप्रसीद्यकुम्भानारोपयत् प्रसुवितो हनि वाहनारः ॥ भृत ॥

नरेन्द्रप्रसुवितो हनि वाहनारः ॥

द्वितीयं परिशिष्टम्

नागेन्द्रगच्छमण्डनश्रीउदयप्रभस्तुरिविनिर्मिता
वस्तुपालस्तुतिः ।

‘पीयूषादपि ऐशलाः शशधरज्योत्स्नाकलापादपि, स्वच्छा नूतनचूतमञ्जरिमरादप्युलसत्सौरमाः ।
वाग्देवीमुखसामसूक्ष्मिशदोद्भारादपि प्राञ्जलाः, केवान प्रथयन्ति चेतसि मुदं श्रीवस्तुपालोक्तयः ? ॥१॥
चेतः केतकगर्भपत्रविशदं वाचः सुधाबन्धवः, कीर्तिः कार्तिकमासमांसलशशिज्योत्स्नावदात्मुत्तिः ।
आश्वर्यं क्षितिरक्षणक्षणविधौ श्रीवस्तुपालस्य यत्, कृष्णत्वं चरितैरपास्तदुरितैलेकिषु मेजे मुजः ? ॥२॥
श्रीवस्तुपालमन्नीन्दोर्ब्रह्मः किं गुणगौरवम् ? । यस्य निष्पतिमानस्य, तुलनाथाः कथा वृशा ॥३॥

सूरो रणेषु चरणप्रणतेषु सोमो, वकोऽतिवकचरितेषु तु धोऽर्थबोधे ।

नीतौ गुरुः कृतिजने कविरकि यासु, मन्दोऽपि च ग्रहमयो नहि वस्तुपालः ॥४॥

मसृणघुसृणपङ्क्षर्मालपङ्क्षेषु लब्धा, विधिविहितकुर्वणश्रेणिकी याचकानाम् ।

विरचयति मुवर्णश्रेणिभूषामभीषां, भ्रुवमिति नववेधा वस्तुपालः सुमेधा: ॥५॥

युद्धपर्वणि कदाऽपि न हष्ट, यस्य पृष्ठमसुहृत्तिकुरम्बैः ।

सप्रतिज्ञमिव वीक्षितमुत्कैस्तैश्चिरादनुचरत्वमभाजि ॥६॥

शङ्खं शार्ङ्गधरस्य शेखरमणि शूलायुधस्य द्विपं,

वज्राङ्गस्य रदं परधधमृतः स्वर्लेकलीलाजये ।

उत्कर्षार्थितया विलुप्तु भटोः निःसीमधामा यशो,

नामाऽप्यस्य हहा ! जहार तु कुतो युग्म जरद्वक्षणः ? ॥७॥

सेवालन्ति पयः समुद्रति दिशामन्तेषु मध्येनमः,

सारङ्गन्ति शशाङ्कति धूंविधिने दानन्ति दन्तीन्द्रति ।

पुष्पस्तोमति पदपदन्त्यनुलतास्पण्डं सुधाकुण्डति,

श्वप्रान्तर्षुजगन्ति यस्य यशसि प्रत्यार्थदुष्कीर्तयः ॥८॥

भितुर्वेषमयं विधाय कितवः कोऽप्येति मासुन्मना-

स्तेनामुं विजये ! निवारय यतो मे नीरुक्णः पियः ।

२ पद्यमिदं धर्मभ्युदयदशमसर्गप्राप्नते, प्रबन्धकोषागतवस्तुपालप्रबन्धे षट्प्रष्टितमं च “एवं स्तुतः केनापि कविनो” इत्युल्लेखन निर्दिष्टं कर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्रबन्धकोषे वस्तुपालप्रबन्धे अष्टापद्माशतमं “काशित्” इत्युल्लेखनोळिकितं वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं शुक्रतकीर्तिकलोलित्यां ९१ तमम् ॥ ४ पद्यमिदं प्रबन्धकोषे वस्तुपालप्रबन्धे अष्टापद्माशतमं “काशित्” इत्युल्लेखनोळिकितं वर्तते ॥ ५ “टो विष्वैक्यामारं शुक्रतकीर्तिकलोलित्याम्” ॥ ६ पद्यमिदं शुक्रतकीर्तिकलोलित्यां १३७ तमम् ॥ ७ शुक्रतकीर्तिकलोलित्याम् ॥ ८ पद्यमिदं शुक्रतकीर्तिकलोलित्यां १३४ तमम् ॥

जस्यन्तीति सती यदीयमशसा शुश्रीकृते निर्भरें,
त्रैलोक्येऽपि पिनाकिना सञ्चयं प्रत्यायिता वार्षती ॥ ९ ॥

कराम्भोजं भेजे सततविततं यस्य कमला,
प्रियासागदागादनु दग्धमेता स्वयमसिः ।
यशः सुनुनूनं तदजनि तयोरप्रजकथा-
सदर्पः कन्दर्पद्विमवि रुचाऽधो व्यवित यः ॥ १० ॥

दिवैयात्रोत्सवीरवीरध्वलक्षोणीधवाध्यासितं,
प्राज्यं राज्यरथस्य भारमभितः स्कन्धे दधल्लीलया ।
भुवें आतरि दक्षिणे समगुणे श्रीवस्तुपालः कथं,
न क्षाध्यः स्वयमश्वराजतनुजः कामं स वामस्थितिः ? ॥ ११ ॥

गर्जकिर्बरकुञ्जे मुरजति प्रौढोमिभिर्नृत्यति,
क्षीराब्धौ कलहसिकाकलकलैर्गङ्गाजले गायति ।
श्यामाकामुकपारिपार्श्वकयुतो विश्वत्रयीसम्मद-
कीडानाटकसूत्रधारपदवी यत्कीर्तिपूरो ययौ ॥ १२ ॥

उद्भूतप्रतिभाद्भूतस्य मतिमर्घण्डस्य चिद्रूपता-
माहात्म्यं स्तुमहे किमस्य निखिलग्रन्थाद्विमन्थात्मनः ? ।
दुःस्थानां प्रतिभूतां च विदधे भालस्थलस्थापिता,
हृषपातैर्वितथैवं काचन लिपिरेन त्रिवेदीकवे: ॥ १३ ॥

यत्कीर्तेः स्वैरपैरावणमदसमदआन्तभूतालिगीत-
स्फूर्जद्वर्जामृदङ्गध्वनिभिरिव समुलासितायाः सितायाः ।
नियं नैत्यं सृजन्त्याः शिरसि सुरगिरेक्षारुचारीप्रचार-
स्पष्टप्रश्नहाराचलिगलितमणिआन्तिमायान्ति ताराः ॥ १४ ॥

यैरन्द्राऽतिचलाऽबलाऽपि कमला गम्भीरिमाद्युगुणे-
स्तैरेषाऽपि न नशते किमु दृष्टैः कीर्तिगज्जाह्निकी ? ।
सञ्चिन्त्येति यथा यथा गमयति प्रौढिं परां यो गुणा-
नुहामैव तथा तथाऽभिस]रति स्वैरं दिग्नानासौ ॥ १५ ॥

‘श्रीवासाम्बुजमाननं परिणतं पञ्चामुलिच्छवातो,
जम्मुर्दक्षिणपञ्चशास्त्रमयतां पञ्चापि देवदृग्माः ।

१ “हते सर्वतस्यैलो” द्वुहतकीर्तिकलोकिन्यां ॥ २ पश्यमिदं सुकृतकोरिकलोकिन्यां ३४ तदम् ॥ ३ पश्यमिदं सुकृतकीर्तिकलोकिन्यां १२ १ तदम् , तथा उदयप्रभनाम्नैव विरिष्टं प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ लेख ४३ मध्ये तुतीम् ॥ ४ आति आर० द्वुहतकीर्तिकलोकिन्यां प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ च ॥ ५ इति वायरम्य श्रीणि पश्यानि सुकृतकीर्तिकलोकिन्यां कलमः ॥ १५-१६०-१६१ १६२ तदमि ॥ ६ “वान्द्रस्य द्वुहतकीर्तिकलोकिन्यां ॥ ७ “व येन कथिता काऽपि विज्ञेकलोकिन्ये: सुकृतकीर्तिकलोकिन्यां ॥ ८ नृत्यं यूं सुकृतकीर्तिकलोकिन्यां ॥ ९ नृत्यं यूं सुकृतकीर्तिकलोकिन्यां ॥ १० पश्यमिदं धर्मान्युद्यमसमसान्ते प्रवर्णकोशागतवस्तुपालप्रवर्णे षष्ठितमे च “इतरस्तु” इत्येकोक्तिरिक्तं वर्तते ॥

वान्धवपूरणकारणं भगविना चिह्नेव चिन्तामणि-

र्बांता वस्य किमस्य शस्यमपरं श्रीवस्तुपालस्य यत् ॥ १६ ॥

ईन्दुः पत्रावलम्बं व्यजित कुरुत्ये दुर्भवात्सा अपेहे,

गर्जि पर्जन्यदन्ती व्यतनुत जगति स्तम्भमावं फणीन्द्रः ।

चिह्नेष शीरसिन्धुर्दिशि विदिशि तृष्णैः संयुतं बारिजातं,

यस्योहामप्माणे यशसि पैस्तमरे ते तु सन्तोऽप्यसन्तः ॥ १७ ॥

पैशाभिरामहस्तेन, महस्तेन वितन्वता । रविनेब तमःस्तोमः, समस्तो महता हृतः ॥ १८ ॥

मौ शून्मधुवनेऽपि दुस्तमतमःस्तोमस्तथा मास्य भूतेत्रेषु शुसदां सदाविकसितेष्वामीरुनं मर्त्यवद् ।

इत्युद्गामिरजःसमुच्छ्रवभयाद् दम्भोलिपार्णिमहीमम्भोमृद्धिर सीषिचत् पैतिपदं यतीश्चयात्रोत्सवे ॥ १९ ॥

विन्दतः कज्जलमञ्जुलश्च यदिदं शीतद्वृतेद्वैर्तते, तन्मृदाः कवयन्ति लक्ष्म न वयं सूक्ष्मेकिकाकाङ्क्षणः ।

यथाऽत्मवस्थमद्वृतं रचयता श्रीवस्तुपाल ! त्वया, शीतांश्च लिखितं स्वनाम तदिदं प्रस्वसमुद्दीक्षयते ॥ २० ॥

भेजन्तीमवनीमवेष्य दुरिताभ्योधौ नवं भूधरप्राप्मारं रचयाङ्ककार यदंदौ तीर्थेशाचैत्यच्छकात् ।

तत्रैनःप्रतिदिनितनाशासुभगः प्रेक्षामृदङ्गस्वनैर्गर्जन् विश्वजंयी विभाति सुवने श्रीधर्मगन्धद्विषः ॥ २१ ॥

श्रीवस्तुपाल ! कलिकालविलक्षणस्त्वं, संलक्ष्यसे जगति चित्रचरित्रपात्रम् ।

यहानसौरभवता भवता वितेने, नानेकपेन मदमेदुरिता सुखश्रीः ॥ २२ ॥

हैश्यः कस्यापि नायं प्रथयति न परमार्थनादैन्यमन्य—

स्तुच्छामिच्छां विधत्ते तनुहृदयतया कोऽपि निष्पुण्यपण्यः ।

हत्यं कल्पद्वृमेऽस्मिन् व्यसनपरबशं लोकमालोक्य सृष्टः,

स्वां श्रीवस्तुपालः कथमपि विधिना नूतनः कल्पवृक्षः ॥ २३ ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य परे कवीन्द्राः, कामं यशांसि कवयन्तु वयं तु नैव ।

येनेन्द्रमण्डपहृतोऽस्य यशःप्रशस्तिरस्त्वेव शक्तद्विदि शैलशिलाविशाले ॥ २४ ॥

सहे शारदपर्वगविंतशशिज्योत्स्नासपलं तव,

त्रैलोक्ये शुणजालकं विलसति श्रीवस्तुपालाद्वृतम् ।

यत्ताद्वद्वपाशवैशसकृतात्कामिशङ्काः स्फुटं,

नैवान्यस्य भवन्ति कीर्तिवरलाः खेलासु हेलास्पदम् ॥ २५ ॥

आशान्म्यो नवपुण्यपेक्षालयशःसौरभ्यसम्भावनासहृतैः सततं पतद्विरभितो लाभार्थिभिः सेवितः ।

रक्षसत्रपवित्रया घनलसत्पुण्यामृतैः सिक्तया, छिष्टः श्रीलतया महीरह इव श्रीवस्तुपालः वर्तौ ॥ २६ ॥

१ तद्र वर्णन्युरमहाकाव्ये ॥ २ पद्मिदं सुकृतकीर्तिक्लोलिन्यां १५८ तमम् ॥ ३ दिल्लुः शुकृतकीर्ति-
क्लोलिन्याम् ४ तद्र पद्मिदं शुकृतकीर्तिक्लोलिन्यां १४९ तमम् ॥ ५ पद्मिदं सुकृतकीर्तिक्लोलिन्यां १४५ तमम् ॥
६ दिल्लुः सुखदां सदाविकसिते दम्भीरलं शुकृतकीर्तिक्लोलिन्याम् ॥ ७ ग्रतिदिवं यं शुकृतकीर्ति-
क्लोलिन्याम् ॥ ८ पद्मिदं वर्णन्युरुद्वाष्टमसम्भावन्ते वर्तते ॥ ९ पद्मिदं सुकृतकीर्तिक्लोलिन्यां १५१ तमम् ॥ १०
पद्मिदौ शुकृतकीर्तिक्लोलिन्याम् ॥ ११ श्री जयस्यनुदिवं शर्मद्विषो भूतसे शुकृतकीर्तिक्लोलिन्याम् ॥ १२
पद्मिदं वर्णन्युरुद्वाष्टमसम्भावन्ते वर्तते ॥ १३ पद्मिदं वर्णन्युरुद्वाष्टमसम्भावन्ते वर्तते ॥

नेत्राणाममृताञ्जनं कथमिव श्रीवस्तुपालः कृती,
सोऽयं नास्तु घनोदयः परिलसद्ग्रारिधर्मस्त्रितिः ।
जैके मार्गणपाणिशुकिकुहरे यः स्वातिष्ठिति शुहः,
कृत्वा भौत्तिकनिर्मलं निजयशो दिक्षामिनीमण्डनम् ॥ २७ ॥

श्रीवस्तुपाल । क्षितिपालमुदां, भूमण्डलान्तः कृति नैव दम्भः ।
दोषस्य दुष्टप्रभवस्य मन्त्रिन् ।, प्रसुर्भवानेव तु निग्रहाय
या प्रार्थना याचकवक्त्रवासादासादयद् दुर्भगतामतीव ।
दानाय सैवार्थिषु वस्तुपाल ।, स्थिता तवाऽस्ये सुभगीवमूर
अत्यहुता सचिवपुङ्गव वस्तुपाल ।, कौतस्कुती स्फुरति धर्मकला तवेयम् ।
यत् कहिंचिद् विमुखतामुपनीय पृष्ठा, पीठामि (नि?) पश्यसि न मार्गणमण्डलस्य
त्रिवैवगति बशसस्ते तस्य विस्तारभाजः, कथमिव महिमानं ब्रूमहे वस्तुपाल ।
सपदि यदनुभावस्फारितमूर्तिर्विधुरगिलदराति राहुमाहुत्तमङ्गम्
बाणे गीर्वाणगोष्ठी भजति भेगवति ब्रह्मस्यं प्रपञ्चे,
व्यासे विद्यानिवासे कल्यति च कलां कैश्चकीं कालिदासे ।
माषे मोषां मधोनः सफल्यति हृशं वोऽयं वाग्देवतायाः,
सोऽयं धात्रा धरित्र्यां निवसनसदनं प्रस्तुतो वस्तुपालः ॥ ३० ॥

वैर्धीयान् परिलुप्तदर्शनपथः मासः परं तानवं,
रोहन्मोहतया तया हृतपरिस्पन्दोऽतिमन्दोद्यमः ।
श्रीमन्त्रीधर वस्तुपाल । भवतो हस्तांवलम्बं चिराद्,
धर्मः प्राप्य महीं विहर्तुमधुना धते पुनः पाटवम् ॥ ३१ ॥

॥ ३२ ॥

॥ इति नारोन्द्रगच्छीयश्रीउदयप्रभस्तुरिकृता वस्तुपालस्तुतिः ॥



१ पश्यास्योत्तरार्थमिदं सुकृतकीर्तिकलोकिन्यां १०५ तमस्तेके ॥ २ “हृष्टिवज्रैर्मैलैमैलैक्षिकमिर्मेल
शुक्लिं यशो दिक्षादिनीभूषणम् सुकृतकीर्तिकलोकिन्याम् ॥ ३ पश्यमिदं भर्माभ्युदयवस्तुर्यसर्वग्रान्ते वर्तते ॥
४ पश्यमिदं पुरातनमन्तर्वर्त्तमहगतवस्तुपालप्रबन्धे २४८ तमं सोमेश्वरदेवोकितोऽक्षिकृते वर्तते ॥ ५ यथाति
हुतप्रवाहामन्तर्वर्त्तते ॥ ६ “इतर्वी का” पुरातनप्रबन्धसंबंधे ॥ ७ ददर्श चार्यु पुरातनप्रबन्धसंबंधे ॥ ८ पश्य-
मिदं भर्माभ्युदयमहाकाण्डयप्रबन्धवर्त्तमाम्बेव वर्तते ॥

तृतीयं परिशिष्टम्

मलधारिश्रीनरचन्द्रसूरिसूत्रिता

वस्तुपालप्रशस्तिः ।

स वः अेयः शशुद्धायशिखरशीर्वैक्षुकुटः, प्रदोषान्तध्वान्तव्यतिकरनिकाराम्बरमणिः ।
भवआन्तश्रान्तिव्यपनयनदीष्णामृतसरसनाभिः श्रीनाभिप्रभवजिननाथः प्रथयतु ॥ १ ॥

श्रीप्राम्बाटकुलेऽत्र चण्डपसुताचण्डप्रसादादभृत,
पुत्रः सोम इति प्रसिद्धमहिमा तत्याश्वररजोऽङ्गजः ।
तस्माल्लूणिग-मण्डेवसचिवौ श्रीवस्तुपालस्तथा,

तेजःपाल इति श्रुतास्तनुभुवश्वत्वार एतेऽभवन् ॥ २ ॥

चेतः किं कलिकाल ! सालसमहो ! किं मोह ! नो हस्यते ?,
तृष्णो ! कृष्णमुखाऽसि किं ? कथय किं विघ्नौघ ! मोघो भवान् !

ब्रूमः किं नु सखे ! न खेलति किमप्यस्माकमुज्जृमितं,
सैन्यं यत् किल वस्तुपालकृतिना धर्मस्य संवर्मितम् ॥ ३ ॥

दुर्गः स्वर्गगिरिः स कल्पतरुभिर्भेजे न चक्षुष्पश्च,
तस्थौ कामगवी जगाम जलवेरन्तः स चिन्तामणिः ।

कालेऽस्मिन्नवलोक्य याचकचमू तिष्ठेत कोऽन्यस्ततः,
स्तुत्यः सोऽस्तु न वस्तुपालसुकृती दानैकवीरः कथम् ? ॥ ४ ॥

स श्रीजिनाविपतिर्वर्मधराधुरीणः, क्षाध्यास्पदं कथमिवास्तु न वस्तुपालः ? ।
श्री-शारदा-सुकृतकीर्तिमयविवेष्या:, पुण्यः परिस्कुरति जड्मसङ्गमो यः ॥ ५ ॥

स्वच्छन्दं हरिशङ्करः स भगवान् यत्कीर्तिविस्फूर्तिभि-
विभ्रद् भस्मकृताङ्गरागमिव तद् भूतेशमूतं वपुः ।

सर्वाङ्गं घटितां गिरीश्वरसुतां दुग्धाभिषुप्री जगाद्,
व्याहृतां च सहस्ततालहसितैर्वैलक्ष्यमध्यापयत् ॥ ६ ॥

दायादा कुमुदावलिर्विचकिलधेणी सहाध्यायिनी,
सश्रीची सुरसिन्धुवीचिवितति.....की चन्द्रिका ।

१ ऐ पश्चिम नरचन्द्रपुरिमाम्बा निर्दिष्टं आचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ३९ संख्यापिदिनारथिकालेखे प्रथम-पश्चात्या बत्तेते ॥ २ ऐ पश्चिम नरचन्द्रनाम्बा निर्दिष्टं आचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४१ संख्यापिदिनारसदाकिलालेखे पश्चात्याम्बामिव इत्यते ॥ ३ ऐ कथय यस्य कल्पयं तिष्ठेत कोऽन्यः इवतः पुण्यः सोऽस्तु गिरिलदण्डिकालेखे ॥

शीतांशुः सहपांशुतेलनमुहृत् सब्रहचारी हरः,
प्रालेयाद्विठटी च कौतुकनटी यस्कीर्तिवाममुवः ॥ ७ ॥

प्रतापस्थाहृतं रिपुनृपतिलक्ष्याः क्षणिकतां, विमुं नित्यां सष्णां (?) गिरिशगिरिगौरस्य यशसः ।
कुचोऽनेकान्तत्वं भहिम निजबुद्धेश दधता, वितेने येनाऽऽन्मा किळ सकलसद्वैर्णनभवः ॥ ८ ॥

प्रेयस्यपि न्यायविदाऽप्यनेन, दोषं विनाऽहं निहिताऽस्मि दूरे ।
इतीव दोषाद् गुणरत्नकोशं, यस्यारिभिर्ग्रहयते स्म कीर्तिः ॥ ९ ॥

प्रतापतपनो बस्य, प्रतपञ्चवनीतले । विपक्षवाहिनीसङ्खधारानीराप्यशोषयत् ॥ १० ॥

येनारिनारीनेनाम्भः सम्भारोद्भारसंभृतम् । विश्वसौरभ्यकृचके, यशः कुसुमपादपम् ॥ ११ ॥

अभन्ती मुशमन्याभतपनोत्पापिताऽधुना । न्यायलक्ष्मीविंशशाम, यदुजावण्डमण्डये ॥ १२ ॥

क्षु विकुण्ठः कुण्ठः कलुषविषणः सोऽपि धिषणः, क्षतारम्भः शम्भुर्न तिमिरहरः सोऽपि निहितः ।
घरागारोद्भारे वचनरचनायां परपुरस्थितिप्लोषे दोषोदयविदलने चास्य पुरतः ॥ १३ ॥

रणे वितरणे चात्र, चर्मवैष्णव वर्षति । अमित्र-मित्रयोः सद्यो, भिषते हृदयावनिः ॥ १४ ॥

इमां समयवैष्णवाद्, अश्यन्ती गूर्जरक्षितम् । दोर्दण्डेनोद्भरन् वीरः, सैष शेषं व्यशोषयत् ॥ १५ ॥

ऐतस्मिन् वसुधासुधाजलधरे श्रीवस्तुपाले जग—
जीवातौ सिचयोऽवैर्नवनवैर्नकतन्दिवं वर्षति ।

आस्तामन्यजानो धनोज्जिम्मतशशिज्ज्योत्सनाच्छवृगद्गुणो—
द्वूतैरथ दिग्भ्वराद्यपि यशोवासोभिराच्छादितम् ॥ १६ ॥

विष्वस्मिन्नपि वस्तुपाल ! जगति त्वत्कीर्तिविस्फूर्तिभिः,
श्वेतद्वीपति कालिकाकलयति स्वर्मालिकानां मुखम् ।

वरैस्तावककीर्तिसौरभमदान्मन्दारभन्दादरे,
वर्गे स्वर्गसदां सदा च्युतनिजव्यापारदुःस्त्रैः स्तितम् ॥ १७ ॥

आवश्यूः किमसावस्तु, वस्तुपालः स्तुते पदम् ? । येनार्थ-कामावप्येतौ, वर्मकर्मकृतौ कृतौ ॥ १८ ॥

तमः सर्वालीने प्र[म]दलहरीनर्तिमुजं, भुजङ्गीभिर्गति जितसितकरे यस्य यशसि ।

शिरः कोडकीडदरणिमरमुझोऽपि भजते, मुजङ्गेशः फ़ेशव्ययमुदयदानन्दमुदितः ॥ १९ ॥

यथात्रासु हुरजनिष्टुरखुरैः क्षोणीतलं ताङ्गितं,
कम्पः सम्पदमाससाद हृदये किन्तु प्रतिक्षमाभृताम् ।

उद्भूतानि रजांसि मांसलतगान्वाकाशमाशिश्रियु—
स्तेवामेव मुखावनौ पुनरहो ! मालिकमुन्मीलितम् ॥ २० ॥

काले यत्तद्वद्यज्ञे रिपुकरटिशिरः स्वन्दसिन्दूरपूरैः,
सन्ध्यावन्धं दधाने विरचितमुचितं भौक्तिकैस्तारकत्वम् ।

१. 'सीतारोद्भारसंभृतः' प्रती ॥ २. पश्चिमद नरचन्द्रनामा निर्दिष्टं प्राचीनकेन्द्रसंभृत चाम ॥ ३. पश्चिमद 'सीता विरिनारकत्वचिकालेवे सप्तमव्यापाराऽपि वर्तते ॥ ४. पश्चिमद घर्मान्दुष्मदमहाकाशव्यशस्योदर्शीकर्त्ते ॥

शीतज्योतिः प्रकाशं तदनु समुदितं तथशो येन तेने,
शश्वद्विस्तारिराकारजनिमहमहो । विश्वतो विश्वमेतत् ॥ २१ ॥

चण्डांशोरपि चण्डतामगमयद् यस्य प्रसादोदयः,
शीतांशोरपि शीतमानमभजद् यस्य प्रसादोत्सवः ।

त्रिशास्वादनतोडपि तोषमपुष्टद् यस्यावदतं यश—
स्तलोकोत्तरमस्य कस्य बचसां यात्रं चरित्राद्युतम् ? ॥ २२ ॥

यस्मिन् धर्मे पुरस्कृत्य, विषद्वयो रक्षति क्षितिम् । जने जन्यमजन्यं च, द्वयमप्राप्यतां गतम् ॥ २३ ॥

तस्मिन् काश्चनकोटिभिः प्रणयिनां दारिद्र्यमुदाद्युहि,
व्यक्तं काश्चनशैक्षण्डनविधावासण्डलः शक्तिः ।

आम्यत्वेव निदेशतोडस्य तदयं राजा ससूरः सदा,
नक्षत्रैः परिवारितश्च परितोऽप्याप्यमु रक्षति ॥ २४ ॥

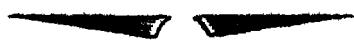
नमस्ये निर्वृद्धाः शरदि नहि वर्धन्ति जलदाः, फलवातैरन्तर्न खलु फलवृक्षाश्च फलिनः ।

प्रदुरुधा वा गावः पुनरपि न दुरुधानि ददते, कदाऽप्येतस्योर्जैर्न तु वितरणे आम्यति मतिः ॥ २५ ॥

दीर्घः स्फूर्जति सज्जकञ्जलमलः खेहं मुहुः संहरन्निन्दुमण्डलवृक्षस्पण्डनपरः प्रदेहिः मित्रोदयम् ।

सूरः कूरकरः परस्य सहते तेजो न तेजस्विनस्तत् केन प्रतिमं त्रैवीमहि महः श्रीवस्तुपालामिष्मम् ॥ २६ ॥

॥ इति भलधारिश्रीनरचन्द्रसूरिकृता श्रीवस्तुपालप्रशस्तिः ॥



१. प्राचिन्द्वयं नरकन्द्रामना विर्विष्टं प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ३९ संस्कृतिरिनारसस्त्रशिळालेखे चतुर्थ-
वस्तुपाला, पुरातनप्रबन्धसंग्रहगतवस्तुपालप्रबन्धे २१९ तमं सोमेश्वरदेवोक्तियोगित्वात् च बत्तते ॥ २ २. कूरकरः
प्रितिरामिकालेखे पुरातनप्रबन्धसंग्रहे च ॥ ३. वल्लीमि वल्लीमि श्री० प्रितिरामिकालेखे ॥

चतुर्थं परिशिष्टम्

मलघारिश्रीनरेन्द्रप्रभसूरिनिर्मिता

वस्तुपालप्रशस्तिः ।



स मङ्गलं वो वृषभभजः क्रियाज्ञटावलीसंवलितांसमण्डलः ।
यदीयमङ्गलं किल सर्वमङ्गलाश्रितं प्रमोदाय न कस्य जायते ? || १ ||
समूलमुन्मूलयितुं सुरद्गुहः, सन्ध्यासमाधौ चुलुक्कीकृतेऽभसि ।
स्वयम्भुवा यः सस्त्रे भटाग्रणीः, समग्रशक्तिः स चुलुक्कय [इ]त्यभूत || २ ||
तदन्वयाम्भो चित्पुर्विधूतविरोधिमूलोऽजनि मूलराजः ।
न कापि दोषोक्तिरभूतु यस्य, यशः प्रकाशैर्विशदेऽपि विश्वे || ३ ||
य(त)स्यात्मभूः समभवद् सुजदण्डचण्डशामुण्डराज इति राजकौलिरलम् ।
भूवलभस्तदनु वल्लभराजदेवस्तन्नन्दनो मुदमुदचित्वान् प्रजानाम् || ४ ||
तस्यानुजन्मा समभूत् परस्त्रीसुदुर्लभो दुर्लभराजदेवः ।
बभूव भीमो रणभूमिभीमस्ततोऽपि सीमा जगतीपतीनाम् || ५ ||
तदात्मजः संयति लब्धवर्णः, कर्णोऽभवत् कर्णसमप्रतापः ।
श्रीसङ्गमाद् वीररसोऽपि यस्य, वभार शृङ्गरभयत्वमेव || ६ ||
सूनुस्तदीयोऽजनि वैरिवीरद्गुणेन्द्रियिंहो जयसिंहदेवः ।
नवेन्दुकुन्दसुतिभिर्धरित्रीं, यः कीर्तिमुक्ताभिरलक्ष्मकार || ७ ||
अयं हि राकामुविलासकौतुकी, रिपुस्तदस्यास्तु विपर्ययोऽधुना ।
इतीव यो भालवमेदिनीश्वरं, चकार काराविनिवेशदुःस्थितम् || ८ ||
ततोऽभवत् कीर्तिलतालवालः, कुमारपालः क्षितिपालभास्वान् ।
यस्य प्रतापः शिशिरेऽप्यरीणां, स्वेदोदविन्दूनधिकांश्वकार || ९ ||
उदग्रतेजःसुकृतैकमन्दिरं, धराधरेन्द्रः स गिरामगोचरः ।
व्यधत्त यः शत्रुकलत्रमण्डली, महीमशेषां च विहारभूषणाम् || १० ||
तस्माद्भूदजयपाल इति क्षितीशः, प्रत्यर्थिपार्थिवकुलप्रलभाश्चाशः ।
श्रीमूलराज इति वैरिसमासराजजिव्यर्जविक्रमनयस्तनयस्तदीयः || ११ ||
सम्भुः कलीयान् विजयी तदीयः, श्रीमीमद्भूतोऽस्ति महीमहेन्द्रः ।
प्रवासदायिन्यपि वैरिवर्गो, बभूव यस्मिन्न वनाभिलाषी || १२ ||

जिवं वौत्तुक्षयनां यक्षतिमतिमेदेन विवशां, वशीकृत्याऽमुणिमत्तसमविनिवेशाऽ[व]द्गत वः ।
स गेताऽर्जोराजः समभवद्वैवान्वयवरे, वरेष्यशीशासां.....गिरद्वैतसुभटः ॥ १३ ॥

भूयांस एव प्रथितप्रसापा, मशस्विनस्तस्य सुता बभूवः ।
प्रदीप्तते तेऽु ज्यो विनिद्रलद्यप्रसादो लब्धप्रसादः ॥ १४ ॥

अपास्य शौण्डीर्यमदं परेषां, यद्विकल्पो मानसमध्युदास ।
तदद्वन्नानां च हक्षो विकृष्य, वलान् विलासान् विद्येऽक्षुवारि ॥ १५ ॥

तदन्वनः कुमुदकुन्दनिर्मैर्यशोभिर्विधानि वीरधबलो धबलीकरोति ।
वद्विक्षमः क्रमनिरस्तसमस्तशब्दुर्मन्येऽव ताप्यतितमामहितानपश्यन् ॥ १६ ॥

वित्रं विवस्याक्षपि वस्थतापः, प्रचण्डमार्तण्डमहोमहीयान् ।
विरोधिर्वर्गस्य निसर्गसिद्धं, भुजामहोम्भाणमपाकरोति ॥ १७ ॥

इत्य—

प्राण्वाटवंशध्वजकस्थकीर्तिः, श्रीचण्डपः स्वर्णितचण्डमाऽभूत् ।
उवास यस्मिन् गुणवारिराशौ, चिराय लक्ष्मीप्रभुरेव धर्मः ॥ १८ ॥

गुणैवहंसालिसरोजषण्डश्वण्डप्रसादोऽस्य सुतो बभूव ।
यत्कीर्तिसौरभ्यतरक्षितानि, जगन्मुदेऽद्यापि दिग्नंतराणि ॥ १९ ॥

पत्सुनेदीनामिव विश्वनन्दनो, बभूव सोमोऽस्य सुतः कलानिषिः ।
एकाऽपि ॥ २० ॥

आशाराजः शस्यधीस्तस्य सूनुर्जजे विजश्रेणिसीमन्तरलम् ।
येनाऽतेने [न] कवचिद् बालसङ्खित्रिं चक्रे नाप्यलीकप्रसक्षिः ॥ २१ ॥

तस्याऽभवज्ञिर्मलकर्मकारिणी, कुमारदेवीति सधर्मचारिणी ।
असूत सा नीतिरिचातिवाञ्छितप्रदानुपायांश्चतुरस्तनूरुहान् ॥ २२ ॥

द्वयिषः प्रथमस्तेषु, मङ्गुदेवस्तत्रोऽपरः । वस्तुपालः सुधीरस्मात्, तेजःपालोऽथ धीनिषिः ॥ २३ ॥

वंशश्रीमौलिधम्भिलं, मङ्गुदेवं कथं स्तुवे ? । यस्य धर्मधुरीणस्य, विवेकः सारथीयते ॥ २४ ॥

सरस्वतीकोलिकलामरालः, स वस्तुपालः किमु नाभिनन्द्यः ? ।

जिताः पदन्यासमनन्वतुर्व्यं, वितन्वता के कवयो न येन ? ॥ २५ ॥

दानं दुर्गतर्गसर्गलितव्यत्यासवैहासिकं, शौण्डीर्यं भुजदण्डचण्डिमकथासर्वद्वं विद्विषाम् ? ॥

दुर्दिर्वस्य दिग्न्यस्त्रभूतलभुवायाकृष्टिविद्या श्रियां, कस्यासौ न जगत्यमास्यतिलकः श्रीवस्तुपालो मुदेश्वारश्च ॥

तेजःपालः सविषतिलको नन्दताद् भाग्यभूमिर्यस्मिन्नासीद् गुणविटपिनामव्ययोहः [प्ररोहः] ।

यच्छाशास्त्रु त्रिभुवनवनप्रेक्षणीषु प्रगस्यं, प्रकीडन्ति प्रसूमरमुदः कीर्तयः श्रीसहायाः ॥ २७ ॥

धर्मः स वीरधबलः वितिकैटभारियस्येदमद्वृतमहो महिमप्ररोहम् ।

दीपोष्णदीपिति-मुशापिरणप्रवीणं, मन्त्रिद्वयं किल विलोचनतामुपैति ॥ २८ ॥

मेष्टकास्तैर्यं भ्रमुणीति-विभूति-वपुरा-ऽज्ञुवाश्र । वस्तुपालः स्थिरे धर्मकर्त्तव्येव विवं ददौ ॥ २९ ॥

अगम्यपुण्योदयसस्यकाश्यपीमघौघनिष्ठातनकर्मकर्मठाम् ।
सहैव सहेन नमस्यकर्मणा, यस्तीर्थयात्रामकरोन्महामतिः ॥ ३० ॥

अभ्यर्थ्य देवान् पश्चि साधुमण्डलीमाराघ्य शुद्धाशन-पानकादिभिः ।
उद्धृत्य दीनानुपकृत्य धार्मिकान्, यो यात्रया प्राप पवित्रतां पराम् ॥ ३१ ॥

उद्धृत्य पश्चासरजैनवेशम्, यस्तत्र संखाप्य च पार्श्वनाथम् ।
चकार चौलुक्यपुरे स्वकीर्तिसम्बिल्लसुस्थां वनराजकीर्तिम् ॥ ३२ ॥

श्रीयुगादिप्रभोर्वेशमन्यर्थुदाचलमूर्धिं यः । श्रेयसे मण्डुदेवस्य, मण्डिदेवमतिषिष्ठत् ॥ ३३ ॥

विग्राहं परितो जिनेन्द्रमवनान्युच्चैश्चतुर्विश्विति, तापोर्तीर्णसुवर्णदण्डकलशालङ्कारतारथियम् ।
यः शशुभूयदेवसेवनमनाः शशुभूयास्यं जिनप्रासादं ध्वलक्कनामनि पुरे निर्माण्यामासिवान् ॥ ३४ ॥

गोप्यहौर्मिजिक्षातासूर्णां, देवभूयमुपेयुषाम् । राणभद्राकाणां यस्तत्रागारमकारयत् ॥ ३५ ॥

वार्ष तस्य परः स्मेरपद्मां पीयुषबान्धवीम् । प्रणां चाप्रतिमां विश्वर्मीतिदां यो व्यधापयत् ॥ ३६ ॥

पौषधशालाद्वितयं, यस्याऽस्त्वे तत्र मुनिभटाकीर्णम् ।
कलिशत्रुभूमीतिभङ्गरध्मधराधीशदुर्गेनिभम् ॥ ३७ ॥

पुरोत्तमे स्तम्भनकाभिधाने, निवेशने पार्श्वजिनेश्वरस्य ।
योऽकारयत् काष्ठनकुम्भदण्डमस्तण्डधर्मा शिखरं गरीयः ॥ ३८ ॥

नामेयं नेमिनाथं च, तदीये गूढमण्डये । सरस्वतीं जगत्यां च, स्थापयामास यः कृती ॥ ३९ ॥

अकाशयन्नगाकारं, प्राकारं परितोऽत्र यः । निदाधदमनकीडाप्रवृत्तं च प्रपाद्यम् ॥ ४० ॥

यश्चकार नवोद्धारधारि...द्वृतवैभवाम् । सुधासहचरीं तत्र, वार्षीं व्याकोशपङ्कजाम् ॥ ४१ ॥

भृगुनगरमौलिमण्डनमुनिसुव्रततीर्थनाथभवने यः ।
देवकुलिकासु विशतिमितासु हैमानकारयद् दण्डान् ॥ ४२ ॥

तस्य गर्भगृहोत्सङ्गं, यस्तेलोक्यदिवाकरो । पार्श्वनाथ-महावीरी, क्षान्तिभीरो न्यवीक्षित् ॥ ४३ ॥

नगरास्थे महास्थाने, चैत्यमाधजिनेश्वितुः । येनोद्धृत्य समुद्भ्रे, कीर्तिर्भरतचक्रिणः ॥ ४४ ॥

व्याघ्ररोल्य(पल्ल्य)भिष्ये ग्रामे, पूर्वजैः कारितं पुरा । येन तत्पुण्यवृद्धर्थमुद्भृतं जिनमन्दिरम् ॥ ४५ ॥

निरीन्द्रग्रामे बोडास्वयवालीनाथस्य मन्दिरम् । विभ्रसङ्गतघाताय, प्रजानामुद्धार यः ॥ ४६ ॥

स्थापयन् सीहुलग्राममण्डने जिनवेशनि । यः श्रीवीरजिनं विश्वममोदमवजीवयत् ॥ ४७ ॥

श्रीवैद्यनाथवरवेशमनि दर्भवत्यां, यान् दुर्मदी सुभट्टवर्मनपो जहार ।
तान् विशति श्रुतिमतस्तपनीयकुम्भानारोपयत् प्रमुदितो छदि वस्तुपालः ॥ ४८ ॥

श्रीवीरध्वलमूर्तिर्जयतलदेव्याश्व मूर्तिरसमश्रीः । श्रीमण्डुदेवमूर्तिः, स्वमूर्तिरनुजस्य मूर्तिश्च ॥ ४९ ॥

श्रीवैद्यनाथगर्भद्वारवहिर्मितिसम्भवे निलये ।
अन्तर्भक्तिनिमीलितकरकमलाः कारिता येन ॥ ५० ॥ युग्मम् ॥

१ श्रीमालभेन्द्रसुभद्रेन सुवर्णकुम्भानुचारितान् पुनरपि क्षितिपालमूर्ती ।

श्रीवैद्यनाथवरवेशमनि दर्भवत्यामेकोनविशतिमिपि प्रसवं व्यष्टत् ॥ १७५ ॥

उदयप्रभीयां सुकृतकीर्तिकलोलिन्याम् ॥

स्वविरोधिनी शुचिर्बुवमुमारक्षये च बदरक्षये च ।

वस्य प्रपां पषद्यन्, कल्यत्यधिकाधिकं तापम्

॥ ५१ ॥

जहारानुजो वस्य, तीर्थे कासहदामिधे । नामेयमवनं तुङ्गं, स्वयमम्बालयं पुनः ॥ ५२ ॥

स्तुम्भतीर्थे नगोत्तुङ्गे, धाति भीमेश्वरस्य यः । शातकुम्भमयं कुम्भं, केतने चाव्यरोपयत् ॥ ५३ ॥

तत्र दोलाकृति दोलाकालां धोतीं च मेलेलाम् । यो वृषं च तुषारांशुकान्तिकल्पमकल्पयत् ॥ ५४ ॥

यः स्फुरन्मेदुरामोदे, तस्य गर्भगृहोदरे । मूर्तीं न्यवेशयद् धीमानात्मनश्चानुजस्य च ॥ ५५ ॥

तस्य जगत्यां प्रीत्यै, ललितादेव्याः स्ववलभाया यः ।

सूत्रयति स्म पवित्रां, वटसावित्रीसदनसहिताम्

किं च कारयता तत्र, तक्षिकयवेदिकाम् ।

स्वस्य प्रकटिता येन, कृत्या-ङ्कुस्यविवेकिता ॥ ५६ ॥

उद्भूत्य वैष्णवानाथस्य, वेशम योऽत्रैव मण्डपे । मूर्तिं श्रीमल्लदेवस्य, शस्यकीर्तिरतिष्ठिपत् ॥ ५८ ॥

पुण्यं प्रसापसिंहस्य, यः स्वपौत्रस्य वर्धयन् । तत्रैव रचयामास, ध्वस्तश्रीप्रातपां प्रपाम् ॥ ५९ ॥

प्रभूतमूतराजस्य, यशोराजस्य मन्दिरम् । रम्यं निर्मापयामास, कीर्तीनां वासवेशम् यः ॥ ६० ॥

असौ शुचनपालस्य, शिवाय शिवमन्दिरम् । अस्थापयत् समं रम्यैर्देशभिर्देवतालयैः ॥ ६१ ॥

तज्जगत्यां च यः काम्यं, चण्डिकायतनं नवम् । वेशम रत्नाकरस्यापि, निस्सपलमसूत्रयत् ॥ ६२ ॥

पञ्च पौषधवालाश्च, तत्र येन वितन्वता । पञ्चोत्तरविमानश्रीपत्रमात्मा व्यतन्यत ॥ ६३ ॥

पुण्यायाऽज्ञयसिंहस्य, रोहडीजिनधान्नियः । नामेयप्रतिमां तस्य, मूर्तिं च निरमापयत् ॥ ६४ ॥

इहैवाष्टापदोद्धारं, श्रीशालिगजिनालये । लक्ष्मीधरस्य] पुण्यार्थमुपकारी चकार यः ॥ ६५ ॥

तत्रैकं राणकश्रीमद्भवदस्य तथाऽपरम् । पुण्यार्थं वैरिसिंहस्य, यस्तीर्थेण न्यवीविशत् ॥ ६६ ॥

श्रीकुमारविहारेऽत्र, वृत्रारातिनितकमौ । पार्श्वनाथ-महावीरौ, प्रीत्या यः प्रत्यतिष्ठिपत् ॥ ६७ ॥

नामेऽर्कपालितकनान्नि जिनेश्वरस्य, वीरस्य मन्दिरमुदारमकारि येन ।

भूतेशवेशम च मनोहरमध्वनीना, संजीविनी तपनतापरिपुः प्रपा च ॥ ६८ ॥

येनात्रैव विष्णुम्बिवीचिवाचालकूलभूः । कासारः कारयाच्छक्रे, क्षीरनीरविवान्धवः ॥ ६९ ॥

मन्येऽस्मिन्नमृताम्बुदेन वृष्टे पीयूषवर्षमुहुः, केनाप्येतदवश्यमम्बरसरित्पक्षेरूहैः पूरितम् ।

व्यक्तं न्रेषुतामरालकुलजैः क्षीरं मरालैरिदं, तेनैतस्य न वस्तुपालसरसः स्तोतुं गुणानीशमहे ॥ ७० ॥

बलम्यां पुण्यलभ्यश्रीः, प्रासादो वृषभप्रभोः । येनोहन्ते मुदा मल्लदेवस्य सुकृतश्रिये ॥ ७१ ॥

ललितादेव्याः पल्याः, सुकृताय जिनेन्द्रभवनभासि तटम् ।

तत्र नवकमललितं, ललितसरः कारितं येन ॥ ७२ ॥

शुभ्राङ्गयनगोत्सङ्गे, श्रीयुगादिजिनेश्चितुः । कार्त्तस्वरमयं रम्यं, पृष्ठपद्मतिष्ठिपत् ॥ ७३ ॥

तस्मैशाऽज्ञयभोग्येष्वदेशे येन वामतः । सुव्रतस्वामिनं न्यस्य, भुगुक्त्वाविश्वरणम् ॥ ७४ ॥

वीरं दक्षिणतः सत्यपुराधीशं निवेश्य च ।

तदन्ते मारती देवी, विश्वराज्या न्यधीयत ॥ ७५ ॥ सुमम् ॥

तत्रैवाकारशद् धाति, काशनान् मण्डपत्रये । पौत्रप्रतापसिंहस्य, श्रेयसे कलशानसौ ॥ ७६ ॥

स्तेतुं नाभिनरेन्द्रनन्दनगुणान् गोत्रं च कीर्ति समं, व्याहारं सचिवारविन्दतरणेरेतस्य दानामुषेः ।
व्योगास विकल्पोभयमुखी प्रीत्यैव देवीनिदरा, तद् येनास्य विमोरकार्यत पुरो दृष्ट्यारणं तोरणम् ॥७७॥

अत्रैव हैले रचयात्कार, मनोज्ञमाखण्डलमण्डपं यः ।
प्रथान्ति वैलक्ष्यमवेश्य यस्य, लक्ष्मी सहस्राशहस्रोऽन्यवश्यम् ॥७८॥

तत्र रैवतकार्येषाः, प्रभुत्वं स्तम्भनेश्वरः । वस्तुपाले विष्ट्येव, प्रीतिमागत्य तस्मात् ॥ ७९ ॥

श्रीवस्तुपालस्य कवाऽतिभक्त्या, नेमिः समाकृप्यतः कौटुकं नः ।
इतीव तस्मिन्नावलोकना-ज्ञाना-प्रधुमा-शाम्बाः सममन्युपेयुः ॥ ८० ॥

ज्ञानाऽस्त्वामिनो वीरघबलस्य धरापते । स्वद्विष्णुभद्रिष्णुरुदां, मूर्ति स्थापयति स यः ॥ ८१ ॥

अत्रैव शुश्रुत्यशैलमौलौ, नन्दीश्वरद्वयिगतान् जिनेन्द्रान् ।
तस्यानुजः स्थापयति स्म तेजःपालाभिधानो यशसां निधानम् ॥ ८२ ॥

पर्मस्वानभिर्द विलोक्य जगतामानन्दकन्दोदयमाङ्गुष्ठकल्पमनव्यसम्भवराङ्गन्दीश्वरास्यं जनः ।
तेजःपालयशांसि मांसलरसं गायन् मुहुर्गायते, मन्ये नूतनवस्तुसंक्षबवशोद्धूतां प्रभूतां मुदम् ॥ ८३ ॥

अनुपमदेव्यास्तेन, स्वप्रेयस्याः प्रभूतसुकृताय ।
आदिजिनेश्वरपुरतो, विद्येऽनुपमासरथ नवम् ॥ ८४ ॥

विशेषके रैवतकस्य भूमृतः, श्रीनेमिचैत्ये जिनवेश्मसु त्रिषु ।
श्रीवस्तुपालः प्रथमं जिनेश्वरं, पार्श्वं च वीरं च मुदा न्यौविशत् ॥ ८५ ॥

तदन्तिके च निःशेषसुरा-ज्ञुरनिवेतिताम् । कारयामास यः काव्यकामधेनुं स्वरस्वतीम् ॥ ८६ ॥

वेनाऽस्त्वमः स्वपत्न्याश्च, स्वस्य भ्रातुः कनीयसः । तद्वार्यायाश्च शैवेयचैत्येऽकार्यन्त मूर्तयः ॥ ८७ ॥

जन्मिकाभवने येन, मूर्तिः स्वस्यानुजस्य च । जगत्रेत्रसुधाष्टिः, कारिता चारिमास्पदम् ॥ ८८ ॥

तदीये खिलरे नेमिं, चण्डप्रेयसे च यः । मूर्ति रम्यां तदीयां च, मङ्गुदेवस्य च व्यधात् ॥ ८९ ॥

चण्डप्रसादपुण्यं वर्द्धयितुं योऽवलोकनाशिखरे ।
स्वापितवान् नेमिजिनं, तन्मूर्ति स्वस्य मूर्ति च ॥ ९० ॥

प्रधुमाशिखरे सोमवेयसे नेमिनं जिनम् । सोममूर्ति तथा तेजःपालमूर्ति च योऽत्मोत् ॥ ९१ ॥

यः शाम्बशिखरे नेमिजिनेन्द्रं श्रेयसे पितुः
..... तन्मूर्ति च, कारयामास भक्तितः ॥ ९२ ॥

वक्षापद्ये अगत्यां, भवनाम्भः शूलिनो भवनमतुरम् ।
उद्धरति स्म विवेकी, तेजःपालहस्तदनुजन्मा ॥ ९३ ॥

पुत्रः कालमेष्यस्य, लेघपालस्य कारितः । अधिनोर्मण्डपस्त्र, तेजैव शतिशाळिना ॥ ९४ ॥

प्रीतो लक्ष्मयश्चुवि पुरा यद् दद्वौ तापसानां, सङ्गः किञ्चित् तदिवभ्रुना प्राप्यते तैः करत्वा ।
प्रभोऽवारादलिङ्गमयि तन्मोक्षयामास तेभ्यस्तेजःपालः सुकृतकृतवीर्वस्तुपालानुजन्मा ॥ ९५ ॥

स्वपदेश्यमूर्तिमिः श्रीमण्डेमिनाथेन चान्वितः । मुसोद्धाटनकर्त्तमे, वस्तुपालेन निर्ममे ॥ ९६ ॥

श्रीवारायज्ञस्य मित्रः, चितामहस्यापि सोमराजस्य । मूर्तियुगमन्त्री, व्यवापमद्वुरगपृष्ठस्थम् ॥ ९७ ॥

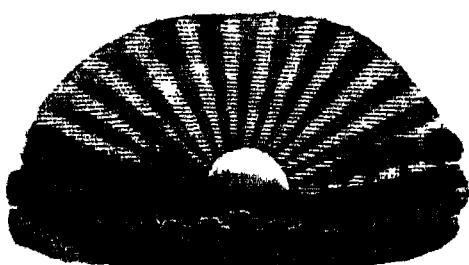
द्वारे यत् किल दक्षिणामनुगतं यज्ञ प्रतीच्यां स्थितं,
यत् कौबेरदिगाश्रितं च सदनं श्रीनेत्रिनाथप्रभोः ।
कामं मण्डयति स्म तानि सचिवोत्तंसः स वैस्तोरणै—
हृषिस्तद्विभवं विभाव्य जगतो नान्यत्र विश्वास्थाति || ९८ ॥

गुरुः कुलेऽस्य नामेन्द्रगच्छव्योमार्यमाऽमवत् । श्रीमहेन्द्रप्रभः श्रीमान्, श्वान्तिक्षरिस्ततः श्रुतः ॥९९॥
आनन्दा-ऽमरसूरी, तदीयगच्छाभिष्ठौस्तुभप्रतिमौ ।
तदनु हरिमद्रस्तरिः, शमरलमहोदधिः समभूत् || १०० ॥
तत्पदे विजयसेनसूरयः, पूर्यन्ति कृतिनां मनोरथान् ।
वस्तुपालजिनविन्दपद्मतिर्जूम्भते जगति यत्पतिष्ठिता || १०१ ॥
अत्यद्भूतैः कृत्यशतैरजसं, योऽसाधयद्वर्ममतुल्यकर्म ।
श्रीवस्तुपालः सचिवावतंसः, प्रकस्पतां कस्यशतायुरेषः || १०२ ॥

ये विष्णुद्विरप्येवं स्तूयते—

त्यागाराधिनि राधेयेऽप्येककर्णैव भूरभूत् ।
उदिते वस्तुपाले तु, द्विकर्णा वर्ण्यतेऽधुना || १०३ ॥
जज्ञे हृषीपुरीयगच्छतिलकः श्रीमन्मूर्णीन्दुप्रभु—
देवानन्दगुरुस्ततस्तदपरः सूरिश्च देवप्रभः ।
तच्छज्यैर्नैरचन्द्रसूरिगुरुभिर्दत्तप्रतिष्ठोदय—
स्तामेतामतनोत् प्रशस्तिमतुलां श्वरिनरेन्द्रप्रभः || १०४ ॥

॥ इति मन्त्रीश्वरवस्तुपालप्रशस्तिः श्रीनरेन्द्रप्रभसूरिविरचिता ॥



पञ्चमं परिशिष्टम् ।

मलधारिश्रीनरेन्द्रप्रभसूरिविनिर्भिता

वस्तुपालप्रशास्तिः ।

स्वस्ति श्रीविष्णुसाक्षाय, वस्तुपालाय मन्त्रिणे । यदशःशशिनः शत्रुदुष्कीर्त्या शर्वरीयितम् ॥ १ ॥

शौण्डीरोऽपि विवेकवानपि जगत्राताऽपि दाताऽपि वा,

सर्वः कोऽपि पथीह मन्थरगतिः श्रीवस्तुपालाश्रिते ।

स्वज्ञोतिर्दहनाहुतीकृततमःस्तोमस्य तिग्रह्युतेः,

कः शीतांशुपुरःसरोऽपि पदवीमन्वेतुमुत्कन्धरः ? ॥ २ ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य यशःप्रकाशो, विश्वं तिरोदधति धूर्जटिहासमासि ।

मन्ये समीपगतमव्यविभाव्य हंस, देवः स [प]ञ्चवसतिध्वलितः समाप्ते: ॥ ३ ॥

वैस्तवं वस्तुपालस्य, वेत्ति कव्यरिताहुतम् ! । यस्य दानमविश्रान्तमर्थिष्वपि रिपुष्वपि

॥ ४ ॥

शूलेषु द्विषतां पुरेषु विपुलज्वालाकरालोदयाः,

खेलन्ति स्म दबानलच्छलभृतो यस्य प्रतापाभ्यः ।

जृम्भन्ते स्म च पर्वगर्वितसितज्योतिःसमुत्सेक्षिते,

ज्योत्स्नाकान्दलकोमलाः शरवणव्याजेन यत्कीर्तयः ॥ ५ ॥

कुन्दं मन्दप्रतापं गिरिशगिरिरपाहकृतिः साश्रुविन्दुः,

पूर्णेन्दुः पितॄ.....विधुरिमा पाष्ठजन्यः समन्युः ।

शेषाहिर्निर्विशेषः कुमुदमपदं कौमुदी निष्पमोदा,

क्षीरोदः सापनोदः क्षतमहिम हिमं यस्य कीर्तेः पुरस्तात् ॥ ६ ॥

यस्योर्वीर्तिलकस्य किङ्गरगणोद्ग्रीतैर्यशोभिर्मुहुः,

स्मेरद्विस्मयलोलमौळिविगलचन्द्राशृतोऽस्त्रीविनाम् ।

सुष्ठिनौभवदीहशी मम न मेऽप्य.....वाप्येति गां,

मुण्डब्रह्मरिणद्वधातृशिरसां शम्भुः परं पिप्रिये (?) ॥ ७ ॥

राकाताप्तवितेन्दुप्रणडलमहःसन्दोहसंवादिभि—

येत्कीर्तिप्रकरैर्जगन्नयतिरस्कारैकहेवाक्षिभिः ।

अन्योन्यानवलोकनाकुलितयोः शैलात्मजा-शैलिनोः,

क त्वं क स्वमिति प्रगल्भरभसं वाचो विचेहरमेथः ॥ ८ ॥

बाहं प्रौढयति प्रतापशिखिनं कामं यशः कौमुदीं, सामोदां तनुते सतां विकचयत्यास्यारविन्दाकरान् ।
शशुभूषीकुचपश्चवलिविधिनं निःशेषतः शोषयत्यन्यः कोऽप्युदितो रणाम्बरतले अस्यासिधाराभरः ॥१५॥
तस्यस्य छतिभिर्भैरवं भुवनोद्घारैकधौरैयतां, विग्राणो भृशमच्युतस्थितिरिति प्रेमोत्तरं गीवते ।
यथा प्रेम निरर्थकं कमलया सवर्णमालिङ्गिते, केषां नाम न जडिरे सुमनसामैर्जित्यत्ययो मुदः ॥१०॥

न अस्य लक्ष्मीपतिरप्युपैति, जनार्दनत्वात् समतां मुकुन्दः ।

वृषभियोऽप्युग्रं इति प्रसिद्धिं, दधिनेत्रोऽपि न चास्य तुस्यः ॥११॥

स्वस्ति श्रीवलये नमोऽस्तु नितरां कण्ठाय दाने ययो—

रस्पष्टेऽपि दिशां यशः कियदिदं बन्धास्तदेताः प्रजाः ।

हृष्टे सम्पत्ति वस्तुपालसचिवत्यागे करिष्यन्ति ताः,
कीर्ति काञ्छन या पुनः स्फुटमियं विश्वेऽपि नो मास्यति ॥१२॥

यस्मिन् विश्वजनीनैभवभरे विश्वम्भरां निर्भरश्रीसम्भारविभाव्यमानपरमेमोत्तरां तन्वति ।

प्राणिप्रत्ययकारि केवलमभूदेहीति संकीर्तनं, लोकानां न कदापि दानविषयं नापार्थनागो चरम् ॥१३॥

दृश्यन्ते मणि-मौक्किकस्तवकिता यद्विद्वदेणीदृशो,

यज्जीवन्त्यनुजीविनोऽपि जगतश्चिन्ताश्मविस्मारिणः ।

यच्च ध्यानमुच्चः स्मरन्ति गुरवोऽप्यश्रान्तमाशीर्णिरः,

प्रादुष्यन्त्यमला यशः परिमला श्रीवस्तुपालस्य ते ॥१४॥

फोटीरैः कटका-ऽकूलीय-तिलकैः केयूर-हारादिभिः, कौशेयैश्च विभूष्यमाणवपुषो यत्पाणिविश्राणितैः ।

विद्वांसो गृहमागताः ग्रणयिनीरप्रत्यभिज्ञाभृतस्तैस्तैः स्वं शपथैः कथं कथमपि प्रत्यायाच्छक्तिरे ॥१५॥

तैस्तैर्येन जनाय काञ्छनचयैरश्रान्तविश्राणितैरानिन्ये भुवनं तदेतदभितोऽप्यैर्धर्थकाण्डां तथा ।

दानैकव्यसनी स एव समभूदत्यन्तमन्तर्थथा, कामं दुर्धृतिधामयाचकचम् भूयोऽप्यसम्भावयन् ॥१६॥

आगो यद्वसुवारिवारितजगद्वारिद्यदावानलक्षेतः कण्टककुञ्जनैकरसिकं वर्णश्रेष्ठेष्वन्वहम् ।

सङ्घामश्च समग्रैरिविपदाभूतवैततिङ्कस्तन्मध्ये वसति त्रिधाऽपि सचिवोत्तरेऽत्र वीरो रसः ॥१७॥

आर्थ्य वसुवृष्टिमिः कृतमनः कौतूहलाकृष्टिर्भिर्यस्मिन् दानघनाघने तत इतो वर्त्यपि प्रत्यहम् ।

दूरे दुर्दिनसंकथाऽपि सुदिनं तस्तिविदासीत् पुनर्येनोर्विवलयेऽत्र कोऽपि कमलोल्लासः परं निर्भितः ॥१८॥

सोक्षाद् ब्रह्म परं धरागतमिव श्रेयोविवर्तैः सतां,

तेजापाल इति प्रेतीतमहिमा तस्यानुजन्मा जयी ।

यो चतुरे न दशां कदापि कलितावद्यामविद्यामयीं,

यं चोपास्य परिस्पृश्यन्ति छतिनः सदः परां निर्वृतिम् ॥१९॥

१ पदमिदं नरेन्द्रस्यरिनाम्ना श्रावीनलेखसंप्रह भाग ३ मध्ये ४१ संख्यगिरिनारसत्कशिलालेखे प्रथमप्रथतया वर्तते ॥ २ पदमिदं नरेन्द्रस्यरिनाम्ना श्रावीनलेखसंप्रह भाग २ शत ४१ संख्यगिरिनारसत्कशिलालेखे द्वितीयप्रथतया ऽपि विषये ॥ ३ पदमिदं नरेन्द्रस्यरिनाम्ना श्रावीनलेखसंप्रह भाग २ मध्ये ४१ संख्यगिरिनारसत्कशिलालेखे द्वादश-प्रथमतया ऽपि वर्तते ॥ ४ प्रसिद्धाम् गिरिनारशिलालेखे ॥

सहायः कामुभूमिश्व सततोदीपः प्रतापेऽनहः,
भूयन्ते स्य समन्ततः श्रुतिसुखोदारा वि[धी]नां गिरः ।
मन्त्रीक्षोऽग्नेभजोवर्कर्मनिपुणः कर्मोपदेष्टा द्विषो,
द्वेषव्याः फलवांस्तु वीरधबलो यज्ञा यशोराशिभिः ॥ २० ॥

आम्यः स वीरधबलः क्षितिपावलंसः, कैनामि ? विक्रम-नथाविव मूर्तिमन्ती ।
श्रीवस्तुपाल इति वीरङ्गामतेजःपालश्च बुद्धिनिलयः सचिवौ यदीयौ ॥ २१ ॥

वजन्मतमागशम्यः स यज्ञति वली वीरधबलः, सदैलां साम्भोधि भुवमनिश्चामुदर्घुमलजः ।
इमी भन्निक्षम्हौ कमठपति-कोलाधिपकलामद्वां विभ्राणी मुदमुदयिनी यस्य तमुतः ॥ २२ ॥

युद्धं वारिधिरेव वीरधबलः क्षमाशकदोर्चिकमः,
पोलस्तत्र महान् यशःशतपटाटोपो न पीनद्युतिः ।
सोऽन्यं सारमङ्गद्विरक्षतु परं पारं कथं न क्षणाद्,
विभ्राआन्तमरित्रां कल्यतः स्वावेव मन्त्रीधरौ ॥ २३ ॥

स्वैरं आम्यतु नाम वीरधबलक्षोणीन्दुकीर्तिर्दिवं,
पातालं च महीतलं च जलघेरन्तश्च नक्षन्दिवम् ।
श्रीसिद्धांशननिर्मलं विजयते श्रीवस्तुपालास्यया,
तेजःपालसमाह्या च तदिदं यस्था द्वयं नेत्रयोः ॥ २४ ॥

श्रीमन्त्रीधरवस्तुपालयशसामुखावचैर्वीचिभिः,
र्सर्वस्मिन्नपि लघिभते धबलतां कळोलिनीमण्डले ।
गङ्गेवेयमिति प्रतीतिविकलास्ताम्यन्ति कामं भुवि,
आम्यन्तस्तनुसादमन्दितमुदो मन्दाकिंनीधार्भिकः ॥ २५ ॥

हहो रोहण ! रोहति त्वयि मुहुः किं पीनतेयं ? शृणु,
भ्रातः । सम्प्रति वस्तुपालसचिवत्यागैर्जगत् श्रीयते ।
तज्जास्त्वेव ममार्थिकुद्धनकथा प्रतिवरीकिङ्गरी—
गीतैस्तस्य यशोऽसृतैश्च तदियं भेदस्विता भेऽधिकम्
देवै स्वर्णश्च ! कष्टं, ननु कं इव भवान् ? नन्दनोद्यानपालः, ॥ २६ ॥

स्वेदस्तत् कोऽय ! केनाप्यह ! हत इतः काननात् कस्यवृक्षः ।
हुं मा वादीस्तदेतत् किमपि करुणया मानवानां भैरव,
प्रतिशाऽऽदिष्टोऽयसुव्यास्तिकक्षयति तत्र वस्तुपालच्छुलेन ॥ २७ ॥

१ पश्यिदं नरेन्द्रस्तुरिनाम्ना निर्दिष्ट प्राचीनलेखसंप्रह भाग २ मध्ये ४१ संक्षयित्वारात्मकालेके इत्य-
प्राचीनकालपि विषयते ॥ २ श्रीयाधिकारः विरिनारशिक्षालेके ॥ ३ पश्यिदं नरेन्द्रस्तुरिनाम्ना निर्दिष्ट प्राचीनलेखसंप्रह
भाग २ मध्ये ४१ संक्षयित्वारात्मकालेके नवमप्रथतया, पुराततप्रथन्धसंब्रह्मतवस्तुपालकाम्ने शास्त्रियादि-
वक्षितवा २५६ तर्य च वर्तते ॥

कल्पादिवास्तु नयो नमोऽत्मु बलवे स्वागैकहेवाकिनौ, यौ द्वावप्युपमानसम्बद्धमिक्तकालं गतौ स्वागिनाम् ।
भाष्यम्भोविरतः परं पुनरयं श्रीवस्तुपालविहार, मन्त्रे धास्त्वति द्वानकर्मणि परामौषम्बवैरेयताम् ॥२८॥

व्योमोत्साक्षरः सुधाधवलितः कक्षगवाक्षाङ्किताः,
स्तम्भग्रेणिविजृम्भमाणमणयो मुक्तावचूलोज्ज्वलः
दिव्याः कल्पमृगीदशश्च विदुषां यत्यागलीलायितं,
व्याकुर्वन्ति गृहाः स कस्य न मुदे श्रीवस्तुपालः कृती ? ॥ २९ ॥

मद् दूरीकियते स्म नीतिरतिना श्रीवस्तुपालेन तत्,
काञ्छित् संवननौषधीमिव वशीकाराय तस्येक्षितुम् ।
कीर्तिः कौञ्जनिकुञ्जमञ्जनगिरिं प्रावच्छैलमस्ताचलं,
विन्ध्योर्वीधर-शर्वपर्वत-महामेरुनपि प्राप्यति ॥ ३० ॥

देवः पङ्कजभूविभाव्य भुवनं श्रीवस्तुपालोद्भवैः,
शुभ्रांशुशुतिभिर्यशोभिरभितोऽलक्ष्यैर्बलक्षीकृतम् ।
कर्त्तपान्तोद्गुतदुर्घनीरघिपयः सन्तापशङ्काकुलः,
शङ्के वत्सर-मास-बासरगणैः संख्याति सर्गस्थिते: ॥ ३१ ॥

चित्रं चित्रं समुद्रात् किमपि [नि]रगमद् वस्तुपालस्य पाणे—
यो दानाम्बुपवाहः स खलु समभवत् कीर्तिसिद्धशब्दवन्ती ।
साऽपि स्वच्छन्दमारोहति गगनतलं खेलति क्षमाधराणां,
शृङ्गोत्सवेषु रङ्गत्यमरभुवि मुहुर्गाहते खेचरोर्मि ॥ ३२ ॥

पुण्डरांगमः सकलसुमनः संस्तुतो वस्तुपालः, तत्र स्मेरा गुणगणमयी केतकीगुल्मपणिः ।
तस्मामासीत् किमपि तदिदं सौरभं कीर्तिदम्भाद्, येन प्रौढप्रसरसुहृदा वासि[ता] दिग्विभागः ॥३३॥
सेचं सेचं स खलु विपुलैर्वासनावारिपूरैः, स्फीतां स्फारिं [वि]तरणतर्स्वस्तुपालेन नीतः ।
तच्छाक्षायां भुवनमस्तिलं हन्त । विश्रान्तमेतद्, दोलकेलि श्रयति परितः कीर्तिकन्या च तस्मिन् ॥३४॥

श्रीवस्तुपालयशसा विशदेन दूरादन्मोन्यदर्शनदरिद्रिद्वशि त्रिलोकयाम् ।
नामौ स्वयम्भुवि विशत्यपि निर्विशङ्कं, शङ्के स चुम्बति हरिः कमलामुखेन्द्रुम् ॥ ३५ ॥
स एव निःशेषविपक्षकालः, श्रीवस्तुपालः पदमद्गुतानाम् ।
वः शङ्करोऽपि प्रणविक्रजस्य, विभाति लक्ष्मीपरिभ्योर्यः ॥ ३६ ॥

वीतकारैः शकटवजस्य विकटैरक्षीयहेषारवैरारावै रवणोत्करस्य वह्नैर्बन्दीन्द्रकोलाहलैः ।
नारीणामध्य चक्रीभिरशुभ्रेतस्य विशस्तये, मन्त्रोद्धारभिवाचचार चतुरो यस्तीर्थया[ता]महम् ॥ ३७ ॥

॥ इति वस्तुपालवासिः ॥

षष्ठे परिशिष्टम्

श्रीजगदिसहस्ररिविरचिता
वसुपालतेजःपालप्रशस्तिः ।

त्रियः श्रीसुनिसुब्रतः स तनुतां यो मन्दरागस्तले, तन्वानः कमठाधिनाथममृतोद्धारकैवर्यकः ।
निर्मध्यैनमधर्मकर्मलहरीपूरेषारं भवाकूणारं पुरुषोत्तमाय न तमां ददे स्म कस्यै श्रियम् ? ॥ १ ॥

यस्यै रहिमभरो गभीरिमगुणक्रान्तेन काण्डोलिनी-
कान्तेनाञ्जनपुञ्जमङ्गिमज्जयो शङ्के स्वकीयोऽपितः ।
यस्येव क्रमसेवनाय च मुदा मुक्तोऽङ्गम्: कच्छपो,
लेखे काञ्छतां स यच्छ्रुतं सतां श्रीसुब्रतो विरूतिम् ॥ २ ॥

आनन्दाय सुदर्शनाऽस्तु जगतां यस्या युखेनाप्तो, नप्राप्या श्रुनिसुब्रतकमनसादर्शप्रतिच्छन्दिना ।
आत्मद्वादशतां बहुतद्वर्षेषो हिंसांगुर्भेदाकस्यानल्पपत्राट्कपाट्कतिरस्कारे चकारोद्धमम् ॥ ३ ॥

रक्षादक्षो दिवि दिविषदां कोऽपि सन्ध्यासमार्धिं,
ध्यातुर्धातुर्भुलुकजलतः शौर्यराशिः पुराऽङ्गसीत् ।
मेहूसङ्गप्रतिष्ठितया सम्मुखीनो बभूव,
भूमंसभ्रंसदसुहृदो यस्य उद्देष्य एव ॥ ४ ॥

'वंशो विष्ववित्तविविदितः यर्णां वेदम तस्मादौलुक्यास्यः समजनि समुन्मीलदौअत्तलीळः ।
तस्यादौलुक्यास्मितसितवश्चेलतानातिरेकादेकच्छत्रामतनुत महीं मूलराजो महीन्दुः ॥ ५ ॥

हत्याऽप्यः कच्छपं सिन्धुराजपक्षोमशोभितः । अमन्दरोचितमुज्जोऽप्यभवद् यः श्रियः प्रियः ॥ ६ ॥

कीर्तिस्तोमसुधाभृतानि वसुपालण्डानि रेजुः सुधा-
कुण्डानीव नवग्रिविष्टपसदां स्वाधानि वैस्मिन् विभौ ।
रक्षानागच्छुप्तिका इव सदा सेवासमायातषट्-
श्रिशङ्गाजकुलीयदक्षिणभुजव्याजेन येषां वसुः ॥ ७ ॥

तस्मादकमङ्गमिलजिजकीर्तिभृतिशुभ्रीहृतां निजमहोषहनाविदीसाम् ।
मर्ति हस्य धरणी रिपुसम्भुष्टैवासुखरक्ष इति राजवति स्म राजा ॥ ८ ॥

वल्लभवाही हरसिद्धिसिद्धप्रयेष रेजे सम्भाटनीतु ।
स्तुन्मुखैः वाहसिनिर्वशेभ्यः, कीर्तं निवाकास्तवेन वस्त्रात् ॥ ९ ॥

शूलसम्भस्तप्तु वहुपरापदेवः, स्वातः शिरी समिति यः सिद्धिविभागिः ।
दम्बामदामभिर्भूचि धूराङ्गनामिः, शुष्मारवैवतमिवेष्टितकान्तदाता ॥ १० ॥

स्वं विमेतु परेण तुदसिद्धैकचिन्ताचयन्तान्तिनिदः ।
यः स्वप्नात्पूर्वैतत्पि वाहुपदकप्रदसिनिर्वेदमुदं न मेवे ॥ ११ ॥

उस्मादभूद् वृद्धयस्य भूता, भीटुर्क्षो तुर्सभशावदेवः ।
वस्त्रासिसिन्वी वितताभिरेत्य, मनं महीमृत्कुलवाहिनीमिः ॥ १२ ॥

मुरसीणां नेत्रं सजति निजरूपादनिनिर्विषं, प्रुवं तस्मिन् भस्मीकृतरिपुरभूद् भीमेनृशसिः ।
वदुत्पातौ आते हुतवृतमिको योबनृपतेस्तः श्रीरास्यं गीः करमसिंहता तुक्षममुच्चत् ॥ १३ ॥

वद्वानोदकजातसिन्मुपट्टैः कीर्तिप्रभापाण्डुमिः, शत्रुघ्नीजनसाज्ञान्युसलिक्ष्मीतस्विनीमिः समर् ।
समिभैव पदे पदे तनुमतामन्तः समन्तान्मुदं, तन्वश्चिर्जितगाङ्गायामुमजैर्धर्वी पदित्रीकृता ॥ १४ ॥

क्रामन्ति स्म यथा वशाऽम्बरपशान् यात्रासु यात्रावनीजैत्रे सर्पति दर्ढतारतुरमक्षुण्णा रवौराज्यः ।
पद्ममन्तीव तथा तक्षशिखात्पेऽपि विज्ञायत्ता, शङ्के कीर्तिराघाधीक्षवक्ता दूरेऽसिद्धूपापि ॥ १५ ॥

तस्माद् विस्मारितरतिपतिः काशिनामङ्गधामा, नामा कर्णः समजलि भुवक्षाकिंश्च ग्रीढिरत्नम् ।
किंवं वानिश्चभवति निजं वहुमन्तन्त मन्ये, धन्यमन्या रिपुपुष्टयो यस्य स्वं निरूप्य ॥ १६ ॥

यद्व्यपठन्तोत्तमैः, परमाणुगमैरिदि । विभिर्विधाय कन्दर्पं, सदर्पं यावपि व्यधात् ॥ १७ ॥

सहक्तुमपश्चेन, यस्तां कीर्तियर्थी व्यधात् । चतुर्दशापि विश्वानि, छादमात्रकिरे यस्य ॥ १८ ॥

व्यवशत जयसिद्धैवभूमस्तदनु 'दिशंसिद्धशस्त्रमनुप्रवापः ।
यशसि वर्दसिवेनुदुष्मुखैः, अितमुद्धमिर्दिवि दोहफेनसाम्यम् ॥ १९ ॥

तत् वैलोक्यनिभ्रिमूर्मिकमृद्धकोडस्त्रमालवह्माभूत्कीर्तिनितमिनीमुखवरिष्ठेपाय पांसुलकरम् ।
लीकालुमुग्गायं सरखुरोत्त्वातक्षमामप्त्तच्छ्रद्धैवैर्लगार्ज्जेऽपि तुरगा यस्य क्षणमिक्षिपुः ॥ २० ॥

विश्वस्तोपमृतिक्षतव्यतिकैरस्तैर्यद्यस्तेजसोः,
सामान्यमहिपतिमप्यसुखमां लङ्घेन्तु-तीक्ष्मयुती ।

कालुन्ती विश्वनन्दितामिव तयोरासुःप्रवृद्धौषधी,
द्रुष्टुं काशन काशनक्षितिधरोपान्तेऽपि तौ आम्यतः ॥ २१ ॥

उत्तराकं कर्मदे विहस्य विमपि प्रसाविदाः शश्रदः, स्वर्गज्ञीपरिम्भयेऽपि न मनःस्वास्यं समाप्तेदिरे ।
यं कर्मपान्तकृतामन्तवक्तव्यकुरुताकारस्त्रुत्कार्तुकं, पद्मनन्तः प्रसरन्तमहुतमयत्वेन भीमदृशः ॥ २२ ॥

अवश्ययाशु त्रुत्यामयतं, विरोधिवीरा नवनक्षितामिः ।
वस्त्राङ्गुपदेश्वद्वद्वद्वासां, लक्ष्मीं च दक्षा रमसावगृह्ण ॥ २३ ॥

स्वैरेव प्रहौद्देषपद्मिरमरीभूतैः सुरीभिः समं,
 गीतं प्रीतिरसैः स्वगेव हृषिते तस्मिन् यशः शृण्वति ।
 क्षमां पाति स्म छुमारपालनृपतिर्बत् कीर्तिकालृप्यदं,
 तद् बाष्पाङ्गानकश्मलं न रुदतीविचं सवितोऽप्यहीत् ॥ २७ ॥
 वैनं अर्मसुरीचकार सहसाऽर्णोराजमन्त्रासयद्, वाणैः कुरुणमग्नीदपि गुरुचके स्मरण्यासेनम् ।
 इत्थं अस्य परिक्षतक्षितभूतो हंसावलीनिर्मलैः, रामस्येव निरन्तरं नवयशः पूरीर्दिशः पूरिताः ॥ २८ ॥
 ताहृदानपरप्यगमितिभूतो निष्काश्य काळं कर्लि,
 ब्रेता-द्वापरयोरहम्प्रथमिकावद्दस्पृहं पश्यतोः ।
 अर्यधन्दनतो विशेषकविधि कृत्वा यशोजाहनी—
 पाथोभिः कृतिना स्वयं कृतयुगो येनाभिषिक्तः क्षितौ ॥ २९ ॥
 अजयदजयपालभूमिपालः, क्षितिमथ मन्मथमञ्जुलेन येन ।
 श्रिपुररिपुरपि प्रसूनवाणैरिव पिहितः सहसा यशः समूहैः ॥ ३० ॥
 अन्तर्मत्कीर्तिकासारं, कृतस्नानस्य सर्वतः । लग्नफेनलवायन्ते, तारा गगनदन्तिनः ॥ ३१ ॥
 बालः श्रीमूलराजोऽथ, विकीडन् समराङ्गणे । द्विषष्ठताप्रतानानि, समूलमुदमूलवत् ॥ ३२ ॥
 अप्यपे प्रसूतिसम्भर्मेण यत्तेजसा रिपुयशः सुधारसः ।
 तेन निर्गलितबिन्दुवृद्धवद्, दोतते वियति तारकाताति ॥ ३३ ॥
 श्रीमीमारमणो बंभार सुजयोः श्रीमीमदेवो विभुदानारम्भविजृभमाणविभवग्रागस्यगर्जशक्ताः ।
 गीतो यत्पुलया विरोचनसुतः पातालैतालिकैरर्थेतालमनोभिरन्वहमहङ्कारं चकार द्वितः ॥ ३४ ॥
 यदाननसरोजेन, नित्यस्मेरेण निर्जितः । सज्जलज इवामजद्, यशोजलधौ विष्णुः ॥ ३५ ॥
 अर्णोराजाङ्गजातं कलकलृभासाहसिक्यं चुलुक्यं,
 श्रीलावण्यप्रसादं व्यतनुत स निजश्रीसमुद्घारयुर्वम् ।
 अस्य प्रत्येकधाराद्वयकलितभुजायुग्मशाली रिपूणां,
 कीललैः पीतबासा इव समिति चतुर्बाहुतामेति खड़ः ॥ ३६ ॥
 ताहृष्टप्यव्यतिकरभूतां सर्वतः पर्वतानां, व्यातन्वद्धिः क्षयसममरुत्पूरशङ्कातिरेकम् ।
 यत्पत्यार्थिक्षितिधववधूर्वर्गनिःश्वासवातश्वातोत्पातैरिव दिवि सदा भ्रेमुरकेन्दु-ताराः ॥ ३७ ॥
 भूमारोद्धृतिधुर्युद्दरभुजस्तस्याङ्गजन्मा स्फुर-
 त्कीर्तिः श्रीघबलोऽस्ति दीर्घबलोऽहङ्कारलङ्घेभरः ।
 यस्मिन् निष्प्रति मार्गणै रिपुगणं हृष्यन्ति तस्याङ्गनाः,
 काशोऽयं कुरुते भद्रेकवशं चित्तेशमित्याशया ॥ ३८ ॥
 विकीडतो यस्य नवप्रताप-यशः कुमारौ जगदङ्गणान्तः ।
 प्रभावभाग्नी ऋसतस्तदङ्गरक्षासु दक्षाविव सूर-राजी ॥ ३९ ॥

पाताले बलिराजराजविदादे विश्वभरामण्डले, यज्ञीलवितमञ्जुले मुरपुरे कल्पद्रुमदानुषि ।
दारिद्रेन अयन्तुतेन सहसा यदौरिवीराश्यादआन्तप्रसरेण शैलशिखरकोडेषु विकीर्तिम् ॥ ३७ ॥

यस्मासिरम्भोदसहोदरश्चीः, शौर्ये द्विप्रस्येव मदप्रबाहः ।
सर्पन् सदपारिनरेन्द्रकीर्तिकासारपूरं कलुषीचकार ॥ ३८ ॥

सचिवामवरे कवित्, प्रार्थितस्तेन पार्थिवः । श्रीमान् भीमो मुदा बाचमुवाच अवणामृतम् ॥ ३९ ॥

बाम्देवताचरणकाङ्गननुपुरश्चीः, श्रीचण्डपः सचिवचक्षिरोऽवतंसः ।
श्राव्याटवंशतिलकः किल कर्णपूरलीलायितान्यधित गूर्जरराजधान्याः ॥ ४० ॥

मसिकस्पलता यस्य, मनःस्थानकरोपिता । फलं गूर्जरभूपानां, सङ्कस्तिमकस्पयत् ॥ ४१ ॥

वागदेवीप्रसादः (?), सूनुष्ठण्डप्रसाद इति तस्य । निजकीर्तिवैजयन्त्या, अनयत गगनाङ्गे गङ्गाम् ॥ ४२ ॥

पातालमूले पिहितांशुभासः, पृथ्वीविभागेऽपि हराङ्गासः ।
स्वर्गेऽपि दुर्घाभिधपयोविलासः, कीर्तिर्यदीया त्रिजगत्युभास ॥ ४३ ॥

कीर्तिकश्मलितपार्वणसोमः, सोम इत्यजनि तस्य तनूजः ।
सिद्धराजगुणभूषणभाजः, संसदो विशददर्पणकल्पः ॥ ४४ ॥

उत्कर्षप्रगुणां गुणा-ज्ञानपरिज्ञानौचिती मन्महे, तस्य प्रीतिरसादनन्यमनसा येनान्वहं सेविताः ।
देवस्तीर्थकुदेव केवलनिविर्विज्ञानिधानं गुरुः, सूरि: श्रीहरिभद्र एव गुणधीः सिद्धेश एवाधिपः ॥ ४५ ॥

सीताकुशिसरोवैकवरलाकान्तोऽश्वराजास्वयथा, तस्याभूत् तनुभूः सदाऽपि जननीभक्तौ च यः पावनः ।
स्फूर्जदूर्जटिजूटकोटरपदन्यासोत्थपापच्छिदे, स्वर्नद्वाऽपि समाश्रितः सितलसत्कीर्तिच्छविच्छिन्नना ॥ ४६ ॥

सप्तलोकचरी सप्ततीर्थयात्रासमुद्भवा । गङ्गां जिगाय यत्कीर्तिविश्वत्रितयविस्तृताम् ॥ ४७ ॥

मैमीव तैषधमहीरभणस्य तस्य, कान्ता सती समजनिष्ट कुमारदेवी ।
यन्मानसे जिनपदाम्बुजभाजि शुद्धपक्षद्वयः पतिरराजत राजहंसः ॥ ४८ ॥

श्रीमहादेव इति तत्त्वनुभूवभूव, यत्कीर्तिपूरशशिनोर्गगनाङ्गपीठे ।
स्वर्धेद्वयं प्रसूतयोरिव साम्यदण्डं, स्वर्दण्डमेव विधिरन्तरघत्तं हृष्टः ॥ ४९ ॥

विदेते हृष्टविद्यौ तदनु तदनुजौ धीनिधी वस्तुपाल-

स्तेजःपालम् तेजस्तरणितरुणिमस्फूर्तिरेचिष्णुमूर्ती ।
श्रीमलेती निजश्रीकरणपदकृतव्यापृती प्रीतियोगात्,

तुभ्यं दास्यामि विश्वं जयतु नवनवं धाम तन्मन्त्रमित्रम् ॥ ५० ॥

हस्तक्षता प्रीतिपूण्यि, श्रीवीरधवलाय तौ । श्रीभीमभूजा दत्तौ, वित्तमासमिवाऽस्त्वनः ॥ ५१ ॥

अन्ये केचन रोचमानमतयो मन्त्रीश्वरा भास्करा,
कल्पस्यन्ते बत ! वस्तुपालसचिवाधीशेन साम्यं कुतः ? ।

साधे यज्ञभुवन्युनाऽपि दिविष्ठद्वैकमान्यः स्वयं,
सामान्यमतिपतिगौरवपदं वाचस्पतिविवृक्षति ॥ ५२ ॥

वीरधीवरथालि वीरलक्ष्मे सिहारवान् भासवाद्, जेतुं यातवति प्रस्तुपुण्डैर दूरवद् गोदमद् ।
मस्तीर्ता बहुसिंहसिंहसाम्बोधि भुजगीष्ठवा, गर्जलर्जितवान् थशसिंगतीमुक्ताकृतामन्त्यन्तम् ॥५६॥
सम्भूजे शुद्धे घनेन रजसा श्रीतीर्थयाक्रापरिस्थनिद्यन्दनद्वारतुरग्रातक्षेत्रस्त्रिना ।
अस्तिके चह पांशुकेलिमुहूदो नन्दन्ति मन्दाकिनी-दुग्धाम्बोधि-विभावरीविभु-कुमुक्मीन्द-रुद्रादयः ॥५७॥
येताऽप्यारि तपोनिकारिकल्पास्तद्वारि श्वसुजावक्षमाभून्मण्डनमिन्द्रमण्डपमहो । वस्त्रेष्वर्तुः शुद्धः ।
तेनैकां शुभुनी दशद्विभिन्निः पार्श्वस्थपार्श्वश्व-श्रीमन्नेभिनिकेतनयुगामोगेन निर्भर्तिसतः ॥५८॥
कः श्वसुजायशेषरे विनयृहशीतारहारं स्वसृष्टाराधोरणि तोरणं यदसृजत् तन्मूर्धिं लक्ष्मीः स्थिता ।
श्वस्त्रेष्वरितद्विपक्षवदना नन्तु समागच्छतो, नामेयं प्रणिपत्य च ब्रचक्षतो वस्याऽस्त्रवीक्षाहमाद् ॥५९॥
श्रीकृष्णमन्तर्मुखीक्षिति सरसि पाप्याम्बु यस्तारिते, नीचत्वाय सुषाकाराय विवृधाः कुर्वन्ति नोपकामद् ।
इत्यौ ह कृतिनोऽन्वहं विदघते कुन्दावदात्मुता, यास्वच्छाधतराकया जगति यस्तीर्त्या परीतेऽभितः ॥५७॥

येन व्यधाप्यत विष्वुतिहारिवारी, श्रीपादलिङ्गनगरीमुकुरस्तडागः ।

यस्यस्त्वगस्तिरिह कोऽपि तदेतु तन्याद्, दोःस्फारनं मुहुरितीव महोर्भिर्भिर्यः ॥ ५८ ॥

अर्कवालितक्षमामे, तेन तेनेऽहुतं सरः । यस्य निस्यन्दलेसेव, पार्श्वे वहति वाहिनी ॥ ५९ ॥

वेलैश्वर्यन्तगिरिमण्डननेभिचैस्ये, नामेय-पार्श्वजिनसशयुगं व्याघायि ।

आशः स्वयंवर्णितनाभिज्ञ-नेभिनाथ-श्रीस्तम्भनेष्वगृहमप्युदधारि हारि ॥ ६० ॥

स्वर्वे व्युत्सैवतोरणशिरः व्यापदैः प्राप यद्वापी-कूप-तडागमार्गचलनैः पातालमूलं यर्थैः ।

स्व अस्तैषम-मन्दिरोदर-वराऽरामप्रपामध्यभूविश्रामश्रयणेन भूमिमपि यत्कीर्तिसुहुर्गाहते ॥ ६१ ॥

यस्तिर्पितदेवमन्दिरश्चिरः कल्याणकुम्भप्रभाप्राग्भारैर्विदधे सदा सुदिवसं सर्वत्र धात्रीतः ।

इत्यः शाश्वतिकस्तथा प्रसूभरव्यामच्छविच्छशना, यस्त्वङ्गसत्वैरिवामनयनावक्त्रेषु रत्रिक्षणः ॥६२॥

अस्थापन्त् स्थिरमतिः शकुनीविहारे, संसारतारिलसद्वद्वद्वर्धमप्यन्ते ।

श्रीपार्श्व-श्रीरजिनपुङ्कव्युगमदमाद्, यो यामिकद्वयमिवाग्रिमधर्मबन्धुः ॥ ६३ ॥

तमेकदा करारोपमर्तिस्तस्वर्णशेषरः । श्रीतेजःपालमन्त्रीशो, मुदा ज्येष्ठं व्यजीज्ञपत् ॥ ६४ ॥

सुव्रतक्षमनमस्कृतिहेतोर्यातवान् भूगुपुरं प्रति सोऽहम् ।

काव्यमुज्जवलनयो जयसिंहसूरीरित्यपठदत्र मदग्रे ॥ ६५ ॥

तेजेःपाल ! कृपाद्वधुर्य ! विमलप्राग्वाटवंशाद्वज ।,

श्रीमन्नम्बद्धकीर्तिरथ वदति त्वस्तम्भुं मन्मुसात् ।

१. °आस्थाय गा० ॥ २. पथमिदं पुरातनप्रवाधसंग्रहान्तर्गतवस्तुपालतेजःपालप्रवलये—“एवा मन्त्री लेखःपालो व्युत्पुरमायातः । तत्र श्रीमुनिस्तुवत्वैत्याचार्यैः श्रीरासिंहसूरीरिभिरङ्गम्—मन्त्रिन् । सन्देशक-केकं श्वशु । [मन्त्रिनोक्तम्—आदिश्यताम् । अय वाक्यात्यामिन्यां इदा युवत्येका समेलं प्राह ” इत्युल्लेखनतरं विष्वासितं वर्तते । पत्रम् ६५ । तथा उपदेशातररङ्गिण्यां ७४ तमपत्रेऽप्येवंवेष्टैव वर्तते । केवलं तत्र “ श्रीमुनि-सुप्रतिष्ठानवेकरणायैरकम् ” इति वर्तते, न तत्र रासिंहसूरेऽन्यस्य या उपायामार्गस्य शामोदेशो वर्तते इति ॥

आजम्नावधि वंशयहिकलिता भान्ताऽहमेकाकिनी,
बृहा सम्पत्ति पुण्यपूर्ण ! अवतः सौकर्यमित्सृहा
॥ ६६ ॥

इत्युक्त्वा मम पञ्चविंशतिमितास्तेन स्वयं दर्शिता-
त्सिमिन् सुकृतवान्निं देवकुलिकाः कल्याणकुम्भस्पृशः ।
गाः शैवदर्शकुम्भोऽपि कान्तिनिधिभिः कल्याणदण्डैर्विना,
सीमन्तैरिव सुभूतो विदधते नान्तः सतां सम्पदम्
॥ ६७ ॥

आदेष्टं देव । अथेव, इत्ते स्वच्छेन चेतसा । हेमदण्डानिमानत्र, तद्यहं कारये रथात् ॥ ६८ ॥

इत्यन्तःस्मितवस्तुपालसच्चिवादेशाल्लसरेजसस्तेजःपालमहामतिर्वर्चयत् कल्याणदण्डानिमान् ।
प्रत्येकं हरहासहारिमहो येषां शिखासु स्थिता, गृह्यन्ति प्रतिवासरं परिचलत्केतुच्छलात् कीर्तवः ॥ ६९ ॥

जुहून् पातकपादपैकदहने तीर्थेशधर्मे निजां, कर्मालीं न कति कतूनकृत स श्रीवस्तुपालानुजः ।
दण्डा यूपवदुच्छुद्रवगृहस्माभुद्रवायाममी, तरेनाऽस्तुदण्डमण्डलेभरयशःसिन्धौ समारोपिताः ॥ ७० ॥

दते चेतसि सम्पदं सुकृतिनां तेनेयमुत्तमिता, चञ्चलारुमरीचिनीचिकलिता कल्याणदण्डमङ्गः ।
पूर्वोर्बीधरकुञ्जतः प्रसरता प्रातर्विद्यत्कनने, यत्राऽस्तुमत्य भियेव गोपतिगवीकुन्देन मन्दामते ॥ ७१ ॥

वायव्यसहृष्टगोत्रमण्डनमणेः कीर्तिर्विद्याहिनीहस्ता दिग्गजगर्जिवाद्यविभवेयोमाक्षणे घृतस्ति ।
दण्डास्तावदमी सुवर्षधटनाविभ्राजिनः केतनकीडतिक्षिणिकारवव्यतिकौरः कुर्वन्तु गीतकमम् ॥ ७२ ॥

तेजःपालयशोविलासविशदश्रीणां दिशां कौतुककीडामण्डपडम्बरं महदहो । यावद् दधात्यम्बरम् ।
तावन्नूतनजातरूपजनितः सोऽयं समुच्चम्भनस्तम्भस्तोमसमानतां वितनुतासुदण्डदण्डवजः ॥ ७३ ॥

स्वस्तिश्रीव्योमदेशातुदयनतनुभूकीर्तिर्वर्तिले श्री-
तेजःपालं प्रसन्ना वदति मतिमतां वन्नम् । नन्दा मदायुः ।
येन त्वत्कूपसहेमध्वजविततभुजा दुःखमादाहृतां,
लिम्पन्तां ता मुहुर्मामिह जिनगृहिकास्त्वदशक्त्वन्देन ॥ ७४ ॥

मोहो द्रोहभियाऽधिरोहति रसं श्रीपुजाहृतज्ञरे, क्षिसो यः कलिकालकेलिविभुरो दक्ष । त्वया रक्षितः ।
श्रीसोमान्वयवार्षिकर्वनकलासोम । स्वयं निर्मलो, धर्मः प्रत्युपकारकर्मठतया स त्वां क्षितौ रक्षतु ॥ ७५ ॥

श्रीवस्तुपाल ! तव चित्तवनमस्तुदः, सन्त्वोपकारमतिसारणिसिच्यमानः ।
सत्पञ्च-पुण्यकुम्भः फलवोऽस्तु तुभ्यमव्याजविधसुहृदे जिनधर्मवृक्षः ॥ ७६ ॥
श्रीकुञ्जवपदाभ्योग्रमधुवातमधुव्रतः । एतां प्रशस्तिमस्तावां, जयसिंहः कविर्व्यधात् ॥ ७७ ॥

॥ श्रीजयसिंहसूरिविभ्राजिता वस्तुपालतेजःपालप्रशस्तिः ॥

सप्तमं परिशिष्टम् वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि ।

स्वस्ति श्रीवस्तुपालाय, वभौ यद्गुदिसुभ्रुवः । कोडीकृताम्बरं रौप्याङ्गनभाजनबद् यशः ॥ १ ॥

अन्तःश्वारं रिष्णां घनमपि कवलीकृत्य तृष्णातुरेव,

त्वत्कीर्तिनाड्डप तृष्णि भुवि सचिव । जवात् क्षीरनीराकरेऽपि ।

तस्मादाकाश-नाकोरगनगर चरस्वर्धुनीपानहेतोः,

सर्वश्वापि त्रिलोकीहितचरित । चिरं सम्प्रमाद् वम्ब्रमीति ॥ २ ॥

मवद्गुजभुजङ्गोऽसौ, वस्तुपाल ! द्विषां भये । असि दधाति फूल्कारविषोदारसहोदराम् ॥ ३ ॥

औषधीशससः सत्यं, वस्तुपालयशोभरः । येन प्रसर्पता पश्य, विश्वं मुक्तामयं कृतम् ॥ ४ ॥

शेषद्वयविधायिनीमपि भवत्कीर्ति सुधासोदरां, श्रीमन्त्रीश ! मुखस्फुरद्विषभिदे गायन्ति नागाङ्गनाः ।

शम्भुः स्वाङ्गविरोधिनीमपि पुनर्नित्योपरोधादिमां, देवीर्गापयते विषाकुलगलश्यामत्वसंलुप्तये ॥ ५ ॥

कथम्भूप्रसवावतंसमधुपीक्षाहारलङ्घोपमाः, कामं कामगवीनवीनपयसां पानेन तारस्वराः ।

ताञ्जिन्ताभणिरहिमभस्मिततमःस्तोमे सुमेरोर्हुहागमें चण्डुपगोत्रमण्डन । भवद्वानानि देव्यो जगुः ॥ ६ ॥

देव ! त्वत्यतिपन्थिपार्थिवपुरीसौधाध्वभागादिव, प्राप्य व्योमविहारदुर्लभमपि ग्रौदप्रसूदप्रभः ।

श्रीमद्गुणद्वयगोत्रमण्डन । भवत्कीर्त्या जितो यमिनीजीवेशस्तनुते तृणं निजमुखे लक्ष्मच्छविच्छान्ना ॥ ७ ॥

गुणग्रामे रामे जितसितकरे सत्यपि निजे, स्वयं गृहासि त्वं परगुणमतादक्षमपि यत् ।

अथं लोभक्षोभव्यतुर ! चतुराभ्योधिरसनावनीशिक्षादक्ष ! स्फुरति किमु ते मन्त्रिसुकृट !? ॥ ८ ॥

भोगीन्द्रस्वद्गुजेन त्रिपुररिपुरपि त्वत्प्रभुत्वप्रभावैः,

शीतांशुस्वन्मुखेन त्रिदशसरिदपि त्वच्चरित्रपञ्चैः ।

शकेभस्वद्गुतेन प्रसभमशुभतां लभिताः सज्जलज्जं,

निर्मज्जन्ति स्म तस्मिन् सचिव । तव यशस्तोयधौ वस्तुपाल ! ॥ ९ ॥

भर्ता ओगभूतां विभर्ति वसुधामेव प्रभावाद्गुतां,

दिग्दन्तीन्द्रकरस्तु हन्ति च रिपून् धत्ते च धात्रीमिमाम् ।

श्रीमन्त्रीश ! भवद्गुजस्तु कृतिनां दत्ते च विचरजं,

भिन्ते च द्विषतो दधाति च धरामेषां क साम्यं मिथः ? ॥ १० ॥

इन्दुनिन्दति कौमुदीसमुदयं मुक्तामणीनां ततिर्मुक्तालङ्कृतिरस्तचण्डमहिमं दर्पी न सर्पाचिपः ।

गर्वं शर्ववराधरो न कुरुते न स्वर्धुनी स्पर्दिनी, श्रीमन्त्रीश्वरवस्तुपालयशसि त्रैलोक्यमाकामति ॥ ११ ॥

बलि-कर्ण-दधीचिकीर्तयः, कलिपङ्कार्पितमत्यजन् मलम् ।

तव दानपयोनदीकृतस्तन्पनश्चण्डुपगोत्रमण्डन ! ॥ १२ ॥

शङ्खं पद्मचिनीपतिः कक्षुभुजां सार्थैः स्वयं प्रार्थितः, कर्षं कर्षमिलातलादनुदिनं त्वद्वानतोयच्छट्टाः ।

श्रीमद्गुणपवन्दय ! सिंहति शब्दीचिरेशलीलावनं, नैव चेत् कथमन्यथा विटपिनामप्यत्र दानक्रिया ! ॥ १३ ॥

॥ वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि ॥

ओष्टमं परिशिष्टम्

वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि ।

[महामात्यधीयस्तुपालविनिर्मितनरनारायणानन्दमहाकाव्यप्रतिसर्गप्रान्त-
गतानि अन्यान्यकविविरचितानि वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि ।]

सद्गामसिंहशृणुनारुधिराहणानि, श्रीवस्तुपालकरवालविजृभितानि ।
कीनाशकासरकट्यक्षसहोदराणि, को नाम वीक्षितुमपि क्षमते विपक्षः ॥ १ ॥
प्रथमसर्गप्रान्ते ॥

हंसः कस्यापि नायं प्रथयति न परमार्थनादैन्यमन्य-
स्तुच्छामिच्छां विभत्ते तनुहृदयतया कोऽपि निष्पुष्यपण्यः ।
इत्थं कल्पद्रुमेऽस्मिन् व्यसनपरवशं लोकमालोक्य सृष्टः,
स्पष्टं श्रीवस्तुपालः कथमपि विधिना नूतनः कल्पवृक्षः ॥ २ ॥
द्वितीयसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपाल ! कलिकालविलक्षणस्त्वं, संलक्ष्यसे जगति चित्रचरित्रपात्रम् ।
यदू दानसौरभवता भवता वितेन, नावेकपेन मदमेदुरिता मुखश्चीः ॥ ३ ॥
तृतीयसर्गप्रान्ते ॥

गृहासि नाम परतोऽपि नवान् गुणांस्त्वं, त्यागो गुणस्त्वं नवस्तु न वस्तुपाल ! ।
लोकोत्तरस्तदपरस्य नरस्व स स्थाद्, यत् तादशो नहि दशोः पवि माहशानाम् ॥ ४ ॥
चतुर्थसर्गप्रान्ते ॥

कैरसरसित्तहं ते बासवेशम श्रियोऽमृदजनि वदनपदं सद्ग वाग्देवतायाः ।
इह जगति समस्ते वस्तुपाल ! स्तुमः क्व ? , सचिवतिरुक्त ! अन्यं तद् वद्वाऽन्यं वदान्यम् ॥ ५ ॥
पञ्चमसर्गप्रान्ते ॥

१ पश्चिम वामीव्युत्पातमहाकाव्यविशेषसर्गप्रान्ते वर्तते, उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुती २१तमं
वर्तते, विश्वदर्शिवस्तुपालवर्तते “कृपाकृपालं श्रीवस्तुपालं स्तौति लोकवत् ।” इत्युपेन विरिष्टं
शापि वर्तते ॥ २ पश्चिमव्युत्पातमीयवस्तुपालस्तुती २२तमं वर्तते ॥ ३ पश्चिम नरनारायणामन्य-
महाकाव्यविशेषसर्गप्रान्ते वर्तते ॥

इतरगुणकथाया: काथिकत्वस्पृष्टागमिह वहति सहास्यं कस्य नो लास्यमास्यम् ? ।
तव तु विततकीर्तेः कीर्तनं कर्तुकामः, सुरगुरुपि शक्ते वस्तुपाल ! त्रपालः ॥ ६ ॥
वष्टसर्गप्रान्ते ॥

जनन्यामोहवल्लीयमिन्दरा मन्दिरे स्थिता । मन्त्रिणा वस्तुपालेन, कल्पवली विनिर्मिता ॥ ७ ॥
सप्तमसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य परे कवीन्द्राः, कामं यशांसि कवयन्तु वयं तु नैव ।
येनेन्द्रभण्डपक्षतोऽस्य यशःप्रशस्ति-रस्येव शक्तहृदि शैलशिलाविशाले ॥ ८ ॥
अष्टमसर्गप्रान्ते ॥

केरसरसिरुहं ते वासवेशम श्रियोऽभूदजनि वदनपद्मं सद्ग्र वागदेवतायाः ।
इह जगति समस्ते वस्तुपाल ! स्तुमः कं ?, सचिवतिलक ! धन्यं तद् वदाऽन्यं वदान्यम् ॥ ९ ॥
नवमसर्गप्रान्ते ॥

यौ श्रीः स्वयं जिनपतेः पदपद्मसद्ग्रा, भालस्थले सपदि सङ्गमिते समेता ।
श्रीवस्तुपाल ! तव भालनिभालनेन, सा सेवकेषु सुखमुन्मुखतामुपैति ॥ १० ॥
दशमसर्गप्रान्ते ॥

तत्कीर्तिज्योत्स्नया जाते, तीरे नीरेशितुः सिते । नेक्ष्यन्ते पश्चिमिर्बस्तुं, वस्तुपाल ! वनालयः ॥ ११ ॥
मुकुलितकमलोदयः कवीन्दुः, क हव न काव्यसुधानिर्विर्भूव ? ।
सुरदुरुपिभवस्तु वस्तुपालः, कविसविता कविताप्रभामिरामः ॥ १२ ॥
एकादशसर्गप्रान्ते ॥

ईरो रणेषु चरणप्रणतेषु सोमो, वकोऽतिवक्त्वरितेषु बुधोऽर्थबोधे ।
नीती शुरः कृतिजने कविरकियासु, मन्दोऽपि च ग्रहमयो नहि वस्तुपालः ॥ १३ ॥
द्वादशसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपाल ! जितबालमृणालग्भे, शुभ्रं वितन्वति जगत् तव कीर्तिपूरे ।
मन्यामहे कुबल-कज्जल-कोकिला-डलि-काकोल-कोलसद्वशामभिधा मुधाऽभूत् ॥ १४ ॥
त्रयोदशसर्गप्रान्ते ॥

लक्ष्म्यामाकृष्णिमुखाटनमनयवति स्तम्भमुज्जिभदम्भे,
दोषे विद्वमभ्यन्तरपुषु मृतिं वश्यतां चिच्छृतौ ।

१ पदमिदं धर्माभ्युदयमहाकाश्यपदमसर्गप्रान्ते, उपदेशमसर्वस्तुतौ च २४तमं वर्तते ॥
२ पदमिदं वरनारायणामन्दमहाकाश्यपदमसर्गप्रान्तेऽपि वर्तते ॥ ३ पदमिदं धर्माभ्युदयमहाकाश्य-
तृतीयसर्गप्रान्तेऽपि वर्तते ॥ ४ पदमिदं उपदेशमसर्वस्तुतौ चतुर्थं वर्तते, ग्रहमध्यकोशे “अफरस्तु”
इत्युक्तेनोलिङ्गितं वर्तते, उपदेशतरक्तिष्ठानं कविहृदमध्यात् कस्यचिदुक्तिमेलिङ्गितं च वर्तते, जिसहर्ष-
वस्तुपालवत्तिसे पुनः हरिहरोक्तिष्ठाना निष्ठितं दर्शते ॥

कर्तुं यद् वस्तुपाल ! प्रभवसि सकले मण्डले तत् तवैव,
श्रीभन्मत्रीश ! मन्त्रे स्फुरति निरवधिः क्षात्रिय षट्कर्मसिद्धिः ॥ १५ ॥
चतुर्दशसर्गमान्ते ॥

मवति हि विभवो भवः परेषां, तव विभवोऽभिनवस्तु वस्तुपाल ! ।
इह महिममहो यशः प्रसूते, यदयममुत्र परत्र पुण्यलक्ष्मीम् ॥ १६ ॥
पञ्चदशसर्गमान्ते ॥

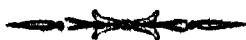
अचिन्त्यदातारमजातशत्रुं, श्रीवस्तुपालं कति नाशयन्ति ? ।
चिन्तामणिः सोऽपि युधिष्ठिरश्च, नान्वर्थसामर्थ्यपदं यदग्रे
शेषे शारदपर्वगर्वितशशिज्योत्कासपलं तव,
त्रैलोक्ये गुणजालकं विलसति श्रीवस्तुपालाङ्गुष्ठम् ।
यत् ताहगृहपाशबैशसकृतातङ्गाभिशङ्काः स्फुटं,
नैवान्यस्य भवन्ति कीर्तिवरलाः खेलासु हेलास्पदम् ॥ १८ ॥
बोडशसर्गमान्ते ॥

वस्तुपालस्तुतिकाव्यम् ।

श्रीवस्तुपालमन्त्रिणा सौवर्णमषीमयाक्षरा एका सिद्धान्तप्रतिलेखिता । अपरास्तु श्रीताढ-
कागदपत्रेषु मषीवर्णाङ्किताः ६ प्रतयः । एवं सप्तकोटिद्वयव्ययेन सप्त सरस्वतीकोशा लेखिताः ।
तदनु श्रीउद्यवप्रभस्तुतिरभिराक्षीर्वादः प्रदत्तः । तद्यथा—

जग्मूढ्रीपो जलधिपरिसामूषितो यावदास्ते,
ज्योतिश्वकं सुरगिरितटीं पर्यटत्येव यावत् ।
यावत् कूर्मो वहति वसुधां त्वदशःपुञ्जसार्धं,
जीवाज्ञैं मुखमिव परं पुस्तकं वस्तुपाल ॥ ॥

उपदेशतरङ्गिणी पत्रम् १४२ ॥



१ पश्चिमदं जिनहर्षवस्तुपालचरिते “ कृपालवालं श्रीवस्तुपालं स्तौति स्म कथन । ” इत्युलेखनो-
क्षिप्तिं दर्शते । २ पश्चिमद्युदयप्रभीववस्तुपालस्तुती २५८मं दर्शते ।

नवमं परिशिष्टम्

श्रीगिरिनारपर्वतस्थाः प्रशस्तिशिलाङ्केभाः ।

——————
वृद्धे शरमहामात्यश्रीवस्तुपाल-तेजःपालकारितश्रीनेमिनाथप्रापाद
गताः पद बहुत्प्रशस्तयः ।

(३८-१)

नमः सर्वज्ञाय ।

पायाशेमिजिनः स यस्य कथितः स्वामीकृतागस्थिता-
वभे रूपदिष्टस्था स्थितवते प्रीते सुराणां प्रभौ ।
काये मागवते वनेवक...द्विपोलावने शंसता-
मिदशां(१)...मपि.....वनाजवे..... ॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीविकमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदण्हिलपुर(*)वास्तव्य-
ग्रामवाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचंडपात्मज ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशा-
राजनंदनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुणिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य महं०
श्रीतेजःपालाशजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरो(*)वरराज-
हंसायमाने महं० श्रीजयतर्सिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तंभतीर्थमुद्राव्यापारान् व्यापृष्टवति सति
सं० ७७ वर्षे श्रीशश्व्रुजयोजायंतप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावाविर्भूतश्रीमहेवाधिदेवप्रसादासादित-
संधाधिष्ठत्येन चौलुक्यकुलनभस्तलप्रकाशनैकमार्त्तिमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसु(*)त्वाह-
राजश्रीवीरध्वलदेवप्रतिपत्त्वाराज्यसर्वेश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपत्तापत्त्वेन महामात्यश्रीवस्तुपालेन
तथा अनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं श्रीरमेंद्रले ध्वलक्कप्रभुस्तनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृष्टता
महं० श्रीतेजःपालेन च श्रीशश्व्रुजयो-उर्बुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदण्हिलपुर-मृगुपुर-*)स्तंभ-
नक्षपुरस्तंभतीर्थ-द्वर्षती-धवलक्कप्रभुस्तनगरेषु तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोडभिनवधर्म-
स्थानानि प्रभूतजीर्णेद्वाराश्च कारिताः ॥ तथा सचिवेश्वरवस्तुपालेन इह स्वयंनिर्माणितश्रीशश्व्रुजय-
महातीर्थवितारश्रीमदाधितीर्थकरश्रीक्षमभद्रे-स्तंभनक्षपुरावतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्यपु(*)रावता-
रश्रीमहादीर्देवप्रशस्तिसहित-कडमीरावतारश्रीसरस्वतीमृतिदेवकुलिकाचतुष्टय-चिनयुगङ-अम्बा-
उबलोकना-शाम्भ-प्रशुभूषिसरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय-तुरगाचिरुद्वितीय-
महं० ठ० श्रीसोम-निजपितृ ठ० श्रीआशाराजपूर्तिद्वितय-चारुतोरणत्रय-श्रीनेमिनाथ (*)
देव-आत्मीयपूर्वजा-उजा-ञुज-पुत्रादिमृतिसमन्वितमुख्योद्घाटनकस्तंभश्रीज्ञापद्ममहातीर्थप्रभृतिअने-

१. परिशिष्टाउडस्टिल. (*) सकोइमं कुहिनिहं सर्वत्र शिलालेखपर्वतसामित्योत्तमज्ञानस्यम् ॥

कार्यकारपरमाप्रतिस्तिते श्रीबेसिताथदेवाविदेवदिव्यपितभीमदुक्तामहाश्रीमें आस्मात्तत्त्वा स्व-
भावनारिण्याः अन्नादृजातीय ठ० श्रीकान्दृपुष्याः ठ० राष्ट्रकुणितंभूत्या भृं० श्रीसुलिला-
देवत्याः (*) पुण्याभिहृदये श्रीनार्द्धग्राम्ये गदामक्षीमहेन्द्रद्विसंताने शिवाश्रीकांसितारितिक्ष-
श्रीज्ञावंदस्यरि-श्रीकृष्णस्मृतिष्ठे महारक्षीहरिभद्रद्विपद्मालंकरणप्रभुश्रीविजयसेनस्मृतिष्ठि-
श्रीज्ञजितनाथदेवादिविद्यतिथिर्कराङ्कुतोऽयमभिनवः समंडपः श्रीसम्मेतमहातीषीचित्तारप्रा-
सादः कारितः ॥ (*)

पीयूषपूरस्य च वस्तुपालमन्त्रीशितुक्षायमियान् विमेदः ।

एकः पुनर्जीवयति प्रमीतं, प्रमीयमाणं तु भूषि द्वितीयः ॥ १ ॥

श्रीद-श्रीदयितेश्वरप्रभृतयः संतु कन्चित् तेऽपि ये,

श्रीणन्ति प्रभविष्णवोऽपि विभैर्नार्किचनं कंचन ।

सोऽर्थं सिचति कांचनैः प्रतिदिनं दारिद्र्यदावानल-

प्रम्लानां पृथिवीं नवीनजकदः श्रीवस्तुयालः (*) पुरः ॥ २ ॥

आतः । पतकिनां किमत्र कथया दुर्मन्त्रिणामेतया १,

येषां चेतसि नास्ति किञ्चिदपरं लोकोपकारं विना ।

नन्वस्त्वैव गुणान् गृणीहि गणशः श्रीवस्तुपालस्य व-

स्तद्विधोपकृतिबतं चरति यत् कर्णेन चीर्णं पुरा ॥ ३ ॥

मित्वा भानुं भोजराजे प्रयाते, श्रीपुंजोऽपि स्वर्गसाम्राज्यभाजि ।

एकः संप्रत्यर्थिनां वस्तुयालस्तिष्ठत्यश्रु (*) स्वंदनिष्कंदनाय

चौलुक्यक्षितिपालमौलिसच्चिद । त्वत्कीर्तिकोलाहल-

क्षैलोक्येऽपि विलोक्यमानपुलकानंदाभुमिः भूयते ।

किं चैषा कलिदूषिताऽपि भवता प्रासाद-वापी-प्रपा-

क्षूपा-ऽज्ञाम-सरोवरप्रभृतिभिर्धर्मी पवित्रीकृता ॥ ५ ॥

से श्रीतेजःपालः, सचिवक्षिरकालमस्तु तेजस्वी ।

येन वयं निधित्ताध्यतामणिने(*)व नंदामः ॥ ६ ॥

लवण्यसादपुत्रश्रीकरणे लवण्यसिंहजनकोऽसौ ।

मंत्रित्वमन्त्र कुरुतां, कस्यदातं कस्यतद्वक्ष्यः ॥ ७ ॥

पुरामदिन दैत्यरेषुकनोपरिचर्तिना । अञ्जना वस्तुपालस्य, हस्तेनाथःकृतो वलिः ॥ ८ ॥

दैत्यिता ललितादेवी, तनयमवीतनयमाप सचिवेन्द्रात् ।

नाज्ञा जयंतसिंहं, जयंतमिन्द्रात् पुलोमपुरीव ॥ ९ ॥ (५)

[एते] श्रीगूर्जरेश्वरपुरोहित ठ० श्रीसोमेश्वरदेवस्य ॥

१० पादमिदं श्रीबीमदेवतासंख्य २ भागे ६४ संख्य १०१ संख्यार्दुवाचाम्बलक्षित्वालैक्षेपोः नमस्तः ४८८०८
अप्यां च सोमेश्वरदेवताक्षित्वालैक्षेपैव वर्तते ॥ १२ पादमिदं प्राचीनदेवतासप्रह २ भागे ६४ संख्यार्दुवाचाम्बल-
क्षित्वालैक्षेपो ४८८०८ सोमेश्वरदेवताक्षित्वालैक्षेपैव वर्तते ॥

स्वभूतीयेऽथ काशस्थबंदो वाजहनंदनः । प्रशस्तिमेतामलिखत्, अश्रसिहवुवः सुधीः ॥ १ ॥
काहहस्त तन्द्रेन, सूक्ष्मारेण धीमता । एषा कुशारसिंहेन, समुत्कीर्णा भयलतः ॥ २ ॥
अनेकेविषयगद्युरम्बावाभ्य प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशाळिनी ॥ ३ ॥

(गिरनार इन्स्क्रिप्शनम् नं. २ । २१-२२)

.....यः पु....तयदुकुलक्षीरार्णवेन्दुर्जिनो,
यत्पादाङ्गपवित्रमौलिरसमश्रीरुज्ञायन्तोऽप्ययम् ।
घते भूर्भु निजप्रभुप्रसूमरोद्धामप्रभामण्डलो,
विश्वक्षोणभृदाचिपत्यपदवी नीलातपत्रोञ्जवलाभ् ॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिल(*)पुरवास्तव्य-
आशाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्गज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्री-
आश्वाराजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुणिग महं० ठ० श्रीमालदेवयोरनु-
जस्य महं० ठ० श्रीतेजपालाग्रबन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० ठ० श्रीलिलादेवी
(*) कुक्षिसोरोवरराजहंसायमाने महं० श्रीजयन्तसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं मुद्राव्यापारं व्यापृष्ठति
सति सं० ७७ वर्षे श्रीशुश्रुंजयोजायन्तप्रभृतिमहातीर्थग्रोत्सवप्रभावाविर्भूतश्रीमदेवाधिदेवप्रसादादासादि-
तसंव्याधिपत्येन औलुक्यकुलनभस्तलप्रकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवण(*)प्रसाददेवसुतम-
हाराजश्रीवीरध्वलदेवप्रतिप्रसादाज्यसर्वेश्वयेण श्री-शारादाप्रतिप्रसादपत्येन महामात्यश्रीवस्तुपालेन
तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गर्जस्त्रमण्डले ध्वलकक्षप्रसूतनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृष्ठता महं०
श्रीतेजपालेन च श्रीशुश्रुंजया-अर्द्धुदाच्चलप्रभृतिमहातीर्थेषु (*) श्रीमदणहिलपुर-भृशुपुर-स्तम्भनक-
पुरस्तम्भतीर्थ-दर्भवती-ध्वलकक्षप्रसूतनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि
भ्रूतीर्थोद्वाराभ्य कारिताः । तथा सचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशुश्रुंजयमहातीर्थ-
वतारश्रीमदादितीर्थकरश्रीक्रष्णभद्रेव (*) स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्श्वदेव-सत्यपुरावतारश्रीमहावीरदे-
वप्रशस्तिसहित-कडमीरावतारश्रीसरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनद्वया-ज्ञवा-वलोकना-शा-
म्ब-प्रद्युम्नशिखरेषु श्रीनेभिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिरूढनिजपितामह ठ० श्रीसोम-
निजपितृ ठ० श्रीआश्वाराज (*) मूर्तिद्वय-चास्तोरणत्रय-श्रीनेभिनाथदेव-आत्मीयपूर्वजा-ज्ञजा-
-ज्ञुज-पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुखोद्धाटनकस्तम्भ-श्रीअष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनप्रसादाचिरजिते
श्रीनेभिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुज्जयन्तमहातीर्थे आत्मनस्तथा स्वभावायाः प्राघाटजातीय ठ०
श्रीकान्हण्डपुड्याः ठ० (*) राषुकक्षिसंभूताया महं० श्रीसोमुक्तायाः पुण्यगिरुद्धये श्रीनगेन्द्र-
गच्छे भष्टारकश्रीमहेन्द्रस्त्रिसन्ताने शिष्यश्रीशान्तिस्त्रियश्रीआनन्दस्त्रियश्रीअमरस्त्रियपदे भष्ट-

१ पदाभिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ४१-४२-४३ संख्यगिरिनारसत्कप्रशस्तिव्यपि प्रान्तभागे वर्तते ॥
२ पदाभिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ४२-४३ संख्यगिरिनारसत्कप्रशस्त्योः प्रान्तभागेष्वपि वर्तते ॥ ३
पदाभिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३१-३०-४२-४३ मंख्यगिरिनारसत्कप्रशस्तिव्यपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ४

रकमीहरिमंडलरिपद्मालंकरणश्रीविजयसेनस्त्रिमतिहितश्रीश्रृष्टमदेवप्रभुस्तुतुर्विश्वितीर्थकरार्णवो-
द्यमनिवः समष्टः(*) पः श्रीसंगेतमहातीर्थवितारप्रधानप्रापादः कारितः ॥

चेतः कि कलिकाळ ! साल्समहो ! कि मोह ! नो हस्यते !,

तृष्णे ! कृष्णसुखाऽसि कि ? कथय कि विज्ञौघ ! मोघो भवान् ? ।

ब्रूमः कि नु सखे !? न स्वेलति किमप्यस्माकमुज्जृभितं,

सैन्यं यत् किल वस्तुपालकृतिना धर्मस्य संवर्मितम्

यं विधुं बन्धवः सिद्धमर्थिनः शत्र (*). ।

.....ण....पश्यन्ति, वर्ष्यतां किमयं मया ?

॥ १ ॥

॥ २ ॥

वैरं विभूति-भारत्योः, प्रभुत्व-प्रणिपातयोः । तेजस्विता-प्रशमयोः, शमित येन मन्त्रिणा ॥ ३ ॥

दीयैः स्फूर्जति सज्जकज्जलमलः स्नेहं मुहुः संहर-

ज्ञिन्दुर्मण्डलवृत्तस्तुपालपरः प्रद्वेष्टि मित्रोदयम् ।

सूरः क्रूरतरः परस्य सहते तेजो न तेजस्विन-

स्तत् केन प्रतिमं ब्र(*) वीमि सचिवं श्रीवस्तुपालाभिधम् ?

॥ ३ ॥

आँशाताः कति नैव यान्ति कति नो यास्यन्ति नो वा कति,

स्थानस्थाननिवासिनो भवपथे पान्थीभवन्तो जनाः ? ।

अस्मिन् विस्मयनीयबुद्धिजलविविधस्य दस्यून् करे,

कुर्वन् पुण्यनिविधिनोति वसुधां श्रीवस्तुपालः परम्

॥ ५ ॥

दग्नेऽस्य वीरध्वलक्षितिपस्य राज्यभारे धुरंधरधुरा (*)

।

श्रीतेजपालसचिवे दधति स्वबन्धुभारोद्भृतावविधुरैकधुरीणभावम्

॥ ६ ॥

इह तेजपालसचिवो, विमलितविभलाच्छेन्द्रममृतभृतम् ।

कृत्वाऽनुपमसरोवरमरगणं प्रीणयांचके

॥ ७ ॥

पते श्रीमलधारिश्चीनरचन्द्रसूरीणम् ॥

ईह वालिगुरुतसहजिगपुत्राऽनकतनुजवाजडतनूजः ।

अलि (*) सदिमां कायस्थः, स्तम्भपुरीयधुवो जयतसिहः

॥ १ ॥

हेरिपण्डय-नन्दीशरशिस्पीथरसोमदेवपैत्रेण । बहुलस्वामिदुतेनोत्कीर्णा पुरुषोत्तमेनेयम् ॥ २ ॥

श्रीनेमेष्विजयद्विरम्भायाथ प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिमी ॥ ३ ॥

१ पद्ममिदं नरचन्द्रसूरिहुतवस्तुपालप्रशस्तौ तृतीयपद्मतयाऽपि वर्तते ॥ २ पद्ममिदं नरचन्द्रसूरिहुत-
वस्तुपालप्रशस्ती २६ पद्मतयाऽपि दृश्यते ॥ ३ पद्ममिदं धर्माभ्युदयमहाकावयनवमसर्गप्राप्नोदपि दृश्यते ॥
४ पद्ममिदं प्राचीनजैवल्येष्वासंप्रहृ २ भागे ४० संख्यगिरिनारसत्कप्रशस्तावपि प्राप्नतभागे वर्तते ॥ ५ पद्ममिदं
प्राचीनजैवल्येष्वासंप्रहृ २ भागे ४०-४१ संख्यगिरिनारप्रशस्त्योरपि प्राप्नतभागे दृश्यते ॥ ६ पद्ममिदं प्राचीनजैव-
ल्येष्वासंप्रहृ २ भागे ४०-४१-४२ संख्यगिरिनारप्रशस्त्यविप्राप्नतभागे वर्तते ॥

महामात्यश्रीवस्तुपालभार्या महं० श्रीसोमुक्ताया
धर्मस्थानमिदस् ॥

(गिरनार हन्तिकाशन्८ नं० २ । २३-२४)

(४०-३)

॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

प्रणमदमरप्रेष्टु-ग्रीष्मिक्षुर-मणिधोरणी-
तरुणकिरणत्रेणीशीणीकृतास्तिलविग्रहः ।
सुरपतिरकरोन्मुक्तैः ज्ञात्रोदकैर्षुसुणारुण-
पुस्तनुरिवापायात् पायाजगन्ति शिवाङ्गजः ॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीविक्रमसंबत् १२८८ वर्षे फागुण शुद्धि १० शुद्धे श्रीमदण्डिलपुरुषात्मव्यग्रा(*)-
वाटान्वयप्रसूत ३० श्रीचण्डपालामज ३० श्रीचण्डप्रसादाक्षज ३० श्रीसोमसनुज ३० श्रीआशा-
राज्ञनन्दनस्य ३० श्रीकृष्णारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ३० श्रीलुणिग महं० श्रीमालदेवीयोरनुजस्य महं०
श्रीतेजैःषालाग्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीलितादेवीकुक्षिसरोवरराजहसा-
यमाने (*) महं० श्रीजयन्तरसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तम्भनकतीर्थमुद्राव्यापारं व्यापृष्ठति सति
सं० ७७ वर्षे श्रीशत्रुंजयोजयन्तरमध्युतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावविर्मलश्रीमदेवप्रसादासादित-
संघाविषयत्येन चौलुक्यकुलनभस्तलपकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसुतमहाराज-
श्रीवीररथ(*)लदेवप्रीतिप्रतिपञ्चराज्यसर्वैर्घर्येण श्री-शारदाप्रतिपञ्चापत्येन महामात्यश्रीवस्तुपालेन
तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले ध्वलकक्षप्रसुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृष्ठता महं०
श्रीतेजैःषालेन च शत्रुंजया-उर्बुदाचलप्रसुतिमहातीर्थेषु श्रीमदण्डिलपुरुषगुप्त-स्तम्भ-
तीर्थ-दर्शनती-घट(*)लक्षकप्रसुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्यानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि प्रमू-
तजीर्णेद्वाराभ कारिता: । तथा सचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशत्रुंजयमहातीर्थवितार-
श्रीमदादितीर्थकरश्रीक्रष्णदेव-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्षदनाथदेव-श्रीसत्यपुरावतारश्रीमहावीरदे-
व(*) प्रशस्तिसहित-कश्मीरावतारश्रीसरस्वतीभूतिदेवकुलिकाचतुष्य-जिनयुगल-उम्बा-उलोकना-
श्वाम्ब-प्रसुत्तशिलरेषु श्रीनेभिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्य-तुरगाधिरूढनिजपितामह ३० श्री-
सोम-स्वप्ति३० श्रीआशाराजभूतिद्वितय-कुर्जराधिरूढमहामात्यश्रीवस्तुपालानुज महं० श्रीतेजैः-
पालभूतिद्वय-चारुलोरणत्रय-श्रीनेभिनाथदेव-आत्मीयपूर्वजा-उपजा-उनुज-पुत्रादिभूतिसमन्वितमुखो-
द्वाटनकस्तम्भश्रीसंग्रेतमहातीर्थमधुतिअनेकतीर्थपरम्पराविराजिते श्रीनेभिनाथदेवाविदेवविभूतिश्रीम-
दुष्कृष्णन्तमहातीर्थे आत्मनस्तथा स्वभार्याभ्य प्राग्वाटशातीय ३० श्रीकान्दडपुंच्चाः ३० (*) राष्ट्र-
कुक्षिसंभूताया महं० श्रीसोमुक्तायाः पुण्याभिवृद्धये श्रीनारेन्द्रगच्छे भद्रारकश्रीमहेन्द्रशिरस्ताने
शिवश्रीशान्तिस्तुरिशिष्यश्रीज्ञानद्वारि-श्रीअमरद्वारिपद्मे महारकश्रीहरिमद्भूतिपद्मालंकरणप्रसुती-

विजयसेनद्विप्रतिहितकामभद्रेवालंकृतोऽथमभिनवः समष्टपः श्रीअष्टापदमहातीर्थचितारनिरुपम-
प्रधानमासादः कारितः ॥

प्रासादैर्गंगनाङ्गणप्रणयिभिः पातालमूलंक्षेः,
कासारैश्च सितैः सिताम्बरगृहैर्नीलैश्च लीलावैः ।

येनेयं नयनिर्जितेन्द्रसचिवेनालंकृताऽलं क्षितिः,
क्षेमैकायतनां चिरायुरुदयी श्रीवस्तुपालोऽस्तु सः ॥ १ ॥

संदिष्टं तव वस्तुपाल ! बलिना विश्वत्रयीयात्रिका-
न्मत्वा ना(*)एदतश्चरित्रभिति ते हष्टोऽसि नन्द्याश्चिरम् ।

नार्थिभ्यः कुधमर्थितः प्रथयसि स्वल्पं न दत्से न च,
स्वश्लाघां बहु मन्यसे किमपरं ? न श्रीमदानुष्ठासि ॥ २ ॥

अरिवल्दलनश्रीवीरनामाऽयमुव्याः, सुरपतिरवतीर्णस्तर्क्यामसदस्य ।

निवसति सुरशास्त्री वस्तुपालाभिधानः, सुरगुरुपि तेजःपालसंज्ञः समीपे ॥ ३ ॥

उदारः शूरो वा(*)रुचिरवचनो वाऽस्ति नहि वा,
भवतुल्यः कोऽपि क्वचिदिति चुलुक्येन्द्रसचिव ! ।

समुद्भूतप्रान्तिर्नियतमवगन्तु तव यश-
स्ततिर्गेहं गेहे पुरि पुरि च याता दिशि दिशि ॥ ४ ॥

सा कुत्रापि युग्मत्रयी बत ! गता सृष्टा च सृष्टिः सतां,
सीदत्साधुरसंचरस्तुचरितः खेलत्वलोऽभूत् कलिः ।

तद्विधार्तिनिवर्तनैकमनसा प्रत्तोऽधुना शं(*)भुना,
प्रस्तावस्तव वस्तुपाल ! भवते यद् रोचते तत् कुरु ॥ ५ ॥

के^३ निधाय वसुधातले धनं, वस्तुपाल ! न यमालयं गताः ? ।
त्वं तु नन्दसि निवेशयन्निदं, दिक्षु धावति जने क्षुधावति ॥ ६ ॥

पौत्रेण धारय वराहपते ! धरित्रीं, सूर्य ! प्रकाशय सदा जलदाभिषिञ्च ।
विश्वाणितेन परिपाल्य वस्तुपाल !, भारं भवत्सु यदिमं निदधे विधा(*)ता ॥ ७ ॥

आत्मा त्वं जगतः सदागतिरियं कीर्तिर्मुखं पुष्करं,
मैत्री मन्त्रिवरः स्त्रिरा घनरसः श्लोकस्तमोऽप्नः शमः ।

नोक्तः केन करस्तवामृतकरः कायश्च भास्वानिति,
स्पष्टं धर्जिट्मर्त्यः कृतपदा : श्रीवस्तुपाल ! त्वयि ॥ ८ ॥

विद्या यद्यपि वैदिकी न लभते सौभाग्यमेषा क्वचि-
त्वा स्तार्तु बुरुते च कक्षन् वचः कर्णद्वये य(*)द्यपि ।

राजानः कृपणाश्च यद्यपि गृहे यद्यप्ययं च व्यय-
श्चिन्ता काऽपि तथापि तिष्ठति न मे श्रीवस्तुपाले सति ॥ ९ ॥

कर्णे सङ्कप्रलयितं न करोषि रोषं, नाविष्करोषि न करोष्यपदे च लोभम् ।
तेनोपरि त्वमवनेरपि वर्तमानः, श्रीबस्तुपाल ! कलिकालमधः करोषि
सर्वत्र आन्तिमती, सर्वविदस्त्वदभवत् कथं कीर्तिः ? । (*)
श्रीबस्तुपाल ! पैतृकमनुहरते सन्ततिः प्रायः
सोऽपि बलेरवलेपः, स्वल्पतरोऽभूत् तथैव कल्पतरोः ।
श्रीबस्तुपालसचिवे, सिद्धिं दानासृतैर्जगतीम्
नियोगिनांगेषु नरेधराणां, भद्रस्वभावः सलु वस्तुपालः ! ।
उद्भामदानप्रसरस्य यस्य, विभाव्यते कापि न मत्तभावः
विबुधैः पयोविमध्यादेको वहु(*)भिः करीन्दुरुपलब्धः ।
बहवस्तु वस्तुपाल !, प्रापा विबुध ! त्वयैकेन
प्रथमं धनप्रवाहैवाहैरथ नाथमात्मनः सचिवः ।
अवुना तु सुकृतसिन्धुः, सिन्धुरवृन्दैः प्रमोदयति
श्रीबस्तुपाल ! भवता, जलयेद्यमीरता किलाऽऽकलिता ।
आनीय ततो गजता, स्वपतिद्वारे यदाकलिता
॥ १३ ॥

एते श्रीमद्भूरेश्वरपुरोहि(*)त ठ० श्रीसोमेश्वरदेवस्य ॥
ईह वालिगुप्तसहजिगुप्ताऽनकतनुजवाजडतनूजः ।
अलिखदिमां कायस्यः, स्तम्भपुरीयध्वंबो जयतसिंहः
हैरिमण्डप-नन्दीश्वरशिल्पीश्वरसोमदेवपौत्रेण ।
चकुलसामिलुतेनोत्कीर्णा पुरुषोत्तमेनेयम्
॥ १४ ॥

महामात्यश्रीबस्तुपालस्य प्रशस्तिरियं निष्पन्ना ॥ ६०३ ॥
श्रीनेमेल्लिजगद्धरुरम्बायाश्च प्रसादतः ।
वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी
॥ १५ ॥

माहामात्यश्रीबस्तुपालभार्या महं० श्रीसोमुकाया धर्मस्यानमिदम् ॥
(गिरनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २४-२५)

(४१-४)

३० नमः श्रीनेमिनाथदेवाय ॥

तीर्थेशाः प्रणतेन्द्रसंहतिशिरःकोटीरकोटिसुर-
त्तेजोजालजलप्रवाहलहरीप्रक्षालितांघ्रिदृयः ।

१ पश्चिम श्रावीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३३ संख्यागिरिनारसकप्रशस्तावपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ३ पश्चिम श्रावीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३३-४१ संख्यागिरिनारप्रशस्त्योरपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ४ पश्चिम श्रावीनजैन-
लेखसंग्रह २ भागे ३८-३९-४२-४३ संख्यागिरिनारसकप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

ते वः केवलमूर्तयः कवलितारिष्टां विशिष्टाममी,
तामष्टापदशैलमौलिमणयो विश्राणयन्तु श्रियम्

॥ १ ॥

स्वति श्रीविक्रमार्कार्संवत् १२८८ वर्षे फागुण (*) शुद्धि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवासत्व्य-
प्राघाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्गज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशा-
राजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुणिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य ठ०
महं० श्रीतेजःपालाभजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे (*) महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरो-
वरसराजंहंसाथमाने महं० श्रीजयन्तसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वे श्रीस्तम्भतीर्थवेलाकुलमुद्राव्यापारं व्याप्त-
ष्वति सति सं० ७७ वर्षे श्रीशत्रुंजयोजयंतप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावाविर्मूलश्रीमद्देवाधिदेवप्रसाद-
दासादितसंधाधिपत्येन चौलुक्यकुलनभतलप्रकाशनैक (*) मार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलबणप्रसाद-
देवसुतमहाराजश्रीवीरध्वलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वेश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपत्तापत्येन महामात्यश्रीव-
स्तुपालेन तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वे गूर्जरमण्डले ध्वलकक्षप्रसुखनगरेषु मुद्राव्यापारं व्याप्त्वता
महं० श्रीतेजःपालेन च श्री (*) शत्रुंजया-ज्वुदाचलमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनक-
पुर-स्तम्भतीर्थ-दर्भवती-ध्वलकक्षप्रसुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशो धर्मसानानि
प्रभूतजीर्णोद्धारात्म कारिताः । तथा सचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितशत्रुंजयमहातीर्थव-
(*) तारश्रीमदादितीर्थकरश्रीऋषभदेव-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्यपुरावतारश्रीमहा-
वीरदेवप्रशस्तिसहित—कश्मीरावतारश्रीसरस्वतीदेवकुलिकाचतुष्टय—जिनयुगला-ज्ञवा—ज्वलोक्ना-
शाम्भ-प्रशुम्भशिसरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिरूढनि (*) जपितामह ठ०
श्रीसोम-पितृ ठ० श्रीआशाराजमूर्तिद्वितय-तोरणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीयपूर्वजा-ज्ञजा-ज्ञुज-
पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुखोद्धाटनकस्तम्भश्रीसंमेतावतारमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनपरम्पराविराजिते श्री-
नेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुज्जयन्तमहातीर्थे आ (*) तमस्तथा स्वभार्यायाः प्राघाटशातीय
ठ० कान्छडपुत्राः ठ० राणकुक्षिसंभूतायाः महं० श्रीसोखुकायाः पुण्याभिवृद्धये श्रीनागेन्द्रगच्छे
भद्रारकश्रीमहेन्द्रसूरिसंताने शिष्यश्रीशान्तिसूरिशिष्यआणन्दसूरि-श्रीअमरसूरिपटे भद्रारकश्रीहरि-
मद्रसूरिपटालंकरणश्रीविजयसेनसूरिप्रतिष्ठि (*) तत्रीमदादिजिनराजश्रीऋषभदेवप्रसुखचतुर्विशतितीर्थ-
करालंकृतोऽप्यमभिनवः समष्टपः श्रीअष्टापदमहातीर्थवितारप्रधानप्रासादः कारितः ।

स्वति श्रीबलये नमोऽस्तु नितरां कर्णाय दाने ययो-

रस्पष्टेऽपि दृशां यशः कियदिदं वन्द्यास्तदेताः प्रजाः ।

द्वै संप्रति वस्तुपालसचिवत्यागे करिष्यन्ति ताः,

कीर्ति कांचन या पुनः स्फुटमियं विश्वेऽपि नो मास्यति

॥ १ ॥

क्षेत्रैः कटका-ज्ञुलीय-तिलैः केयूर-हारादिमिः,

कौशेयैश्च विमूष्यमाणवपुषो यत्याणिविश्राणितैः ।

१ पद्ममिदं मलधारिनरेन्द्रप्रभीयलघुवस्तुपालप्रशस्तौ द्वादशपद्मतयाऽपि दृश्यते ॥ २ पद्ममिदं मलधारि-
नरेन्द्रप्रभीयलघुवस्तुपालप्रशस्तौ पञ्चदशपद्मयैषाऽपि दृश्यते ॥

विद्वांसो गृहमागताः प्रणयिनीरप्रत्यभिज्ञाभृत्-
स्तैर्सैः स्वं शपथैः कथं कथमिव प्रत्याययांचक्रिरे
॥ १ ॥

न्यासं व्यातनुतां विरोचनसुत (*) स्त्यागं कवित्वश्रियं,
भास-च्यासपुरःसराः पृथु-रघुपायाश्च वीरवतम् ।
प्रज्ञां नाकिपताकिनीगुरुरपि श्रीवस्तुपाल ! ध्रुवं,
जानीमो न विवेकमेकमकृतोत्सेकं तु कौतस्कुतम् ?
॥ ३ ॥

बौद्धावं वस्तुपालस्य, वेत्ति कश्चरिताङ्गुतम् ? । यस्य दानमविश्रान्तमर्थिष्वपि रिपुष्वपि
स्तोतव्यः सलु वस्तुपालसचिवः कैर्नाम वाऽवैभवै-
र्यस्य (*) त्यागविधिविधूय विविधां दारिद्र्यमुद्रां हठात्
विश्वेऽस्मिन्नखिलेऽप्यसूत्रयदसावर्धीति दातेति च,
द्वौ शब्दावभिषेयवस्तुविरहव्याहन्यमानस्थिति
॥ ५ ॥

आद्येनाप्यपवर्जनेन जनितार्थित्वप्रमाथान् पुनः,
स्तोकं दत्तमिति क्रमान्तरगतानाहाययन्नर्थिनः ।
पूर्वसाद् गणसंस्ययाऽपि गुणितं यस्तेष्वनावर्तिषु,
द्रव्यं (*) दातुमुदस्तहस्तकमलतस्यौ चिरं दुःस्थितः
॥ ६ ॥

विश्वेऽस्मिन् किल पङ्कपङ्किलतले प्रस्थानवीर्धी विना,
सीदन्नेष पदे पदे न पुरतो गन्तेति सचिन्तयन् ।
धर्मस्थानशतच्छलेन विदधे धर्मस्य वर्षीयसः,
संचाराय शिलाकलापपदवीं श्रीवस्तुपालः स्फुटम्
॥ ७ ॥

अभ्योजेषु मरालमण्डलरुचो डिण्डीरपिण्डत्विषः,
कासारेषु (*) फयोधिरोधसि लुठनिर्णिकमुक्ताश्रियः ।
ज्योत्स्नाभाः कुमुदाकरेषु सदनोद्यानेषु पुष्पोल्बणाः,
स्फूर्ति कामिव वस्तुपालक्रतिनः कुर्वन्ति नो कीर्तयः ?
॥ ८ ॥

* देवै स्वर्णार्थ ! कष्टं ननु क इव भवान् ? नन्दनोद्यानपालः,
खेदस्तत् कोऽथ ? केनाप्यहह ! हत इतः काननात् कल्पवृक्षः, ।
हुं मा वादीस्तदेतत् किमपि (*) करुणया मानवानां मर्यैव,
प्रीत्याऽदिष्टोऽप्यमूर्योस्तिलकयति तलं वस्तुपालच्छलेन
॥ ९ ॥

श्रीमैन्त्रीश्वरवस्तुपालयशसामुच्चावचैर्वीचिमिः,
सर्वस्मिन्नपि लभिते धवलतां कळोलिनीमण्डले ।

१ पद्मिदं नरेन्द्रप्रभीयलघुवस्तुपालप्रशस्तौ चतुर्थपद्यनयाऽपि वर्तते ॥ २ पद्मिदं नरेन्द्रप्रभीयलघुवस्तुपाल-
प्रशस्तौ २७ तमपद्यरूपेणापि वर्तते ॥ ३ पद्मिदं नरेन्द्रप्रभीयलघुवस्तुपालप्रशस्तौ २५ तमपद्यरूपेणापि वर्तते ॥

गैरैवेषमिति प्रतीतिविकलस्ताम्यन्ति कामं भुवि,
आम्यन्तस्तुनुसादभन्दितमुदो मन्दाकिनीयात्रिका: ॥ १० ॥

वक्त्रं (*) निर्वासनाज्ञानयनपथगतं यस्य दारिद्र्यदस्यो-
ईष्टि: पीयूषवृष्टिः प्रणयिषु परितः पेतुषी सप्रसादम् ।
प्रेमाणापस्तु कोऽपि स्फुरदसमपरब्रह्मसंवादवेदी,
नेदीयान् वस्तुपालः स खलु यदि तदा को न भाग्यैकभूमिः? ॥ ११ ॥

संक्षाद् ब्रह्म परं धरागतमिव श्रेयोविवर्तेः सतां,
तेजःपाल इति प्रसिद्धमहिमा तस्यानु(*)जन्मा जयी ।
यो धते न दशां कदाऽपि कलितावद्यामविद्यामयीं,
यं चोपास्य परिस्पृशन्ति कृतिनः सद्यः परां निर्वृतिम् ॥ १२ ॥

आङ्गुष्ठे कमलाकुलस्य कुदशारम्भस्य संस्तम्भनं,
वश्यत्वं जगदाशयस्य यशसामाशान्तनिर्वासनम् ।
मोहः शञ्चुपराकमस्य मृतिरप्यन्यायदस्योरिति,
स्वैरं षड्बुधकर्मनिर्मितिमया मन्त्रोऽस्य मन्त्रीशितुः ॥ १३ ॥ (*)

एते मलधारिश्रीनरेन्द्रसूरीणाम् ।

स्तम्भतीर्थेऽत्र कायस्यवंशे वाजडनन्दनः । प्रशस्तिमेतामलिखज्ञैत्रसिंहधूवः सुधीः ॥ १ ॥
हैरिमण्डप-नन्दीश्वरशिल्पीश्वरसोमदेवपौत्रेण । बकुलस्यामिसुतेनोक्तीर्णा पुरुषोत्तमेनेयम् ॥ २ ॥

श्रीवस्तुपालप्रभोः प्रशस्तिरियं निष्पत्ता ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥

(गिरनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २६-२७)

(४२-५)

ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

ये उज्जयन्तं.....जयाभूप्रजाकल्याणा ।

स्त्रिं श्रीविकमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवा(*)स्तव्य-
प्राग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाज्ञज ठ० श्रीसोमतनुज ठ०
श्रीआश्वाराजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुणिग महं० श्रीमालदेवयोरनु-
जस्य महं० श्रीतेजःपालामजन्मनो महामात्रश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीलिलितादेवीकुक्षिसरो-
वरराजहंसाय(*)माने महं० श्रीजयन्तरसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तम्भतीर्थे सुद्राव्यापारान् व्याप्त-
प्तिं सति सं० ७७ वर्षे शञ्चुंजयोजयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रसादाविर्भूतश्रीमहेवाधिदेवप्रसा-
दासादितसंघाधिपत्येन चौलुक्यकुलनभस्तलप्रकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसु-

१ पदमिदं नरेन्द्रप्रभीष्यलब्धवस्तुपालप्रशस्तौ १९पद्यरूपेणापि वर्तते ॥ २ पदमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह
२ आगे ३८-४३-४३ संख्यगिरिनारसत्कप्रशस्तिप्प्रभिः प्रान्तभागे दृश्यते ॥ ३ पदमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह
२ आगे ४९-४० संख्यगिरिनारसत्कप्रशस्त्योरपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

तमहाराजश्रीबीरधा(*)वलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपन्नापत्येन महामात्यश्रीबस्तु-
पालेन तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गृजरमण्डले ध्वलकप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारं व्याशृष्टता
महं० श्रीतेजःपालेन च श्रीशत्रुंजया-ज्वुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदण्डिलपुर-सूर्यपुर-स्त्र(*)-
उमनकपुर-स्तम्भतीर्थ-दर्भवती-ध्वलकप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्यानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्म-
स्थानानि प्रभूतजीर्णोद्धाराश्च कारिताः । तथा सचिवेश्वरश्रीबस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशत्रुंजय-
महातीर्थवतारश्रीमदादितीर्थकरश्रीश्रीभद्रेव-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्श्वनाथ-देव—सत्यपुरावतार-
श्री(*)महाबीरदेवप्रशस्तिसहित—कश्मीरावतारश्रीसरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय—जिनयुगला-उम्मा-
ज्वलोकना-शाम्ब-प्रद्युम्नशिखरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय—तुरगाधिरूढस्त्वपितामह
महं० श्रीसोम-निजपितृ ३० श्रीआशाराजमूर्तिद्वितय-चारुतोरणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीय(*)-
पूर्वजा-उज्जा-उनुज—पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुखोद्धाटनकस्तम्भश्रीअष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनपरम्प-
राविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुज्जयन्तमहातीर्थे आत्मनस्तथा स्वधर्मचारिष्या:
प्राग्नाटजातीय ४० श्रीकान्हडपुत्राः ४० राणुकुक्षिसंभूताया महं० श्रीलितादेव्याः पुष्पाभिस(*)-
वृद्धये श्रीनागेन्द्रगच्छे भट्टारकश्रीमहेन्द्रसूरिसंसारेन शिष्यश्रीशान्तिसूरिशिष्यश्रीआणन्दसूरि-श्री-
अमरसूरिपटे भट्टारकश्रीहरिभद्रसूरिपटालंकरणप्रभुश्रीविजयसेनद्वारिप्रतिष्ठितश्रीअजितनाथदेवादि-
विशतिर्थकरालंकृतोऽयमभिनवः समण्डपः श्रीसंमेतमहातीर्थवतारप्रासादः कारितः ।

सं श्रीजिनाधिपतिधर्मधराधुरीणः, श्लाघास्पदं कथमिवास्तु न वस्तुपालः? ।

श्री-शारदा-सुकृत-कीर्ति-नयादिवेष्याः, पुण्यः परिस्फुरति जङ्गमसङ्गमो यः ॥ १ ॥

विभुता-विक्रम-विद्या-विद्यमधता-वित्तवितरण-विवेकैः ।

यः सप्तभिर्विकारैः, कलितोऽपि वभार न विकाम् ॥ २ ॥

यस्य शूः किमसावस्तु, वस्तुपालसुतः सदा । नावर्णासावथाप्येतौ, धर्मकर्मकृतौ कृतौ ॥ ३ ॥

कस्यापि कविता नास्ति, विनाऽस्य हृदयामुखम् ।

वात्सवं वस्तुपालस्य, पश्यामस्तद् वयं च यम् ॥ ४ ॥

दुर्गः स्वर्गगिरिः स कल्पतरुभिर्भेजे न चक्षुष्यये,
तस्यौ कामगवी जगाम जलद्वेरन्तः स चिन्तामणिः ।

कालेऽस्मिन्नवलोक्य यस्य करुण(णां) तिष्ठेत कोऽन्यस्ततः,

पुण्यः सोऽस्तु न वस्तुपालसुकृती दानैकवीरः कथम्? ॥ ५ ॥

सोऽयं मन्त्री गुरुरतितरामुद्धरन् धर्मभारं,

श्लाघाभूमि नयति न कथं वस्तुपालः सहेलम्? ।

तेजःपालः स्ववलभवलः सर्वकर्मणुद्दि-

द्वैतीयीकः कल्यतितरां यस्य धौरेयकत्वम् ॥ ६ ॥

१ पश्यमिदं नरचन्द्रीयवस्तुपालप्रशस्तौ पश्यमपयत्वेनापि दृश्यते ॥ २ पश्यमिदं वर्मीभ्युदमहाकाशन्यप्रशस्तौ सर्वैः ३ पश्यमिदं नरचन्द्रीयवस्तुपालप्रशस्तौ चतुर्थैपश्यतयाऽपि दृश्यते ॥

ऐतसिम्न् ब्रह्मासुधाजलघरे श्रीवस्तुपाले जग-
ज्जीवातौ सिचयोक्त्यैर्नवनवैर्नकं दिवं वर्षति (*) ।
आस्तामन्यजनो घनोज्जितशशिज्योत्सनाच्छवलगाहुणो-
द्भूतैरथ दिगम्बरादपि यशोवासोभिराच्छादितम् ॥ ७ ॥
लक्ष्मीर्मन्थाचलेन्द्रभ्रमणपरिचयादेव पारिष्ठवेयं,
अभूम्भूसैव भङ्गाक्षकितभृगदशां प्रेमनस्तरस्य ।
आयुर्निःश्वासवायुप्रणयपरतयैवमस्त्यैर्यदुखं,
स्थास्तुर्धर्मोऽयमेकः परमिति हृदये (*) वस्तुपालेन मेने ॥ ८ ॥
तेजःपालस्य विष्णोश्च, कः स्वरूपं निरूपयेत् ? । स्थितं जगत्र्यां पातुं, यदीयोदरकन्धरे ॥ ९ ॥
ललितादेवी नामा, सधर्मिणी वस्तुपालस्य ।
अस्यामनिरस्तनयस्तनयोऽयं (*) जयतसिंहाख्यः ॥ १० ॥
दृष्टा वपुश्च वी.....च, परस्परविरोधिनी । विवादा.....जैत्रसिंहस्तारायवादि (?) कः ॥ ११ ॥ (*)
कृतिरियं मलधारिश्रीनरचन्द्रसूरीणाम् ॥
स्तैर्भवतीर्थेऽत्र कायस्यवंशो वाजडनन्दनः । प्रशस्तिमेतामलिखजैत्रसिंहध्रुवः सुधीः ॥ १ ॥
बाँहडस्य तनूजेन, सूत्रधारेण धीमता । एषा कुमारसिंहेन, समुक्तीर्णा प्रयत्नतः ॥ २ ॥
‘श्रीनेमेलिजगद्भुरम्बायाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥
(गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २७-२९)

(४३-६)

३० नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥

संमेतादिशिरःकिरीटमण्यः स्मरस्माहंकृति-
ध्वंसोल्लासितकीर्तयः शिवपुरप्राकारतारथ्रियः ।
आनत्यश्रितसंविदादिविलसद्रलौघरलाकराः,
कल्प्याणावलिहेतवः प्रतिकलं ते सन्तु वस्तीर्थपाः ॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुद्धि १० बुधे श्रीमदण्डिलपुरवास्तव्यप्राम्बाट-
कुललक्ष्मण (* श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादात्मज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशाराज-
नन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसम्भूतस्य ठ० श्रीलुणिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य महं० श्री-
तेजःपालाप्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीलिलादेवीकुक्षिसरोवरराजहसायमाने

१ पद्यमिदं नरचन्द्रीयवस्तुपालप्रशस्तौ षोडशपद्यतयाऽपि वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंप्रह २
भागे ६४ संख्यार्थुद्वाचलसत्कशिलालेखे षोडशो सोमेश्वरदेवकृतितया वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंप्रह २
भागे ३४-४१-४२ संख्यगिरिनारप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ४ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंप्रह २ भागे
३८-४३ संख्यगिरिनारसत्कप्रशस्त्योरपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ५ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंप्रह २ भागे ३८-३९-
४०-४१ संख्यगिरिनारप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

महं० श्रीजयन्तसिहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तम्भ (*) तीर्थमुदाव्यापारान् व्यापृष्ठति सति सं० ७७
वर्षे श्रीशत्रुंजयोजयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावाविर्भूतश्रीमहेवाधिदेवप्रसादासादितसङ्काधिप-
त्येन चौलुक्यकुलनभस्तलप्रकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवण्यप्रसाददेवसुतमहाराजश्रीवीरध-
वलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वेश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपन्नापत्येन महामा (*) त्यश्रीवस्तुपालेन तथा अनुजेन
सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले ध्वलकक्षप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृष्ठता महं० श्रीतेजःपालेन
च श्रीशत्रुञ्जया-ऽर्बुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदण्हिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनकपुर-स्तम्भतीर्थ-दर्भ-
वती-ध्वलकक्षप्रमुखनगरेषु तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि प्रभूतजी (*) र्णो-
द्धाराश्च कारिताः ॥ तथा श्री-शारदाप्रतिपन्नपुत्रसचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेन स्वर्धमन्तरिष्याः प्राञ्छाट-
शातीय ठ० श्रीकान्दडपुञ्याः ठ० राणुकुक्षिसम्भूताया महं० श्रीललितादेव्यास्तथा आत्मनः पुण्या-
भिष्टद्वये इह स्वयंनिर्मापितश्रीशत्रुञ्जयमहातीर्थवतारश्रीमदादितीर्थकरश्रीक्षमदेव-स्तम्भनकपुरा-
वतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्पुरा (*) वतारश्रीमहावीरदेवप्रसादिसहित-कङ्गमीरावतारश्रीसरस्वतीम-
तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनयुगल-अम्बा-ऽवलोकना-शाम्ब-प्रधुम्बशिखरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेव-
कुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिरुद्धनिजपितामह महं० श्रीसोम-स्वपितृ ठ० श्रीआशाराजपूर्तिद्वितय-चारुतो-
रणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीयपूर्वजा-ऽग्नजा-ऽनुज-पुत्रादिमूर्तिस (*) मन्वितमुखोद्घाटनकस्तम्भ-श्रीअ-
ष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनपरंपराविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमद्वायांतमहातीर्थे
श्रीनागेन्द्रगच्छे भद्राकश्रीमहेद्रस्त्रिरिसंताने शिष्यश्रीशांतिसूरिशिष्यश्रीआणंदस्त्रिर-श्रीअमरस्त्रिरिष्टे
भद्राकश्रीहरिभद्रसूरिष्टालंकरणप्रभुश्रीविजयसेनस्त्रिरिप्रतिष्ठित (*) श्रीमदजितनाथदेवप्रमुखविंशतिती-
र्थकरालंकृतोऽयमभिनवः समण्डपः श्रीसंमेतावतारमहातीर्थप्रापासादः कारितः ॥ ४ ॥

मुण्णाति प्रसमं वसु द्विजपतेर्गौरीगुरुं लङ्घयन्,
नो धते परलोकतो भयमहो ! हंसापलापे कृती ।
उच्चैरास्तिकचक्रवालमुकुट ! श्रीवस्तुपाल । स्फुरं,
मेजे नास्तिकतामयं तव यशःपूरः कुतस्या (*) मिति ? ॥ १ ॥

कोपैटोपपैरः परैश्वलचमरङ्गतुरङ्गक्षत-
क्षोणीक्षोदवशादशोषि जलधिः श्रीस्तम्भतीर्थे पुरे ।
स्वेदाभ्यस्तिनीघटाघटनया श्रीवस्तुपालस्फुर-
लेजस्तिमगमभित्तिसतनुभिस्तैरेव सम्पूरितः ॥ २ ॥

दिव्यान्नोत्सववीरवीरध्वलक्षोणीधवाव्यासितं,
प्राजयं राज्यरथस्य भारमभितः स्कंदे दधङ्गीलया ।

१ पद्मिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यनवमसर्गप्रान्तेऽपि दृश्यते ॥ २ पद्मिदं सुकृतकीर्तिक्लोलिन्या १३७ तम-
पद्मतमाऽपि वर्तते ॥ ३ पद्मिदं सुकृतकीर्तिक्लोलिन्या १२१ पद्मप्रयेण उदयप्रसीधवस्तुपालस्तुतौ च ११
पद्मप्रेणाऽपि दृश्यते ॥

माति आतरि दक्षिणे समगुणे श्रीवस्तुपालः कथं,
न लोक्यः स्वयमश्चराजतनुजः कामं स ब्रह्मस्थितिः ? || ३ ||

लावण्यांग इति ब्रुतिन्यतिकरैः सत्याभिधानोऽभवद्,
आता यस्य निशानिशांतविकसच्चन्द्रप्रकाशाननः ।

शंकरकोपसंब्रमभरादासीदनंगः स्मरः,
साक्षादंगमयोऽयमित्यपहृतः स्वर्गागनाभिर्लघु
रेत्कः सद्गतिभावभाजि चरणे श्रीमल्लदेवोऽपरो,
यद्गता परमेष्ठिवाहनतया प्राप्तः प्रतिष्ठां पराम् । || ४ ||

खेलनिर्मलमानसेन समयं कापि श्रयन् पंकिलं,
विश्वे राजति राजहंस इव यः संशुद्धपक्षद्वयः
सोऽयं तस्य सुधाहरस्य कवितानिष्ठुः कनिष्ठः कृती,
बंधुवैधुरलुद्धिबोधमधुरः श्रीवस्तुपालाभिधः ।

शानांभोरुहकोटरे अमरतां सारंगसाम्यं यशः-
सोमे सौरितुलां च यस्य महिमक्षीरोदधौ खं दधौ
इदुर्बिंदुरपां सुरेश्वरसरिङ्गुडीरपिंडः पति- || ५ || (*)

मासां विङ्गुमकंदलः किल विमुः श्रीवत्सलक्ष्मा नभः ।

कैलास-त्रिदशेभ-शंभु-हिमवत्यायास्तु मुक्ताकल-
स्तोमः कोमलबालुकाऽस्य च यशःक्षीरोदधौ कौमुदी
हस्ताप्रन्यस्तसारस्वतरसरसनप्राप्तमाहात्म्यलक्ष्मी- || ६ ||

स्तेजःपालस्ततोऽसौ जयति वसुभैः पूरयन् दक्षिणाशाम् ।

यहुद्धिः कस्तिपोरु(*)द्विपगहनपरक्षोणिभृद्धुद्धिसंप-
लोपामुद्राधिषस्य स्फुरति लसदिनसफारसंचारहेतुः
पुण्यश्रीर्मुखि मल्लदेवतनयोऽभूत् पुण्यसिंहो यशो- || ८ ||

र्वयः स्फुर्जति जैत्रसिंह इति तु श्रीवस्तुपालात्मजः ।

तेजःपालसुतस्वसौ विजयते लावण्यसिंहः स्वयं,
थैविश्वेऽभवदेकपादपि कलौ धर्मश्वतुष्पादयम्
यते श्रीनार्गेश्वरगच्छे भद्रारकश्रीउदय(*)प्रभवरीणाम् । || ९ ||

स्तम्भतीर्थेऽत्र कायस्थवंशे वाजडनंदनः । प्रशस्तिमेतामलिखजैत्रसिंहध्रुवः सुधीः ॥ १ ॥

१ पद्मिदं शुक्रतकीर्तिकलोलिन्यां ११३ पद्मतयाऽपि वर्तते ॥ २ पद्मिदं शुक्रतकीर्तिकलोलिन्यां ११५ पद्म-
कपेणापि वर्तते ॥ ३ पद्मिदं शुक्रतकीर्तिकलोलिन्यां १२८तमपयहृपेणापि दश्यते ॥ ४ पद्मिदं शुक्रतकीर्ति-
कलोलिन्यां ११७ पद्मतयाऽपि वर्तते ॥ ५ पद्मिदं प्रावीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-४१-४२ संक्षयगिरिनार-
प्रशस्तिव्यपि ग्रन्तमागे वर्तते ॥

वैहृष्टस्य तनुजेन, सूत्रधारेण धीमता । एषा कुमारसिंहेन, समुत्क्षिप्ता अवज्ञतः ॥ २ ॥
धीवेष्येत्तिगद्वर्तुरम्बायत्वं प्रसादतः । वस्तुपालानवयस्यास्तु, प्रशस्तिः हस्तितशालिनी ॥ ३ ॥
श्रीवस्तुपालप्रभोः प्रशस्तिरियं निष्पत्ता । शुभं भवतु ॥

(४४-७)

वैस्तुपालविहारेण, हारेणवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते ॥ १ ॥

श्रीविक्रमसंवत् १२८९ वर्षे आश्विनवदि १५ सोमे महामात्यश्रीवस्तुपालेन आत्मश्रेयोऽर्थं पश्याद्वागे श्रीकपर्दियक्षप्रासादसमलंकृतः श्रीश्रुंजयाव[तार]श्रीआदिनाथप्रासादस्तदग्रतो वामपक्षे स्वीयसद्वर्मचारिणी महं० श्रीललितादेविश्रेयोऽर्थं विश्वतिजिनालंकृतः श्रीसम्मेतश्चित्तरप्रासादस्तात्मा दक्षिणपक्षे द्विं० भार्या महं० श्रीसोमुश्रेयोऽर्थं चतुर्विंशतिजिनोपशोभितः श्रीअष्टापदप्रासादः अपूर्वधाटरचनारुचिरतरमभिनवप्रासादचतुष्यं निजद्रव्येण कारयांचके ।

(लिष्ट ऑफ आर्कियोलॉजिकल रिमॅन्स इन बॉम्बे प्रॅसिडेंसी पृ० ३६१)

(४५-८)

महामात्यश्रीवस्तुपाल महं० श्रीललितादेवीमूर्ति ।

(४६-९)

महामात्यश्रीवस्तुपाल महं० श्रीसोमुकामूर्ति.... ।

(लिं० ऑ० आ० रि० इ० बॉ० प्रॅ० पृ० ३५७-८)

(४७-१०)

वस्तुपालविहारेण, हारेणवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते ॥ १ ॥

(४८-११)

वस्तुपालविहारेण, हारेणवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते ॥ १ ॥

(लिं० ऑ० आ० रि० इ० बॉ० प्रॅ० पृ० ३५९)



१ पदमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-४२ संख्यगिरिनारसत्कप्रशस्त्रोरपि ग्रन्तभागे दर्शये ॥
२ पदमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-३९-४०-४२ संख्यगिरिनारप्रशस्त्राद्यपि ग्रन्तभागे दर्शये ॥
३ पदमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ४७-४८ संख्यगिरिनारसत्कप्रशस्त्राद्यपेणाद्य दर्शये ॥

(२)

श्रीअर्द्धदाचलोपरिस्थिताः प्रशस्तयः ।

गूर्जे भव महा मात्य श्रीतेजः पालका रित श्री द्वृण-
वस हि कागत प्रशस्ति लेखाः ।

(६४)

॥ ६० ॥

बंदे सरस्वतीं देवीं, याति या कर्म [व] मावसम् ।
नी[थमा]ना [निजेने] व, [यानमा] नस[व] [सिन] ॥ १ ॥
यः [क्ष] अंतिमा [नप्य] रु [णः प्रकोष्ठे, शांतोऽपि दीपः]: स्मरनिग्रहात् ।
निमीलिताक्षोऽपि सम] अदशी, स वः शिवामास्तु शि * [वात] नृजः ॥ २ ॥
अणहिलपुरमस्ति स्वस्तिपात्रं प्रजा [नाम] जरजिर [चुतुस्यैः] पा [स्य] मानं चु[लुक्यैः]।
[विरम] ति रमणीनां य[त्र वक्त्रे] न्दु [मंदी] कृत इव [सि] तपक्षप्रक्षयेऽप्यधकारः ॥ ३ ॥
तत्र ग्रामवाटान्वयमुकुटं कुटजप्रसून (*) विशदयशाः ।
दानविनिर्जितकल्पद्रुमपंडथंडपः समभूत् ॥ ४ ॥
चंडप्र[सा]दस[जः], स्वकुल[प्रासा]दहेमदंडोऽस्य ।
प्रसर[त्वी] तिपताकः, पुण्यविपाकेन सुनुरभूत् ॥ ५ ॥
आत्मगुणैः किरणैरिव, सोमो रोमोऽमं सतां (*) कुर्वन् ।
उदगादगाधमध्याहु घोदविवांधवाचस्मात् ॥ ६ ॥
एतस्मादज्ञनि जिनाविः [ना] थभक्ति, विआणः स्वमनसि शश्वदश्वरा[जः] ।
तस्याऽसीद्यिततमा कुमारदेवी, देवीव त्रिपुररिपोः कुमारमाता ॥ ७ ॥
तयोः प्रथमपु(*) त्रोऽमून्मंत्री लूणिगसंजया ।
दैवादवाप बालोऽपि, सालोक्यं [व] सवेन सः ॥ ८ ॥
पूर्वमेव सञ्चिवः स कोविदैर्गण्यते स्म गुणवत्सु लूणिगः ।
यस्य निस्तुष्मतेर्मनीषया, चिकृतेव विषणस्य धीरपि ॥ ९ ॥
श्रीमहादेवः अि(*)तमस्तुदेवः, तस्यानुजो मंत्रिमतस्तिकाऽभूत् ।
वभूव यस्यान्यधनांगनास्तु, लुभ्या न बुद्धिः शमलबुद्धेः ॥ १० ॥
धर्मविधाने सुवनच्छिद्विधिधाने विभिन्नसंधाने ।
सामिष्ठा न हि शृणः, प्रतिमलो भरुदेव(*)स्य ॥ ११ ॥

नीलनीरदकदम्बकमुक्तथेतकेतुकिरणोद्धरणेन ।
 मल्लदेवयशसा गलहस्तो, हस्तिमल्लदशनांशुषु दतः ॥ १३ ॥
 तस्यानुजो विजयते विजितेद्विद्यस्य, सारस्वतामृताङ्गुतर्हर्षवर्षः ।
 श्रीब्रह्म(*)[पा]ल इति भालतलस्थितानि, दौःस्याक्षराणि सुकृती कृतिनां विळंपन् ॥ १४ ॥
 विरचयति वस्तुपालशुलुक्यसचिवेषु कविषु च प्रवरः ।
 न कदाचिदर्थहरणं, श्रीकरणे काव्यकरणे वा ॥ १५ ॥
 तेजःपालः पालितस्वा(*)मितेजःयुंजः सोऽयं राजते मंत्रिराजः ।
 दुर्वृचानां शंकनीयः कनीयानस्य आता विश्वविअंतकीर्तिः ॥ १६ ॥
 तेजःपालस्य विष्णोश्च, कः स्वरूपं निरूपयेत् ? । स्थितं जगत्वयीसूत्रं, यदीयोदरकंदरे ॥ १७ ॥
 जालू-माऊ-साऊ-धनदेवी-सोहगा-वयजुकास्त्वाः ।
 परमलदेवी चैषां, कमादिमाः सप्त सोदर्यः ॥ १८ ॥
 एतेऽश्वराजपुत्रा, दशरथपुत्रास्त एव चत्वारः । प्राप्ताः किल पुनरवनावेकोदरवासलोभेन ॥ १९ ॥
 अनुजन्मना समेतस्तेजःपा(*)लेन वस्तुपालोऽयम् ।
 मदयति कस्य न हृदयं ?, मधुमासो माघवेनेव ॥ २० ॥
 पंथानमेको न कदापि गच्छेदिति स्मृतिप्रोक्तमिव स्मरतौ ।
 सहोदरौ दुर्दरमोहचौरै, संभूय धर्माध्वनि तौ प्रवृत्तौ
 इवं सदा सो(*)दरयोरुदेतु, युगं युगव्यायमदोर्युगश्च । ॥ २१ ॥
 युगे चतुर्थेऽव्यनधेन येन, कृतं कृतस्यागमनं युगस्य
 मुक्तामयं शरीरं, सोदरयोः सुचिरमेतयोरस्तु ।
 मुक्तामयं किल महीवलयमिदं भाति यस्कीर्त्य
 ए(*)कोत्पत्तिनिमित्तौ, यद्यपि पाणी तयोस्तथाऽप्येकः । ॥ २२ ॥
 वामोऽभूदनयोर्न तु, सोदरयोः कोऽपि दक्षिणयोः ॥ २३ ॥
 धर्मस्थानांकितामुवीं, सर्वतः कुर्वताऽमुना । दत्तः पादो बलाद्वयुगलेन कलेगले
 हतशौलुक्यवीरा(*)णां, वंशे शास्त्रविशेषकः । ॥ २४ ॥
 अणोराज इति स्थातो, जातस्तेजोमयः पुमान् ॥ २५ ॥
 तस्मादनन्तरमनन्तरितप्रतापः, प्राप क्षितिं क्षतरिपुर्लक्षणप्रसादः ।
 स्वर्गापिगाजलवलक्षितशस्तुभ्र, वआम यस्य लवणाबिभूतीत्य कीर्तिः(*) ॥ २६ ॥
 सुतस्तस्मादासीदशरथकुत्स्थप्रतिकृतेः,
 प्रतिक्षमापालानां कवलितबलो वीरध्वबलः ।

१ पद्मिदं ग्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भाष्ये ४२ संख्यगिरिनारसत्कविलक्षणेते नवमं मलघारिशीनरक्तनवस्तु-
 हस्तिकृपेण निर्दिष्टं वर्तते ॥ ३ पद्मिदं जिनहर्षायस्तुपालचरिते सोमेश्वरदेवनाम्नैव वर्तते ॥

यस्यःपूरे यस्य प्रसरति रतिक्षांतमनसा-

मसाधीनां भग्नाऽभिसरणकलायां कुशलता

॥ २७ ॥

चौलुक्यः सुकृती स वीरध्वन्लः क(*) णेजपानां जपं,

यः कर्णेऽपि चकार न प्रलयतामुद्दिश्य यौ मन्त्रिणौ ।

आन्ध्रामभ्युदयातिरेकरुचिरं राज्यं स्वर्गुः कृतं,

वाहानां निबहाः घटाः करटिनां बद्धाश्च सौधांगणे

॥ २८ ॥

तेन मंत्रिद्वयेनायं, जाने जानूपवर्तिना । वि(*)सुरुजद्वयेनेव, सुखमास्त्विष्यति श्रियं

॥ २९ ॥

इतथ—

गौरीवरधशुरभूषरसंभवोऽयमस्त्वर्युदः ककुदमद्रिकदंबकस्य ।

मंदाकिनी घनजटे दधुत्तमां[गे], यः श्यालकः शशिभृतोऽभिनयं करोति ॥ ३० ॥

कविदिह विहरंतीर्वा(*)क्षमाणस्य रामाः, प्रसरति रतिरंतर्मोक्षमाकांक्षतोऽपि ।

कचन मुनिभिरधर्या पश्यतस्तीर्थीर्थीर्थी, भवति भवविरक्ता धीरधीरात्मनोऽपि ॥ ३१ ॥

श्रेयःश्रेष्ठवशिष्ठुहोमहुतभुक्कुंडान्मृतंडात्मज-

पश्योताधिकदेहदीधितिभ(*)रः कोऽप्याविरासीन्नरः ।

तं मत्वा परमारणैकरसिं स व्याजहार श्रुते-

राधारः परमार इत्यजनि तत्रामाऽथ तस्यान्वयः

॥ ३२ ॥

श्रीधूमराजः पथमं बभूव, भूवासवस्तत्र नरेन्द्रवंशे ।

मूमिभृतो यः कृतवानभिज्ञान्, पक्षद्वयोच्छ्ले(*)दनवेदनासु

॥ ३३ ॥

धंधुक-ध्वन-भटादयस्ततस्ते रिपुद्विपषटाजितोऽभवन् ।

यत्कुलेऽजनि पुमान् मनोरमो, रामदेव इति कामदेवजित्

॥ ३४ ॥

रोदःकंदरवर्तिकीर्तिलहरीलिप्तामृतांशुद्युते-

रप्युम्भवशो यशोधवल इ(*)त्यासीत्तनूजस्तः ।

यशौलुक्यकुमारपालनुपतिप्रत्यर्थितामागतं,

मत्वा सत्वरमेव मालवपतिं व(व)ल्लालमालबधवान्

॥ ३५ ॥

शत्रुश्रेणीगलविद्वनोनिद्रनिखिशाधारो,

शारावर्षः समजनि सुतस्तस्य विश्वप्रकाश्यः ।

कोधाकांतप्र(*)घनवसुधानिश्वले यन्न जाता-

अयोत्तमेत्पलजलकणाः कोङ्कणाधीशपत्न्यः

॥ ३६ ॥

सोऽयं पुनर्दर्शरथः पृथिव्यामव्याहतौजाः स्फुटमुज्जगाम ।

मारीचैरादिक योऽधुनाऽपि, [मृ]गव्यमव्यप्रमतिः करोति

॥ ३७ ॥

सामं(*)तसिंहसमिति क्षितिविक्षतौजा:, श्रीगूर्जरक्षितिपरक्षणदशिणात्मिः ।
 प्रङ्गादवस्तवनुजो दनुजोचमारिचारिक्रमत्र पुनरुज्जवयांचकार
 देवी सरोजासनसंभवा किं ?, कामप्रदा किं सुरसौरभेयी ? ।
 प्रङ्गादनाकारभर(*)धरायाभावातवन्वेष न निश्चयो मे
 धारावर्षसुतोऽयं, जयति श्रीसोमसिंहदेवो यः ।
 पितृतः शौर्यं विद्मां, पितृव्यकाहानमुभयतो जगृहे
 मुक्त्वा विप्रकरानरातिनिकरात्रिर्जित्य तत्क्षेत्र,
 प्राप्त् संप्रति सोम(*)सिंहनृपतिः सोमप्रकाशं यशः ।
 येनोर्धीतलमुज्जवलं रचयताऽप्युत्ताम्यतामीर्ष्यथा,
 सर्वेषाभिह विद्विषां नहि मुखान्मालिन्यमुन्मूलितं
 वसुदेवस्येव सुतः:, श्रीकृष्णः कृष्णराजदेवोऽस्य ।
 मात्राभिकप्रतापो, यशोद(*)यासंश्रितो जयति
	४८	
	४९	
	५०	
	५१	
	५२	

इति—

अन्वयेन विनयेन विद्यया, विक्षेपेण सुकृतकमेण च ।
 कापि कोऽपि न पुमानुपैति मे, वस्तुपालसहशो द्वशोः पथि
 देयिता ललितादेवी, तनयमवीतनयमाप सचिवेद्रात् ।
 नामा जयंत(*)सिंहं, जयंतमिद्रात् पुलोमपुत्रीव
 यः शैशवे विनयवैरिणि बोधवंध्ये,
 धते नयं च विनयं च गुणोदयं च ।
 सोऽयं मनोभवपराभवजागरूक-
 रूपो न कं मनसि चुंबति जैत्रसिंहः ?
 श्रीवस्तुपालपुत्रः, कल्पायुरयं जयं(*)तसिंहोऽस्तु ।
 कामादघिकं रूपं, निरूप्यते यस्य दानं च
 से श्रीतेजःपालः, सचिवश्विरकालमस्तु तेजस्वी । येन जना निर्शिताश्वितामणिनेव नर्दति ॥ ५३ ॥
 यज्ञाणक्या-ऽमरगुरु-मरुद्वयाधि-शुक्रादिकानां,
 प्रागुत्पादं व्यधित भुवने (*) मंत्रिणां बुद्धिधात्रां ।
 चक्रोऽन्यासः स खलु विधिना नूनमेनं विधातुं,
 तेजःपालः कथमितरथाऽधिक्यमापैष तेषु ?
	५४	
	५५	
	५६	
	५७	
	५८	

१. पद्मिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागगत ३८ संख्यगिरिनारसत्काशिलालेखे नवमं सोमेश्वरदेवकृतिस्मै-
 नेव निर्दिष्टं वर्तते ॥ २ पद्मिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागगत ३८ संख्यगिरिनारसत्क १०१ संक्षमार्त्तदांचं-
 ग्राहस्त्रीः कल्पाः वहुं प्रथमं च सोमेश्वरदेवकृतिस्था निर्दिष्टं वर्तते ॥

अति स्वत्तिनिकेतनं तनुभूतां श्रीवस्तुपालानुज-
स्तेजःपाल इति स्थितिं बल्लितामुर्दीतले पालयन् ।

आत्मीयं व(*)हुमन्यते न हि गुणग्रामं च कामदकि-
शाणक्योऽपि नमस्करोति न हृदि प्रेक्षास्पदं प्रेक्ष्य यम् ॥ ४९ ॥

इतम् महं० श्रीतेजःपालस्य पल्याः श्रीअनुपमदेव्याः पितृवंशवर्णनम् ॥

ग्रामवाटान्वयमंडनैकसुकृटः श्रीसांद्रचंद्रावती-

बास्तव्यः स्त(*)वनीवकीर्तिलहरिप्रक्षालितक्षमातलः ।

श्रीशामाभिधया सुधीरजनि यद्वचानुरागादभूत्,
को नासप्रमदो न दोलितशिरा नोद्धूतरोमा पुमान् ? ॥ ५० ॥

अनुसृतसज्जनसरणिर्धरणीयनामा वभूव तत्त्वयः ।

स्वप्रभुहृदये (*) गुणिना, हारेणेव स्थितं येन
त्रिष्ठुवनदेवी वस्य, त्रिष्ठुवनविस्त्यातशीलसंपत्ता ।

दयिताऽभूदनयोः पुनरंगं द्वेष्वा मनस्त्वेकम् ॥ ५१ ॥

अनुपमदेवी देवी, साक्षाद्वाक्षायणीव शीलेन ।

तहुहिता सहिता श्रीतेजःपालेन (*) पत्वाऽभूत् ॥ ५२ ॥

इयमनुपमदेवी दिव्यवृचप्रसूनवततिरजनि तेजःपालमंशीशफ्ली ।

नय-विनय-विवेकौचित्य-दाक्षिण्य-दानप्रमुखगुणगणेण्डुद्योतिताशेषगोत्रा
लावण्यसिंहस्तनयस्तयोरयं, रयं जयक्षि (*) [द्वि] यदुष्टवाजिनाम् ।

लङ्घवापि भीनधजमंगलं वयः, प्रयाति धर्मैकविधायिनाऽध्वना ॥ ५३ ॥

श्रीतेजपालतनयस्य गुणानमुप्य, श्रीलद्वणसिंहकृतिनः कति न स्तुवन्ति ? ।

श्रीबंधनोद्धूरतरैरपि यैः समंतादुद्धामता त्रिजगति कि(*)यते स्म कीर्तेः ॥ ५४ ॥

गुण-धननिधानकलशः, प्रकटोऽयमवेष्टितश्च खलसपैः ।

उपचयमयते सततं, सुजनैरुपजीव्यमानोऽपि ॥ ५५ ॥

मल्लदेवसचिवस्य नंदनः, पूर्णसिंह इति लीलुकासुतः ।

तस्य नंदति सुतोऽयमहृणा(*)देविम् : सुकृतवेशम् पैथडः ॥ ५६ ॥

अमूदनुपमा पल्ली, तेजःपालस्य मंत्रिणः । लावण्यसिंहनामाऽयमायुष्मानेतयोः सुतः ॥ ५७ ॥

तेजःपालेन पुण्यार्थं, तयोः पुत्र-कलत्रयोः । हम्म्य श्रीनेमिनाथस्य, तेने तेनेदमर्दुदे ॥ ५८ ॥

तेजःपाल इति क्षितीदुसचिवः शंसोज्ज्वलभिः शिला-

श्रेणीभिः स्फुरदिदुकुदरुचिरं नेमिपश्चोर्मदिरम् ।

उम्मैर्मैडपमग्रतो जिन[वरा]वासद्विपंचाशतं,
तत्यार्थेषु बलानकं च पुरतो निष्पादयामासिवान् ॥ ५९ ॥

श्रीमद्भृंड[८]संभवः [सम] भवष्टुप्रसादस्ततः,
सोमस्तत्त्वमवोऽश्वराज इति तत्पुत्राः पवित्राशयाः ।

श्रीमहूणिग-महूदेवसचिवश्रीवस्तुपालाहया-
स्तेजःपालसमन्विता जिनमतारामोक्तमन्तीरदा:
॥ ६२ ॥

श्रीमंश्रीश्वरस्तुपालतनयः श्रीजै(*) प्रसिंहाहय-
स्तेजःपालसुतश्च विश्रुतमतिर्लावण्यसिंहाभिषः ।
एतेचां दश मूर्तयः करिवधूस्कंधाघिरुदाभिरं,
राजंते जिनदर्शनार्थमयतां दिग्मायकानामिव
मूर्तीनामिह पृष्ठतः करिवधूपृष्ठप्रतिष्ठाजुषां,
तन्मूर्तिर्विम(*)लाश्मस्वतकगताः कांतासमेता दश ।
चौलुक्यक्षितिपालवीरध्ववलस्याद्वैतवंशुः सुधी-
स्तेजःपाल इति व्यधापयदयं श्रीवस्तुपालानुजः
॥ ६३ ॥

तेजःपालः सकल्पजोपजीव्यस्य वस्तुपालस्य ।
सविधे विभाति सफलः, (*) सरोवरस्येव सहकारः
तेन आत्मयुगेन या प्रतिपुर-ग्रामा-ऽच्च-शैलस्थलं,
वापी-कूप-निपान-कानन-सरः-प्रासाद-सन्त्रादिका ।
घर्मस्थानपरंपरा नवतरा चक्रेऽथ जीर्णोद्धृता,
तत्संख्याऽपि न बुध्यते यदि परं तद्वेदि (*) नी मेदिनी
शंभोः श्वासगतागतानि गणयेद् यः सन्मतिर्योऽथवा,
नेत्रोन्मीलनमीलनानि कलयेन्मार्केणाम्नो मुनेः ।
संख्यातुं सचिवद्वयीविरचितामेतामयेतापर-
व्यापारः सुकृतानुकरितंतरं सोऽप्युजिहीते यदि (*)
॥ ६४ ॥

सर्वत्र वर्ततां कीर्तिरश्वराजस्य शाश्वती । सुकर्तुमुपकर्तुं च, जानीते यस्य संततिः
आसीष्टुपमंडितान्वयगुरुर्जग्निंद्रगच्छश्रिय-
शूदारलभयलसिद्धमहिमा सूरिर्महेऽद्राभिषः ।
तस्माद्विस्मयनीयचारुचरितः श्रीशांति(*) [स्मृतिः] तो-
प्यानंदा-ऽमरसूरियुग्ममुदयवन्द्राकंदीपद्युति
श्रीबैनशासनवनीनवनीरवाहः, श्रीमांस्ततोऽप्यघरो हरिभद्रश्चरिः ।
विद्यामदोन्मदगदेष्वनवद्यवैद्यः, स्वातस्ततो विजयसेनमुनीश्वरोऽयम्
गुरो [स्त] (*) स्याःशिः षां पात्रं, सूरिरस्त्युदयप्रभः ।
भौक्तिकानीव सूक्तानि, भांति वल्यतिभानुधे:
॥ ६५ ॥

॥ ६६ ॥

व्यापारः सुकृतानुकरितंतरं सोऽप्युजिहीते यदि (*)
॥ ६७ ॥

सर्वत्र वर्ततां कीर्तिरश्वराजस्य शाश्वती । सुकर्तुमुपकर्तुं च, जानीते यस्य संततिः
आसीष्टुपमंडितान्वयगुरुर्जग्निंद्रगच्छश्रिय-
शूदारलभयलसिद्धमहिमा सूरिर्महेऽद्राभिषः ।
तस्माद्विस्मयनीयचारुचरितः श्रीशांति(*) [स्मृतिः] तो-
प्यानंदा-ऽमरसूरियुग्ममुदयवन्द्राकंदीपद्युति
श्रीबैनशासनवनीनवनीरवाहः, श्रीमांस्ततोऽप्यघरो हरिभद्रश्चरिः ।
विद्यामदोन्मदगदेष्वनवद्यवैद्यः, स्वातस्ततो विजयसेनमुनीश्वरोऽयम्
गुरो [स्त] (*) स्याःशिः षां पात्रं, सूरिरस्त्युदयप्रभः ।
भौक्तिकानीव सूक्तानि, भांति वल्यतिभानुधे:
॥ ६८ ॥

॥ ६९ ॥

व्यापारः सुकृतानुकरितंतरं सोऽप्युजिहीते यदि (*)
॥ ७० ॥

भौक्तिकानीव सूक्तानि, भांति वल्यतिभानुधे:
॥ ७१ ॥

एतद्धर्मस्थानं, धर्मस्थानस्य चात्य यः कर्ता ।

तावद् दृश्यमिदमुदियादुदयत्ययमर्दुदो यावत् ॥ ७२ ॥

श्रीसोमेश्वरदेवशुलुक्यनरदेवसेवितांहि(*)युगः ।

रचयांचकार लचिरां, धर्मस्थानप्रशस्तिमिमाम् ॥ ७३ ॥

श्रीनेमेरम्बिकायात्य, प्रसादादर्दुदाचले । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ७४ ॥

सूत्र ० केलहणसुतधांधलपुत्रेण चंडेश्वरेण प्रशस्तिरियमुल्कीर्णा । (*) श्रीविक्रम [संवत् १२८७ वर्षे] फाल्गुण वदि ३ रवौ श्रीनार्णेद्रगच्छे श्रीविजयसेनद्विरिभिः प्रतिष्ठा कृता ॥

(६५)

॥ दृ ॥ ३० नमः [सर्वज्ञाय ॥ संव] त् १२८७ वर्षे लौकिकफाल्गुनवदि ३ रवौ अद्येह श्री-
मद्दणहिलपाटके चौलुक्यकुलकमलराजहंससमस्तराजावलीसमलंकृतमहाराजाधिराजश्रीभ[८८८८]-
(*) विजयराज्ये त.....। श्रीवसिष्ठ(ष्टु) कुंडयजनानलोद्भूतश्रीमद्भूमराजदेव-
कुलोत्पन्नमहामंडलेश्वरराजकुलश्रीसोमसिंहदेवविजयराज्ये तस्यैव महाराजाधिराजश्रीभीमदेवस्य
प्रसा [दात् गूर्ज] (*) रत्नामंडले श्रीचौलुक्यकुलोत्पन्नमहामंडलेश्वरराणकश्रीलवणप्रसाददेवसुत-
महामंडलेश्वरराणकश्रीवीरध्ववलदेवसत्कसमस्तमुद्राव्यापारिणा श्रीमद्दणहिलपुरवास्तव्यश्रीप्राग्वाट-
जातीय ठ० श्रीबंद[पसुठ० श्री] (*)चंडप्रसादात्मज महं० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआसराज-
भार्या ठ० श्रीकुमारदेव्योः पुत्र महं० श्रीमल्लदेव संघपति महं० श्रीवस्तुपालयोरनुजसहोदरभ्रातृ
महं० श्रीतेजःपालेन स्वकीयभार्या महं० श्रीअनुपमदेव्यास्तत्कुक्षिः [संभूतप] (*) वित्रपुत्र महं०
श्रीलूणसिंहस्य च पुण्यशोऽभिद्वद्ये श्रीमद्भुदाचलोपरि देउलवाडाप्रामे समस्तदेवकुलिकालंकृतं
विद्वाल्लहस्तिशालोपशोभितं श्रीलूणसिंहवसहिकाभिधानश्रीनेमिनाथदेवचैत्यमिदं कारितं ॥ ७ ॥
(*) प्रतिष्ठितं श्रीनार्णेद्रगच्छे श्रीमहेश्वरिसंताने श्रीशांतिश्वरिशिष्यश्रीआणंदद्वारि-श्रीअमरचंद्र-
श्वरिप्रहालंकरणप्रभुश्रीहरिभद्रश्वरिशिष्यैः श्रीविजयसेनद्विरिभिः ॥ ७ ॥ अत्र च धर्मस्थाने कृत-
श्रावकगोष्ठि(ष्टि)कानां नामा(*)नि यथा ॥ महं० श्रीमल्लदेव महं० श्रीवस्तुपाल महं० श्री-
तेजःपालप्रभूतिप्रातृत्रयसंतानपरंपरया तथा महं० श्रीलूणसिंहसत्कमातृकुलपश्चे श्रीचंद्रावतीवास्त-
व्यप्राग्वाटजातीय ठ० श्रीसावदेवसुत ठ० श्रीशालिमतनुज ठ० (*) श्रीसागरतनय ठ० श्री-
गागापुत्र ठ० श्रीधरणिग्रातृ महं० श्रीराणिग महं० श्रीलीला तथा ठ० श्रीधरणिगभार्या ठ०
श्रीतिष्ठुषदेविकुक्षिसंभूत महं० श्रीअनुपमदेवीसहोदरभ्रातृ ठ० श्रीसीम्बसीह ठ० श्रीआम्बसीह
ठ० श्रीजङ्गल (*) तथा महं० श्रीलीलासुत महं० श्रीलूणसीह तथा भ्रातृ ठ० जगसीह ठ०
स्तनसिंहानां समस्तकुटुंबेन पृतीयसंतानपरंपरया च एतस्मिन् धर्मस्थाने सकलमपि स्तनपूजा-
सारादिकं सैदैव करणीयं निर्वाहणीयं च ॥ तथा ॥ (*) श्रीचंद्रावत्याः सत्कसमस्तमहाजनसकल-

विनचैत्यगोष्ठि(हि)कथमृतिशावकसमुदायः ॥ तथा उचरणी-कीसरउलीग्रामीयप्रावाट ज्ञां श्रे० रासङ्ग उ० आसधर तथा ज्ञां माणिभद्र उ० श्रे० आलहण तथा ज्ञां श्रे० देलहण उ० सीम्बसी(*)ह घर्कटज्ञातीय श्रे० नेहा उ० सालहा तथा ज्ञां घउलिग उ० आसचंद्र तथा ज्ञां श्रे० बहुदेव उ० सोम प्राग्वाटज्ञां श्रे० सावड उ० श्रीपाल तथा ज्ञां श्रे० जीदा उ० पालहण घर्कटज्ञां श्रे० पासु उ० सादा प्राग्वाटज्ञातीय पूना उ० सा(*)लहा तथा श्रीमालज्ञां पूना उ० सालहाप्रभृतिगोष्ठि(हि)काः । अमीभिः श्रीनेमिनाथदेवप्रतिष्ठा(षा)वर्षप्र-
भियाश्राष्टाहिकायां देवकीय चैत्रवदि ३ तृतीयादिने स्नपनपूजाद्युत्सवः कार्यः ॥ तथा कासाइदमा-
मीय ऊएसबालज्ञां(*)तीय श्रे० सोहि उ० पालहण तथा ज्ञां श्रे० सलखण उ० बालण
प्राग्वाटज्ञां श्रे० सांतुय उ० देलहुय तथा ज्ञां श्रे० गोसल उ० आलहा तथा ज्ञां श्रे०
जोला उ० आम्बा तथा ज्ञां श्रे० पासचंद्र उ० पूनचंद्र तथा ज्ञां श्रे० जसबीर उ० ज(*)या तथा ज्ञां ब्रह्मदेव उ० रालहा श्रीमालज्ञां कयहुरा उ० कुलधरप्रभृतिगोष्ठि-
(हि)काः । अमीभिस्तथा ४ चतुर्थीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य द्वितीयाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥
तथा ग्रामणवास्तव्यप्राग्वाटज्ञातीय महाजनि० (*) आंगिग उ० पूनड ऊएसबालज्ञां महा०
धांधा उ० सागर तथा ज्ञां महा० साटा उ० वरदेव प्राग्वाटज्ञां महा० पालहण उ०
उदयथाल ओइसबालज्ञां महा० आवोधन उ० जगसीह श्रीमालज्ञां महा० वीसल उ०
पासदेव प्रा(*)ग्वाटज्ञां महा० वीरदेव उ० अरसीह तथा ज्ञां श्रे० धणचंद्र उ० रामचंद्र-
प्रभृतिगोष्ठि(हि)काः । अमीभिस्तथा ५ पंचमीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य तृतीयाष्टाहिकामहोत्सवः
कार्यः ॥ तथा धउलीग्रामीय प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० सा(*)जण उ० पासबीर तथा ज्ञां श्रे०
बोहडि उ० पूना तथा ज्ञां श्रे० जसडुय उ० जेगण तथा ज्ञातीय श्रे० साजन उ० गोला
तथा ज्ञां पासिल उ० पूनुय तथा ज्ञां श्रे० राजुय उ० सावदेव तथा ज्ञां दूगसरण उ०
साहणीय ओइसबाल(*)ज्ञां श्रे० सलखण उ० मह० जोगा तथा ज्ञां श्रे० [०] देवहुंधार
उ० आसदेवप्रभृतिगोष्ठि(हि)काः । अमीभिस्तथा ६ षष्ठीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य चतुर्थाष्टाहि-
कामहोत्सवः कार्यः ॥ तथा मुँडस्थलमहातीर्थवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय (*) श्रे० स० धीरण उ०
गुणचंद्र पालहा तथा श्रे० सोहिय उ० आश्वेसर तथा श्रे० जेजा उ० स्वांखण तथा फीलिणी-
ग्रामवास्तव्य श्रीमालज्ञां वापल-गाजणप्रमुखगोष्ठि(हि)काः । अमीभिस्तथा ७ सप्तमीदिने श्री-
नेमिनाथदेवस्य पंचमाष्टाहिकाम(*)होत्सवः कार्यः ॥ तथा हंडाउद्रग्राम-डवाणीग्रामवास्तव्य
श्रीमालज्ञातीय श्रे० आम्बुय उ० जसरा तथा ज्ञां श्रे० [०] लखमण उ० आमू तथा ज्ञां
श्रे० आसल उ० जगदेव तथा ज्ञां श्रे० सूर्यिग उ० धणदेव तथा ज्ञां श्रे० जिषदेव उ०
आला(*) प्राग्वाटज्ञां श्रे० आसल उ० सादा श्रीमाल ज्ञां श्रे० देदा उ० वीसल तथा
ज्ञां श्रे० आसधर उ० आसल तथा ज्ञां श्रे० धिरदेव उ० वीहुय तथा ज्ञां श्रे० गुणचंद्र
उ० देवधर तथा ज्ञां श्रे० इरिया उ० हेमा प्राग्वाटज्ञां श्रे० लखमण(*) उ० कहुयाप्रभृ-
तिगोष्ठि(हि)काः । अमीभिस्तथा ८ अष्टमीदिने श्रीनेमिनाथदेवप्राष्टाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥

तथा [अ] इदाहृष्टवास्तव्यप्राप्नवाटजातीय श्रे० देसल उ० ब्रह्मसरणु तथा ज्ञा० जसकर उ० श्रे० अधिका तथा ज्ञा० श्रे० (*) देल्हण उ० आल्हा तथा ज्ञा० श्रे० वाला उ० वालसिंह तथा ज्ञा० श्रे० आंबुय उ० बोहडि तथा ज्ञा० श्रे० बोसरि उ० पूनदेव तथा ज्ञा० श्रे० शीरुय उ० स्नाजण तथा ज्ञा० श्रे० पाहुय उ० जिणदेवप्रभृतिगोष्ठि(ष्ठि)काः । अमीभिस्तथा ९ नवमीदिने (*) श्रीनेमिनाथदेवस्य सप्तमाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥ तथा साहिलवाडाप्राप्नवास्तव्य ओहसवालजातीय श्रे० देल्हा उ० आल्हण श्रे० नागदेव उ० आम्बदेव श्रे० काल्हण उ० आसल श्रे० बोहिथ उ० लाखण श्रे० जसदेव उ० वाहड श्रे० (*) सीलण उ० देल्हण श्रे० बहुदा श्रे० भहवरा उ० धणपाल श्रे० पूनिग उ० वाधा श्रे० गोसल उ० बहडाप्रभृति-गोष्ठि(ष्ठि)काः । अमीभिस्तथा १० दशमीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य अष्टमाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥ तथा श्रीअर्दुदोपरि देउल(*)वाडावास्तव्यसमस्तश्चावकैः श्रीनेमिनाथदेवस्य पंचायि कल्याणि-कानि यथादिनं प्रतिवर्षं कर्तव्यानि । एवमियं व्यवस्था श्रीचंद्रावतीपतिराजकुलभीसोमसिंहदेवेन तथा तत्पुत्र राज० श्रीकान्हडदेवप्रभुकुमरैः समस्तराजलोकेस्त(*)था श्रीचंद्रावतीयस्थानपति-भद्रारकप्रभृतिकविलास तथा गूगलीब्राह्मणसमस्तमहाजनगोष्ठि(ष्ठि)कैश्च तथा अर्दुदाचलोपरि श्री-अचलेश्वर श्रीविष्णु तथा संनिहितग्रामदेउलवाडाग्राम-श्रीश्रीमातामहाबुग्राम-आचुयग्राम-ओरासाग्राम-उत्तरछग्राम-सिहरग्राम-सालग्राम-हेठउंजीग्राम-आखीग्राम-श्रीधाँघलेश्वरदे-वीयकोटडीप्रभृतिद्वादशभाषेषु संतिष्ठ(ष्ठि)मानस्थानपतितोधन-गूगलीब्राह्मण-राठियप्रभृतिसमस्तलोकै-स्तथा भालि-भाडाप्रभृतिग्रामेषु संतिष्ठ(ष्ठि)मानश्रीप्रतीहा(*) श्वर्णशीयसर्वराजपुत्रैश्च आत्मीयास्तीय-स्वेच्छया श्रीनेमिनाथदेवस्य मंडपे समुपविश्योपविश्य महं० श्रीतेजःपालपार्थीत् स्वीयस्वीयप्रभो-दपूर्वकं श्रीलूणसीहवसहिकाभिधानस्यास्य धर्मस्थानस्य सर्वोऽपि रक्षाभारः स्वीकृतः । तदेतदा(*)-स्मीयवचनं प्रमाणीकुर्वभिः(द्विः)रेतैः सर्वैरपि तथा एतदीयसंतानपरंपरया च धर्मस्थानमिदमाचंद्राङ्कं यावत् परिक्षणीयम् ॥ यतः—

किमिह कपाल-कमंडलु-वल्कल-सितरक्तपट-जटापटलैः ।

त्रतमिदमुज्ज्वलमुच्चतमनसां प्रतिपञ्चनिर्वहणं ॥ १ ॥ ४ ॥ (*)

तथा महाराजकुलश्रीसोमसिंहदेवेन अस्यां श्रीलूणसीहवसहिकायां श्रीनेमिनाथदेवाय पूजां-गभोगार्थं वाहिरह्यां छवाणीग्रामः शासनेन प्रदत्तः ॥ स च श्रीसोमसिंहदेवाभ्यर्थनया प्रभारा-न्वयिभिराचंद्राङ्कं यावत् प्रतिपाल्यः ॥ * ॥ (*)

सिद्धस्त्रेत्रमिति प्रसिद्धमहिमा श्रीपुण्डरीको गिरिः,

श्रीमान् रैवतकोऽपि विश्वविदितः क्षेत्रं विमुक्तेरिति ।

नूनं क्षेत्रमिदं द्वयोरपि तयोः श्रीअर्दुदस्तत्प्रभू,

मेजाते कथमन्यथा सममिमं श्रीआदि-नेमी स्वयम् ? ॥ २ ॥

संसारसर्वस्वमिहैव मुक्तिसर्वस्वमप्यत्र जिनेश्वर्षः ।

विलोक्यमाने भवने तवास्मिन्, पूर्वं परं च त्वयि हृषिणांये ॥ ३ ॥

श्रीकृष्णर्थीयश्रीनवचंद्रस्त्रैरिमे ॥

सं० सरवणपुत्र सं० सिंहराज साषु साजण सं० सहसा-साइदेपुत्री सुनचन प्रणमति
॥ शुभम् ॥

(६६)

- (१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति ॥ सं० १२९६ वर्षे वैशाख शुदि ३ श्रीशश्वर्जयम-
- (२) हातीर्थे महामात्यश्रीतेजपालेन कारितनंदीसरवर-
- (३) पश्चिममण्डपे श्रीआदिनाथविंबं देवकुलिका दंड-क-
- (४) लसादिसहिता । तथा इहैव तीर्थे महं [०] श्रीवस्तुपालका-
- (५) रितश्रीभृत्यपुरीयश्रीमहावीरविंबं खत्तकं च । इहि(है)व
- (६) तीर्थे शैलमयविंबं द्वितीयदेवकुलिकामध्ये खत्तक-
- (७) द्वय श्रीक्रृष्णादिचतुर्विंशतिका च । तथा गृद्धमण्डपपूर्वद्वा-
- (८) रमध्ये खत्तकं मूर्तियुग्मं तदुपरे श्रीआदिनाथविंबं श्री-
- (९) उज(आ)यंते श्रीनेमिनाथपादुकामंडपे श्रीनेमिनाथविं-
- (१०) चं खत्तकं च । इहैव तीर्थे महं [०] श्रीवस्तुपालकारितश्री-
- (११) आदिनाथस्याग्रत(तो) मंडपे श्रीनेमिनाथविंबं खत्तकं च ।
- (१२) श्रीअर्द्धदाचले श्रीनेमिनाथचैत्यजगत्यां देवकुलि-
- (१३) काढ्यं षट्विंबसहितानि ॥ श्रीजावालिपुरे श्रीपा-
- (१४) र्खनाथचैत्यजगत्यां श्रीआदिनाथविंबं देवकुलिका
- (१५) च । श्रीतारणगढे श्रीअजितनाथगृद्धमण्डपे श्रीआ-
- (१६) दिनाथविंबं खत्तकं च ॥ श्रीअणहिल्लपुरे हथीयावापी-
- (१७) प्रत्यासञ्च श्रीसुविधिनाथविंबं तच्छेत्यजीर्णोद्धारं च ॥
- (१८) वीजापुरे देवकुलिकाद्वयं श्रीनेमिनाथविंबं श्रीपा-
- (१९) र्खनाथविंबं च । श्रीमूलप्रासादे कवलीखत्तकद्वये
- (२०) श्रीआदिनाथ श्रीमुनिसुव्रतस्वामिविंबं च ॥ लाटाप-
- (२१) लयां श्रीकुमरविहारजीर्णोद्धारे श्रीपार्खनाथस्याग्र-
- (२२) त(तो) मंडपे श्रीपार्खनाथविंबं खत्तकं च । श्रीप्रह्लादनपु-
- (२३) रे पाल्हविहारे श्रीचंद्रप्रभस्वामिमण्डपे खत्तक-
- (२४) द्वयं च । इहैव जगत्यां श्रीनेमिनाथस्याग्रत(तो) मंडपे
- (२५) श्रीमहावीरविंबं च । एतत् सर्वं कारितमस्ति ॥ श्रीनाग-
- (२६) पुरीयवरहुडीया साहु नेमडसुत साह० राहड ।
- (२७) साह० जयदेव आ० साह० सहदेव तत्पुत्र संघ० साह०
- (२८) खेटा आ० गोसल साह० जयदेव सुत साह० बीरदे-

- (२९) व देवकुमार हाल्य सा० राहड सुत सा० जिणचंद्र
- (३०) श्वेत्पर अभयकुमार लघुआत् सा० लाहडेन
- (३१) निजकुदुंबसमुदायेन इदं कारितं । प्रतिष्ठितं
- (३२) श्रीनार्देश्वरगच्छे श्रीमदाचार्यविजयसेनसूरिभिः ॥
- (३३) श्रीजावालिपुरे श्रीसौवर्णगिरौ श्रीपार्थनाथजगत्यां
- (३४) अष्टापदमध्ये खचकद्वयं च ॥ लाटापल्यां श्रीकुमारवि-
- (३५) हारजगत्यां श्रीअजितस्वामिविं देवकुलि-
- (३६) का दंड-कलससहिता । इहैव चैत्ये जि-
- (३७) नसुगङ्कं श्रीशांतिनाथ श्रीअजितस्वामि ।
- (३८) एतत् सर्वं कारावि(पि)तं ।
- (३९) श्रीअणहिल्लपुरप्रत्यासन चारोपे
- (४०) श्रीआदिनाथविं प्रासादं गूढमंड-
- (४१) पं छ चउकिया सहितं सा० राहड-
- (४२) सुत सा० जिणचंद्र भार्या सा० चाहि-
- (४३) णिकुक्षिसंभूतेन संधं सा० दे-
- (४४) वच्चंद्रेण पिता माता आत्मश्रेयो-
- (४५) र्थं कारापितं ॥ छ ॥

(६७)

र्द० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीमत्पत्तनवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय श्रीचंद्रप श्रीचंड-
प्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरासुतश्रीमालदेव महं० (*) श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्री-
तेजपालेन महं० श्रीवस्तुपालभार्यायाः महं० श्रीसोमुकायाः पुण्यार्थं श्रीसुपार्थजिनालकृता देव-
कुलिकेयं कारिता ॥ छ ॥ छ ॥

(६८)

र्द० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीपत्तनवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय श्रीचंद्रप श्रीचंड-
प्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरासुतश्री(*)मालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्री-
तेजपालेन महं० श्रीवस्तुपालभार्याललतादेविश्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥ छ ॥

(६९)

र्द० ॥ संवत् १२८८ वर्षे श्रीचंद्रप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरागज महं०
श्रीवस्तुपालसुत महं० श्रीजयतसीहश्रेयोऽर्थं (*) महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥

र्द० [॥] श्रीसुपालिनाथस्य कल्प्या०

फाल्युन वदि ९ च्यवन

(७०)

द० ॥ श्रीनृपविकमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरांगज महं०] श्रीतेजपालेन श्रीजयतसीहमार्याजयतलदेवि [*] श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥

(७१)

द० ॥ श्रीनृपविकमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरांगज महं० श्रीतेजपालेन श्रीजयतसीहमार्यासूहवदेवि(*)श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥

(७२)

द० ॥ श्रीनृपविकमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वयसमुद्भव महं० श्रीतेजपालेन महं० श्रीजयतसी(*)हमार्या महं० श्रीरूपादेवि-श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ ४ ॥

(७३)

द० ॥ श्रीनृपविकमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुताश्रीमहजलश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देव(*)कुलिका कारिता ॥ ५ ॥

(७४)

द० ॥ श्रीनृपविकमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुताबाईश्रीसदमलश्रेयो(*)र्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ ६ ॥

(७५)

द० ॥ श्रीनृपविकमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुत महं० श्रीपूँनसीहीयमा(*)र्या महं० श्रीआलहण-देविश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ ७ ॥

(७६)

द० ॥ श्रीनृपविकमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमा-न्वये महं० श्रीआसरासुत महं० श्रीमालदेवीयमार्या महं० श्रीषातूश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलि(*)का कारिता ॥

(७७)

द० ॥ श्रीनृपविकमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमा-न्वये महं० श्रीआसरासुत महं० श्रीमालदेवीयमार्या महं० श्रीलीलश्रेयोऽर्थं महं० श्री(*)-तेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ ८ ॥

(७८)

८० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम
महं० श्रीआसरा महं० श्रीमालदेवान्वये महं० श्रीपुनसीहसुत महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका
कारिता ॥

(७९)

८० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमा-
न्वये महं० श्रीमालदेवसुत महं० श्रीपुनसीहस्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका
कारिता ॥ ४ ॥ ४ ॥

(८०)

८० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमा-
न्वये महं० श्रीआसरा सुत महं० श्रीमालदेवस्रेयोऽर्थं तत्सोदरलसुभ्रातृ महं० श्रीतेजपालेन
देवकुलिका कारिता ॥ ४ ॥

(८१)

८० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम
महं० श्रीआसरा महं० श्रीमालदेवान्वये महं० श्रीपुनसीहसुतावाईश्रीवलालदेविश्रेयोऽर्थं
महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ ४ ॥

(८२)

संवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटवंशीय महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीतेजपालसुत महं० लूण-
सीहमार्यादेविश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ ४ ॥ शुभं भवतु ॥

(८३)

८० ॥ संवत् १२९० वर्षे महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीतेजपालसुत महं० श्रीलूणसीहमार्या
महं० श्रीलष्मादेविश्रेयोऽर्थं महं० तेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥

(८४)

८० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९० वर्षे श्रीपत्नवास्तव्य प्राग्वाटवंशीय महं० श्रीचंडप्र
श्रीसोमान्वये महं० श्रीआसरा सुत महं० श्रीमालदेवभ्रातृ महं० श्री(*)-
कर्त्तव्यालयोरनुज महं० श्रीतेजपालेन स्वकीयभार्या महं० श्रीअनुपमदेविश्रेयोऽर्थं देवश्रीमृगि-
सुब्रतदेवस्य देवकुलिका कारिता ॥ ४ ॥

(८५)

श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय महं० श्रीचंडप्रश्रीचंडप्रसाद श्रीसोम
महं० श्रीआसरामदस्तुद्वये महं० श्रीतेजपालेन स्वसुलालदेविश्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥

(९१)

संवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय महं० श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम श्रीआसरा-
न्धयसमुद्भूत महं० श्रीतेजपालेन स्वसुतश्रीलूणसीहसुतगउरदेविश्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ ३ ॥

(९४)

॥ ३० ॥ स्वस्ति श्रीविकमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुक्रे अद्येह श्रीअर्द्धदाचल-
तीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकास्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ०
चंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं०
श्रीमालदेवसंषपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्या वाईज्ञालहणदेव्याः
श्रेयोऽर्थं विहरमानतीर्थकरसीमंधरस्वामिपतिमालंकृता देवकुलिकेयं कारिता प्रतिष्ठिता श्रीनागेंद्र-
गच्छे श्रीविजयसेनद्विरिमिः ॥ ३ ॥

(९५)

स्वस्ति श्रीविकमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुक्रे अद्येह श्रीअर्द्धदाचलतीर्थे स्वयं-
कारितश्रीलूणसीहवसहिकास्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप्रसाद महं०
श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्रीमालदेव-
संषपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्यावाईमाउश्रेयोऽर्थं विहरमानतीर्थकरश्री-
शुगंधरस्वामिजिनपतिमालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥ ३ ॥

(९६)

स्वस्ति श्रीविकमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुक्रे अद्येह श्रीअर्द्धदाचलतीर्थे
स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकास्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप्रसाद महं०
श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्री-
मालदेवसंषपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजपालेन स्वभगिन्याः साउदेव्याः श्रेयोऽर्थं
विहरमानतीर्थकरश्रीबाहुजिनालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥ ३ ॥

(९७)

स्वस्ति श्रीविकमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुक्रे अद्येह श्रीअर्द्धदाचलतीर्थे स्वयं-
कारितश्रीलूणसीहवसहिकास्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप्रसाद महं०
श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्रीमाल-
देवसंषपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजपालेन स्वभगिन्या वाईषणदेवीश्रेयसे विहरमानतीर्थ-
करश्री[सु]बाहुजिनालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥

(९८)

॥ ३० ॥ स्वस्ति श्रीनृपविकमसंवत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुक्रे अद्येह श्रीअर्द्धदाचल-
महातीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकास्यश्रीनेमिनाथदेव(*)चैत्यजगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय

परिशिष्टम्]

श्रीअर्द्धदाचलोपरिविश्वतः प्रशस्तयः ।

७३

ठ० श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज ठ० श्रीकुमारदेव्याः सुत महं० श्रीमालदेव संघप(*)ति महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्या बाईसोहगायाः श्रेयोऽर्थं शाश्वतजिनऋषभदेवालंकृता देवकुलिका कारि[ता] ॥

(९९)

॥ द० ॥ स्वस्ति श्रीनृपविकमस(सं)वत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुक्रे अद्येह श्रीअर्द्धदाचल-महातीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकायां श्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां(*) ॥ श्रीग्राग्वाट-जावी(ती)य ठ० श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज ठ० श्रीकुमार-देव्योः सुत महं० श्रीमालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० (*) श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्या बाईबयजुकायाः श्रेयोऽर्थं श्रीवर्धमानाभिधशाश्वतजिनप्रतिमालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥ शुभं भवतु ॥ मंगलं महात्रीः ॥

(१०२)

द० ॥ श्रीनृपविकमसंवत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ७ अद्येह श्रीअर्द्धदाचलमहातीर्थे स्वयं-कारितश्रीलूणसीहवसहिकास्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां महं० श्रीतेजःपालेन(*)मातुलसुत भामा राजयालभणितेन स्वमातुलस्य महं० श्रीपूनपालस्य तथा भार्या महं० श्रीपूनदेव्याश्व श्रेयोऽर्थं अस्यां देवकुलिकायां श्रीचंद्राननदेवप्रतिमा कारिता ॥

(१०३)

द० ॥ श्रीनृपविकमसंवत् १२९३ चैत्र वदि ७ श्रीअर्द्धदाचलमहातीर्थे प्राग्वाटज्ञातीय ठ० श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराजसुत(*) महं० श्रीमालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्याः पश्चलायाः श्रेयोऽर्थं श्रीवारिसेणदेवालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥

(११०)

संवत् १२९७ वर्षे वैशाख वदि १४ गुरौ प्राग्वाटज्ञातीय चंडप चंडप्रसाद महं० श्री.....
.....सा सुतायाः ठकुराजीसंतोषाकुक्षिसंभूताया महं० श्रीतेजःपालद्वितीयभार्या महं० श्रीसुहडादेव्याः श्रेयोऽर्थं एतत् त्रिगदेवकुलिकासत्तकं श्रीशांतिनाथविनं च कारितं ॥ ४ ॥

(१११)

संवत् १२९७ वैशाख सुदि १४ गुरौ प्राग्वाटज्ञातीय चंडप चंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये अ० १०

महं० श्रीआसराजाभुत महं० श्रीतेजःपालेन श्रीमत्यचनवास्तव्यमोदज्ञातीय ठ० सातहण सुव
ठ० आसासुताया ठकुराङीसंतोषाकुक्षिसंभूताया महं० श्रीतेजःपालद्वितीयभार्या महं० श्रीसुहडा-
देव्याः श्रेयो.....

(१३१)

- (प्रथमहस्ती) [महं० श्रीचंडप ।]
 - (द्वितीयहस्ती) [महं० श्रीचंडप्रसाद ।]
 - (तृतीयहस्ती) महं० श्रीसोम ।
 - (चतुर्थहस्ती) महं० श्रीआसराज ।
 - (पंचमहस्ती) [महं० श्रीलूणिग ।]
 - (षष्ठमहस्ती) [महं० श्रीमल्लदेव ।]
 - (सप्तमहस्ती) [महं० श्रीवस्तुपाल ।]
 - (अष्टमहस्ती) [महं० श्रीतेजःपाल ।]
 - (नवमहस्ती) [महं० श्रीजैत्रसिंह ।]
 - (दशमहस्ती) [महं० श्रीलाक्षण्यसिंह ।]
-

(१ हस्तिष्ठभागे)	{	१ आचार्यश्रीउदयसेन । २ आचार्यश्रीविजयसेन ।
		३ महं० श्रीचंडप । ४ महं० श्रीचापलदेवी ।
(२ „ „)		१ महं० श्रीचंडप्रसाद । २ महं० श्रीवामलदेवी ।
(३ „ „)		१ महं० श्रीसोम । २ महं० श्रीसीतादेवी ।
(४ „ „)		१ महं० श्रीआसराज । २ महं० श्रीकुमारदेवी ।
(५ „ „)		१ महं० श्रीलूणिगदेव । २ महं० श्रीलूणादेवी ।
(६ „ „)		१ महं० श्रीमालदेव { २ महं० श्रीलीलादेवी । { ३ महं० श्रीप्रतापदेवी ।
(७ „ „)		१ महं० श्रीवस्तुपाल { २ महं० श्रीलितादेवी । { ३ महं० श्रीवेजलदेवी ।
(८ „ „)		१ महं० श्रीतेजःपाल । महं० श्रीभर्तुपमदेवी ।
(९ „ „)		१ महं० श्रीजयतर्सिंह । महं० श्रीजयतलदेवी ।

(१० " ")

$\left\{ \begin{array}{l} १ \text{ महं० श्रीलावण्यसिंह} \\ २ \text{ महं० श्रीरूपादेवी} \end{array} \right.$	$\left\{ \begin{array}{l} १ \text{ महं० श्रीसुहडसीह} \\ २ \text{ महं० श्रीसुहडादेवी} \\ ३ \text{ महं० श्री सलस्तणदेवी} \end{array} \right.$
---	---

(२४२)

सं० १२७८ वर्षे फाल्गुण वदि ११ गुरौ श्रीमत्पत्तनवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय ठ० श्री-चंडेश्वारनुज ठ० मुमाकीयानुज(?) ठ० श्रीआसराजतनुज महं० श्रीमालदेवश्रेयसे सहोदर महं० श्रीवस्तुपालेन श्रीमल्लिनाथदेवततकं कारितमिदमिति । मंगलं महाश्रीः ॥ शुभं भवतु ॥



(३)

श्रीतारणदुर्गस्थः शिलालेखः ।

(५४३)

द० ॥ स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८५ वर्षे फाल्गुण शुदि २ रवौ । श्रीमदण्डिलपुरवास्तव्य प्राग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचंडपात्मज ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआश्वाराजनन्दनेन ठ० कु(*)मारदेवीकुक्षिसंभूतेन ठ० श्रीलूणिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजेन महं० श्रीतेजःपालाग्रजन्मना महामात्यश्रीवस्तुपालेन आत्मनः पुण्याभिवृद्धये इह श्रीतारंगकपर्वते श्रीअजितस्वाभिदेवचैत्ये श्रीआदिनाथदेवजिनविवालंकृतं सत्तकमिदं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री-नागेन्द्रगच्छे भृत्याक्षरश्रीविजयसेनसूरिभिः ॥



(४)

श्रीशत्रुंजयपद्मा(पाज)शिलालेखः ।



(१) [श्रीमदण्डिलपत्तन] वास्तव्य प्राग्वाटान्वय-

(२) [प्रसूत ठ० श्रीचंडतनुज] ठ० श्रीचंडप्रसादां-

(३) [गज ठ० श्रीसोमपुत्र] ठ० श्रीआश्वाराजन-

- (४) [दनेन ठ० श्रीलूणिग ठ०] श्रीमालदेव संघप-
 (५) [ति महं० श्रीवस्तुपालानु]ज महं० श्रीतेजःपाले-
 (६) [न श्रीश्वरुंजयतीये] संचारपाजा कारिता ॥
-

(५)

अणहिलपत्तनान्तर्गताः शिलालेखाः ।

(१)

॥ सं० १२८४ वर्षे ॥

विश्वानंदकरः सदा गुरुचिर्जीमूतलीलां धौ,
 सोमश्वारुपवित्रचित्रविकसहेवेशधर्मोन्नतिः ।
 चके मार्गणपाणिशुक्तिकुहरे यः स्वातिवृष्टिवै-
 मुक्तैर्मैक्तिकनिर्मलं शुचि यशो दिक्षामिनिमंडनम् ॥ १ ॥
 युक्तं सोमसचिवः कुदेदुशुभैर्गै-
 रिद्धः सिद्धनृपं विमुच्य सुकृती चके न कंचिद्विभुम् ।
 रंगद्वयं गमदप्रदच्छदमदः श्रीसद्य पदं किमु,
 सोलासाय विहाय भास्करमहस्तेजोन्तरं वाञ्छति ॥ २ ॥
 पर्यणैषीदसौ सीतामविश्वामित्रसंगतः ।
 असूत्रितमहाधर्मलाघवो राघवोऽपरः ॥ ३ ॥

(२)

सं० १२८४ वर्षे श्रीमत्पत्तनवा*स्तव्य प्राग्वाट ठ० श्रीचंडप्रसाद सुत ठ० श्रीसोमः ॥

(३)

सं० १२८४ वर्षे श्रीमत्पत्तनवा*नवास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्रीपूनसीह सुत ठ० आलह*गदेवी
 कुक्षिभूः ठ० पेथडः ॥

(४)

सं० १३५२ वर्षे कार्तिक सु० ११ गुरु सं० पेथड सुत सं महाकेळ परचरहसमेत
 शुरति करावित ॥

(६)

अर्बुदाचलगतौ अवशिष्टौ शिलालेखौ

(१-२५६)

द० भ स० १२८७ वर्षे चैत्र वदि ३ शुक्रे मह० श्रीवस्तुपाल मह० श्रीतेजःपालः ॥
य [:] पूर्वजपुण्याय अस्मिन्नर्बुद्धिरौ श्री

(२-२६०)

नृपविक्रमसंवत् १२८७ वर्षे फाल्गुण सु(व)दि ३ सोमे(रवौ) अबेह श्रीअर्बुदाचले श्री-
मदण्हिलपुरवास्त० प्राम्बाटज्ञातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद मह० श्रीसोमान्वये मह० श्री-
आसराखुत मह० मालदेव मह० श्रीवस्तुपालयोरनुज आत् मह० श्रीतेजःपालेन स्वकीयभार्या
मह० श्रीअनुपमदेवीकुक्षिसंभूत सुत मह० श्रीलूणसीहपुण्यार्थं अस्यां श्रीलूणवसहिकायां श्रीनेत्रि-
नाथमहातीर्थं कारितं ॥ ४ ॥ ४ ॥

(श्रीजयंतविजयजीसंगृहीत श्रीअर्बुद-प्राचीन-जैन-लेखसंदोह)

(७)

स्तम्भतीर्थीय-श्रीआदीश्वरमन्दिरगतः शिलालेखः

(१) ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥

धीराः सत्त्वमुद्दान्ति यज्ञिसुवने..... नेति श्रुतं,

साहित्योपनिषद् [निः] (२)षण्णमनसो यत्प्रातिभं मन्वते ।

सार्वज्ञं च यदामनंति मुनयस्तत्किञ्चिदत्यद्गुतं,

ज्योतिर्थोतितविद् (३)ष्टपं वितनुतां भुक्ति च भुक्ति च वः ॥ १ ॥

श्रीमद्भुगुर्जारचक्रवर्तिनगरप्राप्तप्रतिष्ठोऽजनि,

प्राम्बाटाइयर (४)स्यवंशविलसन्मुक्तामणिर्शङ्खः ।

यः संप्राप्य समुद्रातां किल दधौ राजप्रसादोल्लस-

दिक्कुलंकर्ष (५)कीर्तिशुभ्रलहरिः श्रीमंतमंतर्जिनं ॥ २ ॥

अजनि रजनिजानिज्ञोत्तिरुद्योतिकीर्तिस्त्रिजगति तनुज (६)न्मा तस्य चंडप्रसादः ।

नस्यमणिसत्त्वशः [झः सुंद] रः पाणिपदः, कमङ्गत न कृतार्थं यस्य कल्पद्रुकरूपः (७) ॥ ३ ॥

पत्नी तस्याजायतास्यायताक्षी, सर्वेव श्रीः [पुण्य] पात्रं जयश्चीः [।]

अबे तास्यामणिः सूरसः, पुत्रः श्री (८)पात्र सोमनामा द्वितीयः ॥ ४ ॥

निर्माण्याऽदिजिनेद्रविंबमसमं शोषन्नयोविशति-
 श्रीजैनप्रतिमाविराजि(१)समसावन्यचितुं वेशमनि [।]
 पूज्यश्रीहरिभद्रस्त्रिसुगुरोः [पार्थात् प्र] तिष्ठाप्य च,
 स्वस्याऽत्तियकुलस्य चा [क्ष](१०) यमगं श्रेयोनिधानं व्यधात् ॥ ५ ॥
 असावाशाराजं तनुजमपरं सोपसचिवः,
 प्रियायां सीतायां शुचिच(११)रितवत्यामजनमत्
 [क्षोभि.....] भिर्जगति विशदे क्षीरजलधौ,
 निवासैकप्रीतिमुदमभजदि(१२)दुः प्रतिपदं ॥ ६ ॥
 श्रीरैवते निर्मितसप्तयात्रः, [केनोपमानस्त्वह] सोऽश्वराजः ।
 कलंकशंकामुपमान(१३)मेव, पुण्यात्यहो यस्य यशःशशांके
 अनुजोऽस्यापि सुमनुजस्त्रिमूवनपालस्तथा स्वसा केली ।
 (१४)आशाराजस्याजनि, जाया च कुमारदेवीति ॥ ८ ॥
 तस्याभूत्तनयाख्या(यः) प्रथमकः श्रीमल्लदेवोऽपर-
 श्वं(१५)चचांडमरीचिमंडलमहा: श्रीवस्तुपालस्ततः ।
 तेजःपाल इति प्रसिद्धमहिमा विश्वेऽत्र तुर्यः स्फुर-
 चा(१६)तुर्यः समजायतायतमतिः पुत्रोऽश्वराजादसौ
 श्रीमल्लदेवघौत्रो, लील्लसुतपुण्यसिंहतनुज(१७)न्मा ।
 आलहणदेव्या जातः, पृथक्कीसिंहास्त्रयाऽस्ति विस्त्यातः ॥ १० ॥
 श्रीवस्तुपालसचिवस्य गेहिनी देहिनीव गृ(१८)हलक्ष्मीः ।
 विशदतरचित्तवृत्तिः, श्रीलितादेविसंज्ञाऽस्ति
 शीतांशुप्रतिवीरपीवरयशा विश्वेऽत्र (१९)पुत्रस्तयो-
 विस्त्यातः प्रसरद्गुणो विज[यते श्रीजैत्रसिं]हः कृती ।
 लक्ष्मीर्यत्करपंकजप्रणयिनी हीनाश्रयोत्थेन सा,
 (२०)प्रायश्चित्तमिवाचरत्यहरहः स्नानेन दानांभसा ॥ १२ ॥
 अनुपमदेव्यां पत्न्यां, श्रीतेजःपालसचिवतिलक्ष्य [।]
 (२१)लावण्यसिंहनामा, धाम्नो धामाऽयमात्मजो जज्ञे
 नाभूवन् कति नाम सति कति ते नो वा भविष्यन्ति के [।]
 वे(२२)तुं क्षापि न क्षोऽपि संघपुरुषः श्रीवस्तुपालोपमः ।
 पुण्याच्च प्रहरन्नहर्निशमहो सर्वाभिसारोद्धरो,
 येनायं वि(२३)जितः कलिर्विदधता तीर्थेशयात्रोत्सवं ॥ १४ ॥

लक्ष्मीं धर्मांगयोगेन, स्थेयसीं तेन तन्वता [।]

पौषधालयमा.....(२४)निर्ममेन विनिर्ममे ॥ १५ ॥

श्रीवामद्वार्मनीदगच्छतरणिर्जहे महेंद्रप्रभोः, पहे पूर्वमपूर्ववाच्यनि(२५)विः श्रीशांतिसुरिर्गुरुः [।]
आनंदामरचंद्रसुरियुगलं तस्मादभूतपदे, पूज्यश्रीहरिभद्रसुरिगुरोऽभूवन् भु(२६)वो भूषणं ॥ १६ ॥

तत्पदे विजयसेनसूरयस्ते जयंति भुवनैकभूषणं [।]

ये तपोज्वलनभूविभूतिभिस्तेजयं(२७) ति निजकीर्तिदर्पणं ॥ १७ ॥

स्वकुलगुरु...., पौषधशालामिमाममात्येदः । पित्रोः पवित्रहृदयः, पुण्यार्थ(२८) कल्पयामास ॥ १८ ॥
वारदेवतावदनवारिजमित्रसामद्वैराज्यदानकलितोरुद्यशःपताकां [।]

चक्रे गुरोर्विज(२९)यसेनसुनीश्वरस्य, शिष्यः प्रशस्तिभूदयप्रभमस्त्रिरेनां ॥ १९ ॥

सं० १२८१ वर्षे महं० श्रीवस्तुपालेन कारितपौषध(३०)शालाख्यधर्मस्थानेऽस्मिन् श्रेष्ठि
राजदेवसुत श्रें० मयधर । भां० सोभा उ भां० धारा । व्यव० वेला उ वीकल । श्रें० पूना
(३१)सुत वीजा वेडी० उदेयपाल उ आसपाल भां० आलहण उ गुणपाल एतैर्गोष्ठिकत्वमंगीकृतं ।
एभिर्गोष्ठिकैरस्य धर्मस्थानस्य(३२).....स्तंभतीर्थेऽत्र कायस्थवंशे वाज.....लिखि.
मिह च ठ० सू०.....[जैत्र] सिंह भुव.....कुमरसिंहेनोत्कीर्णा ॥

(एनाल्स ऑफ धी भाण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीट्युट पूना
वॉ० ९ पृष्ठ १७७ लेख १)

(c)

गणेशरग्रामगतः शिलालेखः

(१) ॥ ९० ॥ स्वस्ति ॥ संवत् १२९१ वर्षे वैशाख शुदि १४ गुरु श्रीमदणहिलपुरवास्तव्य
प्रागवाट व० (ठ०) श्रीचंडपाल्मज [चं](२)डप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशाराज-
तनुजन्मा ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसमुद्भूत ठ० श्रीलूणि[ग](३) महं० श्रीमालदेव [कुमा]रानुज
महं० श्रीतेजःपालाश्वज महामात्यश्रीवस्तुपालाल्मज महं० श्रीजयतर्सिंहे [स्तंभ](४)तीर्थमुद्राव्यापारं
सं० ७९ वर्षपूर्वं व्यापृष्टति महामात्यश्रीवस्तुपाल महं० श्रीतेजःपालाभ्यां समस्तमहातीर्थेषु ।
(५)तथा अ[न्य]समस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि जीर्णोद्धाराश्व कारिताः ॥ तथा
सचिवेश्वरश्रीवस्तु(६)पालेन आत्मनः पुण्यार्थमिह गाणउलिप्रामे प्रपा श्रीगाणेश्वरदेवमंडपः पुरत-
स्तोरणं तः प्रतोली द्वारा.....(७)त प्राकारश्व कारितः ॥ ० ॥

गांभीर्ये जलधिर्विर्वितरणे पूषा प्रतापे स्मरः, सौदर्ये पुरुषवते रघुपतिर्वाच्यतिर्वाच्य(८)या [।]
लोकेऽस्मिन्नपमानतामुपगताः स्मर्वेषु नः संपति, प्राप्ता नेत्युपमेयतां सदधिकश्रीवस्तुपाले सति ॥ १ ॥

.....(२) विदर्घमतयस्तुत्यौ कौटिल्य-वस्तुपालौ ।

.....कुर्वते न, कस्मात् कूपारयोः समतां ॥ २ ॥

बदनं वस्तुपालस्य,(१०) कमलं को न मन्यते । यत्सूर्यालोकने स्मे[र], भवति प्रतिबासरं ॥ ३ ॥

श्रीवस्तुपाल संप्रति, परमं हतिकर्मक (?) [१]

.....वा(११) भवता निर्वृतिरधिजनेन संषटिता ॥ ४ ॥

तस्मै स्वस्ति चिरं चुलुक्यतिलकामात्याय.....

.....(१२).....कर्मनिर्मलमतिः सौवस्तिकः शंसति ।

राधेयेन विना विना च शिविना य.....(१३).....स्मयं

.....स्व.....गच्छन्ति संतः सदा ॥ ५ ॥

महामात्वश्रीवस्तुपालस्य प्रशस्तिरि[य].....

(एनाल्स ऑफ थी भाण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना
वॉ० ९ पृष्ठ १८० लेख २)

(९)

नगरग्रामगतः शिलालेखः

(१) ॥ १० ॥ संवत् १२९२ वर्षे आषाढ शुदि ७ रवौ श्रीनारदमृनिविनिवेशिते श्रीनगरवरमहास्थाने सं० ९०३ वर्षे अ(२)तिवर्षकालवशादतिपुराणतया च आकस्मिकश्रीजयादित्यदेवीयमहाप्रासादपतनविनष्टायां श्रीरत्नादेवीमूर्तौ(३) पश्चात् श्रीमत्पत्तनवास्तव्यप्राग्वाट ठ० श्रीचंडपात्मज ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशाराजनंद(४)नेन ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतेन महामात्यश्रीवस्तुपालेन स्वभावायाः ठ० कान्हडपुञ्याः ठ० राणुकुक्षिभवा(५)या महं० श्रीललिताद्वेष्याः पुण्यार्थमिहैव श्रीजयादित्यदेवपत्न्याः श्रीरत्नादेवीमूर्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥ ७ ॥

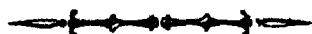
(एनाल्स ऑफ थी भाण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना
वॉ० ९ पृष्ठ १८२ लेख ३)

(६)

वस्तुपालतीर्थयात्रालेखः

सं० १२४९ वर्षे संघपति स्वपितृ ठ० श्रीआश्चाराजेन समं महां० श्रीवस्तुपालेन श्रीविष्णुलाद्वौ ईवते च यात्रा कृता । सं० ५० वर्षे तेनैव समं स्थानद्वये यात्रा कृता । सं० ७७ वर्षे स्वयं संघपतिना भूत्वा स(स्व)परिवारयुतं ९० वर्षे सं० ९१ वर्षे सं० ९२ वर्षे सं० ९३ वर्षे महाविस्तरेण स्थानद्वये यात्रा कृता । श्रीश्वत्रुंजये अमून्येव पञ्च वर्षाणि तेन सहितेन सं० ८३ वर्षे सं० ८४ सं० ८५ सं० ८६ सं० ८७ सं० ८८ सप्त यात्राः सपरिवारेण तेन स्तसे श्रीनेमिनाथाम्बिका-प्रसादाद्या भूता भविष्यति ॥

(वॉट्सन मुक्तिवाच-राजकोट)



दशमं परिशिष्टम्

आचार्य श्रीउदयप्रभविरचिताया उपदेशमालाकर्णिकारूप-
विशेषवृत्तेः आनन्दगते ।

मङ्गल-प्रशस्ती ।

आदि:—

अहस्तनोतु सुवनाद्वृतकल्पवृक्षः, श्रेयःफलं निविडबोधसुमपसूतम् ।

यस्याह्मिमूलमभितः पतितप्रसूनप्रायाः सुर-सुर-नराधिपसम्पदोऽपि || १ ॥

देवः स वः शतमखप्रमुखामरौधक्षुसप्रथः प्रथमतीर्थपतिः पुनातु ।

मुक्तिक्रमो न || २ ॥

चिन्तातीतफलभदः स दिशतु श्रेयो युगादिप्रभुर्भुजुर्जन्मनि यस्य कल्पतरवः सर्वेऽप्युपादानताम् ।

नेत्थं चेत् कथमन्यथा वसुमतीमस्मिन्नलङ्घवृत्ति, त्रैलोक्यैकगुरौ न गोचरमभी जग्मुर्जगच्छुषाम् ? || ३ ॥

तु ब्रह्मभीममसितीत्रतरेण कर्मव्रातं ब्रतेन विनिपात्य भवाटवीषु ।

मुक्तावलिश्रियमशिश्रियदात्म || ४ ॥

लीळासञ्चरणं च नूपुररणस्कारश्रियं च स्वयं, बोद्धुं साधु निषेव्यते खगकुलोत्तरेन हंसेन या ।

किञ्चलक्ग्रसनप्रसक्तमनसस्तस्यैव हेतोः करे, कुर्वाणा कमलं सतां भवतु सा ब्राह्मी परब्रह्मणे || ५ ॥

जीयाद् विजयसेनस्य, प्रभोः प्रातिभर्दर्पणः । प्रनिबिम्बितमात्मानं, यत्र पश्यति भारती ॥ ६ ॥

संघस्याद्वृतपुण्यपर्यविपणौ सा मा |

..... पदेशपद्धतिरसौ सा प्रातराशायते ॥ ७ ॥

गाथास्ताः सङ्गु धर्मदासगणिनः सज्जातरूपश्रियः, किञ्चैप स्फुरदर्थरत्ननिकरः सिद्धर्धिणैवार्पितः ।

तेनैतामतिवृचसंस्कृतमयीमातन्वतः कर्णिकां, वृत्ति मेऽत्र सुवर्णिकारपदवीसीमाश्रमश्चिन्त्यताम् ॥ ८ ॥

यतः—

..... यथाविचित्क्रमकथटनादुज्जूभते यशांसि तु शिश्पिनः ॥ ९ ॥

अन्तगता प्रशस्तिः—

कमठघनभृताम्भोराशिसंवासिसर्पाधिपतिकलितमूर्तिर्नीलनालीककान्तिः ।

सितरुचि-रविराजलोचनः केवलश्रीपरिचयचतुरात्मा श्रीजिनो वः श्रियेऽस्तु ॥ १ ॥

१ पदमिदं सुकृतकीर्तिकलोलिन्यां प्रथमपदरूपेणापि वर्तते ॥ २ पदमिदं सुकृतकीर्तिकलोलिन्यां सप्तमपद-
तत्वादपि वर्तते ॥ ३ पदमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्ये प्रथमसर्गे चतुर्दशपदश्वेनापि वर्तते ॥

श्रीवर्धमानः शमिनां मनांसि, जिनो धिनोतु त्रियदी यदीया ।
व्याप्रोति विधं बलिधात् (ति) कर्मजयोदिता विश्वमनश्वरश्रीः ॥ २ ॥

श्रीवीरश्वासनमहामहिमागरिषः, श्रीभद्रबाहुविहिताचरणप्रतिष्ठः ।
काले कलावपि विलुप्तघनाघसङ्कः, श्रीमानयं विजयते यतिमूलसङ्कः ॥ ३ ॥

श्रीनारेन्द्रकुले मुनीन्द्रसवितुः श्रीमन्महेन्द्रप्रभोः, पट्टे पारगतागमोपनिषदां पारङ्गमआमणीः ।
देवः संयमदैवतं निरवधिलैविद्यवागीश्वरः, सञ्ज्ञे कलिकल्मपैरकलुषः श्रीशान्तिसूर्यिरुः ॥ ४ ॥

शक्तिः काऽपि न कापिलस्य न नये नैयायिको नायकश्वार्वाकः परिपाकमुज्जितमतिर्बैदूष्य नौदृत्यमाक् ।
स्याद्वैशिकशेषुषी च विमुखी वादाय वेदान्तिके, दान्तिः केवलमस्य वक्तुरथते सीमां न मीमांसकः ॥ ५ ॥

तत्पट्टे प्रथमः शमिप्रभुरभूदानन्दसूरिः परः, सञ्ज्ञेऽभरचन्द्रसूरिरस्तिलानुचानचूडामणिः ।
शश्वद् यस्य सरस्वतीप्रसरणे सिद्धेशितुः संसदि, प्राज्ञेश्वेतसि वेतसीतस्त्रसावाचार्वकं कार्यते ॥ ६ ॥

सिद्धान्तोपनिषद्विष्णुष्णहृदयो धीजन्मभूस्तत्पदे,
पूज्यः श्रीहरिभद्रसूरिरभवच्चारित्रिणामग्रणीः ।

आनन्दा शून्यमनाश्रयैरतिचिराद् यस्मिन्नवस्थानतः,
सन्तुष्टैः कलिकालगौतम इति स्वातिर्वितेने गुणैः ॥ ७ ॥

मुरुः श्रीहरिभद्रोऽयं, लेभेऽधिकवयःस्थितिम् । मोहदोहाय चारित्रनृपनासीरवीरताम् ॥ ८ ॥

तत्पटे विजयसेनसूरयः, पूरयन्ति छतिनां मनोरथान् ।
तद्वावी वृष्मसूत नूतना, कामधेनुरिव सर्वकामदम् ॥ ९ ॥

गर्वात् पूर्वमनादैरवहितैः पश्चात् ततो विस्मितैः, प्रस्विनैरनुविस्मृतात्मभिरथो वादेऽनुवादे क्षणात् ।
भाग्यैर्मनिमनीषिणां परिणता पुंस्त्वेन वागेष इत्याक्षिसैरथ सेव्यतेऽथ सहसा यः सादरं वादिभिः ॥ १० ॥

यस्योपदेशममृतोपमितं निपीय, श्रीवस्तुपालसविवेश्वर-तेजपालौ ।

सङ्काधिपत्यमसमं जिनतीर्थतेजःसंवर्धनाज्जितशतकतु चक्रतुस्तौ ॥ ११ ॥

श्रीमद्विजयसेनस्य, सौमनस्यं नमस्यत । यद्वासिता धृताः कैर्न, गुणाः शिष्याश्च मूर्धसु ? ॥ १२ ॥

शिष्यस्तस्य च लक्षणक्षणचणः साहित्यसौहित्यवा-
नुदृतक्वितर्ककर्कशमनाः सिद्धान्तशुद्धातुरः ॥ १३ ॥

श्रीवर्धमभ्युदये कविः प्रविलसहुर्वादिगोत्रे पवि-
स्तामेतामुदयप्रभास्यगणभूद् वृत्ति व्यधात् कर्णिकाम् ॥ १४ ॥

तस्माऽऽज्ञया विजयसेनमुनीश्वरस्य, शिष्येण सेयमुदयप्रभदेवनामा ।
योग्या विशेषविदुपामुपदेशमालाहृतिः कथाग्रथनतोऽभिनवा वितेने ॥ १५ ॥

प्रथमादर्शे प्रथमानमानसो देवबोधविबुध इमाम् ।
स्थपतिरिव स्यापयिता, गुरुषु नतोऽतनुत साहाय्यम् ॥ १६ ॥

१ पद्मविदं अमीभ्युदयमहाकाव्यप्रथमसर्गे नवमपद्यतयाऽपि वर्तते ॥ २ पद्मस्यास्य पूर्वार्थं नरेन्द्रप्रभीय-
वस्तुपालप्रशस्तिगत १०१ पद्मपूर्वार्थसमम् ॥

चान्दे कुले कलशतः किल सूरिदेवानन्दाग्रशिष्यकनकग्रभस्त्रिनामः ।

प्रथुम्नस्त्रिरहितः कवितासमुद्भुष्टिवयोऽम्बुदशोधयदेष वृत्तिम् ॥ १६ ॥

उत्सेकितोत्सूत्रनिरूपणादैर्याऽसातना स्यात् तनुकाऽपि काचित् ।

मिथ्याऽस्तु मे दुष्कृतपत्र साक्षी, श्रीसङ्खभट्टारक एव तीर्थम् ॥ १७ ॥

एकैकेन विमोहशक्यचरणांश्चित्त्वा कषायानिमान्,

दीपे भानु-कृशानुधामनि मनश्चैकेन हुत्वाऽस्तमनः ।

मन्त्रस्याष्टशैरितीह जपितैस्तैः पञ्चभिः सिद्धये,

गाथाभिरुसुभिक्ता विजयते जप्योपदेशावलिः ॥ १८ ॥

कल्पाविष्करणादितो विवरणाद् विज्ञाय विज्ञात्मनामाभ्यादुपदेशपद्मतिमिमामासेवमानो मुदा ।

लोकाभ्योपरिवर्तिनीमभिमुखीं कुर्वीत वीतान्यवीवृत्तिर्वृत्तिदेवतां शिवपुरीसाम्राज्यकामः कृती ॥ १९ ॥

तत्त्वोदित्स्वरससभूमिकमहाप्रासादराजाङ्गणं, यावद् भाति जगद्गुरोर्भगवतः तीर्थेशितुः शासनम् ।

तावच्छ्रावक-साधुधर्मविजयस्तम्भद्वयालभ्विनी, वृत्तिर्वन्दनमालिका विजयतां तत्रोपदेशसजः ॥ २० ॥

सेयं पुरे ध्वलके नृपवीरवीरमन्त्रीशुपुण्यवसतौ वसतौ वसद्धिः ।

वर्षे ग्रह-ग्रह-रवौ कृतमैर्कर्संदृशैः, स्तोकैर्विशेषविवृतिर्विहिताऽद्भुतश्रीः ॥ २१ ॥

इत्याचार्थश्रीउदयप्रभदेवसङ्खटितायामुपदेशमालायाः कर्णिकायां विशेषवृत्तौ तृतीयः परिवेशः सम्पूर्णः ॥ ग्रं० ३७१४ । एतावता च सम्पूर्णा उपदेशमालायाः कर्णिकास्त्वा विशेषवृत्तिरिति ।

ग्रंथ १२२७४ । ४ । ४ ॥

एकादशं परिणिष्टम्

शुर्जेरेश्वरपुरोहितश्रीसामेश्वरदेवविरचितस्य सुरथोत्सवमहाकाव्यस्य
महामात्यश्रीवस्तुपालवंशवर्णनादिप्रतिष्ठदः
प्रशस्तिरूपः पञ्चदशः सर्गः ।

अस्ति प्रशस्ताचरणप्रधानं, स्थानं द्विजानां नेगराभिधानम् ।
कर्तुं न शक्नोति कदाऽपि यस्य, त्रेतापवित्रस्य कलिः कलङ्कम् || १ ॥
सतीर्थस्य सुंराश्रितेन जगता यस्योपमा स्यात् कथं,
स्वाध्यायैकनिर्धेर्गतश्रुतिवृत्तेनोर्वीतलेनापि वा ? ।

यत्तौषेषु विशुद्धिवर्जितवपुबलोऽपि नाऽलोक्यते,
वन्दे श्रीनगरं तदेतदस्थिलस्थानातिरिक्तोदयम् || २ ॥

इतनयनसुसैर्मसामिघूमैः, श्रुतिकटुभिर्बद्धवृन्दवेदपाठैः ।
कलिरकलितसम्मदः प्रदर्शे, न सद्गुणं पदं विदुषां गृहेषु यत्र
चश्चत्पञ्चमसामिभग्नतमसि स्याने त्रिनेत्रानल- || ३ ॥

ज्वालाप्रज्वलितप्रसूनधनुषा देवेन दत्तोदये ।
श्रीमतां च पवित्रतां च परमामालोकयन्तः सुराः,
स्ववर्त्सेऽप्यरत्सा रँसामरजनव्याजेन भेजुः स्थितिम् || ४ ॥

तस्मै संयमिनाभिनौय मुनये नित्यं नमस्कुर्महे,
यन्माहात्म्यमसद्यमाह स मुहुर्मुखान्मनाः कौशिकः ।

आविर्मूतमभूतपूर्वचरितश्रेष्ठाद् वशिष्ठात् ततः,
सत्कर्मोद्धरमध्वरस्थितिविदां स्थानेऽत्र गोत्रं महत् || ५ ॥

येषामशेषाधिष्ठितिः प्रसन्नः, सत्तद्वपाणिः प(फ)णिकङ्कणेन ।
त एव सम्भूतिमिहाश्चुवन्ति, [कुले] गुलेचा(वा)भिधया प्रसिद्धे || ६ ॥

श्रीसोलशर्मा विमले कुलेऽत्र, जन्म द्विजन्मप्रवरः प्रपेदे ।
यः स्वर्गिणः सोमरसेन यागे, पितृश्च पिण्डैरपृणत् प्रयागे || ७ ॥

१ आनन्दपुराय ॥ २ देवाः, मदिरा च ॥ ३ सर्पाः, वेदभ्रष्टाख ॥ ४ भूदेवाः ॥ ५ स्वामिने,
सूर्य च ॥ ६ उद्धकः, विशामित्राख ॥ ७ यज्ञविद्याविदलम् ॥ ८ ईश्वरः ॥ ९ 'प्लुव' च ॥ १० 'गुलेचा'
इति स्वामाचारेण गोत्रस्यावठङ्कनाम प्रतीयते, परं च डॉक्टर-रामकृष्ण-गोपाल-भाण्डारकरमहाशयैः
१८८३-८४ वर्षाय 'रिपोर्ट' पुस्तके 'गुलेचा' इत्येव पाठ आश्रितः ॥

सोलः सलीलमवनीभवतामसौ वः, सौवस्तिकोऽस्तिवति वरं स्परता स्मरते ।
 श्रीगुर्जरक्षितिभुजा किल मूलराज-देवेन दूरमुपरुच्य पुरो दधे यः ॥ ८ ॥
 यथा प्रतिष्ठां महतीं बसिष्टस्तिर्मांशुवंशे भगवामवाप ।
 निजेन सौवस्तिकतागुणेन, चौलुक्यभूपालकुले तथाऽसौ ॥ ९ ॥
 विधिवद् वाजपेयं यः, कलिकालैऽप्यकल्पयन् । कियतीं वा जपेयं तच्चरिताहुतसंहिताम् ? ॥ १० ॥
 श्रावदेवदेवी च श(कृ)तकतुश्च, दत्तात्रदानश्च जितेन्द्रियश्च ।
 तिरोहिते तत्र पुरोहितेन्द्रे, तदञ्जन्माऽजनि लैलुशर्मा ॥ ११ ॥
 यः करोति स्म चाँमुण्डराजास्यं नृपमाशिर्णा । हेतिप्रतीपसम्पन्नं, हविषा च हविर्भुजम् ॥ १२ ॥
 श्रीमुञ्जनामा तनुजस्तदीयः, स्वयं स्वयम्भूरिव भूतलेऽभूत् ।
 बाणाप्यलाभाय तथाहि सद्विरभाजि मौञ्जी रशनेव वृत्तिः ॥ १३ ॥
 सद्वंशजातेन गुणान्वितेन, शरासनेनेव पुरोहितेन ।
 एतेन मेने भुवने न किञ्चित्प्रदुर्लभं दुर्लभराजदेवः ॥ १४ ॥
 सन्तापशान्तिं जगतोऽपि सोमस्तन्नन्दनश्चन्दनवच्छकार ।
 पीयूषहारी हरिणाङ्गितश्च, सत्यां बभाजे द्विजराजतां यः ॥ १५ ॥
 यस्याशीः प्रतिपादितोदययुजा श्रीभीमभूमीभुजा,
 क्षीरक्षालितशालितन्दु(पट्टु)लसितं साक्षात्कृतं तद्वशः ।
 येनाशाकमणक्षमेण त इमे भूर्तिप्रमेदाः प्रभौ-
 भेस्मोद्भूलनमन्तरेण ध्वलाः सर्वेऽपि निर्वर्तिताः ॥ १६ ॥
 भित्वा भानुं तत्र ताते प्रयाते, पुत्रः श्रीमार्त्तिमशर्मा वभूव ।
 कृत्वा सम्यक् संसं संस्थाः कतूनां, कीता कम्बा येन संब्रादभिस्थ्या
 सदा यदाशीः परिपूर्णकर्णः, श्रीकर्णनामा नृपतिः प्रकाण्डम् ।
 वसुन्धरामण्डलमण्डवान्तं, वान्तारिनारीनयनाम्बु चक्रे ॥ १८ ॥

१ अस्य मूलराजपुरोहितस्य सोलस्य सत्तासमयो मूलराजराज्यसमय एव ॥ २ पुरोहितः ॥ ३ अब
 मूलराजभाराजः वि० सं० ११२-१०५३ वर्षेषु राज्यमकार्त्त, इति Indian Antiquary Vol.
 XI. P. 219 ॥ ४ अस्य चामुण्डराजपुरोहितस्य लैलुशर्मणः सत्तासमयामुण्डराजराज्यसमय एव ॥
 ५ चामुण्डराजराज्यम्—वि० सं० १०५३-१०६६ ॥ ६ वायुधम्, दीसित्थ ॥ ७ पौरुषम्, सन्तापश्च ॥
 ८ अस्य दुर्लभराजपुरोहितस्य श्रीमुञ्जनाम्नः सत्तासमयो दुर्लभराजराज्यसमय एव ॥ ९ मौञ्जी इतिरिति
 मुञ्जवहृतमानानां ब्राह्मण्यं भवतीत्यर्थः । एतेन भुजास्य सदाचारत्वसुके भवतीत्यर्थः । अथ च मौञ्जी भेदला
 धरमयी रथाना ब्राह्मणलाभाय सद्विर्बन्धते ॥ १० दुर्लभराजराज्यम्—वि० सं० १०६६-१०७८ ॥ ११
 अस्य श्रीमराजपुरोहितस्य सोमस्य जीवनसमयो श्रीमराजराज्यसमय एव ॥ १२ विष्णुजा, मृगेण च ॥
 १३ वस्त्रे च ॥ १४ बाह्यण, चन्द्रतं च ॥ १५ श्रीमराजराज्यम्—वि० सं० १०७८-११२० ॥
 १६ शृथिव्यादशोऽही ॥ १७ शिवस्य ॥ १८ अस्य श्रीकर्णराजपुरोहितस्याऽऽमर्दर्मणः स्थितिसमयः श्रीकर्ण-
 राजराज्यसमय एव ॥ १९ अमिष्टोमायाः ॥ २० वाजपेययाजीति ॥ २१ श्रीकर्णराजराज्यम्—वि० सं०
 ११३०-११५० ॥

दानानि तानि सदनानि च तानि शम्भोरम्भोजराजिहविराणि सरासि तानि ।
येनामुना मुनिजनामुकुला कृतानि, वित्तशुलुक्यकुलसम्भवमूपदत्तैः ॥ १९ ॥

भारतीशपुरोधसा मिजनृपक्षोणी विलोक्यास्विलां,
चौलुक्याकुलितां तदत्यकृते कृत्या किळोत्पादिता ।

मन्त्रैर्यस्य तपस्यतः प्रतिहता तत्रैव तं मान्त्रिकं,
सा संहत्य तदिलता तरुमिव क्षिप्रं प्रवाता कवित् ॥ २० ॥

तस्मात् कुमारः सुकुमारमूर्तिर्मूर्तिस्तपोराशिमिवोजगाम ।
स्वराजराज्योदयदामिनी वागुवास शैक्षेरिव यस्य बक्त्रे
बद्धः सिन्धुवसुन्धरापतिरतिप्रौढप्रतापोऽपि य-

शीतः स्फीतबलोऽपि भालवपतिः कारां च दारान्वितः ।
हसः सोऽपि सेषादलक्ष्मृपतिः पादानं शिक्षितः,

श्रीसिद्धक्षितिपेन सैष विमवः सर्वोऽपि यस्याऽशिषाम् ॥ २२ ॥

कृशोपशोभितैर्यग्नैस्तडागैश्च परःशतैः । हृष्टं पूर्तं च यश्चके, चक्रवर्तिपुरोहितः ॥ २३ ॥

ऋजुरोहितभृत्युरोहितत्वस्मृहयेव त्रिदिवं गतस्य तस्य ।
तनुमूर्मनुभूपतिप्रणीतस्मृतिसर्वस्वमवाप सर्वदेवः
मेष्वरेव्यधित साधु सपर्यामध्वरेषु जयति स्म सुरेशम् । ॥ २४ ॥

मानवानविदितापरयाच्चो, मानवानकृत चैष कृतार्थान्
अर्खिषामयनभीयुषि तत्र, क्षत्रसत्तमनमस्करणीये । ॥ २५ ॥

अध्यगामि विधिरामिगानामा, वैदिकस्तदनु तत्तनुजेन
सत्कर्मनिर्माणरतेरमुष्य, ब्रीडानिदानं द्वयमेतदासीत् ।
स्ववर्णनाकर्णनमुत्तमेभ्यः, संसारकारान्तरबस्थितिश्च ॥ २६ ॥

ज्येष्ठः अष्टतमः समस्तविदुषां श्रीसर्वदेवाह्यः,
श्रेयःसम्पदपास्तदुस्तरतमाः श्रीमान् कुमारोऽनुजः ।

मुखोऽथ द्विजकुञ्जरस्तदनुजो न्यायाजडेनाह्वङ्-
शत्वारस्तनयास्ततः समभवन् वेदा इव ब्रह्मणः ॥ २८ ॥

१ ग्रन्थक्षिपतिवशेषोर्कर्मणः पुरोहितेन स्वदेशभूमि गूर्जरराजश्रीसिद्धराजापरनामवेयज्यसिद्धेष्वेन
स्वामुखीकृता वीष्व तद्वार्यसमिक्षारेण कृत्योत्पादिता । सा च आमशर्मणः पुरोधसः शान्तिमन्त्रैः प्रतिषिद्धा
मती तमेव भावेष्वार्थीशपुरोहितं संहत्य तिरोहितेति श्रूयते ॥ २ शक्तिर्विस्त्रिषुत्रः ॥ ३ बोद्धत्वनामा ॥ ४ शशो-
दर्शनामा ॥ ५ जामलदेवः ॥ ६ श्रीसिद्धराजराज्यम् विं सं० ११५०-११९९ ॥ ७ जर्व, दर्भज ॥
८ शत्रसतिः म ९ विलोः ॥ १० अर्किर्णि गतवति ॥ ११ अमिहोत्रादिः ॥ १२ अस्य सिद्धराजपुरोहितस्य
सर्वेषांस्य श्रीमनसमयः सिद्धराजराज्यसमय एव ॥

कुमारपालस्य चुलुक्यभरुरक्षानि गङ्गासलिले निधाय ।

श्रीसर्वदेवेन भयाप्रयागविष्णुः प्रदानेन कृताः कृतार्थाः ॥ २९ ॥

स्थाने स्थाने तडागानि, शिवपूजा दिने दिने । विष्णु विष्णु च सत्कारः, क्षाधा यस्य गृहे गृहे ॥ ३० ॥

राहो गृहीतोष्णिंकरे कुमारः, कुमारपालस्य सुतेन राजा ।

कृतोपरोधोऽपि परं पुरोधाः, प्रत्यग्रहीत् तस्य न रलरक्षिम् ॥ ३१ ॥

यः शौचसंयमपदुः कटुकेश्वरास्त्व्यमाराध्य भूधरसुताधटिर्तार्देहम् ।

तां दारुणामपि रणाङ्गणजातधातव्रातव्यथामैजयपालनृपादपास्थत् ॥ ३२ ॥

विलोक्य दुष्कालबशेन लोकं, कङ्गालशेषं सविशेषद्वृकः ।

श्रीमूलराजं दलितारिराजमचीकृत् त् तर्कसोचनं यः ॥ ३३ ॥

दुष्टारिकोटिकदनोत्कटराष्ट्रकूट्येन शल्यैतरणाङ्गणकौड्येन ।

सर्वप्रधानपुरुषाधिपतिः प्रतापमल्लेन भूपतिमल्लिक्या कृतो यः ॥ ३४ ॥

सेनानीविदधे कुमार इति यः शङ्के चुलुक्येन्दुना,

जित्वा सोऽथ जवादवार्यतरसः प्रत्यर्थिपृथ्वीपतीन् ।

इष्टां तद्विषयद्विमाशिषमिव भ्रादात् पुरोधाः स्वयं,

तस्मै याज्यमहीमुजे निजचमूर्वीरक्षैरक्षैः ॥ ३५ ॥

धाराधीशो विन्द्यवर्भण्यवन्ध्यक्रोधाधमातेऽप्याजिसुत्सूज्य याते ।

गोगस्थानं परनं तस्य भड्कत्वा, सौधस्थाने सानितो येन कूपः ॥ ३६ ॥

गृहीतं कुप्यता कुप्यं, मालवेश्वरदेशतः । दत्तं पुनर्गयाश्राद्धे, येनाकुप्यमकुप्यता

जित्वा म्लेच्छपतेर्बलं तदतुलं राज्ञी सर.सत्रिघ्नौ,

स्वःसिन्धोः सलिलैर्विधाय विधिवत् श्रीति पितॄणामपि ।

दानी मोक्षमनुक्षतक्षितिले कृत्वाऽब्दमब्दवजे,

राजार्थं रचयाश्वकार चतुरः स्वार्थं प्रजार्थं च यः ? ॥ ३८ ॥

यः कर्माणि च पद्मुणांश्च तनुते तद्भूर्भुवःस्वस्यं,

कीर्तिर्थस्य च यश्च निर्मलरुचिर्नो जातुचिन्मुखति ।

१ कुमारपालराज्यम् विं सं ११९९-१२३० ॥ २ अस्य कुमारपालपुरोहितस्य कुमारस्य सत्तासमयः कुमारपालराज्ये ॥ ३ अजयपालेन ॥ ४ सामन्तसिहमुद्दे हि श्रीअजयपालवेदः प्रहारपैत्र्या भूत्सुकोटिमायातः कुमारनाम्ना पुरोहितेन धीकटुकेश्वरमाराध्य पुनः स जीवितः ॥ ५ अजयपालराज्यम् विं सं १२३०-१२३३ ॥ ६ शूकः ऋद्यगतीक्षणप्रः शङ्कः ॥ ७ मूलराजराज्यम् विं सं १२३१-१२३५ ॥ ८ कुमारः श्रीअजयपालपुत्रभीमूलराजसक्षाद् दुष्काल्पीक्षितानां प्रजानां तद्वनी कर्त्तोवलं कारितवान् ॥ ९ निहतकौड्याधिपतिमल्लिकार्जुनेन ॥ १० वैरिदेशसमृद्धिम् ॥ ११ धर्माद्वैः, तद्वज्रेण्याधितैव ॥ १२ अयं विन्द्यवर्भं यशोधर्मणः पौत्रः ॥

शक्ताविष्कृतिरघ्वे च युधि च श्लाघ्योज्जिहीते यतः,

सूत्रं यस्य हृदि स्फुरत्यविरतं ब्राह्मं च राज्यस्य च ॥ ३९ ॥

अरुन्धतीव कान्ताऽस्य, पत्युराज्ञामरुन्धती । अभूदमिथया लक्ष्मीः, साक्षालक्ष्मीरिव क्षितौ ॥ ४० ॥

आदिमः प्रथममन्दिरं महादेवं इत्यमिथया तदङ्गम् ।

येन पाणिनिहितेन पङ्कजेनेवं तुष्यति परं सरस्वती ॥ ४१ ॥

सोमेश्वरदेवं इति, क्षितिदेवस्यास्य बन्धुरनुजन्मा ।

अजनि कनिष्ठस्तस्य, आता रुयातान्वयो विजयः ॥ ४२ ॥

तैर्लिभिः प्रथममध्यमोत्तमैः, स्वे पदे च पुरुषैर्वर्यवस्थितैः ।

शब्दशास्त्रमिव गोत्रमुच्चकैः, सक्रियं समजनिष्टं विष्टये ॥ ४३ ॥

सोमेश्वरदेवकवेरवेत्यं लोकम्पृणं गुणग्रामम् । हृरिहर-सुभटप्रभृतिभिरभितमेवं कविप्रवरैः ॥ ४४ ॥

श्रीसोमेश्वरदेवस्य, कवितुः सवितुश्च कौ । सतृणाम्यवहारस्य, निरासेऽपि रसप्रदा ॥ ४५ ॥

वाग्देवतावसन्तस्य, कवेः श्रीसोमशर्मणः । धुनोति विबुधान् सूक्तिः, साहित्याभ्योनिधेः सदा ॥ ४६ ॥

तत्र वक्त्रं शतपत्रं, सद्वर्णं सर्वशास्त्रसम्पूर्णम् । अवतु निजं पुस्तकमिव, सोमेश्वरदेववादेवी ॥ ४७ ॥

वसिष्ठानिष्ठायाः पदमिति जगत्यस्ति पठहः,

प्रकृष्टास्त्वेषामप्यजनिषत मुञ्जप्रभृतयः ।

कुले जातोऽप्येषां शतधृतिदुहित्रा पुनरयं,

स्वयं पुत्रीचक्रे नवकविगुणप्रीणितहृदा

काव्येन नव्यपदपाकरसास्पदेन, यामार्धमात्रघटितेन च नाटकेन ।

श्रीमीमभूमिपतिसंसदि सम्यलोकमस्तोकसम्मदवशंवदमादधे यः ॥ ४९ ॥

कवीन्द्रपदवीस्पृहामहह ! तेऽपि तन्वन्ति य-

द्वचः ककचकर्कशं प्रथयति व्यथां कर्णयोः ।

कविः स विरलः पुनर्भुवि भवाहशो दृश्यते,

सुधाभिरभिषेचनं रचयतीव यः सूक्तिभिः

मन्दस्त्रुन्दसि कोऽपि कोऽपि विकलः सालङ्कृतिव्याकृता-

वर्थे कोऽपि वृशाश्रमो रसनिधावन्धः स कोऽप्यव्यवनि ।

वक्त्रान्तर्विहरद्विरक्षितनयामङ्गीरमञ्जुस्वर-

स्पद्वाबिन्धुभिरेकं एव कवते काव्यैः कुमारात्मजः

॥ ५१ ॥

१ अयं श्रीहर्षवर्णयो हरिहरो वीरघबलराजसमीपे नैषधपुस्तकं प्रथमं वस्तुपालऽमात्ये सत्यानयत्-
इति हरिहरप्रकाशे प्रवन्धकोशे स्फुटमुपलम्यते ॥ २ श्रीमद्वराज्यम् विं सं० १२३५-१२५८; एत-
सुन्दरिगुप्तवालराज्यम् विं सं० १२९८-१३०० ॥ ३ अयं कुमारस्य पुत्रः सोमेश्वरदेवकैः श्रीभीम-
देवतावायामासीत् ॥

बैदुप्पं विगताभ्यं जितवति श्रीहेमचन्द्रे दिवं,
श्रीग्रहादनमन्तरेण विरतं विश्वोपकारवतम् ।

इदा तद् द्वयमत्र मन्त्रिमुकुटे श्रीवस्तुपाले कवि-
स्तल्कीर्तिस्तुतिकैतवाविति युदामुदारमारब्धवान्

॥ ५२ ॥

प्राग्वाटानव्यवारिधौ विधुरिव श्रीचण्डपः प्रागमूर्,
सम्मूतोऽद्वृतसत्य-शौचसदनं चण्डप्रसादस्ततः ।

सोभस्तचनयो नयोज्वलमतिस्तस्याऽश्वराजः सुतः,
पूतात्माऽथ तदञ्चमूः स्फुक्तमूः श्रीवस्तुपालोऽभवत्

॥ ५३ ॥

उत्कुलमल्लीपतिमल्लकीर्तिः, श्रीमल्लदेवोऽभवदग्रजन्मा ।
वमूर् तस्यावरजम्य तेजःपालाभिधानः सचिवप्रधानम्

॥ ५४ ॥

श्रीवस्तुपालस्य चिरायुरस्तु, दिशां प्रकाशं दिशते सदा यः ।
कर्पूरकिर्मीरितकेरल्लीरदावदातस्युतिभिर्यशोभिः

॥ ५५ ॥

क्षीणे चक्षुषि भेषजं भगवती कालीश्वरी देहिनां,
देहे चित्रविचित्रभाजि शरणं श्रीबैद्यनाथः प्रसुः ।

संसारज्वरजर्जे हृदि सदा विष्णुर्भविष्णुर्मुदे,
दौर्गत्ये च जिधांसिते गतिरसौ श्रीवस्तुपालः पुनः

॥ ५६ ॥

न वदति परुषा रुषाऽपि वाचः, स्पृशति परस्य न मर्म नर्मणाऽपि ।
विरमति मतिमानमात्यचन्द्रः, कचन च नार्थिकदर्थितोऽपि दानात्

॥ ५७ ॥

घनमनवरतक्षीतीन्द्रसेवाश्रमसमवासमयलतोऽपि दत्ते ।
अपरमपि परोपकारकं यद्, विमृशति वस्तु तदेव वस्तुपालः

॥ ५८ ॥

सत्यं न्नुवे भवतु मा क्षतिरत्र काचिद्, मूल्या खलप्रकृतिनाऽपि मयाऽतिमात्रम् ।
मन्त्री समे च विषमे च परीक्षितोऽसौ, हृष्टं न दुष्टमिह किञ्चन सचरित्रे ॥ ५९ ॥

अयमनुदिनदानोत्कर्षितप्राणवर्षत्यरिचरितचरित्रः स्वस्तिमानस्तु मन्त्री ।

दुहिनकरसमानैर्यस्य कीर्तिप्रतानैरजनिषत रजन्यः प्राप्तराकाविदाकाः ॥ ६० ॥

रमन्ते लोकतः पापाः, शपानन्ये नियोगिनः । अधिकारमविकारममात्मः शास्त्रसौ पुनः ॥ ६१ ॥
त एव स्तूयन्ते तृपतिपद्मभिर्धीवरतया,

प्रजानामानाथः सपदि सल्ल येभ्यः प्रपतति ।

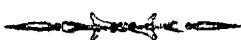
तदित्यं स्फुस्थानां चकितचकितं क्वापि वसतां,

सतां सम्पत्येकः सचिवश्वतातिर्मुदि भवान्

॥ ६२ ॥

अर्थदानदलितार्थिदुःस्थिर्ति, त्वां विनयनम् । सम्रति ।
मृज्जते जगति केनचित् सतां, वस्तुपाल । न कपालदुर्लिपिः || ६३ ॥
गोमधरसानुलिसे, कीर्तिसुधाधवलिसे च मुखनगृहे ।
श्रीवस्तुपाल । भवतश्चकास्ति चित्रं चरित्रमिह || ६४ ॥
पीयौषेः प्रणता हिमैः प्रणिहिता ताराभिराराधिता,
गङ्गावीचिभिरर्चिता परिचिता दिग्दन्तिदन्तांशुभिः ।
कर्पूरैः परिशीलिता मल्यजैरावर्जिता मण्डिता,
हिण्डीरस्तथैर्वकैरनुसृता मन्त्रीश ! कीर्तिस्तव || ६५ ॥
प्रवर्तमानेऽत्र कविस्वसत्रे, सत्कृत्य सत्पात्रममास्यमेवम् ।
कृतार्थमात्मानमसावमंस्त, सौवस्तिको गुर्जरनिर्जराणाम् || ६६ ॥
कुमारमुत्रेण कुमारमातुः, काव्यं तदेतजगदेकदेव्याः ।
श्रुति-सृति-व्याकृति-यज्ञविद्याविशारदेन क्रियते स तेन || ६७ ॥

॥ इति श्रीगुर्जरेश्वरपुरोहितश्रीसोमेश्वरदेवविरचिते सुरशोत्सवनाम्नि
महाकाव्ये कविप्रशस्तिवर्णनो नाम पञ्चदशः सर्गः ॥



द्वादशं परिशिष्टम्

गूर्जरेश्वरमहामालश्रीवस्तुपालकविविरचितस्य नरनारायणानन्द-
महाकाव्यस्य प्रशस्त्यात्मकः षोडशः सर्गः ।

शोभाभिभूतपुरुहृतपुरं पुरन्ध्रीलावण्यलोभितजग्न्नगरं गरीयः ।
धाम श्रियोऽणाहिलपाटकनाम कामलीलामयं जयति गूर्जरभूमिभूषा ॥ १ ॥
बाग्देवतां यदि जना जननीमिवैनामानन्दिनः प्रतिदिनं हृदि नन्दयन्ति ।
यस्मिन्निमान् मदनतुत्स्यरुचस्तथापि, निर्मत्सरा त्यजति नो सुतवत्सला श्रीः ॥ २ ॥
प्राग्वाटगोत्रतिलकः किल कश्चिदत्र, श्रीचण्डपः स्फुटमखण्डपदप्रतिष्ठः ।
विस्फूर्जितान्यधित गूर्जरराजराजीवजीवनरविः सचिवावतंसः ॥ ३ ॥
कृष्णीकृतरिवदना सुमनोमनांसि, रागास्पदं विदधती यदलक्ष्यरूपा ।
आनन्दमर्दितविचारमदैर्यदीयकीर्तिर्मुदा जितसुधा बुद्धेन्द्रैः ॥ ४ ॥
चण्डप्रसाद इति सादितविश्वदौस्थ्यस्तन्नन्दनः स्वकुलनन्दनकल्पशास्त्री ।
मुक्तामयप्रसवसञ्चयचारुचञ्चलकीर्तिप्रभासुरभिताम्बरमूर्वमूर्व
शास्त्रार्थवारिभरहारिहृदालवालसंरोपिता मतिलता वितता नितान्तम् । ॥ ५ ॥
यस्य प्रकाशितरविग्रहतापवद्धि श्लायार्थिभिर्नृपकुलैः फलदा सिष्वे
पुण्यस्य पापपटलीजयिनो जयश्रीरामीत् तदीयदयिता नयभूर्जयश्रीः । ॥ ६ ॥
यस्या मनो दयितमक्तिसुरस्वन्तीस्तानोज्जवलां जनयति स्म जिनेन्द्रसेवाम् ॥ ७ ॥
नैवोह्सम्पुटविपाटनया कदाचिदेषा स्मितं जितसुधाविभवं व्यधत्त ।
श्वेतद्युतिः कल्पतां तदयं हृदन्तः, केनापरेण परिभूतनुस्तनोति ? ॥ ८ ॥
श्रीरङ्गभूर्षशमभूदनयोर्नयाव्यश्रीरङ्गभूर्जगति शूर इति प्रतीतः ।
अस्वमतां सुरगुरुः सह शिष्यवर्गैर्धर्ते स्म यन्मतिजितश्वरचिन्तयेव ॥ ९ ॥
चूडामणीकृतजिनाञ्छिनस्प्रपञ्चः, कर्णस्फुरदुरुसुवर्णविभूषणश्रीः ।
सद्वर्त्मनि प्रचलदुर्मदभोहचौरः, दुःसञ्चरेऽपि विललास य एव शूरः ॥ १० ॥
हृत्वाऽपि कान्तिलवमेव यदीयकीर्तिर्दिव्यं सृजचिव जगत्यपवादभीतः ।
इन्दुः सुधावपुरापि प्रभुरौषधीनामप्येष सर्पनिभलक्ष्मधृतौ न शुद्धः ॥ ११ ॥
सोभाभिघस्तदनुजः सुजनाननाङ्गसूर्योऽभवद् विबुधसिन्धुविशुद्धुद्विद्धिः ।
यन्मानसेऽङ्गुतरसे विललास वार्धिक्षिसौर्वतापविधुरेव सरस्वतीयम् ॥ १२ ॥
कीडाकथासु सदसि द्युसदां सदैव, मौलि विकम्प्य किल सोऽपि गुरुः सुराणाम् ।
यहुद्विभवभरस्य विचारितस्य, नीराजनान्यकृत चञ्चलवूलरैः ॥ १३ ॥

देवः परं जिनवरो हरिमद्भुतिः, सत्यं गुरुः परिवृढः सलु सिद्धराजः ।
 शीभाननेन नियतं नियमत्रयेण, कीर्तिं व्यधात् त्रिपथगामिव यः पवित्राम् ॥ १४ ॥
 पुरुषर्ज गूर्जरधराधवसिद्धराज्ञराजत्सभाजनसभाजनभाजनस्य ।
 दुर्मन्त्रिमन्त्रितदवानलविहलायां, श्रीसप्तमण्डननिभा भुवि यस्य कीर्तिः ॥ १५ ॥
 कुर्वन् परार्थ्यगणिते सति यद्गुणानामेकैकविन्दुरचनामुडैकतवेन ।
 चन्द्रच्छलेन कति नो स्टिनीर्धुभितौ, धाता व्यधादथ विधास्यति कीर्तिशेषाः ? ॥ १६ ॥
 नो चेद् यशांसि बलि-कर्ण-दधीचिमुरुल्या, दानोत्सवैरविरलानि भुवि व्यधास्यन् ।
 भक्तैरदास्यत विलासमरालबालक्ष्मीर्यदीयघनदानयशोनदीषु ॥ १७ ॥
 श्रीबाससद्वकरपश्चगदीपकल्पां, व्यापारिणः कति न विभ्रति हेममुद्राम् !
 प्रज्वालयन्ति जगदप्यनयैव केऽपि, येन व्यमोचि तु समस्तमिदं तमस्तः ॥ १८ ॥
 कान्ता जगत्रितयविस्मयनीयनीतेः, सीतेति रामचरितस्य बभूव तस्य ।
 यछोचनं स्थिरतरं दयिताननेन्दौ, दूरेण काञ्चनमृगश्रियमन्वगच्छत् ॥ १९ ॥
 इषादसौ हसतु शीतकरोऽपि भासा, भृजीरुतैरपि च हुङ्कुरुतां सरोजम् ।
 दूरावलम्बितशिरोम्बरडम्बरेण, यस्या मुखं जगति न प्रकटं यदासीत् ॥ २० ॥
 तत्सम्भवस्त्रिभुवनाभरणं बभार, शुअं यशोभरमनश्वरमश्वराजः ।
 मुत्तचा कलङ्ककलितं ललितं हिमांशुं, हर्षादलाभि सकलाभिरयं कलाभिः ॥ २१ ॥
 यं मातृभक्तिशुचिमेव यशश्छलेन, संसेव्य जातसुकृतो रजनीभुजङ्गः ।
 आसीज्जगत्रितयविस्तृतवैभवश्च, साक्षात् कलङ्करहितश्च सदोदितश्च ॥ २२ ॥
 हुत्वा सदध्वरचितेषु तमांसि तीर्थात्रोत्सवेषु सलु सप्तसु पावकेषु ।
 यः सप्तपूर्वपुरुषैकमुदे यशोऽन्मःपूर्तानि सप्त भुवनानि कृती प्रतेने ॥ २३ ॥
 संस्तूयमानचरितः परितः प्रबुद्धैः, सत्यवते सुकृतसूनुरिवान्वहं यः ।
 लज्जामसज्जयत चापगुरुद्विजेन्द्रदोषक्षयक्षणतदुक्तिविचारणेन ॥ २४ ॥
 तस्य प्रिया प्रणयपात्रमभात्रशीललीलायितं बत ! बभार कुमारदेवी ।
 आलीयत प्रतिपदं जिनपादपद्मे, चित्तेशवक्त्रकमले च यदीयहष्टिः ॥ २५ ॥
 यस्या मुखे जिनगुणप्रहणप्ररोहलीत्या शिरः प्रतिकलं परिकम्पयन्त्याः ।
 हित्वाऽनुबुद्धं च रजनीरमणं च लोला, दोलाकुतूहलरसं समसेवत श्रीः ॥ २६ ॥
 सनुसागोरजनि नीरजनिर्मलास्यः, श्रीलास्यम् स्मरकलः किल लूणिगास्यः ।
 बास्येऽपि यस्य चरितं विरराज द्विदसेवादकं क्रमनिराकृतपङ्कवस्य ॥ २७ ॥
 यस्याऽनन्नं द्विजवियुक्तमपि द्विजेन्द्रसान्द्रप्रभाभरमभाज्ञवशैशवस्य ।
 अङ्गं च केशलब्धमुक्तमपि व्यराजदू, यस्य प्रबालरुचिराधरपाणिपादम् ॥ २८ ॥
 सत्याभिष्ठस्तदनुजो मनुजावतेसरलं बभूव विदितो भुवि मङ्गुदेवः ।
 यस्ताग्रसः प्रतिकलं गतिविश्रमेण, विभ्राजते सम न महानपि हस्तिमङ्गः ॥ २९ ॥

ज्ञानात्मिकाऽपत्तेः सः सततं पश्येष्व, फलात्मकात्मिका फलिपुत्रकृतिदावदाहः ॥
 चक्षेष्व चष्टुक्षरधर्मघटेति ज्ञात्वा, यस्योज्जवलानि बचनानि सुधा सिषेष्वे ॥ ३० ॥
 तस्यानुजः पितृप्रदाम्बुजचक्षरीकः, श्रीमातृभक्तिसरसीरसकेलिहंसः ।
 साक्षात्मिकात्मिपतिभ्रमनृथाक्षरक्षो, जागर्ति नर्तितमना हृदि वस्तुपालः ॥ ३१ ॥
 नागेन्द्रगच्छमुकुटाऽयस्त्रन्द्रसूरिपादाव्यभृत्त्वरिभद्रसुनीन्द्रशिष्यात् ।
 ज्ञानात्मावचो विजयसेवगुरोः सुधाभमास्वाद्य धर्मपथि सत्यथिकोऽयस्त्र ॥ ३२ ॥
 कुर्वन् मुहुर्विष्णल-तैवतकादितीर्थयात्रां स्वकीयपिण्डपुण्यकृते मुदा यः ।
 सहृष्टिसहृष्टपदेष्युभरेण चित्रं, सहृष्टेन जगति निर्मल्याम्बमूर्व ॥ ३३ ॥
 धर्मैचिती रुचितकामगवी निषेद्य, दुर्घटप्राप्तिजगतोऽपि वितत्य कीर्तीः ।
 यो मातृदुर्घटसपानमहोत्सवानामानृण्यमात्मनि कथञ्चन नैव मेने ॥ ३४ ॥
 भास्त्रत्प्रभावमधुराय निरन्तरावधमोत्सवव्यतिकराय निरन्तराय ।
 यो गूर्जरावनिशिरोमणिर्मीमभूपमन्त्रान्द्रतापरवशत्वमपि प्रयेदे ॥ ३५ ॥
 यः कामवृत्तिरनुजेन निजेन तेजःपालेन पूर्णनृपकार्यपरम्परेण ।
 सद्धर्मकर्मस एव मनो मनोज्ञविद्विनोदपयसि स्नपयाम्बमूर्व ॥ ३६ ॥
 यः स्वीयमातृ-पितृ-बन्धु-कलत्र-पुत्र-मित्रादिपुण्यजनये जनयात्मकार ।
 सहृष्टेनन्द्रजविकासकृते च धर्मस्थानावलीवलयिनीमवनीमशेषाम् ॥ ३७ ॥
 कीर्त्या सौरभसारसान्द्रसुमनःसन्दोहमन्दोहकृ-
 त्कान्त्या पाति वसन्तमन्वहमसावित्यर्पितार्थकमम् ।
 स्त्याति प्राप वसन्तपाल हति यो नामाद्वितीयं मुदा,
 विद्विद्विः परिकल्पितं हरिहर-श्रीसोमशर्मादिभिः ॥ ३८ ॥
 श्रीशश्रुत्यस्त्रैलशेखरमणोः श्रीनाभिस्त्रनुप्रभोः,
 पीत्वा वक्त्रसुधांशुदीधितिसुधामाकण्ठसुत्कण्ठवा ।
 व्यातन्बन् कवितां नितान्तमुदितः सद्वस्तदुद्वारवत्,
 तस्यैवाऽद्विजिनेश्वरस्य जनयामास स्तवं यो नवम् ॥ ३९ ॥
 नरनारायणानन्दो, नाम कन्दो मुदामिदम् । तेने तेन महाकाव्यं, वागदेवीधर्मस्त्रुना ॥ ४० ॥
 उद्ग्रास्वद्विधिविद्यालयमयमनसः । कोविदेन्द्राः । वितन्द्राः ।,
 मन्त्री बद्धाङ्गलिर्वो विनयनलशिरा याचते वस्तुपालः ।
 अल्पप्रज्ञप्रबोधादपि सपदि मया कल्पितेऽस्मिन् प्रबन्धे,
 स्वयो भूयोऽपि यूर्यं जनयत नवनक्षेपतो दोषमोषम् ॥ ४१ ॥
 ॥ हति श्रीगूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवसन्तपालविरचिते नरनारायणानन्द-
 नामिन महाकाव्ये प्रशस्तिप्रपञ्चो नाम शोडशः सर्गः ॥

वयोदशं परिशिष्टम्

गूर्जे श्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालविरचितस्तोत्रादि ।

मनोरथमयं विमलाचलतीर्थमण्डनश्रीआदिनाथस्तोत्रम् ।

लङ्घ्वा मानुषजन्म जातिसुकुलप्रष्टां प्रतिष्ठामिमां,
धृत्वा धर्मधुरीणतामधिगतः सङ्काधिपत्यश्रियम् ।
तीर्थेशाश्रिम । वस्तुपालसचिवो विश्वाग्रजाग्रत्पदा-
ऽरोहाय प्रगुणां मनोरथमर्यां निःश्रेणिमाश्रियत् ॥ १ ॥

श्रीनामेय ! मनोरथाः शतपथा मिथ्याभिमानाभ्युधेः,
कल्पोला इव विस्फुरन्ति विषयग्राहग्रहव्यभिताः ।
हित्वा तानिति वस्तुपालसचिवः सद्बोधदुर्घोदघे-
मेजे वीचिसमानिमान् शमदमप्रव्यक्तमुक्ताफलान् ॥ २ ॥

प्रत्याशं प्रसरत्कषायविषयज्वालाकरालादितो,
दूरीमूर्य भयङ्कराद् भवदवाद् व्यामोहधूमान्धितः ।
श्रीश्रुत्तुञ्जयशैलपावन ! जिन ! त्वद्वक्त्रचन्द्रातपो-
पास्तिध्वस्ततमाः शमाभृतहृदे दाहं कदाऽहं क्षिपे ? ॥ ३ ॥

एतस्मिन् भववारिधौ निरवधिकोधौर्ववहेष्युत-
स्तो लोभतिमिङ्गिलस्य गिलनात् क्लेशाभ्यसो निर्गतः ।
सस्तस्तात् ! कदा कदाग्रहमहाग्राहाच श्रुत्तुञ्जय-
द्वीपं प्राप्य भजेय जेयविजयश्रीतः परां निर्वृतिम् ? ॥ ४ ॥

संसारव्यवहारतो रतिमङ्गतिव्यावर्त्य कर्तव्यता-
वार्तामिष्यपहाय चिन्मयतया त्रैलोक्यमालोकयन् ।
श्रीश्रुत्तुञ्जयशैलगङ्गहरुहामध्ये निबद्धस्थितिः,
श्रीनामेय ! कदा लभेय गलितज्ञेयाभिमानं मनः ? ॥ ५ ॥

स्वामिन् ! मृत्युहरेरहं हरिणवन्नष्टोऽतिकष्टायुध-
व्याधिव्याधशतैर्वृतः श्रितभवारण्योऽशरण्यो भ्रमन् ।
नामेय ! त्वमनाकुलः कुलपतिर्यत्रासि तस्मिल्लभे,
श्रीश्रुत्तुञ्जयशैलनामनि कदा पुण्याश्रमे विश्रमम् ? ॥ ६ ॥

श्रीगर्बोधमभिरौप्मलेषु धनिनामीर्प्यनिलज्वालया,
जिहालेषु मृगीहशामनुशयाद्भूमायितेषु द्विषाम् ।
वक्त्रेषु ग्लपितामिमां त्रिजगतीनिस्तन्द्रचन्द्रोदये,
देव श्रीविमलाद्रिकेतन । कदा दास्ये त्वदास्ये हशम् ? ॥ ७ ॥

क्रोधेन ज्वलितो हतोऽहमिषुभिः पञ्चेषुणा पञ्चभिः,
बद्धो मोहमहाद्विषा च विषयग्रामं ग्रकामं श्रितः ।
तद् ध्वस्तान्तरवैरिवार ! भुवनस्वामिन् । सनाथे त्वया,
दुर्गे श्रीविमलाद्रिनामनि सुखं स्थातास्मि सुस्थः कदा ? ॥ ८ ॥

आस्य कस्य न वीक्षितं ? क न कृता सेवा ? न के वा स्तुताः ?,
तृष्णापूरपराहतेन विहिता केषां च नाभ्यर्थना ? ।
तत् त्रातर् ! विमलाद्रिनन्दनवनीकल्पैककल्पद्रुम ।,
त्वामासाद्य कदा कर्दर्थनमिदं भूयोऽपि नाहं सहे ? ॥ ९ ॥

संसारे सुखहेतुवस्तुविषयैरुत्सङ्गैः सङ्गतै-
देत्ता देव ! त्वदन्यदेव तदियं वाञ्छा ममोत्सेकिनी ।
श्रेयोवैभव ! नाभिसमभव ! भवाकूपारपारङ्गम ।,
श्रीशश्नुख्यमण्डनेन भवता भावी कदा सङ्गमः ? ॥ १० ॥

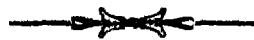
एताः शमामृतरसेन हृदालवाले, संवर्धिताः पृथुमनोरथवलयो मे ।
विश्वैकमित्र ! भगवन् । भवतः प्रसादालोकोत्तरैः फलभैः सफलीभवन्तु
धर्मध्यानमना मनोरथमयं स्तोत्रं युगादिप्रभो-
श्वेके गूर्जरचक्रवर्तिसचिवः श्रीवस्तुपालः कविः । ॥ ११ ॥

प्रातः प्रातरधीयमानमनधां यच्चित्तवृत्तिं सता-
माधत्ते विभुतां च ताप्णवयति श्रेयःश्रियं पुष्यति ॥ १२ ॥

॥ इति गूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालविरचितं मनोरथमयं विमलाचल-
तीर्थमण्डनश्रीआदिनाथजिनस्तोत्रम् ॥

(२)

रैवतकाद्रिमण्डनश्रीनेमिजिनस्तवः ।



जयत्यसमसंयमः शमितमन्मथप्राभवो, भवोदधिमहातर्दुरितिदावपाथोधरः ।
तपस्तपनपूर्वदिकलुषकर्मवल्लीगजः, समुद्रविजयाङ्गजलिभुवनैकचूडामाणिः ॥ १ ॥
अहशुतिलतायुधं प्रमदमान्द्यसिद्धौषधं, भद्रेन्धनधनज्ञयः स्मरकरीन्द्रकण्ठीरवः ।
सृष्टारजनिवासरः प्रथितपङ्कतीत्रातपः, समुद्रविजयात्मजः स्फुरतु मानसे मेऽनिशम् ॥ २ ॥
मेरुमे रुचिमातनोति न मुधा मानी हिमानीगिरिः, कैलासस्तु न वस्तुतः स्तुतिपदं वन्ध्यः स विन्ध्याचलः ।
शुभाध्यो रैवत एव केवलमयं शृङ्गाणि शृङ्गारय-त्युच्चैर्यस्य जगत्रयस्तुतिपदः श्रीनेमिकल्पद्रुमः ॥ ३ ॥
संसारार्तितपोपतापशमनश्रद्धालवः । किं मुधा, राग-द्रेषदवोल्मुकैर्बत ! बुधाः ! सेव्यान्तरैः सेवितैः ? ।
आजन्मोपशमामृतैकसरसः श्रीरिष्टनेमित्रभो-र्निर्वृत्यौपयिकं पदाभ्युजयुगं धत्र प्रसकतं हृदि ॥ ४ ॥
यस्यानीकवधूभिरेव विजिताः स्व-र्भू-र्भुवःस्वामिनो, मौलौ शासनमुद्वहन्ति मुवने देवोऽयमेकः स्मरः ।
सोऽप्याजन्मजितः करोति न करे जैत्रं धनुर्य प्रति, श्रीति रैवतदैवतं वितनुतां देवाधिदेवः स वः ॥ ५ ॥
येषां मूर्तिरसौ तवेश ! परमानन्दैकनिस्यन्दिनी, ध्यानावेशवशंवदा स्मृतिपथे शश्वत् पुनीतेतमाम् ।
तेषां सम्मदवारिपूरितदृशां शैवेय ! नैवेयम-प्याधते मनसश्चमत्तुतिसुखं सा सिद्धिसीमन्तिनी ॥ ६ ॥
साग्राज्यं चतुरणीवीनिवसनक्षोणीशमौलिस्खल-त्पादाब्जं न सुरा-ऽसुरेन्द्रमुकुटस्पृष्टांहिपीठं च न ।
सिद्धिं शाश्वतसौख्यसङ्गसुभगां नाभ्यर्थये किन्तु मे, श्रीशैवेय ! तवेयमस्तु चरणाभ्योजेषु भवित्तर्भृशम् ॥ ७ ॥
नेपञ्चैरतिथीभवतपृथुतरपथैरतथ्यपथै-रुद्रैशुतडम्बरैः किमपरैरैकैव भूयान्मम ।
आक्षेषस्पृहयाङ्गमुक्तियुवतिप्रीतिप्रियम्भावुका, श्रीमन्नेमिजिनेशितुः स्तुतिरियं ग्रैवेयकं शाश्वतम् ॥ ८ ॥

इत्थं श्रीवस्तुपालः सुकृतसुरतरोगालवालस्त्रिलोकी—
स्वामिन् नेमे ! त्वदीयक्रमकमलरजः पुञ्चपुण्यैकभालः ।

संघाधीशशुलुक्यक्षितिपतिसचिवः शारदाधर्मसनु-
विज्ञसिं ते विधते प्रथय मम सदा दर्शनेन प्रसादम् ॥ ९ ॥

श्रीसङ्कर्त्तसचिवेश्वरवस्तुपालकलसेन नेमिनमनेन किलाष्टकेन ।
यः स्तौति तस्य कमलामविलम्बमम्बादेवी तनोत्यतनु सन्तनुते च तेजः ॥ १० ॥

॥ इति गूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालकृतो रैवतकाद्रि-
मण्डनश्रीनेमिजिनस्तवः ॥



(३)

अस्तिकास्तोत्रम् ।

पुण्ये गिरीशशिरसि प्रथितावतारामासुत्रित्रिजगतीदुरितापहाराम् ।
 दौर्गत्यपातिजनताजनितावलम्बामम्बामहं महिमहैमवर्ती महेयम् ॥ १ ॥
 यद्ब्रह्मकुञ्जकुहोद्रुतसिंहनादोऽप्युन्मादिविभकरियुथकधाममाथम् ।
 कुष्माण्डि ! स्वण्डयतु दुर्विनयेन कण्ठः, कण्ठीरबः स तव भक्तिनतेषु भीतिम् ॥ २ ॥
 कुष्माण्डि ! मण्डनमभूत् तव पादपद्मयुग्मं यदीयहृदयावनिमण्डलस्य ।
 पश्चलया नवनिवासविशेषपलाभलुभ्या न धावति कुतोऽपि ततः परेण ॥ ३ ॥
 दास्तिक्षुदुर्दमतमःशमनप्रदीपाः, सन्तानकाननघनाघनवारिधाराः ।
 दुःखोपतप्तजनवालमृणालदण्डाः, कुष्माण्डि ! पान्तु पदपद्मनसांशबस्ते ॥ ४ ॥
 देवि ! प्रकलशथति सन्ततमेष कामं, वामेतरस्तव करश्वरणानतानाम् ।
 कुर्वन् पुरः प्रशुपितां सहकारलुभ्यमम्बे ! विलम्बविकलस्य फलस्य लाभम् ॥ ५ ॥
 हन्तुं जनस्य दुरितं त्वरिता त्वमेव, नित्यं त्वमेव जिनशासनरक्षणाय ।
 देवि ! त्वमेव पुरुषोत्तममाननीया, कामं विभासि विभया समया त्वमेव ॥ ६ ॥
 तेषां मृगेश्वर-गर-ज्वर-मार्दि-वैरि-दुर्वारवारण-जल-ज्वलनोद्भवा भीः ।
 उच्छृङ्खलं न खलु खेलति येषु भत्से, वात्सल्यपलवितमम्बकमस्तिके ! त्वम् ॥ ७ ॥
 देवि ! त्वद्वृजितजितप्रतिपन्थितीर्थयात्राविधौ बुधजनाननरङ्गसङ्गि ।
 एतत् त्वयि स्तुतिनिभाद्युतकल्पवल्लीहल्लीसकं सकलसङ्खमनोद्देऽस्तु ॥ ८ ॥
 वरदे ! कल्पवल्लि ! त्वं, स्तुतिरूपे ! सरस्वति ! । पादाग्रानुगतं भक्तं, लम्भयस्वातुलैः फलैः ॥ ९ ॥
 स्तोत्रं श्रोत्ररसायनं श्रुतसरस्वानस्तिकायाः पुर-
 श्वके गूर्जरचक्रवर्त्तिसचिवः श्रीवस्तुपालः कविः ।
 प्रातः प्रातरधीयमानमनघं यक्षितवृत्ति सता-
 माधते विभुतां च ताण्डवयति श्रेयःश्रियं पुष्प्यति ॥ १० ॥

॥ इति महामात्यश्रीवस्तुपालविनिर्मितमस्तिकास्तोत्रम् ॥

(४)

महामात्वश्रीवस्तुपालकृता आराधना ।

न कृतं सुकृतं किञ्चित्, सतां संस्मरणोचितम् । मनोरथैकसाराणामेकमेव गतं वयः ॥ १ ॥

अर्हन्तस्त्रियगद्वन्धान्, सिद्धान् विध्वस्तवन्धनान् । साधुंश्च जैनधर्मं च, प्रपद्ये शरणं त्रिष्ठा ॥ २ ॥

कृतं पद्मविधजीवानां, पीडनं क्रीडयाऽपि यत् । हास्यादिना विमूढेन, यन्मृषा भाषितं मया ॥ ३ ॥

परद्रव्येष्वदत्तेषु, यन्मनोऽपि नियोजितम् । कथञ्चिदभिलाषोऽपि, यदब्रह्मणि निर्मितः ॥ ४ ॥

मूर्च्छ्या विहितः कश्चिदाग्रहो यत् परिग्रहे । स्वमेऽप्याऽपि विष्कृता या च, रजनीभोजने स्फुहा ॥ ५ ॥

चक्रे कोपश्च मत्किञ्चिद्, या च काचिदहङ्कृतिः ।

माया लोभश्च यस्तत्र, मिथ्या दुष्कृतमस्तु मे ॥ ६ ॥

यद् वात्सल्यं कृतं नैव, यद् गुणा नानुमोदिताः । गुरवो यदवज्ञाताः, संस्तुता यत् कुतीर्थिकाः ॥ ७ ॥

कुदेशना च या चक्रे, यत् सिद्धान्तेऽप्यवासना । यत् सत्कर्मप्रमादश्च, निन्दामि लक्षणेष्टः ॥ ८ ॥

ज्ञान-दर्शन-चारित्रं, गोचरे विहितं च यत् । मार्गानुसारतः सर्वास्ताम्येषोरनुभावये (?) ॥ ९ ॥

त्यजामि पापमाहारं, याये मध्यमस्तु तः । श्रेयेऽहं सुकृतं पारभविकं दुष्कृतं त्यजन् ॥ १० ॥

॥ इति मन्त्रीश्वरश्रीवस्तुपालकृता आराधना ॥

चतुर्दशं परिशिष्टम्

श्रीमद्विरचितं

सुकृतसंकीर्तनमहाकाव्यम् ।

वनराजः

श्रीवेशमविस्मयमयप्रबलप्रतापशापोत्कटान्वयवनैकहरिनेरेन्द्रः ।
आसीदसीमचरितः परितप्तशत्रु-भालार्पिताङ्ग्निलिनो वनराजदेवः ॥ १ ॥
यत्सङ्गसङ्घितविरोधिशिरोऽधिरक्त-सोतस्त्विनीभिरुदधिविंधे सरागः ।
येनाऽधुनाऽप्यरुणतां भजतस्तदङ्ग-सम्पर्कतोऽर्क-शशिनावुदयक्षणेषु ॥ २ ॥
निर्गत्य कोशकुहरादसिद्धन्दशूकः, इयमो यथागतमगात् त्वरितं यदीयः ।
एतेषु मास्म विशदेष परैरतीव, रुद्धेषु वक्त्रविवरेषु कराङ्गुलीभिः ॥ ३ ॥
स्वद्वाङ्गसङ्गतकरस्तरवारिलम्-कृत्तारिमुण्डमिष्ठः समराङ्गणे यः ।
भालाधिरोपितहुताशनचण्डचक्षु-रामादिभासुरविरोधिविभासुरश्रीः ॥ ४ ॥
तेने कृतान्तसमतां रसनासनाभि-धारोद्धुरो यदसिरञ्जनमञ्जुलश्रीः ।
अहाय यस्य मुषि दर्शनसंज्ञयैव, भिन्दन्नरीनधित किङ्करतां कृतान्तः ॥ ५ ॥
स्तब्धप्रकम्पितविलीनविवर्णगात्रैः, खिन्नैविगङ्गुरवस्फुरदश्रुलेशम् ।
उम्भुच्य पौरुषमवाप्य च भीरुभावं, यः सेव्यते रिपुभिरुलकैः प्रसन्नः ॥ ६ ॥
आकर्ष्य तूर्णमुपकर्णयितुं च यस्य, कीर्ति मुहुर्मुजगभीरुगणेन गीताम् ।
वस्तुःश्रवा रसवशेन दृशां निमेषो-न्मेषक्रियामनिमिषोऽपि चकार शेषः ॥ ७ ॥
वकीङ्कुते धनुषि मौक्तिकताडपञ्चज्योत्सनाम्बुधारभृति पश्वलतां दधाने ।
यस्याऽननं विकचवारिजकह्यपमन्त-भेजे विहाय परराजकरान् जयश्रीः ॥ ८ ॥
श्रीमत् पुरं मुषि पुरन्दरपत्तनाम, तेनाऽदधेऽणहिलपाटकनामघेयम् ।
खीणां मुखे स्मरतपस्त्ववनेऽजनीन्दु-पद्मश्रियोरसुहृदोरपि यत्र योगः ॥ ९ ॥
अन्तर्बसद्धनजनाङ्गुतभारतो भू-र्मा भ्रश्यतादिति भृशं वनराजदेवः ।
पश्चासराङ्गनवपार्श्वजिनेश्ववेशम्-व्याजादिह क्षितिशरं नवमाततान ॥ १० ॥

(४)

महामात्यश्रीवस्तुपालकृता आराधना ।

न कृतं सुकृतं किञ्चित्, सतां संसरणोचितम् । मनोरथैकसाश्रणामेकमेव गतं वयः ॥ १ ॥
अहंतस्त्रिजगद्गृह्णान्, सिद्धान् विभवस्तवन्धनान् । साधूंश्च जैनधर्मं च, प्रपदे शरणं त्रिधा ॥ २ ॥
कृतं बद्धिष्ठजीवानां, पीडनं कीडयाऽपि यत् । हास्यादिना विमूढेन, यन्मृषा भाषितं मया ॥ ३ ॥
परद्रव्येष्वदत्तेषु, यन्मनोऽपि नियोजितम् । कथञ्चिदभिलाषोऽपि, यदवृक्षणि निर्मितः ॥ ४ ॥
मूर्छया विहितः कश्चिदाग्रहो यत् परिग्रहे । स्वेऽप्याऽविष्कृता या च, रजनीभोजने स्पृहा ॥ ५ ॥

चक्रे कोपश्च यत्किञ्चिद्, या च काचिदहङ्कृतिः ।

माया लोभश्च यस्तत्र, मिथ्या दुष्कृतमस्तु मे ॥ ६ ॥

यद् वात्सर्वं कृतं नैव, यद् गुणा नानुमोदिताः । गुरवो यदवज्ञाताः, संस्तुता यत् कुतीर्थिकाः ॥ ७ ॥
कुदेशना च या चक्रे, यत् सिद्धान्तेऽप्यवासना । यत् सत्कर्मप्रमादश्च, निन्दामि तदशेषतः ॥ ८ ॥
ज्ञान-दर्शन-चारित्रं, गोचरे विहितं च चत् । सार्गानुसारतः सर्वाभ्याम्येयोरनुमादये (?) ॥ ९ ॥
त्वं जामि पापमाहारं, यात्रे यज्ञमस्तण्डतः । श्रयेऽहं सुकृतं पारभविकं दुष्कृतं त्यजन् ॥ १० ॥

॥ इति मुन्नीश्वरश्रीवस्तुपालकृता आराधना ॥

चतुर्दशं परिशिष्टम्

प्राचीनहस्तलिखितप्रतिपान्तगता वस्तुपालादि-
प्रतिबद्धाः पुष्टिकाः ।

(१)

धर्माभ्युदयमहाकाव्य अपरनाम संघपतिचरित

सं० १२९० वर्षे चैत्र शुदि ११ रवौ स्तम्भतीर्थवेलाकूलमनुपालयता महं० श्रीवस्तुपालेन
श्रीधर्माभ्युदयमहाकाव्यपुस्तकमिदमलेखि ॥ ३ ॥ ३ ॥ शुभमस्तु श्रोतुव्यास्यातृणाम् ॥
(संभात श्रीशान्तिनाथ—ताडपत्रीय—भंडार)

(२)

आचारांगवृत्ति—सूत्र—निर्युक्ति

सर्वगाथासंस्या ३६७ ॥ आचारनिर्युक्तिः समाप्ता ॥ आचारांगवृत्तिः १२३०० । आचारसूत्रं
२५०० । निर्युक्तिः ४४७ ॥ संवत् १३०३ वर्षे मार्गवदि १२ गुरौ अद्येह श्रीमदणहिलपाटके
महाराजाधिराजश्रीवीसलदेवराज्ये महामात्यतेजःपालप्रतिपत्तौ श्रीश्रीआचारांगपुस्तकं लिखित-
मिति ॥ कल्याणमस्तु श्रीजिनशासनप्रवचनाय ॥ १ ॥

(संभात श्रीशान्तिनाथ—ताडपत्रीय—भंडार)

(३)

देशीनाममाला

संवत् १२९८ वर्षे आश्विन शुदि १० रवौ अद्येह श्रीभृगुकच्छे महाराणकश्रीवीसलदेव....
महं० श्रीतेजपालसुत महं० श्रीलूणसीहप्रभृतिपंचकुलप्रतिपत्तौ आचार्यश्रीजिणदेवस्त्रिकृते देसी-
नाममाला लिखापिता । लिखिता च कायस्थज्ञातीय महं० जयंतसिंहमु.....

(पाटण संघवीपाटक—ताडपत्रीय—भंडार)

(४)

जीतकल्पचूर्णिः तद्वृत्तिश्च

शुभ्रांशुर्युवि वस्तुपालसचिवस्त्यागोऽस्य चन्द्रातप-
स्तेनोन्मीलितमर्थकैरबकुले यत् तु श्रियस्ताण्डवम् ।

तस्याः पादतलप्रापातरभसोऽनैरिद्विज्ञामरै-
स्तेनातस्तरिरे तरङ्गितयशः किञ्चस्कजालैर्दिशः ॥ ३७ ॥

विशेऽस्मिन् कस्य चेतो हरति नहि समुद्गास्य विश्वासमुच्चैः,
प्रौढश्वेतश्चुरोचिः प्रचयसहचरी वस्तुपालस्य कीर्तिः ।

मन्ये तेनेयमारोहति गिरिषु भिया लीयते गहरेषु,
स्वर्गोत्सङ्गानुपास्ते भजति जलनिधिं याति पातालमूलम् ॥ ३८ ॥

एतेभ्यः प्रभुणा सगौरवमहं तावत् प्रदत्ता परं,
देशं देशमभी भ्रमन्ति तदहं गच्छाम्यमीभिः समम् ।

नो चेत् काऽप्यपरा मिलिष्यति वधूलत्रेति भीत्या ब्रुवं,
कीर्तिर्यस्य गुणाननु भ्रमति स श्रीवस्तुपालः कृती ॥ ३९ ॥

सोऽयं धात्री धबलयति को वस्तुपालोऽचलेन्द्र-
स्तसादाविर्भवति समरे काऽपि दोःस्फूर्तिगङ्गा ।

यसां ममाः प्रतिबसुमतीवलभानां समन्तात्,
सम्पद्यन्ते सलु पुनरनावृत्तये कीर्तयस्ताः ॥ ४० ॥ ४ ॥

(पाटण संघवीपाटक—ताडपत्रीय—भंडार)

(५)

महामात्य श्रीवस्तुपालसुतजैत्रसिंहलेखित पुस्तिका प्रशस्तिः ।

प्राग्वाटान्वयमण्डनं समजनि श्रीचण्डपो मण्डपः,
श्रीविश्रामकृते तदीयतनयश्चण्डप्रसादाभिधः ।

सोभस्तत्यभवोऽभवत् कुवलयानन्दाय तस्याऽस्तम्भू—
राशाराज्ञ इति श्रुतः श्रुतरहस्तत्वावबोधे बुधः ॥ १ ॥

तज्जन्मा वस्तुपालः सचिवपतिरसौ सन्ततं धर्मकर्म्मा—
लंकर्मणीकबुद्धिविबुधजन[चम !] त्कारिचारित्रपात्रम् ।

प्राप्तः सङ्घाधिपत्वं दुरितविजयिनीं सूत्रयन् सङ्घयात्रां
धर्मस्यौज्ज्वल्यमाधात् कलिसमयमयं कालिमानं विलुप्य ॥ २ ॥

यस्याप्रजो मङ्गुदेव उतथ्य इव वाक्पतेः ।

उपेन्द्र इव चेन्द्रस्य तेजःपालोऽनुजः पुनः ॥ ३ ॥

चौलुक्यचन्द्रलूणप्रसादतनुजस्य वीरधवलस्य ।

यो द्वे राज्यवृंदामेकधुरीणं विशाय निजमनुजम् ॥ ४ ॥

विभुता-विकम-विद्वा-विदग्धता-वित्त-वितरण-विवेकैः ।

यः सप्तभिर्विकारैः कलितोऽपि बभार न विकारम् ॥ ५ ॥

अपि चाप्यायिता वापी-पपा-कूप-सरोकैः । पोषिता पोषधागारैर्जीर्णेद्वारैः समुद्रताः ॥ ६ ॥

अथा प्रीतया निर्बाजं पूजिता सङ्घपूजनैः । प्रशस्तिविस्तरस्तोमैः सरस्वत्यापि संस्तुता ॥ ७ ॥

शौर्येणोर्जस्तितां नीता स्फीता नव्योक्तिसूक्तिभिः । प्रीताऽर्जिसार्थसत्कारैरुपकारैः पुरस्कृता ॥ ८ ॥

शास्त्रिता सापुवादेन तोरणैस्तुञ्जतां गता । हैमस्त्रामकुम्भेन्द्रमण्डपाधैश्च मण्डिता ॥ ९ ॥

नित्यं शशुज्जयाद्रौ नवजिनभवनोत्सुञ्जशृङ्गाप्रजाप्र-

द्वातव्याधूतघौलध्वजपटाद् यस्य नर्तन्ति कीर्तिः ।

तस्येयं गेहलक्ष्मीर्विभवति ललितादैविनाशी तदीयः

पुत्रोऽयं औत्रसिंहः स्फुरति जनमनःकन्दरामन्दिरेषु ॥ १० ॥

हस्ता वपुश्च वृत्तं च परस्परविरोधिनी । विवदाते समं यस्मिन् मिथस्तारण्य-वार्द्धके ॥ ११ ॥

सोऽयं सूहवदेवी कुक्षिभवस्य प्रतापसिंहस्य । तनयस्य श्रेयोऽर्थं व्यधापयत् पुस्तिकामेताम् ॥ १२ ॥

पुण्यदन्ताविमौ यावद् दीपौ ब्रह्मण्डमण्डपे । एषा सुपुस्तिका तावद् धर्मजागरकारणम् ॥ १३ ॥

[एतत्प्रशस्तियुक्ता पुस्तिका पतननगरे वाढीपार्श्वनाथभाण्डागरे विद्यते ।]



पञ्चदशं परिशिष्टम्

श्रीविजयसेनसूरिविरचित
रेवंतगिरिरासु ।

परमेसर तिथ्येषरह, पथपंक्य पणमेवि । भणिसु रासु रेवंतगिरे, अंबिकदेवि सुमरेवि ॥ १ ॥
गामागर पुर वण वहैण, सरि सरवरि सुपएसु । देवभूमि दिसि पच्छिमह, मणहरु सोरठदेसु ॥ २ ॥
जिणु तहि मंडल मंडणउ, मरगयमउडमहंतु । निम्मल सामल सिहरमरे, रेहैइ गिरि रेवंतु ॥ ३ ॥
तसु "सिरि सामिउ सामलउ, सोहगसुंदर सारु । जाइवनिम्मलकुलतिलउ, निवसइ नेमिकुमारु ॥ ४ ॥
तसु मुह दंसणु दसदिसि वि, देसदेसंतरु संघ । आवइ भावरसालमणउ, हलि [हलि] रंगतरंग ॥ ५ ॥
पोहुयाढकुलमंडणउ, नंदणु आसाराय । वस्तुपाल वर मंति तहि, तेजपालु दुइ भाय ॥ ६ ॥
गुरजरधरधुरि धवलकि, वीरधवलदेवराजि । विहु बंधवि अवयारियउ, सू[स]मू दूसम माजि ॥ ७ ॥

नाथलगच्छह मंडणउ, विजयसेणसूरिाउ ।

उवएसिहि विहु नरपवरे, धम्मि धरिउ दिहु भाउ ॥ ८ ॥

तेजपालि गिरनारतले, तेजलपुरु नियनामि । कारिउ गढ-मढ-पवैपवरु, मणहरु घरि आरामि ॥ ९ ॥
तहि पुरि सोहिउ पासजिणु, आसारायविहारु ।
निम्मिउ नामिहि निजजणणि, कुमरसरोवरु फारु ॥ १० ॥

तहि नयरह पुरवदिसिहि, उग्गसेण गढुग्गु । आदिजिणेसरपमुहजिणमंदिरि भरिउ समग्गु ॥ ११ ॥
बाहिरि गढ दाहिणदिसिहि, चउरियवेहिविसालु ।

लाङ्कुकलहहियओरडीय, तडि पसु ठाइ कराल ॥ १२ ॥

तहि नयरह उचरदिसिहि, साल-अंभसंभार । मंडण महिमंडल....., मंडप दसह उयार ॥ १३ ॥
जोइउ जोइउ भवियण, पेमि गिरिहि दुयारि । दामोदरु हरि पंचमउ, सुवभरेहनह पारि ॥ १४ ॥
अगुण अंजण अंबिलीय, अंबाडय अंकुलु । उंबरु अंबरु आमलीय, अगरु असोय अहलु ॥ १५ ॥
करबर करपट करणतर, करबंदी करवीरा । कुडा कडाह क्यंब कड, करब कदलि कंपीर ॥ १६ ॥
वेयलु वंजलु बउल बडो, वेडस वरण विडंग । वासंती वीरिणि विरह, वंसियालि वण चंग ॥ १७ ॥
सीसमि सिबकि सिरसमि, सिखुबारि सिरखंडा । सरल सार साहार सय, सागु सिणदंड ॥ १८ ॥

१ वहण=कारण ॥ २ मंडल=देश ॥ ३ राजते=शोभे छे ॥ ४ सिरि=मस्तक=क्षिक्षर ॥ ५ प्रणा=पाणीकी परब ॥ ६ स्फार=प्रचान ॥

पहच-कुल-फलुलसिय, रेहइ तहि वणराइ । तहि उजिलतलि धम्मियह, उङ्गु अंगि न माइ ॥ १९ ॥
बोलावी संघह तणीय, कालभेषंतर पंथि । मेल्हविय तहिं दिद धणीय, वस्तुपाल वरमंति ॥ २० ॥

॥ प्रथमं कडवं ॥

दुविहि गुजारदेसे रिउरायविहंडणु, कुमरपालु भूपालु जिणसासणमंडणु ।
तेण संठाविजो सुरठदंडाहिवो, अंबओ सिरिसिरिमालकुलसंभवो ।
पैंज सुविसाल तिणि नैठिय, अंतरे धवल पुणु पैरव भराविय ॥ १ ॥
घनु सु धवलह भाउ जिणि पाग पयासिय, बारविसोचरवरसे जसु जस दिसि वासिय ।
जिम जिम चडहं तडि कडणि गिरनारह, तिम तिम ऊडहं जण भवण संसारह ।
जिम जिम सेउं जलु अंगि पलोइए, तिम तिम कलिमलु सयलु ओहइए ॥ २ ॥
जिम जिम वायह वाउ तहि निज्जरसीयलु, तिम तिम भवदुहदाहो तकखणि तुष्टु निष्टुलु ।
कोइलकलयलो मोरकेकारवो, सुर्म्मए महुयर महुरु गुंजारवो ।
पाज चडतह सावयालोयणी, लाशारामु दिसि दीसए दाहिणी ॥ ३ ॥
जलदजालवयाले नीझरणि रमाउलु, रेहइ उजिलसिहरु अलि-कज्जलसामलु ।
बहलवुहु धातुरसमेउणी, जत्थ उलदलह सोवन्नमह मेउणी ।
जस्थ दिप्पति दिव्वोसही सुंदरा, मुहिर वर गरुय गंभीर गिरिकंदरा ॥ ४ ॥
जाहु कुंदु विहसंतो जं कुसुमिहि संकलु, दीसइ दस दिसि दिव्वो किरि तारामंडलु ।
मिलियनवलवलिदलकुसुमक्षलहालिया, ललियसुरमहिवलयचलणतलतालिया ।
गलियथलकमलमयरंदजलकोमला, विउल सिलवटु सोहंति तहिं संमैला ॥ ५ ॥
मणहरधणवणगहणे रसिर हसिय किनरा, गेउ मुहुरु गायंतो सिरिनेमिजिणेसरा ।
जस्थ सिरिनेमिजिणु अच्छउ अच्छरा, असुरसुरउरगकिनरयविजाहरा ।
मउडमणिकिरणपिजिरिय गिरियसेहरा, हरसि आवंति बहुभत्तिभरनिभरा ॥ ६ ॥
सामियनेमिक्कुमारपयपंकयलंछिउ, धेर धूल वि जिण धन्न मन पूरइ वंछिउ ।
जो भवकोडाकोडु....., अनु सोवच्चु धणु दाणु जउ दिज्जए ।
सेवउ जडकम्मधणगंठि जउ तिज्जए, तउ उजितसिहरु पाविज्जए ॥ ७ ॥
जम्मणु जोव[णु] जीविय तसु तहिं कयत्थू, जे नर उजितसिहरु पेक्खइ वरतित्थू ।
आसि गुरजरधरय जेण अमरेसह, सिरिजयसिंघदेउ पवरु पुहवीसह ।
हणवि सोरढु तिणि राउ धंगारउ, ठविउ साजणु दंडाहिवं सारउ ॥ ८ ॥

१ उडवट=मुम भावना ॥ २ पयाप्पहाड उपर चडवा माटे पगथीयां बाँधेलो रस्तो ॥ ३ निष्टिता=सैयार करावी ॥ ४ प्रया=राजीनी परव ॥ ५ स्वेदजल=परसेवो ॥ ६ सुर्म्मए=धर्यते=संभाय छे ॥ ७ क्षयामला=काली ॥ ८ हरेण=हरसे ॥ ९ पृथ्वी अने धूल पण ॥

बहिष्मु नेमिजिणिद तिणि भवणु कराविउ, निम्मलु चंद्रु विवे नियनाउं लिहाविउ ।
ओरविक्खंभवायंभरसाउलं, ललियपुत्तलियकलसकुलसंकुलं ।
मंडपु दंड घणुतुंगतरतोरणं, धवलिय बजिङ्ग रुणझणिरिकिफिणिधणं ।
इक्कारसयसहीउ पंचासीय वच्छरि, नेमिझ्यणु उद्धरिउ साजणि नरसेहरि ॥ ९ ॥
मालबमंडलगुहमंडणु, भावडसाहु दालिखुसंडणु ।
आमलसार सोबज्जु तिणि कारिउ, किरि गयणंगण सूरु अवयारिउ ।
अवरसिहर वरकलस इलहलह मणोहर, नेमिझ्यणि तिणि दिहु दुह गलह निरंतर ॥ १० ॥

॥ द्वितीयं कडवं ॥

दिसि उत्तर क्लसमीरदेसु नेमिहि उम्माहिय । अजिउ रतन दुह बंधे गरुय संघाहिव आविय ॥ १ ॥
हरसवसिण धणकलस भरिवि ति न्हवणु करंतह । गलिउ लेव सु नेमिविब जलधार पडंतह ॥ २ ॥
संघाहिबु संवेण सहिउ नियमणि संतविउ । हा हा ! धिगु धिगु ! मह विमलकुलगंजणु आविउ ॥ ३ ॥
सामियसौमलधीरचरण मह सरणि भवंतरि । इम परिहरि आहार नियमु लहउ संघधुरंधरि ॥ ४ ॥
एकवीसि उपवासि तामु अंबिकदेवि आविय । पमणइ सैपसन्न देवि जय जय सहाविय ॥ ५ ॥
उद्गविषु सिरिनेमिविबु तुलिउ तुरंतउ । पच्छलु ममै जो इसि वच्छ । तुं भवणि बलंतउ ॥ ६ ॥
णहवि अंवि.....कंचणं.....बलाणह ।बिबु मणिमउ तहिं आणइ ॥ ७ ॥
पढमभवणि देहलिहि छुडि पुडि आरोविउ । संघाहिवि हरिसेण ताम दिसि पच्छलु जोहउ ॥ ८ ॥
ठिउ निष्ठलु देहलिहि देवु सिरिनेमिकुमारो । कुमुमवुडि मिलहेवि देवि किउ जहजहकारो ॥ ९ ॥
वहसाहीपुक्षिमह पुञ्चवंतिण जिणु थपिपउ । पच्छिमदिसि निम्मविउ भवणु भवदुहतस्कपिउ ॥ १० ॥
न्हवण-विलेवणतणीय वंछ भवियणजण पूरिय । संघाहिवि सिरिअजित-रतनु नियदेसि पराहय ॥ ११ ॥

सयल वित्ति कलिकालि कालकलुसे जाणवि छाहिउ ।

शलहलंति मणिविबकंति अंबिकुरं आहय ॥ १२ ॥

समुद्विजय-सिवदेविपुतु जायवकुलमंडणु । जरासिंधदलमलणु मयणभडमाणविहंडणु ॥ १३ ॥
राहमझमणहरणु रमणु सिवरमणि मणोहरु । पुञ्चवंत पणमंति नेमिजिणु सोहगुसुंदरु ॥ १४ ॥
वस्तपालि वर मंति झ्यणु कारिउ रिसहेसह । अट्टावय-सम्मेयसिहरवरमंडपु मणहरु ॥ १५ ॥
कउडिजमसु भर्देवि दुह वि तुंगु पासाहिउ । धम्मिय सिरु धुणंति देव वलिवि पलोइउ ॥ १६ ॥
तेजपालि निम्मविउ तथ तिहुगणजणरंजणु । कंख्याणउतउतुंगु झ्यणु लंधिउ गयणंगणु ॥ १७ ॥

३ निज नाम ॥ २ व्रायिद्रलण्डनः=दारिद्रने दूर करनार ॥ ३ नेमिनाथना मंदिरनो आमलसारो ॥ ४ बन्धु=माई ॥
५ सामियसामल=नेमिनाथ भगवान् ॥ ६ सुप्रसन्ना ॥ ७ निषेधार्थक अव्यय ॥ ८ बलानक=मंदिरनो एक भाग ॥ ९ परागताः=पाण्डा आव्या ॥ १० कस्याणकत्रयतुंगं भवनं=नेमिनाथ भगवानना शीक्षा केवलक्षान अने निषर्गीय ए ग्रन्थ कस्याणकने भगवान् विशाळ मंविर ॥

दीसह दिसि दिलि कुंडि कुंडि नीकरणउ भालो । ईद्रमंडपु देपालि मंदि लद्दरिउ विशाळो ॥ १ ॥
बहरावणगवरायपायमुहासम टंकिउ । दिह मधंदुकुंड विमङ्गु निज्ञरसमलंकिउ ॥ २ ॥
गयथंगंग जं सवलतित्थअवथारु भणिज्ञह । पक्सालिवि तहि अंगु दुक्स जलञ्जलि दिज्ञह ॥ ३ ॥
सिदुवार-मंदार-कुरबक-कुंदिहि सुंदह । जाइ-जह-सववति-वितिफलेहि निरतह ॥ ४ ॥
दिहुच छत्रसिलकडणि अंबवणु सहसारामु । नेमिजिणेसरदिक्स-नाण-गिजाणह ठानु ॥ ५ ॥

॥ तृतीयं कठबं ॥

गिरिगरुया सिहरि चडेवि, अबै-जंबाहि बंबालिउ ए ।
समिणी ए अंधिकदेविदेउलु दीदु रैमाउलं ए ॥ १ ॥
बज्ञह ए बाल कंसाल, बज्ञह महल गुहिरसर ।
रंगिहि ए नज्ञह बाल, पेसिवि अंधिकमुहकमलु
खुभकरु ए ठविउ उच्छंगि, विभकरो नंदणु पासिक ए ।
सोहह ए ऊर्जिलसिंगि, सामिणी सीहैसिंधासणी ए
दावह ए दुक्सहं भंगु, पूरह बंडिउ भवियजण ।
रक्सह ए चउविह संघु, सामिणी सीहैसिंधासणी ए
दस दिसि ए नेमिकुमारि, आरोही अवलोइउ ए ।
दीज्ञह ए तहि गिरनारि, गयथंगणु अबलोणसिहरो
पहिलह ए सांबकुमारु, बीज्ञह सिहरि पज्जम्ब पुण ।
पणमह ए पामहं पाह, भवियण भीसण भवभमण
ठामि ठामि ए रखणसोवच्च, बिव जिणेसर तहि ठविय ।
पणमह ए ते नर धच्च, जे न कलिकालि भेलमयलिया ए
जं फलु ए सिहरसंभेय, अड्हावय नंदीसरिहि ।
तं फलु ए भवि पामेह, ऐखेविणु रेवंतसिहरो
गहगण ए माहि जिम भाणु, पवयमाहि जिम मेरुषिरि ए ।
जिहु भुयणे ए तेम पहाणु, तित्थमाहि रेवंतगिरि
धवल धव ए चमर मिगार, आरति मंगलपट्टव ।
तिलक मउड ए कुंडल हार, भेषाढबर जावियं ए ॥ १० ॥

१ दसे विकासो ॥ २ अरणांनी भाला ॥ ३ अंगा अने आंबूनो झाडोयी ॥ ४ ख स्त्रायिनी ॥ ५
रमणीय ॥ ६ सज्जयतन्त्रये ॥ ७-८ अनिकादेवी ॥ ९ यलमसिनिता-स्त्रायमेवा ॥

दिवंहि ए नर जो पवर, चंद्रोये नेमिजिणेसरवरभूयणि ।
इहभवि ए भुंजवि भोय, सो तित्येसरसिरि लहइ ए || ११ ||
चउविहु ए संषु करेह, जो आवइ उज्जितगिरि ।
दिविसैवहु ए राशु करेह, सो मुंचहु चउगहगमणि
अहुविह ए ज्यय(झय) करंति, आठई जो तहिं करह ए ।
अहुविह ए करम हणंति, सो अहुभवि सिज्जहइ ए
अंबिल ए जो उपवास, एगासण नीदी करइ ए ।
तसु मणि ए अछइं आस, इहभव परभव विविह परे
पेमिहि ए मुणिजण अन्नह, दाणु धम्मियवच्छलु करहं ए ।
तसु कही ए नहीं उपमाणु, परभाति सरण तिणउ
आवइ ए जे न उज्जिति, धरधरह धंधोलिया ए ।
आविही ए हियह न संति, निप्फलु जीवित तासु तणउ
जीवित ए सो जि परि धन्नु, तामु संमच्छर निच्छणु ए ।
सो परि ए मासु परि धन्नु, बलि हीजह नहि वासर ए
जहिं जिणु ए उज्जिलठामि, सोहगसुंदरु सामलु ए ।
दीसह ए तिहणसामि, नयणसलूणउ नेमिजिणु
नीजर ए चमर ढलंति, मेघाडंबर सिरि धरीहं ।
तिथह ए सउ रेवंदि, सिंहासणि जयह नेमिजिणु
रंगिहि ए रमह जो रासु, सिरिविजयसेणि सूरि निम्मविउ ए ।
नेमिजिणु ए तूसह तासु, अंबिक पूरह मणि रलीए
॥ चतुर्थ कडवं ॥

॥ समन्तु रेवंतगिरिरासु ॥

१ आये ॥ २ चंद्रवो ॥ ३ देवांगना ॥ ४ धरक्षांगणे ॥ ५ धंधोलीया=धंधामां रच्यापच्या रहेनारा,
अथवा छोड़लीया=शत दिवस धमाल करनारा ॥ ६ निर्जर=देव ॥ ७ रेवंतगिरि ॥

ષોડશં પરિશિષ્ટમ

પાલહણ પુચ્છ કૃત

આબૂરાસ

૬૦ ॥ પૈણમેવિણુ સામિણિ વાએસરિ, અમિનબુ કવિતુ રેયં પરમેસરિ ।
નંદીવરધનુ જાસુ નિવાસો, પભણડ નેમિજિણંદહ રાસો || ૧ ॥

ગૂજરદેસહ મજિણ ફહાણ, ચંદ્રવતી નયરિ વક્ખાણં ।
વાવિ સરોવર સુરહિ સુણીજાદ, બહુયારામિહિ ઊપમ દીજાદ || ૨ ॥

ત્રિગ ચૈચરિ ચેઉહટ વિથારા, પ(મ)ઢ મંદિર ધવલહર પગારા ।
છત્રિસ રાજકુલી નિવસેઝ, ધનુ ધનુ ધમ્મિડ લોકુ વસેઝ || ૩ ॥

રાજુ કરઇ તહ(હિં) સોમનરિંદો, નિમ્મલ સોલકલા જિમ ચંદો ।
હિવ વન્નડ ગિરિ પુહવિ પ્રસિદ્ધ, બહુયાં લોયાં તણાં જુ તીથો || ૪ ॥

બણ બણરાયાં સજલુ સુઠાં, નહિં ગિરિવર પુણુ આબૂ નોંઠાં ।
તસુ સિરિ વારહ ગામ નિવાસો (સી), રાઠી ગૂગલિયા તહિં તપસી || ૫ ॥

તસુ સિરિ પછિલાં દેઉ સુણીજાદ, અચલેસહ તસુ ઊપમુ દીજાદ ।
તહિ છાદ દેવત બાલકુમારી, સિરિ મા સામિણિ કહાં વિચારી || ૬ ॥

વિમલિહિં ઠવિયાં પાવનિકંદો, તહિ છાદ સામિઉ રિસહજિણિંદો ।
સાનિધુ સંવહ કરઇ સંખેવી, તહિ છાદ સામિણિ અંબાએંબી || ૭ ॥

પુરુષ પચ્છિયમ ધમ્મિય તહિં આવહિં, ઉત્તર દક્ષિણ સંધુ જિણવરુ ન્હાવહિં ।
પેસહિ મંદિર રિસહ ખતા (રવના ?), નાચહિ ધમ્મિય બહુ ગુણવત્તા(ના) || ૮ ॥

ધનુ ધનુ વિમલાંડિ જેળિ કરાવિઉ, સસિમંડલિ જિણિ નાઉ લિહાવિઉ ।
વિહું સઝ વરિસહ અંતરુ સુણીજાદ, બીજાં નેમિહિ શુચણુ સુણીજાદ || ૯ ॥

ઠવણિ-

નમિવિ ચિરાણાં થુ(પુ ?) ણિ નમિવિ, બીજા મંદિરનિવેસુ ।
ત પુહવિહિ માહિં જો સર્લિહિજાણ, ઊતિમ ગૂજર દેસુ ॥

ત સોલંકિયકુલસેંભમિં, સૂરડ જગિ જસવાઉ ।
ત ગૂજરાતધુરસમુધરણુ, રાણડ લ્લણપસાઉ || ૧૦ ॥

પરિવલુ દલ્લ જો આડવણ, જિળિ પેલિઉ સુરિતાણુ ।
રાજુ કરઇ અન્નય તણઓ, જાસુ અગંજિઉ માણુ ॥

૧ પ્રણામ્ય ॥ ૨ રચયામિ ॥ ૩ ચત્વર ॥ ૪ ચૌટાં ॥ ૫ નામ ॥ ૬ શાસ્યતે ॥ ૭ સંમિદેંદ્રસંમિદેં

સંભૂતઃ ॥ ૮ ગૂજરાતની ધૂરને બહેનાર ॥

लुण्ठापुतु छु विरधवले, राणउ अरडकमलु ।
त चोर-चराडिहि आगलओ, रिपुरायह उरि सालुं

॥ ११ ॥

भास-

वस्तुपालु तसु तणइ महंतउ, सहुयरु तेजपाल उदयंतउ ।
अभिणवु मंदिर जेण कराविय, ठावि ठावि जिणबिंब भराविय
महिमंडलि किय जेणि उद्धारा, नीरनिवाणिहि सत्तृकारा ।
सेत्तुजसिहरि तलावु खणाविउ, अणपमसरु तसु नामु दियाविउ
नितु नितु सुरसंघ पूजा कीजइ, छहि दरिसणि घरि दाणु वि दीजइ ।
संघ पुरिस पुहविहि सलहीजइ, रीतु वधेला बहु मानिजइ
अच दिवसि निय मणि चितीजइ, महतइ तेजपालि पमणीजइ ।
आबू भणिजइ तीथहं ठाउं, जइ जिणमंदिरु तह नीपावउ
ठाकुरु ऊदल ताव हकारिउ, कहिय बात कौनहइ बहसारिउ ।
आबू रिस्वभह मंदिरु आछइ, महतउ तेजपालु इम पूछइ
बीजउ नेमिहि भुवणु करेसहं, जइ जिणमंदिर थाँहर लहिसहं ।
पहिलउ सोमनरिंदु पूछीजइ, कटक माहि जाइवि विनवीजइ

ठवणि-

महतिहिं जायवि भेटियओ धावलदेविमलारु ।
त कड(र) जोडेविणु वीनतओ, सोमनरिंद्र प्रमारु ॥
विनति अम्हहं तणीय, सामिय तुहु अवधारि ।
त मागउ थाहर मंदिरह, आबूयगिरिहि मझारि
त तूठउ धांवलदिवितणउ, आगइ कहियउ एहु ।
त विमलह मंदिर आससउं, बिजउं करावहु देव ॥
अम्हि धुरि गोठिय आबूयह, आगे अछह निवाणु ।
त करिज मंदिरु तिजपाल ! तुहुं, हियइ म धरिजहु काणि

भासा-

दिस(य!)इ आय(ए)सु तह सोमनरिंदो, वस्तुपालु तेजपालु आणंदो ।
जिण समिय मंदिरु वेगि निप्पज्जए, अइसु निरोपु दिव उदुलु दीजए
अहसि ऊदल्लु चंद्रावती आवए, सयलु महाजनु घरि तेडावए ।
चालहु हिव आबूह जाएसहं, जिणमंदिर थाहर भूमि जोएसहं

॥ २१ ॥

चलिउ ऊदल्लु महाजनि सहितउं, आबुय देवलवाडइ पहुतओ ।
 ठामि ठामि मंदिरभूमि जोयंतओ, मिलिउ मेलावओ आबुय लोयहं ॥ २२ ॥
 मंदिर थाहर नवि आपेसहं, प्राणिहिं भुवणु करण नवि देसहं ।
 आगए विमलमंदिर निष्पनओ, सिर मा भूमिहि दीनउ दानु ॥ २३ ॥

ठवणि-

ऊदल्लु तित्थु [त]पसीय बहु परि मंनावह ।
 राठी वर गूगुलिया वस्तइं पहिरावह ॥ २४ ॥

भास-

अम्हि धुरि गोट्ठिय दिव निमिनाथ, जिणभूमि आपहु ते इसु बाहा ।
 विमल मंदिरु ऊतर दिसि जाम, लङ्घ भूमि तिल(ज)पालु वधाविउ ॥ २५ ॥
 महतइ तेजपालु पभणीजह, सोभनदिउ सुतहारु तेडीजह ।
 जाहज आबुइ तुहुं (मुहुतु) कमठाए, वेगिहि जिणमंदिरु निष्पाए ॥ २६ ॥
 चालिउ पइठ करिउ सुतहारो, भूमि सुवण इकवार अहारो ।
 सोभनदिउ विगि आबुइ आवह, कमठा मुहुतु आरंभु करावह ॥ २७ ॥

भास-

मूलगग पायारधर, पूजिउ तुरुम प्रवेसु ।
 भरिउ गडारउ तहि ज पुरे, स्वरसिल हुयउ निवेसु ॥
 आसंनी तहि ऊघडिय, पाथरकेरिय खाणि ।
 निपनु गडारउ मूलिगओ, देउलु चडिउ प्रमाणि ॥ २८ ॥
 रूपा सरिसउ समतुल ए, दसहि दिसावरि जाइ ।
 पाहणु तहि आरामणउं, आणिउ तहि कमठाइ ॥
 सरवरु धाढु जो नीपजए, मंदिरु बहु विस्तारि ।
 त आतिसइ दीसइ रूवडउं, नेमिजिणिंद पयारु ॥ २९ ॥

ठवणि-

सोभनदेउ सुतहारो कमठाउ करावह ।
 सइ तउ मंत्रि तिजपालो जिणविबु भरावह ॥ ३० ॥

भास-

खंभायति वर नयरि विबु निष्पज्जए, रयणमउ नेमिजिणु ऊपम दीजए ।
 दिसति कंति रयणकंति सामल धीरा, बहु पंकति बहु सफति जाइ सरीरा ॥ ३१ ॥

निवसथ विंबु जो सालह संठिओ, विजयसिष्मद्वरि गुरि पढम पतीठिओ ।
निपनु परिपूरु सामलदेउ, धणु तिजपाल जिणि आशुय नेओ
भवलसुत सुरहि पुत ठविय तहिं रहवरे, सडइ सुहडा सुमुहआ आशुय गिरवरे ।
नवरवर गामह माहिहि आवए, सहत भवियहो जिण पहेरावए
आशुय तलवटे रथु पहूतओ, तेणीय ऊवरणीय पाज चडंतओ ।
थडऊथडइ रहु पाज विसमी खरी, वेगि संपत्त अंबिक वर अच्छरी
सानिधि अंबाइय रथु चडंतओ देवलवाडए दिणि छठइ पडतओ

ठवणि-

आशुय सिहरि संपत्तु देउ पहु नेमिजियेसरु ।
वणसह सवि विहसणहं लग्ग आइउ तित्थेसरु
उच्छंगिहि जुगादिजिणु जिणु पहिलउ ठविजइ ।
तुहुं गरुयउ निमिनाथ विंबु तिजपालिहि कीजइ
हक्कारहु वर जोइसिय पइठह दिणु जोयहु ।
तेडावहु चउविहं संघु पुर-पाटण-गामहं
बार संवच्छरि छियासियए(१२८६) परमेसरु संठिउ ।
चेत्रह तीजह किसिण पखि निमि सुवणिहि संठिउ
बहुं आयरिहि पयटु किय बहु भाउ धरंता ।
राशु न(त) वद्दइ भवियजणाहं निमित्तिथु नमंतह
श्रावे हंडावडा तणे जिणु पहिलउ न्हवियउ ।
पाछइ न्हवियउ सयल संघि तुम्हि पणमहु भवियहु
[.....] तासु कल्याणिकु कीजइ ।
दसमि तिथु नेमि जात रेसि संघ पासि मंगीजइ
संघु रहिउ जिणि जात करिवि नेमिभुवण विसाल ।
पूरि मणोरह वस्तुपाल मंति तेजपाल
मूरति वैपु असराज तणी कुमरादि विभाया ।
काराविय नेमिभुवणुमाहि विहु निम्मलकाया
काराविउ निमिभुवण फल लयउ संसारे ।
निसुणहु चरितु नदन्ते (ते ?) तिणि धंधूय प्रमारे
रिष्ममंदिरु सासणि जाणु धुंधुय दिन्नउ डकडवाणिउं गाउं ।
तिणि लुमसीहि उजालिउ नाउं नेमिहि दिन्नु डवाणिउं गाउं

[भास]

[.....]

अनेक संधपति आबुइ आवहिं, कनक कपड निमिजिणु पहिरावहिं पूजाहि माणिक मोतिय हूँले, किवि पूजाहि सोगंधिहि फूले ।	॥ ४७ ॥
केवि हु हियडय भावण भावहिं, केवि हु मंनीणइ आराहहिं	॥ ४८ ॥
केवि चडावलि नेमि नभीजइ, रासु वयणु पालहण पुत्र कीजइ ।	॥ ४९ ॥
बार संवच्छरि नवमासीए(१२८९), वसंत मासु रंमाउल दीदे एह राहु(सु :) विस्तारिहिं जाए, राष्ट्रह सयल संघ अंबाई ।	॥ ५० ॥
राखइ जाखु जु आछइ खेडइ, राखइ ब्रह्मसंति भूढेरह	

॥ आबूरासः समाप्तः ॥

परिशिष्टानि ।

सुकृतकीर्तिकलोलिनी—आदि वस्तुपालप्रस्तिसंग्रह ।

पद्यानुक्रमणिका ।

संख्या	पृष्ठा	विवरण	संख्या	पृष्ठा	
अद्वारवणगयराय	१९	१०२	अन्वयेन विनयेन	४३	६२
अद्विं ऊदल्लु	२१	१०५	अन्न दिवसि	१५	१०५
अकारयन्नगाकारं	४०	२६	अपास्य शौण्डीर्यमदं	१५	२५
अगण्यपुण्योदय	३०	२६	अपि चाप्यायिता	६	९८
अगुण अंजण	१५	९९	अप्राप्तादशगुणां	८४	७
अग्ने हम्मीरवीरद्	६०	५	अभूदनुपमा पत्नी	५९	६३
अचिन्त्यदातार	१७	४३	अन्यर्थ देवान्	३१	२६
अच्छिद्ग्रो यदि तक्तः	९९	८	अम्बिकामवने येन	८८	२८
अजनि रजनिजानि	३	७६-१	अंबिल ए जो	१४	१०३
अजयदजयपाल	२७	३६	अम्मोजेषु मराल	८	५२
अटुविह एजय	१३	१०३	अम्मोदभ्रमभाजि	१२६	११
अणहिलपुरमस्ति	३	५९	अम्हि धुरि	२५	१०६
अत्यद्भुता सचिवपुङ्गव !	३०	२०	अयं हि राकासु	८	२४
अयद्भुतैः कृत्यशतैः	१०२	२९	अयमनुदिनदानो	६०	८६
अत्रैव शत्रुञ्जय	८२	२८	अरिवलदलनश्री	३	४९
अत्रैव शैले स्वयाच्छकार	७८	२८	अरुन्धतीव कान्ता	४०	८५
अनन्तप्रागलभ्यः	२२	३२	अर्कपालितकग्रामे	५९	३८
अनुजन्मना समेतस्	१९	६०	अर्चिषामयन	२६	८३
अनुजोऽस्यापि	८	७६-२	अणोराजाङ्गजातं	३३	३६
अनुपमदेवी देवी	५३	६३	अर्थदानदलिता	६३	८७
अनुपमदेव्यां पत्न्यां	१३	७६-२	अर्थव्यर्थितदुस्थ	४२	४
अनुपमदेव्यास्तेन	८४	२८	अहस्तनोतु भुवना	१	७८
अनुसृतसज्जन	५१	६३	अहृतविजगद्	२	९५
अन्तःकज्जलमसुलश्रि	२०	१९	अवश्यन्नाशु	२३	३५
अन्तःक्षारं रिष्णां	२	४०	असावाशाराजं	६	७६-२
अन्तर्थक्तीर्तिकासारं	२८	३६	असौ कीर्तीः स्वका	१४१	१२
अन्तर्व्योमं श्रवन्ती	८३	७	असौ भुवनपालस्य	६१	२७
अन्ये केचन	५२	३७	अस्ति प्रशस्ता	१	८१

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
अस्ति स्वस्तिनिकेतनं	४९	६३	आस्यं कस्य न	९	९२
अस्थापयत् स्थिरमतिः	६३	३८	आहडस्तदजनि	२०	२
अस्मद्ग्रोत्रैकमित्रं	१३२	१२	इंदुर्बिंदुरपां	७	५७
अस्मिन्नाभिभुवः	१६६	१५	इतरगुणकथायाः	६	४२
अस्मिन्नुक्तवेशम्	१३	२	इतश्चैलुक्यवीराणां	२५	६०
अस्य त्रिकमविकमस्य	५३	५	इथं श्रीवस्तुपालः	९	९३
अहंकृतिलतायुधं	२	९३	इत्यन्तःस्मित	६९	३९
अहिणवु नेमि	९	१०१	इत्युक्त्वा प्रीति	५१	३७
आकृष्टे कमलाकुलस्य	१३	५३	इत्युक्त्वा मम	६७	३९
आगो यद्युवारि	१७	३१	इदं सदा सोदरयो	२१	६०
आजन्मत्रासहेतु	६८	६	इन्दुः पत्रावलम्बं	१५८	१४
आत्मगुणैः किरणैरिच	६	५९	इन्दुः पत्रावलम्बं	१७	१९
आत्मा त्वं जगतः	८	४९	इन्दुर्नन्दिति	११	४०
आदिमः प्रशम	४१	८५	इन्दुर्बिंदुरपां	१२८	११
आदेशं देव ! यदेवं	६८	३९	इमां समयवैषम्याद्	१५	२२
आदेनाऽप्यपवर्जनेन्	६	५२	इमामकृत सदगुरोर्	१७८	१६
आनन्दचन्द्राऽभरचन्द्र	१५३	१३	इयमनुपमदेवी	५४	६३
आनन्दाऽभरसूरी	१००	२९	इह तेजपाल	७	४७
आनन्दाय सुदर्शना	३	३४	इह वालिगमुत	१	४७
आपये प्रसृति	३०	३६	इह वालिगमुत	१	५०
आबुय तलवटे	३७	१०७	इहैवाष्टापदोद्घारं	६५	२७
आबुय सिहरि	३६	१०७	इदृग्रूपगुरुपदेशा	१६२	१४
आयाताः कति	५	४७	उच्छर्णिहि	३७	१०७
आयुर्वायुहतोर्मिवत्	१६१	१४	उद्गेविषु सिरिनेमि	६	१०१
आवइ ए जे	१६	१०३	उत्कर्षप्रगुणां	४५	३७
आशाम्यो नवपुष्प	२६	१९	उत्कुलमल्ली	५४	८६
आशाराज इति	१०७	९	उत्सेकितोत्सन्न	१७	८०
आशाराजः शास्यधी	२१	२५	उदग्रेतेजःसुकृतैक	१०	२४
आशाराजस्य पितुः	९७	२८	उदारः शूरो वा	४	४९
आश्वर्यै वसुवृष्टिभिः	१८	३१	उदधारानुजो यस्य	५२	२७
आसीदीशो दोषदा	१६	२	उद्भूत्य पञ्चासर	३२	२६
आसीश्वर्णपर्णदिता	६९	६४	उद्भूत्य वैद्यनाथस्य	५८	२७
आस्ते तस्य सुधारहस्य	११६	१०	उद्ग्रास्वद्विश्वविद्या	४१	९०

पद्मानुकमणिका ।

११३

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
उद्भूतप्रतिभा	१३०	११	कल्पद्रुप्रसवावतंस	६	४०
उद्भूतप्रतिभा	१३	१८	कल्पविकरणादितो	१९	८०
उपार्जि विभुता	९७	८	कवीन्द्रपदवीस्थृहा	५०	८५
अदल्लु तिथ्यु	२४	१०६	कस्याऽपि कविता	४	५४
ऋग्वेदी च	११	८२	कान्तं यं वीहय	३९	४
ऋजुरोहित	२४	८३	कान्तस्वान्तसरो	१११	९
एकवीसि उपवासि	५	१०१	कान्ता जगात्रितय	१९	८९
एकाऽपि प्रमदां	१२	२	कान्ते कृष्णेऽभिभूते	४०	४
एकैकेन विमोह	१८	८०	काराविड निमु	४५	१०७
एकोत्पत्तिनिमित्तौ	२३	६०	काले यत्खड्गदण्डे	२१	२२
एतद्वर्मस्थानं	७२	६५	काव्येन नव्यपद्	४९	८५
एतस्मादजनि	७	५९	किं च कारयता	५७	२७
एतस्मिन् भव	४	९१	किं चित्रं यदि	१६८	१५
एतस्मिन् वसुधा	१६	२२	किं वण्णो लवण	७८	७
एतस्मिन् वसुधा	७	५५	किञ्चितेन गुणैः	१४९	१३
एतस्य विकसद्धर्मा	१०६	९	किमिह कपाल	१	६७
एताः शमाभृतरसन	११	९२	कीर्तिकश्मलित	४४	३७
एतेभ्यः प्रभुणा	३९	९७	कीर्तिस्तोमसुधा	७	३४
एतेऽश्वराजपुत्रा	१८	६०	कीर्त्या सौरभसार	३८	९०
एह राहु	५०	१०८	कुण्डलप्रतिमित	९२	८
और्वाम्नाऽपत्तत	३०	९०	कुदेशना च या	८	९५
औषधीशसखः सत्यं	४	४०	कुन्दं मन्दप्रतापं	६	३०
कउडिजकवु	१६	१०१	कुमारपालस्य	२९	८४
कथ्यन्ते न महीभृतः	६१	५	कुमारपुत्रेण	६७	८७
कमठघनभृताम्भो	१	७८	कुर्वन् परार्थगणिते	१६	८९
करवर करपट	१६	९९	कुर्वन् मुहुर्विमल	३३	९०
करसरसिरुहं ते	५	४१	कुशोपशोभितैर्	२३	८३
करसरसिरुहं ते	९	४२	कुम्भापिष्ठ ! मण्डन	३	९४
कराम्भोजं भेजे	३४	३	कृतं षड्विघजीवानां	३	९५
कराम्भोजं भेजे	१०	१८	कृत्वाऽधः कच्छपं	६	३४
कर्णायास्तु नमो	२८	३३	कृष्णीकृतारिवदना	४	८८
कर्णे खलग्रलपितं	१०	५०	के निधाय वसुधातले	६	४९
कर्मसाक्षिभवताप	१५१	१३	केवि चडावलि	४९	१०८

	स्लो०	पृ०		स्लो०	पृ०
कोट्टरैः कटका	१५	३१	गुरो[न्त]स्या[शि]षां	७१	६४
कोट्टरैः कटका	२	५१	गूजरदेसह मञ्जि	२	१०४
कोदण्डं स्वकरे	६४	६	गृहीतं कुप्यता	३७	८४
कोपानिज्जिता	७७	७	गृहणासि नाम परतोऽपि	४	४१
कोपाटोपपरैः परैश्	१३७	१२	गोप्रहप्रोज्जिता	३५	२६
कोपाटोपपरैः परैश्	२	५६	गोमयसानुलिमे	६४	८७
क्रान्तशक्वलो	५४	५	गौरीवरध्वशुर	३०	६१
क्रामन्ति स्म यथा	१५	३५	ग्रामेऽर्कपालितक	६८	२७
क्रीडाकथासु सदसि	१३	८८	ग्रामे शासनदने च	१७२	१५
कुद्रे युद्धेषु यस्मिन्	८७	७	घण वणरायहं	५	१०४
कोथेन ज्वलितो	८	९२	घोरागण्यविलङ्घनै	७६	७
क्वचिदिह विद्वर्तीर्	३१	६१	चंडप्र[मा]दस[ज्ञः]	५	५९
क्षीणत्वं दाक्षिणात्या	६३	६	चक्रे कोपश्च	६	९५
क्षीणे चक्षुषि	५६	८६	चक्रे च यो धवलके	१३०	१५
क्षीराव्यिर्द्धठति	१३५	१२	चञ्चलप्रभम	४	८१
संभायति वर	३१	१०६	चण्डप्रसाद इति	१००	८
खेलत्वद्वाषपंडहि	३१	३	चण्डप्रसाद इति	५	८८
स्थातः सङ्ग्रामसिंहो	१३९	१२	चण्डप्रसादपुण्य	९०	२८
गथणगंग जं	२०	१०२	चण्डांशोरपि चण्डना	२२	२३
गर्जनिर्जरकुञ्जरे	१२९	११	चत्वारस्तनया	११२	९
गर्जनिर्जरकुञ्जरे	१२	१८	चलियउ ऊदल्लु	२२	१०६
गर्वात् पूर्व	१०	७९	चहुविहु ए सघु	१२	१०३
गहगण ए माहि	९	१०२	चान्दे कुले	१६	८०
गांभीर्ये जलधिर्	१	७६-३	चालिउ पहाठि	२७	१०६
गाथास्ता: खलु	८	७८	चित्रे चित्रं समुद्रात्	३२	३३
गामागर पुर	२	९९	चित्रं विवलगान्तपि	१७	२५
गिरिग्रह्या सिहरि	१	१०२	चिन्तातीतफलप्रदः	१	१
गुणप्रामे रामे	८	४०	चिन्तातीतफलप्रदः	३	७८
गुणधननिधान	५७	६३	चीत्कारैः शकटबजस्य	३७	३३
गुणौघहंसालि	१९	२५	चूडामणीकृतः	१०	८८
गुरजरधरधुरि	७	९९	चेतः किं कलिकाल !	३	२१
गुरुः कुलेऽस्य	११	२९	चेतः किं कलिकाल !	१	४७
गुरुः श्रीहरिभद्रोऽयं	८	७९	चेतः केतकगर्भं	२	१७

स्लो०	पृ०		स्लो०	पृ०
चौलुक्यः सुकृती	२८	६१ त एव स्तूयन्ते	६२	८६
चौलुक्य क्षितिपाल	५	४५ तजगत्यां च	६२	२७
चौलुक्यचन्द्र	४	९५ तजन्मा वस्तुपालः	२	९७
छद्मोसेकितनो	५	१ त तृष्ण	१९	१०५
जै फलु ए	८	१०२ ततोऽभवत् कीर्ति	९	२४
जगद्ग्रन्थंभन्यः	६५	६ तत्कामश्रीरजनि	३८	४
जड्डे हर्षपुरीय	१०४	२९ तत्कालं कलहे	२२	३५
जनव्यामोह	७	४२ तत् त्रैलोक्यनिभ	२०	३५
जम्बूदीपो जलधि		४३ तत्त्वोदिवर	२०	८०
जम्बणु जोव[णु]	८	१०० तत्पटे प्रथमः	६	७९
जथति विजयसेन	१५७	१४ तत्पदे विजयसेन	१०१	२९
जगत्यसमसंयमः	१	९३ तत्पदे विजयसेन	१७	७६-३
जलद्वालववाले	४	१०० तत्पदे विजयसेन	९	७९
जहिं जिषु ए	१८	१०३ तत्र प्राग्वाटान्वय	४	५९
जाइ कुंदु विहसंतो	५	१०० तत्र रैवतकाधीशः	७९	२८
जातः करीद्रोद्धुर	१७	२ तत्र लोलाकृतिं	५४	२७
जाता कृष्णपदात्	१३३	१२ तत्राऽस्मस्वामिनो	८१	२८
जाल्ह-माऊ-साऊ	१७	६० तत्रैकं राणक	६६	२७
जिषु तहिं मंडल	३	९९ तत्रैव वीरधवल	१७६	१६
जित्वा म्लच्छपतेर्	३८	८४ तत्रैवाकारयद्	७६	२७
जिम जिम वायइ	३	१०० तत्संभवत्रिभुवा	२१	८९
जीयाद् विजयसेनस्य	६	७८ तत्सत्यं कृतिभिर्	१०	३१
जीयासुः कवयो	८	१ तदत्तिके च निःशेष	८६	२८
जीवित ए सो	१७	१०३ तदन्वयाम्भोधि	३	२४
जुहूवन् पातक	७०	३९ तदात्मजः संयति	६	२४
जैनं धर्मसुरीचकार	२५	३६ तदिमै मौलिषु मौलिं	११८	१०
जोइउ जोइउ	१४	९९ तदीये शिखरे नेभि	८९	२८
ज्ञान-दर्शन-चारित्रं	९	९५ तनन्दनः कुमुद	१६	२५
ज्येष्ठः श्रेष्ठतमः	२८	८३ तमःसर्वान्नीने	१९	२२
ठाकुरु ऊदल	१६	१०५ तमहतमहं बहूचा	६९	६
ठामि ठामि ए	७	१०२ तमेकदा करारोप	६४	३८
ठिड निच्छलु	९	१०१ तयोः प्रथमपुत्रो	८	५९
णहवि अवि	७	१०१ तव वक्त्रं शतपत्रं	४७.	८५

	स्लो०	पृ०		स्लो०	पृ०
तसु मुह दंसणु	५	९९	तेजःपालः पालित	१५	६०
तसु सिरि पहिलउ	६	१०४	तेजःपालः सकल	६५	६४
तसु सिरि सामित	४	९९	तेजःपालः सचिवतिलको	२७	२५
तस्मात् कुमारः	२१	८३	तेजःपाल ! कृपालयुर्य !	६६	३९
तस्मादकल्पल	८	३४	तेजःपालयशो	७३	३९
तस्मादनंतर	२६	६०	तेजःपालस्य विष्णोश्च	९	५५
तस्मादभूदजयपाल	११	२४	तेजःपालस्य विष्णोश्च	१६	६०
तस्मादभूद्	१२	३५	तेजःपालेन पुण्यार्थी	६०	६३
तस्मान्नेत्रसुधाङ्गनं	३३	३	तेजःस्मूर्जितदीप	२५	३
तस्माद् भस्मीकृत	३५	३	तेजपालि निम्मविउ	१७	१०१
तस्माद् विस्मारित	१६	३५	तेजपालि गिरनार	९	९९
तस्मिन् काञ्चनकोटिभिः	२४	२३	तेजोवहिहुताप्तिदिग्	५१	५
तस्मै संयमिनामिनाय	५	८१	तेन भ्रातृयुगेन	६६	६४
तस्मै स्वर्ति चिरं	५	७६-४	तेन मंत्रिद्वयेनायं	२९	६१
तस्य गर्भगुहोत्सङ्गे	४३	२६	तेषां मृगाख्वर	७	९४
तस्य जगत्यां	५६	२७	तैस्तैर्येन जनाय	१६	३१
तस्य प्रिया प्रणय	२५	८९	तैत्रिभिः प्रथम	४३	८५
तस्य प्रिया मुद	११०	९	त्यजामि पापमाहारं	१०	९५
तस्याऽस्त्रया	१४	७९	त्यागाराधिनि राघवे	१०३	२९
तस्यानुजः	३१	९०	त्रिग चाचरि	३	१०४
तस्यानुजन्मा	५	२४	त्रिजगति यशसस्ते	३१	२०
तस्यानुजो विजयते	१३	६०	त्रिभुवनदेवी तस्य	५२	६३
तस्याऽभवनिर्मल	२२	२५	त्रिकीर्तिर्योत्स्नया	११	४२
तस्याऽभूतनया	९	७६-२	दत्तालोकेऽर्थिलोके	१०९	९
तस्यैवाऽर्थविभो	७४	२७	देते चेतसि सम्मदं	७१	३९
तहि नयरह उत्तर	१३	९९	दध्रेऽस्य वीरधवल	६	४७
तहि पुरि सोहिउ	१०	९०	दन्तौ धर्ममतङ्गजस्य	१५४	१४
तहि नयरह पूरव	११	९९	दयिता ललितादेवी	९	४५
तादृक्कम्पव्यतिकर	३४	३६	दयिता ललितादेवी	४४	६२
तादृदानपरम्पराभि	२६	३६	दर्शी दर्शमसद्य	६२	६
तीर्थेशाः प्रणतेन्द्र	१	५०	दस दिसि ए	५	१०२
तुञ्जेभभीम	४	७८	दानं दुर्गतवर्गसर्ग	२६	२५
तेजःपाल इति	६१	६३	दानानि तानि	१९	८३

पदानुक्रमणिका ।

११७

श्लो०	पृ०	श्लो०	पृ०		
दायादा कुमुदावलि८	७	२१	देशोऽरण्यप्रदेशो	८०	७
दारिद्र्यदुर्दम	४	९४	दोषोन्मुदण्मुदितेऽपि	१६०	१४
दावह ए दुक्सहं	४	१०२	द्वारे यत् किल	९८	२९
दास्यवर्तीन इवाऽस्य	५९	५	धंयुक-ध्युव-भटा	३४	६१
दिग्यात्रोत्सववीर	१२१	१०	धनमनवरत	५८	८६
दिग्यात्रोत्सववीर	११	१८	धनु धनु विमलडि	९	१०४
दिग्यात्रोत्सववीर	३	५६	धनु सु धवलह	२	१००
दिट्ठ्य छत्रसिल	२२	१०२	धयः स वीरधवल	२८	२५
दियहिं ए नर	११	१०३	धर्मध्यानमना	१२	९२
दिस(य ?)इ आय(ए)सु	२०	१०५	धर्मविधाने भुवन	११	५९
दिसि उत्तर कसमीर	१	१०१	धर्मस्थानमिंदं	८३	२८
दीपः स्फूर्जति	२६	२३	धर्मस्थानांकितामुर्वीं	२४	६०
दीपः स्फूर्जति	४	४७	धर्मैचितीं रुचित	३४	९०
दीसइ दिसि दिसि	१८	१०२	धवल धय ए	१०	१०२
दुर्गः स्वर्गगिरिः	४	२१	धवलसुत सुरहि	३३	१०७
दुर्गः स्वर्गगिरिः	५	५४	धात्रीधुरीण भुज	१५	२
दुविहि गुजरदेसे	१	१००	धाम्नां धाम	७४	६
दुष्टारिकोटि	३४	८४	धाम्नि स्वर्धामशैलं	१२४	११
दूरं दुर्लितेन	८२	७	धाराधीशपुरोधसा	२०	८३
दृश्यः कस्यापि	२३	१९	धाराधीशे विन्द्यवर्म	३६	८४
दृश्यः कस्यापि	२	४१	धारावर्षसुतोऽयं	४०	६२
दृश्यन्ते मणिमौक्तिक	१४	३१	धीराः सत्त्वमुशन्ति	१	७६-१
दृष्ट्या वपुश्च	११	९८	न किं स हरितुल्यता	८१	७
दृष्ट्या वपुश्च	११	५५	न कृतं सुकृतं	१	९५
देवः पङ्कजभूर्	३१	३३	नगराख्ये महास्थाने	४४	२६
देवः परं जिनवरो	१४	८९	नताशेषद्वेषि	७९	७
देवः स वः	२	७८	नभस्ये निर्वृष्टाः	२५	२३
देव ! व्यत्रतिपन्थि	७	४०	नमिवि चिराणउ	१०	१०४
देव स्वर्णाथ ! कष्टं	२७	३२	नम्रारीन्दुमुखी	२१	२
देव स्वर्णाथ ! कष्टं	९	५२	न यस्य लक्ष्मीपति	११	३१
देवि ! त्वदूर्जित	८	९४	नरनारायणानन्दो	४०	९०
देवि ! प्रकाशयति	५	९४	न वदति परुषा	५७	८६
देवी सरोजासन	३९	६२	नागेन्द्रगच्छ	३२	९०

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
नाभूवन् कृति	१४	७६-२	परमपदपुराप्र	४	१
नामेयं नेमिनाथं च	३९	२६	परमेसर तिथेसरह	१	९९
नायलगच्छह	८	११	परिवलु दल्ल	११	१०४
नितु नितु सुरसंघ	१४	१०५	पर्यणीषीदसौ	३	७६
नित्यं शत्रुजयादौ	१०	१८	पल्लव-कुल	१९	१००
नियोगिनागेषु	१३	५०	पहिलद्व सांब	६	१०२
निरीन्द्रग्रामे बोडाल्य	४६	२६	पाण्डद्यः पाखण्डिवेषं	२६	३
निर्माण्याऽदिजिनेद्	५	७६-२	पातालमूले पिहितां	४३	३७
निवसए विवु	३२	१०७	पाताले बलिराज	३७	३७
नीजर ए चमर	१९	१०३	पापं पङ्कजयन्	२	१
नीता वशं विषम	१२३	१०	पीनश्रीभुजयन्त्यो	२२	२
नीलनीरदकदम्बक	१२	६०	पीयूषपूरस्य च	१	४६
नृत्यल्या व्योमरङ्गे	१७७	१६	पीयूषदपि पेशला	१	१७
नृपां यत्पदपद्ययोर्	१५६	१४	पीयूषैः प्रगता	६५	८७
नेत्राणाममृताञ्जनं	२७	२०	पुण्यं प्रतापसिंहस्य	५९	२७
नेपथ्यैरतिथीभवत्	८	९३	पुण्यश्रीभुवि	९	९७
नैवोष्टसम्पुट	८	८८	पुण्यस्य पापटली	७	८८
नो चेद् यशांसि	१७	८९	पुण्यायाऽजयसिंहस्य	६४	२७
न्यस्यावस्यं शिरसि	४४	४	पुण्यागामः सकल	३३	३३
न्यासं व्यातनुतां	३	५२	पुण्ये गिरीशशिरसि	१	९४
न्हवण-विलेवण	११	१०१	पुण्यैकहेतू	६	१
पंथानमेको न	२०	६०	पुरतः कालमेघस्य	९४	२८
पञ्च पौष्ठरालाश्च	६३	२७	पुरा पदेन दैत्योर्	८	४५
पद्म भवणि	८	१०१	पुरुष पञ्चिम	८	१०४
पणमेवि सामिणि	१	१०४	पुरोत्तमे स्तम्भनका	३८	२६
पत्नी तस्याजायता	४	७६-१	पुष्पदत्ताविमौ	१३	९८
पत्युर्नदीनामिव	२०	२५	पुस्कर्ज गूर्जर	१५	८९
पदं विजयसम्पदा	६६	६	पूजाहि माणिक	४८	१०८
पद्मा पदमपास्य	४३	४	पूर्वमेव सचिवः स	९	५९
पदमाभिरामहस्तेन	१४२	१२	पृष्ठे बाक्षनपदिकं	१६९	१५
पदमाभिरामहस्तेन	१८	१९	पैमिहि ए मुणिजण	१५	१०३
पन्था ग्रन्थाट्वीनां	१५२	१३	पोत्रेण धारय	७	४९
परदन्येष्वदत्तेषु	४	९५	पोरुयाउकुल	६	९९

	स्त्रो	पृष्ठ		स्त्रो	पृष्ठ
पौष्टशालाद्वितयं	३७	२६	बाहिरी गढ़	१२	१९
प्रणमदमरप्रेष्ठन्	१	४८	बिडौजसि गते	४७	४
प्रतापतपनो यस्य	१०	२२	विभ्राणं परितो	३४	२६
प्रतापस्यादैतं	८	२२	शीजउ नेमिहिं	१७	१०५
प्रतिदिनमपि रौद्रैर्	८५	७	बोलावी संघह	२०	१००
प्रतिष्ठाप्य च मन्त्रीशस्	१७१	१५	भग्नः शङ्ख इति	१४०	१२
प्रतीता नीतीना	१३६	१२	भर्ता भोगमृतां	१०	४०
प्रत्याकारच्छलगुरुदरी	९०	८	भर्तुर्वेषमयं विधाय	१३४	१२
प्रत्याशं प्रसरत्	३	९१	भर्तुर्वेषमयं विधाय	९	१७
प्रथमं धनप्रवाहैर्	१५	५०	भवति हि विभवो	१६	४३
प्रथमादर्शे	१५	७९	भवदमुजमुज्जोऽसौ	३	४०
प्रद्युम्नशिखे सोम	९१	२८	भाग्यभूः किमसावस्तु	१८	२२
प्रभूतभूतराजस्य	६०	२७	भास्वत्प्रभावमधुराय	३५	९०
प्रवर्त्तमानेऽत्र	६६	८७	भित्त्वा भानुं	४	४५
प्रसादादादिनाथस्य	१७९	१६	भित्त्वा भानुं	१७	८२
प्राग्वाटगोत्रतिलकः	३	८८	भूबल्लभस्तदनु	१०	३५
प्राग्वाटवंशवज	१८	२५	भूभारोद्भृतिधुर्य	३५	३६
प्राग्वाटान्वयमंडनं	१	९७	भूमीभारमथो बभार	३१	३६
प्राग्वाटान्वयमंडनै	५०	६३	भूयांस एव	१४	२५
प्राग्वाटान्वयवारियौ	५३	८६	भूषा भूवोऽहिल	११	२
प्रासादैर्गगना	१	४९	भृगुनगरमौलि	४२	२६
प्रीतो वक्षापथभुवि	९५	२८	भेजे तेजोगगन	२७	३
प्रेष्यास्त्वैर्यं प्रभुप्रीति	२९	२५	भैमीव नैपद	४८	३७
प्रेयस्यपि न्यायविदा	९	२२	भोगीन्द्रस्त्वदभुजेन	९	४०
बद्धः सिन्धुवसुन्धरा	२२	८३	भ्रमन्ती भृशमन्याय	१२	२२
बन्धुः कनीयान्	१२	२४	भ्रातः ! पातकिनां किमत्र	३	४५
बभूव गोत्रैकगुरुर्	१५०	१३	भ्राता वातायन इष्व	१०४	९
बलिकर्ण-दधीचि	१२	४०	भ्रूभङ्गप्रतिविम्ब	९६	८
बहुं आयरिहि	४०	१०७	मंदिर धाहर	२३	१०६
बाढ़ प्रौढयति	९	३१	मजन्तीमवनी	१६३	१५
बाणे गीर्वाणगोष्ठी	३२	२०	मजन्तीमवनी	२१	१९
बार संवच्छरि	३९	१०७	मणहरघणवण	६	१००
बालः श्रीमूलराजोऽथ	२९	३६	मतिकल्पलता यस्य	४१	३७

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
मध्वरेव्यधिन	२५	८३	यः [क्ष]ांतिमा	२	५९
मन्दस्थदसि	५१	८५	यः प्रत्यर्थिंक्षितिपति	१३८	१२
मन्येऽस्मिन्नमृता	७०	२७	यः शब्दुञ्जयशेखरं	५६	३८
मल्लदेव इति	११४	१०	यः शास्त्रशिखरे	९२	२८
मल्लदेवसचिवस्य	५८	६३	यः शैशवे	४५	६२
मसृणधुसृणपङ्कौर्	५	१७	यः शौचसंयमपटुः	३२	८४
महतह तेजपाल	२६	१०६	यः स्फुरन्मेदुरामोदे	५५	२७
महतिर्हि जायवि	१८	१०५	यः स्वीयमातृ	३७	९०
महिमडलि किय	१३	१०५	यक्षाणक्याऽमरगुरु	४८	६२
मायुर्यधुर्यमयुलोभ	१०२	९	यक्कार्तिप्रसरैः	१२२	१०
मा भून्मदभुवनेऽपि	१४५	१३	यक्कर्त्तैः स्वैर	१३१	११
मा भून्मदभुवनेऽपि	१९	१९	यक्कर्त्तैः स्वैर	१४	१८
मालवमंडल	१०	१००	यत्वद्गक्षत	८८	८
मालिन्यं मुमुक्षे	१४४	१३	यत्वद्गदण्ड	७५	७
मुकुलितकमलोदय	१२	४२	यत्वद्गवल्ली	९	३५
मुक्तामयं शरीरं	२२	६०	यत्वदाम्बुजयुगं	९३	८
मुक्त्वा विप्रकरा	४१	६२	यत्रारिक्षत्रगोत्र	३६	४
मुष्णाति प्रसमं	१	५६	यथा प्रतिष्ठां	९	८२
मूरति वपु	४४	१०७	यदङ्गघटनोत्सृष्टैः	१७	३५
मूर्च्छ्या विहितः	५	९५	यदाननसरोजेन	३२	३६
मूर्तीनामिह पृष्ठतः	६४	६४	यदानप्रभव	९४	८
मूलं कीर्तिलतातते:	७०	६	यदानोदकजात	१४	३५
मूलग पायारथर	२८	१०६	यदिक्कुम्भ-कुलदि	१४६	१३
मूलस्थूलहरित्करि	१२७	११	यद् दूरीक्रियते स्म	३०	३३
मेरुमेरुचिमातनोति	३	९३	यदोर्मण्डलकुण्डली	८९	८
मेरुक्षेत् परिकम्पते	३०	३	यद्यात्रामु तुरङ्ग	२०	२२
मोहो द्रोहधिया	७५	३९	यद्यक्त्रकुञ्ज	२	९४
मौक्तिकद्युति	४१	४	यद् वास्तल्यं	७	९५
यं मातृभक्ति	२२	८९	यन्निर्मापितदेव	६२	३८
यं विधुं बन्धवः	२	४७	यश्चकार नवोद्धार	४१	२६
यः करोति स्म	१२	८२	यस्तीर्थानां प्रकर	१०८	९
यः कर्मणि च	३९	८४	यस्मादभ्युदयं	१५९	१४
यः कामवृत्ति	३६	९०	यस्मिन् दाननिदान	९५	८

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
यस्मिन् धर्मे	२३	२३	येषां मूर्तिरसौ	६	९३
यस्मिन्नुत्तर	५०	५	येषामशेषाधिपतिः	६	८१
यस्मिन् पश्यति	६७	६	यैर्नद्राऽतिचला	१५	१८
यस्मिन् विश्वजनीन	१३	३१	रंगिह ए रमह	२०	१०३
यस्मै रसिम्भरो	२	३४	रक्षादक्षो दिवि	४	३४
यस्य न्यञ्जितचाप	८६	७	रक्षां रक्षितुमक्षमे	४८	४
यस्य भूः किमसा	३	५४	रणे वितरणे चात्र	१४	२२
यस्य सद्गनि सदा	५८	५	रक्तः सद्रितिभावभाजि	११५	१०
यस्याग्रजो	३	९७	रक्तः सद्रितिभावभाजि	५०	५७
य(त)स्यात्मभूः समभवद्	४	२४	राइमई मणहरणु	१४	१०१
यस्याऽऽननं	२८	८९	गका ताण्डवितेन्दु	८	३०
यस्यानीकवथूभि	५	९३	राजा चामुण्डराज	१९	२
यस्या मुखे	२६	८९	राजा श्रीवनराज	९	२
यस्याशीःप्रतिपादितो	१६	८२	राजु करड तह	४	१०४
यस्यासिरम्भोद्	३८	३७	राहौ गृहीतोष्णकरे	३१	८४
यस्योपदेश	११	७९	रिपुल्लीनेत्राभ्यो	७२	६
यस्योर्वीतिलकस्य	७	३०	रिषभमंदिरु	४६	१०७
यावच्छण्डपोत्र	७२	३९	रुपा सरिसउ	२९	१०६
यात्रापर्वणि रैवत	१४८	१३	रोदःकन्द्रवर्ति	३५	६१
या ग्रार्थना याचक	२९	२०	रोदःक्षीरोदनर्नैः	२९	३
या श्रीः स्वयं	१०	४२	लक्ष्मी धर्माङ्गयोगेन	१५	७६-३
युक्तं.....	२	७६	लक्ष्मीर्मन्थाचलेन्द्र	८	५५
युद्धं वारिधिरेष	२३	३२	लक्ष्म्यामाकृष्टि	१५	४२
युद्धपर्वणि कदाऽपि	९१	८	लक्ष्मा मानुषजन्म	१	९१
युद्धपर्वणि कदाऽपि	६	१७	लभन्ते लोकतः	६१	८६
युद्धोङ्गामरमण्डलाग्र	२८	३	ललितादेवीनाम्ना	१०	५५
येन व्यधाप्यत	५८	३८	ललितादेव्याः पल्याः	७२	२७
येन स्तम्भनकाधि	१७४	१६	लवणप्रसादपुत्र	७	४५
येनाकारि तमोनिकारि	५५	३८	लावण्यद्रवकूप	१२५	११
येनऽस्मनः स्वप्लन्याश्च	८७	२८	लावण्यसिंहस्तनय	५५	६३
येनाऽत्रैव वियचुम्बि	६९	२७	लावण्याङ्ग इति	११३	९
येनारिनारीनेत्राभ्यः	११	२२	लावण्याङ्ग इति	४	५७
येनोज्यन्तगिरि	६०	३८	लीलासञ्चरणं च	५	७८

श्लो	पृ०	श्लो	पृ०		
लीलासञ्चरणं च	७	१	विद्या यद्यपि वैदिकी	९	४९
द्वाणिषाः प्रथमस्तेषु	२३	२६	विद्येते हृदयविद्यौ	५०	३७
वंदे सरस्वतीं	१	५९	विधिवद् वाजपेयं	१०	८२
वंशश्रीमौलिधम्मिलं	२४	२५	विवृथैः पर्योधिः	१४	५०
वंशोऽयं प्रथितोन्मतिः	९८	८	विभुता-विक्रम	२	५४
वंशो विश्ववित्यविदितः	५	३४	विभुता-विक्रम	५	९८
वहसाही पुनिमह	१०	१०१	विमलिहि ठवियउ	७	१०४
वक्त्रं निर्वासनाज्ञा	११	५३	विरचयति वस्तुपाल	१४	६०
वज्रः ए ताल	२	१०२	विद्युताशः पाणि	४९	५
वदनं वस्तुपालस्य	३	७६-४	विलोक्य दुष्कालवशेन	३३	८४
वरदे ! कल्पवल्ल !	९	९४	विशेषके रैवतकस्य	८५	२८
वर्षीयान् परिलुप्त	३३	२०	विश्वस्मिन्नपि वस्तुपाल !	१७	२२
वलभ्यां पुण्यलभ्यश्रीः	७१	२७	विश्वस्योपकृतिव्रत	२१	३५
वसिष्ठानिष्ठायाः	४८	८५	विश्वानन्दकरः सदा	१०५	९
वसुदेवस्येव सुतः	४२	६२	विश्वानन्दकरः सदा	१	७६
वस्तपालि वर	१५	१०१	विश्वेऽस्मिन् कस्य	७	७२
वस्तपाल तसु	१२	१०१	विश्वेऽस्मिन् किल	३८	९७
वस्तुपालविहारेण	१	५८	वीरं दक्षिणतः	७५	२७
वस्त्राप्ये जगत्यां	९३	२८	वीरश्रीवीरधाम्नि	९३	३८
वाग्देवतां यदि	२	८८	वैयद्व वंजलु	१७	९१
वाग्देवताचरण	४०	३७	वैदुर्यं विगताश्रयं	५२	८६
वाग्देवतावदन	१९	७६-३	वैरं विभूति-भास्योः	३	४७
वाग्देवतावसन्तस्य	४६	८५	व्यजयत जयसिंह	१९	३५
वाग्देवीप्रसादः	४२	३७	व्याघ्रोल्य(फल्य)	४५	२६
वाजभ्राजितवाजि	४५	४	व्याजात् पौष्पशालानां	१७३	१५
वार्ष तस्य	३६	२६	व्यातन्वन्मरेन्द्र	१६७	१५
वासिता साधुवादेन	९	९८	व्योमोत्सङ्गहृधः	२९	३३
वास्तवं वस्तुपालस्य	४	५२	शंभोः श्वासगतागतानि	६७	६४
वास्तवं वस्तुपालस्य	४	३०	शक्तिः काऽपि न	५	७९
वाहृदस्य तनूजेन	२	४६	शङ्के पङ्कजिनीपतिः	१३	४०
वाहृदस्य तनूजेन	२	५५	शङ्के शारदर्पव	२५	१९
वाहृदस्य तनूजेन	२	५८	शङ्के शारदर्पव	१८	४३
विकीर्तो यस्य	३६	३६	शङ्के शार्ङ्गधरस्य	५२	५

संख्या	पृष्ठा	श्यामुकमधिका	संख्या	पृष्ठा
शङ्ख शार्ङ्गधरस्य	७	१७ श्रीनेमेलिजगद्वर्तु	३	४७
शत्रुघ्नयनगोत्सवे	७३	२७ श्रीनेमेलिजगद्वर्तु	३	५७
शत्रुघ्ने भवपयोधि	१६५	१५ श्रीनेमेलिजगद्वर्तु	३	५८
शत्रुघ्नेणीगल	३६	६१ श्रीप्रावाटकुलेऽत्र	२	२१
शास्त्रार्थवारिभर	६	८८ श्रीमन्त्रीश्वरवस्तुपाल	६३	६४
शिष्यस्तस्य च	१३	७९ श्रीमद्गुर्जरचक्रवर्ति	२	७६-१
शीतांशुप्रतिवीर	१२	७६-२ श्रीमन्त्रीश्वरवस्तुपाल	२५	३२
शुभ्रांशुर्भवि	३७	९६ श्रीमन्त्रीश्वरवस्तुपाल	१०	५२
शून्येषु द्विषतां पुरेषु	५	३० श्रीमल्लदेव इति	४९	३७
शूरो रणेषु	१३	४२ श्रीमल्लदेवः श्रित	१०	५९
शोषदेवपविधायिनीमणि	५	४० श्रीमल्लदेवपौत्रो	१०	७६-२
शोभाभिभूत	१	८८ श्रीमद्विजयसेनस्य	१२	७९
शोषः सैष जवाद्	४६	४ श्रीमांस्तोऽजनि	१५५	१४
शौण्डीरोऽपि	२	३० श्रीमालवेन्द्रसुभटेन	१७५	१६
शौर्येणोर्जस्तिर्ता	८	९८ श्रीमुञ्जनामा	१३	८२
श्रावे हंडावडा	४१	१०७ श्रीयुगादिप्रभोर्	२३	२६
श्रियं चौलुक्यानां	१३	२५ श्रीरङ्गभूर्भुशा	९	८८
श्रिया प्रीतया	७	९८ श्रारैवते निर्मित	७	७६-२
श्रीकुमारविहारेऽत्र	६७	२७ श्रीवर्धमानः शमिनां	२	७९
श्रीक्षेमराज इति	१८	२ श्रीवस्तुपाल ! कलिकाल	२२	१९
श्रीगर्भीभमि	७	९२ श्रीवस्तुपाल ! कलिकाल	३	४१
श्रीमध्य[प]संभवः	६२	६४ श्रीवस्तुपाल ! क्षितिपालमुद्रां	२८	२०
श्रीजैनशासनवनी	७०	६४ श्रीवस्तुपाल ! जितबाल	१४	४२
श्रीतेजपालतनयस्य	७६	६३ श्रीवस्तुपाल ! तव	७६	३९
श्रीद-श्रीदयितेश्वर	२	४६ श्रीवस्तुपालुपुत्रः	४६	६२
श्रीषूमराजः प्रथमं	३३	६१ श्रीवस्तुपाल ! भवता	१६	५०
श्रीनागेन्द्रसुनीन्द्र	१६	७६-३ श्रीवस्तुपालमन्त्रीन्दोर्	३	१७
श्रीनागेन्द्रकुले	४	७९ श्रीवस्तुपालयशसा	३५	३३
श्रीनामेय ! मनोरथः	२	९१ श्रीवस्तुपाल संप्रति	४	७६-४
श्रीनेमिनेवनील	३	१ श्रीवस्तुपालसचिवस्य	२४	१९
श्रीनेमेरम्बिकायाश्व	७४	६५ श्रीवस्तुपालसचिवस्य	३	३०
श्रीनेमेलिजगद्वर्तु	४	४६ श्रीवस्तुपालसचिवस्य	८	४२
श्रीनेमेलिजगद्वर्तु	१	५० श्रीवस्तुपालसचिवस्य	११	७६-२

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
श्रीवस्तुपालस्य	८०	२८	स एष निःशेष	३६	३३
श्रीवस्तुपालस्य	५५	८६	सङ्ग्रामः क्रतुभूमि	२०	३२
श्रीवाससदमकर	१८	८९	सङ्ग्रामसिंहपृतना	१	४१
श्रीवासाम्बुजमाननं	१६	१८	सङ्घस्यादभुत	७	७८
श्रीबीरधवलमूर्तिर्	४९	२६	सङ्घोऽधिरोहनिह	१४७	१३
श्रीबीरशासन	३	७९	सचिवप्रवरं कञ्चित्	३९	३७
श्रीवैद्यनाथगर्भ	५०	२६	सल्कर्मनिर्माणिते	२७	८३
श्रीवैद्यनाथवरवेश्मनि	४८	२६	सत्तीर्थस्य मुराश्रितेन	२	८१
श्रीशत्रुञ्जयशृङ्ख	५७	३८	सत्यं ब्रुवे	५९	८६
श्रीशत्रुञ्जयशैल	३९	९०	सत्याभिधस्तदनुजो	२९	८९
श्रीसङ्घभर्तृसचिवे	१०	९३	सदा यदाशीः	१८	८२
श्रीसुव्रतपदाम्भोज	७७	३९	सद्विजातेन	१४	८२
श्रीसोमेश्वरदेवश्	७३	६५	सन्तापशान्ति	१५	८२
श्रीसोमेश्वरदेवस्य	३५	८९	सप्ततनुप्रपञ्चेन	१८	३५
श्रीसोलशर्मा विमले	७	८१	सप्तलोकचरी	४७	३७
श्रुतेति मुदितवृद्यः	११९	१०	स मङ्गलं वो	१	२४
श्रेयः श्रीमुनिसुव्रतः	१	३४	समजनि जिनसेवा	१०१	८
श्रेयः श्रेष्ठवशिष्ठ	३२	६१	समुद्रविजय-सिवदेवि	१३	१०१
श्लाघः स वीरधवलः	२१	३२	समूलमुमूलयितुं	२	२४
श्वर्ण सिन्धुरसुगन्धा	३२	३	सम्पूर्णं भुवने	५४	३८
संघाहितु सधेण	३	१०१	सयल वित्ति	१२	१०१
संघु रहित	४३	१०७	सरस्वतीकेलिकला	२५	२५
संजडे नृपतिशतैः	५६	५	सर्वत्र ब्रान्तिमर्ती	११	५०
संतार्पण यत्रतापस्य	७१	६	सर्वत्र वर्ततां कीर्ति	६८	६४
सदिष्टं तव वस्तुपाल !	२	४९	स वः श्रेयः शत्रुञ्जय	१	२१
समेतादिशिरः	१	५५	स वैकुण्ठः कुण्ठः	१३	२२
संयोजितेन मणिमणित	१४३	१३	स श्रीजिनाधिपति	५	२१
संलीनानामनुटटबनं	७३	६	स श्रीजिनाधिपति	१	५४
संसारव्यवहारतो	५	९१	रा श्रीमानुदयाच्छ्लो	१०३	९
संसारसर्वस्वमिहैव	३	६७	स श्रीतेजःपालः	६	४५
संसारर्तितपो	४	९३	स श्रीतेजःपालः	४७	६२
संसारे सुखहेतु	१०	९२	सा कुत्रापि युगत्रयी	५	४९
संस्तुयमानचरितः	२४	८९	साक्षाद् ब्रह्म परं	१९	३१

पद्मानुकमणिका ।

१२५

संख्या	पृष्ठा	संख्या	पृष्ठा		
साक्षाद् ब्रह्म परं	१२	५३	सोऽयं प्रख्यातकीर्तिः	१२०	१०
सानिधि अंबाइय	३५	१०७	सोऽयं मन्त्री	६	५४
सामंतसिंहसमिति	३८	६२	सोऽयं मूहवदेवी	१२	९८
सामियनेमिकुमार	७	१००	सोलः सलील	८	८२
सामियसामल	४	१०१	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	४६
साम्राज्यं चतुरर्णवी	७	९३	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५३
सिदुवार-मंदार	२१	१०२	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५५
सिद्धक्षेत्रमिति	२	६७	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५७
सिद्धान्तोपनिष	७	७०	स्तम्भतीर्थे नगोत्तुङ्गे	५३	२७
सींसमि सिंबलि	१८	९९	स्तम्भनपुर-रैवतगिरि	१६४	१५
सीताकुक्षिसरो	४६	३७	स्तोत्रव्यः खलु	५	५२
सुतस्तस्मादासीद्	२७	६०	स्तोतुं नामिनेन्द्र	७७	२८
सुभकर ए ठवित	३	१०२	स्तोत्रं श्रोत्ररसायनं	१०	९४
मुरलीणां नेत्रं	१३	३५	स्थाने स्थाने	३०	८४
मुक्रतकमनमस्कृति	६५	३८	स्थापयन् सिंहुलग्राम	४७	२६
मूनुस्तदीयोऽजनि	७	२४	स्फूर्जदगूर्जरवेशम्	१४	२
मूनुस्तदीयोरजनि	२७	८९	स्वकुलगुरु.....	१८	७६-३
मूरो रणोपु	४	१७	स्वक्रान्तसिन्धुपति	२४	३
सूर्याचन्द्रमसौ	१०	२	स्वच्छन्दं हरिशङ्करः	६	२१
सेचं सेचं स खलु	३४	३३	स्वस्ति श्रीबल्ये	१२	३१
सेनानीर्विदधे	३५	८४	स्वस्ति श्रीबल्ये	१	५१
सेयं पुरे धबलके	२१	८०	स्वस्ति श्रीबल्लिसालाय	१	३०
सेवालन्ति पयः समुद्रति	३७	४	स्वस्ति श्रीबस्तुपालाय	१	४०
सेवालन्ति पयः समुद्रति	८	१७	स्वस्ति श्रीब्योमदेशा	७४	३९
सैन्यप्रकम्पितधरा	५७	५	स्वयं विनम्रेषु परेषु	११	३५
सोऽपि बळे	१२	५०	स्वर्गं यदगुरुचैत्य	६१	३८
सोभनदेउ सुतहारो	३०	१०६	स्वर्वश्यमूर्तिभिः	९६	२८
सोमामिथस्तदनुजः	१२	८८	स्वविरोधिनी शुचिर्	५१	२७
सोमेश्वरदेव इति	४२	८५	स्वस्तीयः श्रयति स्म	२३	२
सोमेश्वरदेवक्वे	४४	८५	स्वामिन्! मृत्युहरे	६	९१
सोऽयं तस्य	६	५७	स्वैरं आम्यतु नाम	२४	३२
सोऽयं धात्रीं	४०	९७	स्वैरेव प्रहतैर्	२४	३६
सोऽयं पुनर्दाशरथिः	३७	६१			

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
हँहो रोहण ! रेहति	२६	३२	हरिमण्डप-नन्दीश्वर	२	५३
हक्कारहु वर	३८	१०७	हर्षदासौ हसतु	२०	८९
हत्वाऽपि कान्तिलब्ध	११	८८	हस्ताग्रन्थस्त	११७	१०
हन्तु जनस्य दुरितं	६	९४	हस्ताग्रन्थस्त	८	५७
हरसवसिण	२	१०१	हुत्वा सदध्वरचितेषु	२३	८९
हरिमण्डप-नन्दीश्वर	२	५	हृतनयनसुखवै	३	८१
हरिमण्डप-नन्दीश्वर	२	४७	हृष्टोऽभून्मुशलध्वजः	५५	५

सुकृतकीर्तिकलोलिनी-आदि वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह ।

विशेषनामानुकमणिका ।

	पृष्ठ		पृष्ठ
अंबय (मंत्री)	१००	अभिका भवन (देवतामन्दिर)	२८
अङ्ग (नृपविशेष)	१	अरसीह (प्रायाट ज्ञा० महा० वीरदेवपुत्र)	६६
अचलेश्वर (शिवमन्दिर)	६७	अर्कपालित (आम)	१५
अचलेश्वर (अचलेश्वर, शिवमन्दिर)	१०४	अर्कपालितक	२७,३८
अजयपाल (चौलुक्यनृपति)	६,२४,३६,४४	अर्जुनमडी (स्थलविशेष)	६
अजयसिंह	२७	अर्णोराज (सपादलक्ष्मनृपति)	५,३६
अजित (संघाधिपति)	१०१	अर्णोराज (चौलुक्यवशीय)	६७,२५,३६,६०
अजिय (अजित, संघाधिपति)	१०१	अर्वुद (पर्वत)	६१,६२,६७
अद्वावय (अष्टापदावंत)	१०१,१०२	अर्वुदगिरि ..	७६-१
अणपमस्सर (अनुपमा सगेवर)	१०५	अर्वुदाचल ..	२६,४४,४६,४८,५१,५४,५६,
अणहिलपत्तन (अणहिलपुर, गूजर राजधानी)	७५		६५, ६७, ६८,७२, ७३, ७६-१
अणहिलपाटक (अणहिलपुर,	२,६५,	अवलोकनाशिखर (रवतगिरि शिखरविशेष)	२८,
गूजर राजधानी)	८८,९६		४४,४६,४८,५१,५४,५६
अणहिलपुर (गूजर राजधानी)	४४,४६,४८,५१,५३,	अवलोकणसिंहर (अवलोकनाशिखर)	१०२
	५४,५५,५६,५९,६३,	अश्वराज (आश्वराज, मंत्री)	१० १८, २१,३७,
	७५, ७६-१, ७६-३		६७,५९,६० ६४,
अणहिलपुर (अणहिलपुर)	६८,६९		७६-२, ८६, ८९
अनुपमदेवी (तेजपालपत्तनी)	२८ ६३,६५,७१,	अश्वावतारतीर्थ	१९
	७४,७६-१,७६-२	अष्टापदप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	५८
अनुपम सरोवर	४७	अष्टापद महातीर्थ (स्थलविशेष)	४४,४६ ४९,
अनुपमा (अनुपमदेवी, तेजपालपत्तनी)	६३		५१,५४,५६
अनुपमासर (सरोवर)	२८	अष्टापदशैल (पर्वत)	५१
अन्ध्र (नृपविशेष)	५	अष्टापदोदार (जिनमन्दिर)	२७
अभयकुमार (साहु राहडसुत)	६९	असगाज (अश्वराज)	१०७
अमरसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	२९,४५,४६,४८,	अह्लाणदेवि (पूर्णिमहपत्तनी)	६३
	५१,५४,५६,६४	आमिग (प्रायाटज्ञा० महाजन)	६६
अमरचन्द्रसूरि ..	१३,६५,७६-३,	आंबुय (प्रा० ज्ञा० थ्रे०)	६७
	७९,९०	आखण्डलमण्डप (इन्द्रमण्डप)	२८
अमरेन्द्र मण्डप (इन्द्रमण्डप, स्थापत्यविशेष)	१५	आखीग्राम	६८
अमरड (राणक)	२७	आमिग (विद्वान्)	८३
” (महामन्त्री)	३८	आणंदसूरि (नागेन्द्रगच्छीय आनन्दसूरि)	४४ ४८,
” (मण्डलेश्वर)	३९		५१,५४,५६,६५
आम्बाशिखर (रवतगिरि शिखरविशेष)	४४,४६,४८,	आनंदसूरि (आणंदसूरि)	२०,४६,६४,
	५१,५४,५६		७६-३,७९
		आनन्दचन्द्रसूरि ..	१३

	पृष्ठ		पृष्ठ
आनक (कायस्थ)	४७,५०	इन्द्रमण्डप (स्थापत्यविशेष)	१५,१९,३८,१०२
आबु (अर्बुद पर्वत)	१०५,१०६,१०८	उग्गसेणगढ (दुर्गविशेष)	९९
आबुय „	१०५,१०६,१०७	उज्जयन्त (रेवत पर्वत)	३८,४४,४५,४६,४८,
आबू „	१०४,१०५		५१, ५३,५४,५६,६८
आबूय „	१०५	उज्जित (उज्जयन्त पर्वत)	१००,१०३
आबुयग्राम	६७	उज्जिल (उज्जयन्त पर्वत)	१००
आमशर्मा (विद्वान्)	८२	उत्तरछग्राम	६७
आम्बदेव (ओइसवाल ज्ञा० श्र०, नागदेवपुत्र)	६७	उदयन (मंत्री)	३९
आम्बसिंह (प्राम्बाट ठकुर)	६५	उदयपाल (प्रा० ज्ञा० महा०, पान्हणपुत्र)	६६
आम्बा (प्राम्बाट ज्ञा० श्र०, कोलापुत्र)	६६	उदयप्रभसूरि (नागन्दगच्छीय)	१६, ४३, ५७,
आम्बुय (श्रीमाल ज्ञा० श्र०)	६६		६४,७६-३,७९
आरासण (ग्राम)	१०६	उदयसेनसूरि (आचार्य)	७४
आलहण (प्राम्बाट श्रेष्ठी माणिभक्षपुत्र)	६६	उदुल (ठकुर)	१०५
आलहण (ओइसवालज्ञा० श्र०, देल्हणपुत्र)	६७	उदयपाल (श्रेष्ठी)	७६-३
आलहण (भाण्डागारिक)	७६-३	उपदेशमाला (ग्रन्थ)	७९
आल्पदेवि (पूर्णसिंहपत्नी)	७०,७६,७६-२	उमारशश्य (ग्राम)	२७
आल्हा (प्राम्बाट ज्ञा० श्र०, गोसलपुत्र)	६६	उबरणी (ग्राम)	६६
आल्हा (प्रा० ज्ञा० श्र०, देल्हणपुत्र)	६७	उपसवाल (ज्ञाति)	६६
आवोधन (ओइसवाल ज्ञा० महा०)	६६	उजिल (उज्जयन्त पर्वत)	१०२
आशाराज { (मंत्री, सोमपुत्र)	९,२५,२८	उदल (प्राम्बाट, ठकुर)	६५
	५४,५५,५६,७५	उदल (ठकुर)	१०५
	७६-३, ७५-८, ७७, ९७	उदल (ठकुर)	१०५, १०६
आश्वेश्वर (प्रा० ज्ञा० श्र०, सोहियपुत्र)	६६	उवरणी (ग्राम)	१०७
आसचंद्र (धर्कट ज्ञा०, धउलिगपुत्र)	६६	ओइसवाल (ज्ञाति)	६६,६७
आसदेव (ओइसवाल ज्ञा० श्र०, देवकुंयागपुत्र)	६६	ओरासा (ग्राम)	६७
आसधर (श्रीमाल ज्ञा० श्र०)	६६	कडिङ्गिरख (कपर्दी यक्ष)	१०१
आसधर (प्रा० ज्ञा० श्र०, रासलपुत्र)	६६	कटुकेश्वर (शिवमन्दिर)	८४
आसपाल (श्रेष्ठी)	७६-३	कडुया (प्रा० ज्ञा० श्र०, लखमणपुत्र)	६६
आसरा (आसराज)	६९,७०,७१	कनकप्रभसूरि (आचार्य)	८०
आसराज (उकुर, आशाराज)	६५,७२,७३,७४,७५	कपर्दी (यक्ष)	१६
आसल (श्रीमाल ज्ञा० श्र०)	६६	कयदुरा (श्रीमाल ज्ञा०)	६६
” (प्रा० ज्ञा० श्र०)	६६	कर्णदेव (चौलुक्यतृपति)	४,२४,३५,८२
” (श्रीमाल ज्ञा० श्र०)	६६	कर्णाट (नृपविशेष)	३,५
” (ओइस० ज्ञा० श्र०, कान्हणपुत्र)	६७	कलिङ्ग (नृपविशेष)	१
आसा (ठकुर मोडज्ञातीय झालहणमृत)	७४	कश्मीरावतार (स्थापत्यविशेष)	४४,४६,४८,
आसाराय (आशाराज)	९९		५१,५४,५६
आसारायविहार (जिनमन्दिर)	९९	कसमीर (देश)	१०१
आसू (श्रीमाल ज्ञा० श्र०, लखमणपुत्र)	६६	कान्तीश्वर (नृपविशेष)	३
आहड (चापोटक रुप)	२	कान्यकुब्जा (श्रीविशेष)	६
आहड (विद्वान्)	८२	कान्हड (ठकुर, ललितादेवी पिता)	४५,४६,४८,५१,
			५१,५६,७६-४

	पृष्ठ		पृष्ठ
कान्दहदेव (राजकुमार)	६७	खीम्बसीह (प्रा० ज्ञा० श्र०, देल्हणपुत्र)	६६
कामंदकि (नीतिशास्त्रकार)	६३	खेटा (साहु, वरहुडिया)	६८
कायस्थ (वंश) ४६,४७,५०,५३,५५,५७,७६-३,९६		गउरदेवि (लक्ष्मीहसुता)	७२
कालमेघ (क्षेत्रपाल)	२८	गङ्गा (नदी)	८४
कालमेघंतर (स्थानविशेष)	१००	गयंद (कुड)	१०२
कालिदास (कवि)	२०	गया (तीर्थ)	८४
कालहण (ओइसबालज्ञा० श्र०)	६७	गागा (प्राच्याटवशीय)	६३
कासहृद (ग्राम)	२७,६६	,, (प्रा० ज्ञा० ठकुर)	६५
कीर (नृपविशेष)	३,६	गाजण (श्रीमाल ज्ञा०)	६६
कीसरउली (ग्राम)	६६	गाणडलि (ग्राम)	७६-३
कुङ्कण (देश)	३६	गाणेश्वरदेव (शिवमंदिर)	७६-३
कुमरादिवि (कुमारदेवी आशाराजपत्नी)	१०७	गिरनार (पर्वत)	९९,१००,१०२
कुमरपाल (कुमारपाल, राजा)	१००	गुज्जर (देश)	१००
कुमरविहार (जिनमंदिर)	६८	गुणचंद्र (प्रा० ज्ञा० श्र०, धीरणपुत्र)	६६
कुमरनरोवर	९९	,, (श्रीमाल ज्ञा० श्र०)	६६
कुमरसिंह (सूत्रधार)	७६-३	गुणपाल (भाण्डागारिक)	७६-३
कुमार (कुमारशर्मा, विद्वान्)	८३,८४,८५,८७	गुरज्जर (देश)	९९,१००
कुमार देवी } (आशाराज पत्नी)	२५,३७	गुर्जर (देश)	७६-१ ८२ ८७
{ (ठकुराणी, आशाराज पत्नी)	४४,	गुर्जरेश्वर पुरोहित (सोमेश्वरदेव)	४९,५०
	४६,४८ ५१,५३,५५,५९	गुलेच्छा (गोत्रविशेष)	८१
	६५, ७२, ७३, ७४, ७५,	गूगलिया } (ज्ञातिविशेष)	१०४,१०६
	७६-२, ७६-३, ७६-४, ८९	गूगलिया } (ज्ञातिविशेष)	१०४,१०६
कुमारपालदेव (चौलुक्यवृपति)	५,६,२४,३६,	गूजर (देश)	१०४
	६१,४४	गूजरात (देश)	१०४
कुमारविहार (जिनमन्दिर)	२७ ६२	गूजर (देश)	२२,३७,६२,८८,९९,१०,१२,१४
कुमारसिंह (सूत्रधार)	४६,५२,१८	गूजरकणिका (गूजर राजधानी)	११
कुरु (नृपविशेष)	५६	[गूजर] रत्ना (मंडल)	६५
कुलधर (श्रीमाल ज्ञा०, कमङ्गरापुत्र)	६६	गूजरमंडल	४४,४६ ५१,५४ ५६
कृष्णराज (परमार वृपति)	६२	गूजरराजधानी (अणहिल पाटक)	२,३७
केली (आशाराज भगिनी)	७६-२	गोगस्थान (ग्राम)	८४
केलहण (सूत्रधार)	६९	गोसल (प्रा० ज्ञा० श्र०)	६६
कोङ्कण (देश)	६१	” (ओइस० ज्ञा० श्र०)	६७
कोला (प्राच्याट ज्ञा० श्र०)	६६	” (साहु, वरहुडिया)	६८
कोङ्कण (कुङ्कणपति वृप)	८४	गोङ्ग (नृपविशेष)	५
कोङ्कणपति (नृपविशेष)	६	चंडप (मंत्री)	८,२१,२५,२८,३७,३९,४०
कोङ्कणी (ज्ञाविशेष)	६	चंडप (मंत्री, ठकुर)	४४, ५१, ६४, ६५, ६९, ७०,
कोटिल्य (चाणक्य)	७६-४		७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६-१,
क्षेमराज (चापोत्कट वृप)	२		७६-२, ७६-४, ८६, ८८, ९७
खंभायति (नगरी)	१०६	चंडपस्त (चंडप)	४४, ४८, ५१, ५३ ५५
खांखण (प्रा० ज्ञा० श्र०, जेजापुत्र)	६६	चंडप्रसाद (मत्री, चंडपपुत्र)	८,२१,२५,२८,३७
खीम्बसीह (प्रा० ज्ञा० ठकुर)	६५		

पृष्ठ		पृष्ठ	
चंडप्रसाद (मंत्री, ठकुर)	५४,४६,४८,५१,५३, ५६,५९,६४,६५,६७ ७०,७१, ७२,७३,७४, ७५, ७६, ७८-१, ७८-३, ७८-४, ८६, ८८, ९७	जयसिंहदेव (चौलुक्यनृपति)	४,२४,३५
चंडेश (चंडप)	७५	जयसिंहसूरि (कवि, जेनाचार्य)	३८,३९
चंडेश्वर (सूत्रधार)	६५	जयादित्य (नृपविशेष)	७६-४
चंद्रावती (पुर, पुरी, नगरी)	७,६३,६५,६७, १०४, १०५	जसकर (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६७
चडावलि (चन्द्रावती नगरी)	१०८	जसहुय (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
चाणक्य (कौटिल्य)	६२,६३	जसदेव (ओइसवाल ज्ञा० श्रे०)	६७
चान्द्र कुल (गच्छ)	८०	जसरा (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०, आस्तुयपुत्र)	६६
चापलदेवी (मह, चंटपत्नी)	७४	जसवीर (प्राघाट ज्ञा० श्रे०)	६६
चापोत्कट (राजवंश)	२	जाङ्गल (देश)	५,६
चामुण्डराज (चापोत्कट नृप)	२	जाङ्गली (खोंचविशेष)	६
चामुण्डराज (चौलुक्यनृपति)	३,२४,३४,४२	जाला (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०, जिणदेवपुत्र)	६६
चारोप (आम)	६९	जाल्ह (वस्तुपाल-तेजपालभागिनी)	६०
चाहिणि (साहु जिणचद्रभार्या)	६९	जावडि (आगाडवंशीय)	१५
चुलुक्य (चौलुक्य, राजवंश)	२४,३६,५०,६०,६५, ७८-४,८३,८४,९३	जावालिपुर	६८,६९
चौड (नृपविशेष)	५	जिणचंद्र (साहु राहडपुत्र)	६०
चौलुक्य (राजवंश)	२,६ २५,३४,४४,४५,४६,४८, ५१,५३,५६,६०,६२,६४,६९, ८२,८३,९७	जिणदेव (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६
चौलुक्यपुर (अणहिलपुर)	२६	„ (प्रामा० ज्ञा० श्रे०, पाहुयपुत्र)	६७
जगदेव (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०, आसलपुत्र)	६३	जीदा (प्राघाट श्रीष्ठी)	६६
जगसीह (प्राघाट, ठकुर)	६५	जेगण (प्रा० ज्ञा० श्रे०, जसडुयपुत्र)	६६
„ (ओइस० ज्ञा० महा०, आवोधनपुत्र)	६६	जेजा (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
जगा (प्राघाट ज्ञा० श्रे०, जसवीरपुत्र)	६६	जेत्रदेवी (वीरधवलपत्नी)	१६
जङ्गल (नृपविशेष)	६	जैत्रसिंह (जयतसिंह, वस्तुपालपुत्र)	५५,५७,६२,६४, ७६-२,९८
जयतसिंह (वस्तुपालपुत्र)	४५,४६,४८,५१,५३, ५६,६२	„ (ध्रुव, कायस्थ)	४६,५३,५५,५७,७६-३
„ (कायस्थ)	९६	जोगा (मह, ओइसवाल ज्ञा० श्रे०, सल्खणपुत्र)	६६
जयतलदेवी (वीरधवलपत्नी)	२६	झालहणदेवी (वस्तुपाल-तेजपालभागिनी)	७२
„ (जयतसिंहभार्या)	७२,७४	झालहण (ठकुर, मोढजार्नीय)	७४
जयतसिंह (मह, वस्तुपालपुत्र)	४४,५५,७४,७६-३	झकउचाणि (आम)	१०७
„ (संभुपुरीय, ध्रुव)	४७,५०	झघाणि (आम)	१०७
जयतसीह (मह, वस्तुपालपुत्र)	६५,७०	तारंगक (पर्वत)	७५
जयदेव (साहु, वरहुडिया)	६८	तारणगढ	६८
जयश्री (चंडप्रसादपत्नी)	८,७६-१,८८	तिजपाल (तेजपाल)	१०५,१०६,१०७
जयसिंह (चौलुक्यनृपति)	१००	तिहुणदेवि (ठकुराणी, धरणिगभार्या)	६५

	पृष्ठ		पृष्ठ
तेजःपाल (मह) ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७ ६०, ६२, ६३, ६४, ६५, ६७, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७८-१, ७८ २, ७८ ३, ८६, ९०, ९६, ९७	६४	धणदेव (श्रीमाल ज्ञा० श्र०, सूमिगपुत्र)	६६
तेजपाल (महामात्य, मह) ६८, ६९, ७०, ७१ ७२ ९६, ९९, १०१, १०५, १०७	७२	धणदेवी (वस्तुपाल-तेजपालभगिनी)	६०
तेजलपुर (ग्राम)	९९	धनदेवी	६७
चिपुरुषप्रासाद (शिवमंदिर)	२	धणपाल (ओइस० ज्ञा० श्र०, महधरापुत्र)	६७
चिभुवनदेवी (ग्रामाट, धरणिगपत्नी)	६३	धणिया (प्रा० ज्ञा० श्र०, जसकरपुत्र)	६७
चिभुवनपाल (अश्वराजज्ञाना)	७६ २	धणेश्वर (साहु राहडमुत)	६०
थिरदेव (श्रीमाल ज्ञा० श्र०)	६६	धरणिग (प्राग्वाट, गागासुत)	६३
दक्षिण (नृपत्रिशेष)	६	„ (प्रा० ज्ञा०, ठकुर)	६५
दर्भवती (नगरी) १६, २६ ४४, ४६, ४८, ५४, ५१, ५६	६६	धर्कट (ज्ञाति)	६६
दाक्षिणात्या (ब्रीविशेष)	६	धर्मदासगणी (आचार्य)	७८
दामोदरहृद (स्थानविशेष)	१०	धर्माभ्युदय (महाकाव्य)	७९, ९६
दुर्लभ (चौलुक्यनृपति)	३, २४, ३५, ८२	धर्वल (चौलुक्यवंशीय)	६७
दूगसरण (प्रा० ज्ञा०)	६६	„ (मत्री)	१००
देउलवाडा (ग्राम)	६३, ६७	धर्वलक (नगर)	१५८०, ९९
देवा (श्रीमाल ज्ञा० श्र०)	६६	धर्वलक	२६
देवाल (मंत्री)	१०२	धर्वलकक	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
देलहण (प्रा० ज्ञा० श्र०)	६६, ६७	धांघल (सूत्रधार)	६५
„ (ओइस० ज्ञा० श्र०, सीललपुत्र)	६७	धांघा (ऊँस० ज्ञा० महा०)	६६
देलहा (ओइस० ज्ञा० श्र०)	६७	धांबलदिवि (धावलदेवी, सोमनरेन्द्रमाता)	१०५
देलहुय (प्रा० ज्ञा० श्र०, मांतुयपुत्र)	६६	धावलदेवि	"
देवकुंयार (ओइस० ज्ञा० श्र०)	६६	धारा (भाण्डागारिक)	७६-३
देवकुमार (साहु जयदेवपुत्र)	६७	„ (नगरी)	८३, ८४
देवचंद्र (साहु जिणचंद्रपुत्र)	६७	धारावर्ष (परमार नृपति)	६१, ६३
देवधर (श्रीमाल ज्ञा० श्र०, गुणचंद्रपुत्र)	६६	धीरण (प्रा० ज्ञा० श्र०)	६६
देवप्रभसूरि (हर्षपुरगच्छीय आचार्य)	२९	ध्वभट (परमारवंशीय नृपति)	६१
देवबोध (विद्वान्)	७७	धूमराज (परमारवंशीय नृपति)	६१, ६५
देवलवाड (ग्राम)	१०६, १०७	नंदीश्वर } (स्थापत्यविशेष)	२८, ४७
देवानन्दसूरि (आचार्य, हर्षपुरगच्छीय)	२९, ८०	नंदीसर } „	६८
देसल (प्रा० ज्ञा० श्र०)	६७	नगर (ब्रह्मनगर, स्थानविशेष)	८१
देसीनाममाला (ग्रंथ)	९६	नगरवर (महास्थान)	७६-४
धंधुक (परमारवंशीय नृपति)	६१	नगराख्य „	२६
धंधूय	१०७	नयचन्द्रसूरि (कृष्णर्षिगच्छीय)	६७
धुंधुय „	१०७	नरचन्द्रसूरि (हर्षपुरगच्छीय)	२९
धडलिग (धर्कट ज्ञा०)	६६	„ (मलधारी)	४७, ५५
धउली (ग्राम)	६६	नरनारायणनन्द (काव्य)	९०
धणचंद्र (ग्रामाट ज्ञा० श्र०)	६६	नरेन्द्रसूरि } मलधारी)	५३
		नरेन्द्रप्रभसूरि } मलधारी)	२४
		नागदेव (ओइस० ज्ञा० श्र०)	६७
		नागपुर	६८

पृष्ठ	पृष्ठ
नागन्दगच्छ १३,२९,४७,४८,४८,५१,५४ ५६ ५७, ६४,६५ ६९,७२,७५, ७६-३, ७८ ९०	पाहुप (प्रा० ज्ञा० श्रे०) ६७
नायलगच्छ (नागन्दगच्छ) ९९	प्राग्वाट (कुल, वश) ८,१५,२१,२५,३७,३८,४४,४५, ४६, ४८ ५१, ५३,५४,५५,५६, ५९, ६३, ६५, ६६ ६७,६९ ७०,
निरिन्द्रियाम २६	७१, ७२, ७३, ७४ ७६, ७६-१, ७६-३, ७६-४, ८६ ८८, ९७
नृपविकम संवत् ६९,७० ७१,७३,७६-१	पुङ्डरीक (पर्वत, शत्रुंजय) ६७
नेमड (साहु, वरहुडिया) ६८	पुंनसीह) ७०
नेहा (धर्कट श्रेष्ठ) ६६	पुण्यसिंह) ५७,७६-२
पजूष्म (प्रयुम्नशिखर) १०२	पूनसीह (मल्लदेवमृत) ७१,७६
पञ्चासर (जिनमदिर) २,१५,२६	पूर्णसिंह) ६३
पत्तन (अणहिलपुर) ६९,७४,७५,७६,७६-४	पुरुषोन्नम (सत्रधार) ४७ ५०,५३
पश्चला (वस्तुपाल-तेजपालभगिनी) ७३	पूनचंद्र (प्राग्वाट ज्ञा० श्रे०, पासचंदपुत्र) ६६
पश्चसिंह (प्रा० ज्ञा० श्रे०, वालापुत्र) ६७	पूनड (प्राग्वाट ज्ञा० महाजनी, आमिगपुत्र) ६६
परमलदेवी (वस्तुपाल तेलपालभगिनी) ६०	पूनदेव (प्रा० ज्ञा० श्रे०, वोसरिपुत्र) ६७
परमार (राजवंश) ६१	पूनदेवी (महं, वस्तुपाल-तेजपालमातुलभार्या) ७२
प्रतापदेवी (मालदेवपत्नी) ७४	पूनपाल (महं, वस्तुपाल-तेजपालमातुल) ७२
प्रतापमल (राजपुरुष) ८४	पूना (प्राग्वाट ज्ञा०) ६६
प्रतापसिंह (जयतसिंहपुत्र, वस्तुपालपौत्र) २७,२८,९८	,, (श्रीमाल ज्ञा०) ६६
प्रतीहार (राजवंश) ७७	,, (प्रा० ज्ञा० श्रे० वोहङ्गिपुत्र) ६६
प्रयुम्नशिखर (रूबतगिरि शिखरविशेष) २८,४४,४८, ४८,५१,५४,५६	,, (श्रेष्ठ) ७६-२
प्रघुमनसूरी (आचार्य) ८०	पूनिग (ओइस० ज्ञा० श्रे०) ६७
प्रमार (राजवंश) ६७,१०५	पूनुय (प्रा० ज्ञा०, पासिलपुत्र) ६६
प्रयाग (तीर्थस्थान) ८१,८४	पृथ्वीसिंह (पूर्णसिंहपुत्र) ७३-२
प्रह्लादन (परमार नृपति) ६२	पेथड „ ६३,७१,७६
„ (पाण्डत, कुमारशर्मगुरु) ८६	पोख्याड (वश) ९९
प्रह्लादनपुर (पालणपुर) ८८	फीलिणी (ग्राम) ६६
पाण्डय (नृपविशेष) ८८	बकुलस्वामी (सत्रधार) ४७,५०,५३
पातू (मालदेवभार्या) ७०	बदरकुप (ग्राम) २७
पादलिम्ननगरी ६६	बर्वर (दंत्य) ५
पाल्हण (प्रा० ज्ञा० श्रे०, जीदापुत्र) ६६	बलदेवि (तेजपालपुत्री) ७१
, (डाएस० ज्ञा० श्रे०, सोहिपुत्र) „ ६१	ब(व)ल्लाल (मालवनृपति) ६१
, (प्रा० ज्ञा० महा०) „ ६६	ब्रह्मदेव (प्राग्वाट ज्ञा०) ६६
, (कवि) १०८	ब्रह्मसंति (ब्रह्मशान्ति यक्ष) १०८
पाल्हविहार (जिनमदिर) ६८	ब्रह्मसरणु (प्रा० ज्ञा० श्रे०, देसलपुत्र) ६७
पाल्हा (प्रा० ज्ञा० श्रे०, धीरणपुत्र) ६६	ब्रह्माण (ग्राम) ६६
पासचंद्र (प्राग्वाट ज्ञा० श्रे०) ६६	बाण (कवि) २०
पासदेव (श्रीमाल ज्ञा० महा०, वीसलपुत्र) ६६	बोहडि (प्रा० ज्ञा० श्रे०, आनुयपुत्र) ६७
पासवीर (प्रा० ज्ञा० श्रे०, साजणपुत्र) ६६	भद्रबाहु (आचार्य) ७१
पासिल (प्रा० ज्ञा०) ६६	भाडा (ग्राम) ६७
पासु (धर्कट श्रेष्ठ) ६६	भाभा (तेजपालमातुलसुत) ७३

	पृष्ठ		पृष्ठ
भालि (प्राम)	६७	मालवपति (नृपविशेष)	२४
भावड (साहु)	१०१	मालवभूप (नृपविशेष)	३
भास (कवि)	५२	मालधी (स्त्रीविशेष)	६
भीम (चौलुक्यनृपति, प्रथम)	३,२४,३५,८२	मालवेन्द्र (नृपविशेष)	३
“ (“ , द्वितीय)	६,२४,३६,३७,६५, ८५,९०	“ (सुभट नृप)	१६
भीम (पलीपति)	६	मुंज (नृपति, धाराधीश)	४५
भीमसिंह (सुराष्ट्रापतिनृपति)	१३	“ (विद्वान्)	८२,८३,८५
भीमेश्वर (शिवमन्दिर)	२७	मुङ्डस्थल (प्राम, महानीर्थ)	६६
भुवनपाल (नृपविशेष)	२७	मुनीन्दुप्रभु (मुनिचन्द्रसूरि, हर्षपुरगच्छीय)	२९
भृतेशवेङ्म (शिवमन्दिर)	२७	मुमाकीय (ठक्कर ?)	७५
भूभट (चापोत्कटनृप)	२	मुरल (नृपविशेष)	५
भृगुकच्छ (भगुनगर, भगुपुर)	२७,९६	मूढेर (प्राम)	१०८
भृगुनगर (भगुकच्छ, भगुपुर)	२६	मूलराज (चौलुक्यनृपति, प्रथम)	२,२४,३४,८२
भृगुपुर (भगुकच्छ, भगुनगर)	३८,४४,४६,४८, ५१,५४,५६	“ (चौलुक्यनृपति, द्वितीय)	६,२४,३६,८४
भोज (नृपति, धाराधीश)	३०,४५	मेदपाट (नृपविशेष)	५
भोला (प्रां ज्ञां श्रों, साजनपुत्र)	६६	“ (देश)	७
[म]डाहड (प्राम)	८७	मोढ (ज्ञाति)	७४
मयधर (श्रेष्ठी)	७६-३	यशोधवल (परमारवंशीय नृपति)	६१
मरु (नृपविशेष)	५	यशोराज (नृपविशेष)	२७
मलधारि (गच्छ)	४७,५३,५५	योगराज (चापोत्कट नृप)	२
मल्हदेव (आशाराजपुत्र)	१०,१६,२१,२५,२६,२७, २८,३७,५७,५९,६०,६३,६४	रतन (संघाधिपति)	१०१
“ (मह. आशाराजपुत्र)	६५,७६-२,८६,८९,९७	रत्नसिंह (प्राग्वाट, ठक्कर)	६५
महधरा (ओइस० ज्ञां श्रों)	६७	रत्नादित्य (चापोत्कट नृप)	२
महाक (सं० पेथडसुत)	७६	रत्नादेवी (जयादित्यदेवपत्नी)	७६-४
महादेव (विद्वान्, सोमेश्वरपुरोहित भ्राता)	८५	रयणादेवि (लृणसीहभाया०)	७१
महेन्द्रप्रभसूरि (नारेन्द्रगच्छीय)	२९	राजदेव (श्रेष्ठी)	७६-३
महेन्द्रप्रभु	७६-३,७१	राजपाल (तेजपालमातुलमुत)	७३
महेन्द्रसूरि	१३,६४,६५	राजुय (प्रां ज्ञां श्रों)	६६
“ (भट्टारक)	४५,४६,४८,५१,५४,५६	राठी (ज्ञातिविशेष)	१०४,१०६
माऊ } (वस्तुपाल-तेजपालभगिनी)	७२,६०	राणभट्टारक	२६
माऊ (कवि)	२०	राणिग (प्रां ज्ञां, महं)	६५
माणिमध्र (आम्बाट श्रेष्ठी)	६६	राणु (ठकुराणी, ललितादेवी माता)	८५,८६,८८, ५१,५४,५६,७६-८४
मारव (नृपविशेष)	३८	रामचंद्र (प्राग्वाट ज्ञां श्रों, घणचटपुत्र)	६६
मारहेव (मह)	४४,४६,४८,५१,५३,५५,६९,७०, ७१,७२,७३,७४,७५,७६,७७,७८,७९-१,७६-३	रामदेव (परमारवंशीय नृपति)	६१
मारहेव (देश)	६१,८३,८४,८५,१०१	रात्ता (प्राग्वाट ज्ञां, ब्रह्मदेवपुत्र)	६६
मारहेव (नृपविशेष)	३५	राष्ट्रकृष्ण (राजवंश)	८४
मारहेवनृप (नृपतिविशेष)		रासल (प्राग्वाट श्रेष्ठी)	६६
		राहड (साहु, नेमझपुत्र)	८८,९१
		“ (साहु)	९१

	पृष्ठ		पृष्ठ
रूपादेवि (जयंतसिंहभार्या)	७०	लूणवसहिका (जिनमंदिर)	७६-१
(लावण्यसिंहभार्या)	७५	लूणसिंह (लावण्यसिंह, तेजपालपुत्र)	८३,८५
रेखंत (रेखत पर्वत)	९९,१०२	लूणसीह (")	७१,७२,७६,१,९६
रेखंद (")	१०३	लूणसिंहवसहिका (जिनमंदिर)	८५
रैवत (पर्वत)	१५,७६-२,७७	लूणसीहवसहिका (")	८७,७२,७२
रैवतक (")	२८,८७,९०	लूणसीह (मह, लीलामृत)	८६
रैवताद्रि (")	६३	लूणादेवी (लूणिगपत्नी)	७४
रोहडी (ग्राम)	२७	लूणिग (लावण्यांग, आशाराजपुत्र)	२१,२५,५९,
लक्ष्मी (कुमारशर्म-पत्नी)	८६		८४,७५,७६,७६-३,८९
लक्ष्मीधर	२७	लूणिगदेव (")	७४
लखमण (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	८६	घघेला (रजवश)	१०५
(ग्रा० ज्ञा० श्रे०)	८६	घङ्ग (नृपविशेष)	५
ललितसर (सरोवर)	२७	घटमावित्रीमदन (देवतामन्दिर)	२७
ललितादेवी (वस्तुपालपत्नी)	२७	घनराज (चापाळ्कट)	२,२६
" (मह, वस्तुपालपत्नी)	४४,४५,४६,४८	घयजुका (वस्तुपाल-तंजपालभगिनी)	६०,७३
	५१,५३,५४,५५,५६,५८,६२,	घरदेव (उग्मवाल ज्ञा० महा०, सायापुत्र)	८६
	६९,७४,७६-२,७६-४,९८	घरहुडिया (गंगत्रिविशेष)	८८
ललूशर्मा (विद्वान्)	८२	घलभा (नगरी)	२७
लवणप्रसाद (चौलुक्यवशीय)	६,७,२५,६०	घलालदेवि (पूर्णीहसुता)	७१
" (महाराजाधिराज)	४४,४५,४६,४८,	घलभराज (चौलुक्यनृपति)	३,२४,३५
	५१,५३,५६	घशिष्ठ (क्रषि)	८१
" (महामण्डलेश्वर, राणक)	६५	घशिष्ठकुङ्ड (अर्बुदस्थित कुङ्ड)	६१
लवणसिंह (लावण्यसिंह, लूणसिंह, तेजपालपुत्र)	४९	घसिष्ठ (स्थानविशेष)	६७
लघमादेवि (लूणसीहभार्या)	७१	" (क्रषि)	८२
लाखण (ओडमवाल ज्ञा० श्रे०, वोहिशपुत्र)	८७	घसिष्ठ(षु)कुङ्ड (अर्बुदस्थित कुङ्ड)	६५
लाट (नृपविशेष)	५	घसन्तपाल (वस्तुपाल)	९०
लाटापली (ग्राम)	६८,६९	घस्तपाल (वस्तुपाल)	१०१,१०५
लावण्यप्रसाद (लवणप्रसाद, चौलुक्यवशीय)	३६	घस्तुपाल (मत्री, आशाराजपुत्र)	१०,१२,१४,१५,
लावण्यसिंह (लूणसिंह, तेजपालपुत्र)	५७,६३,६४,		१६,१७,१८,१९,२०,२१,
	७१,७६,२		२२,२३,२५,२६,२८,२९,
लावण्यांग (लूणिग, आशाराजपुत्र)	७,५७		३०, ३१, ३२, ३३, ३७,
लापाराम (स्थानविशेष)	१००		३९, ४०, ४१, ४२, ४३
लाहड (साहु राहडसुत)	६९	" (महामात्य)	४४,४५,४६,४७,४८,४९,५०,
लीला (ग्राम्बाटज्ञातीय मह)	६५		५१,५२,५३,५४,५५,५६,५७,
लीलादेवी (मालदेवभार्या)	७४		५८,६०,६२,६३,६४
लीलुका "	६३	" (मह)	६५, ६८, ६९, ७२,७३,७४,७५,७६,
लीलू "	७०,७६-२		७६-१, ७६-२,७६ ३,७६-४,७७,७८,
लुणिग (ठक्कर, लावण्यांग)	४४,४६,४८,५१,५३,५५		८६ ८७ ९०, ९१ ९२, ९३, ९४,
लुणसा (लवणप्रसाद, चौलुक्य)	१०५		९६, ९७, ९९, १००, १०५, १०७
लुणप्रसाय (लवणप्रसाद, चौलुक्य)	१०४		
लुणप्रसाद (लवणप्रसाद, चौलुक्य)	९७	वस्तुपालसर (सरोवर)	२७

	पृष्ठ		पृष्ठ
बस्त्रापथ (स्थानविशेष)	१३,२८	बीजापुर	१८
बहुदा (ओइसवाल ज्ञा० श्रे० गोसलपुत्र)	६७	बीर (वीरध्वंवलराजा)	५०
बहुदा (ओइसवाल ज्ञा० श्रे०, सीत्युपुत्र)	६७	बीरदेव (प्रामाट ज्ञा० महा०)	६६
बहुदेव (धर्कट श्रेष्ठी)	६६	बीरदेव (साहु, जयदेवपुत्र)	६८
बालभट (महामंत्री)	१५	बीरुय (श्रीमाल ज्ञा० श्रे० थिरदेवपुत्र)	६६
बाघा (ओइसवाल ज्ञा० श्रे०, पूनिगपुत्र)	६७	बीरुय (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६७
बाजड (कायस्थ)	४६,४७,५०,५३,५५,५७	बीसल (श्रीमाल ज्ञा० महा०)	६६
बापल (श्रीमाल ज्ञा०)	६६	„ (श्रीमाल ज्ञा० श्रे० बेरापुत्र)	६६
बामलदेवी (मह, चंडप्रसादपत्नी)	७४	बीसलदेव (नृपति)	९६
बालण (ऊएसवाल ज्ञा० श्रे०, सलखणपुत्र)	६६	बेजलदेवी (वस्तुपालपत्नी)	७४
बाला (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६७	बेला (व्यवहारी)	७६-८
बालिग (कायस्थ)	४७,५०	बैद्यनाथ (शिवमंदिर)	१६,२६,२७
बालीनाथ (यक्षविशेष)	२६	बैरिसिंह (चापोत्कटनृप)	२
बाहड (सुत्रभार)	४६,५५,५८	बैरिसिंह	२७
„ (ओइसवाल ज्ञा० श्रे०, जसदेवपुत्र)	६७	बोडाख्य (वालीनाथयक्ष)	२६
विक्रम संघर्त	४३,४६,४८,५३, ५५, ५८,६५,७१	बोसरि (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६७
विक्रमनृप संघर्त	७२	बोहडि (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
विक्रमार्क संघर्त	५१	बोहिथ (ओइसवाल ज्ञा० श्रे०)	६७
विजय (सोमेश्वरपुरोहित भ्राता)	८५	ब्यास (कवि)	२०,५२
विजयसिणसूरि (विजयसेनसूरि)	१०७	ब्याघरोलि (ग्राम)	२६
विजयसेण (विजयसेनसूरि)	९९,१०३	शकुनीविहार (जिनमन्दिर)	३८
विजयसेनसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	१४,१६,२९,४५, ४७,४९,५१,५४,५६,६४,६५,६९, ७२, ७४, ७५,७६-८,७८,७९,९०	शङ्ख (संग्रामसिंह नृपति)	१२
विन्ध्यवर्मा (धाराधीश नृप)	८४	शञ्जुजय (पर्वत)	१५,२१,२७,३८,७७,९२
विमल (मन्त्री)	१०४,१०५	„ (पर्वत, महातीर्थ)	४४,४७,४८,५१,५३, ५४,५६,६८
विमल (शत्रुघ्य पर्वत)	९०	„ (पर्वत, तीर्थ)	७६
विमलउ (मन्त्री)	१०४	„ (धवलकस्थित जिनमंदिर)	२६
विमलमंदिर (जिनमंदिर)	१०६	शञ्जुंजयशैल	९०,९१
विमलाक्ष्मी (शत्रुघ्यपर्वत)	४६	शञ्जुंजयमहातीर्थवितार (स्थापत्यविशेष)	४४,४६, ४८,५१,५४,५६
विमलाद्रि (शत्रुघ्यपर्वत)	१५,४५,५२	शञ्जुंजयाद्रि	९८
विरध्वल (वीरध्वल)	१०५	शञ्जुंजयावतार (स्थापत्यविशेष)	५८
वीरध्वल (चौलालखनेश्वर, लक्ष्मण)	७, ८, १०, १३, १६,१८,२५,२६,२८,३८,३९, ३७,३८,६०,६१,६४,७४,७५,७९	शातिसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	१३, २९, ४५, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ६४,६५,७६-८,७९
„ (महाराज)	४४,४६,४७,४८,४९,५१,५४,५६	शाम्बशिखर (रैवतगिरिशिखरविशेष)	२८,४४,४६, ४८,५१,५४,५६
„ (राणक, महामण्डेश्वर)	६५	शालिग (प्रामाटज्ञातीय, ढकुर)	६५
शीकल (व्यवहारी)	७६-८	शालिगमिनालम	२७
शीका (श्रेष्ठी)	७६-८	श्वर (सर, चंडप्रसाद ज्येष्ठपुत्र)	८८

	पृष्ठ		पृष्ठ
शैलादित्य (रूप)	१५	साजण (साधु)	६८
श्रीधांघलेश्वरदेवीयकोटडी (स्थानविशेष)	६७	, (दंडाधिप)	१००, १०१
श्रीपाल (प्राच्वाटश्रेष्ठी, सावडपुत्र)	६६	साजन (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
श्रीमाल (ज्ञाति)	६६	साटा (ऊएसवाल ज्ञा० महा०)	६६
श्रीमातामहबुग्राम	६७	सादा (धक्कनश्रेष्ठी, पासपुत्र)	६६
षं(खं)गार (सोरठपति)	१००	, (प्रा० ज्ञा० श्रे०, आसलपुत्र)	६६
संग्रामसिंह (शख, सिन्धुगज)	१२, ४१	सामंतसिंह (रूप)	६२
संतोषा (ठुराजी, मोढ ज्ञा० ठकुर आसापत्नी)	७३, ७४	सालग्राम	६७
संमेतमहातीर्थ (महातीर्थ)	४८	सालहा (धक्कनश्रेष्ठी, नेहापुत्र)	६६
संमेतमहातीर्थवितारप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	४५, ५४	, (प्रा० ज्ञा०, पूनापुत्र)	६६
संमेतमहातीर्थवितारप्रधानप्रासाद		, (श्रीमाल ज्ञा०, पूनापुत्र)	६६
(स्थापत्यविशेष)	४७	सावड (प्राच्वाटज्ञानीय, ठकुर)	६६
संमेतशिखरप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	५८	सावदेव (प्राच्वाटज्ञानीय, राजुयपुत्र)	६६
संमेतावतार (स्थापत्यविशेष)	५१	साहणीय (प्रा० ज्ञा०, दूगसरणपुत्र)	६६
संमेतावतारमहातीर्थप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	५६	साहिलवाडा (ग्राम)	६७
संमेय (संमेतशिखर पर्वत)	१०१, १०२	सिहण (यदुवंशीयनृप)	३८
सत्यपुर (नगर)	१५, २७, ६८	सिहरगाज (संघपति, सरवणपुत्र)	६८
सत्यपुरावतार (स्थापत्यविशेष)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	सिहुलग्राम	२६
सदमल (मालदेवसुता)	७०	सिङ्ग (सिङ्गराज) {	७६
सपादलक्ष (देश)	८३	सिङ्गनृप (,) }	८३
सरवण (संघपति)	६८	सिङ्गराज (चौलुक्यनृपति)	९, ३७, ८९
सर्वदेव (विद्वान्)	८३, ८४	सिङ्गर्णि (आचार्य)	७८
सलखण (ऊँस० ज्ञा० श्रे०)	६६	सिङ्गाधिप (सिङ्गराज)	४
(ओँस० ज्ञा० श्रे०)	६६	सिङ्गेश्वर (सिङ्गराज)	३७
सलखणदेवी (मुहृद्दसीहपत्नी)	७५	सिङ्गेशिता (सिङ्गराज)	७२
सहजल (मालदेवसुता)	७०	सिन्धु (देश)	८३
सहजिग (कायस्थ)	४७, ५०	सिन्धुराज (शख, सिंग्रामसिंह)	१२
सहदेव (साहु, वरहुदिया)	६८	, (कन्छपति)	३४
सहसा (संघपति)	६८	सिरिमाल (श्रीमालबुल)	१००
सहसराम (स्थानविशेष)	१०२	सिहरग्राम	६७
सानुय (प्राच्वाट ज्ञा० श्रे०)	६६	सीता (सोमपत्नी)	९, ७६, ७६-२, ८९
सांबकुमार (शाम्बविश्वनार)	१०२	सीतादेवी (मह, सोमपत्नी)	७४
साइदे (सं० गहसापत्नी)	६८	सीलण (ओँसवाल ज्ञा० श्रे०)	६७
साउदेवी (वस्तुपाल-तेजपाल भगिनी) {	७२	सुकृतकीर्तिकलोलिनी (कृतिविशेष)	१६
साऊ (,) }	६०	सुनथव (सं० सहसापुत्री)	६८
सागर (प्राच्वाटज्ञानीय, ठकुर)	६५	सुभट (कवि)	८५
सागर (ऊएसवाल ज्ञा० महा० घांधापुत्र)	६६	सुभटबर्मा (रूप)	२६
साजण (प्राच्वाट ज्ञा० श्रे०)	६६	सुमसीह (सोमसिंह)	१०७
		सुरठ (देश)	१००
		सुराष्ट्रापति (भीर्मसिंहनृपति)	१३

	पृष्ठ		पृष्ठ
सुरिताण (सुत्तान)	१०४	सोलंकि (राजवंश)	१०४
सुवधरेह (नदी)	९९	सोल (सोलशर्मा)	८२
सुहडसीह	७५	सोलशर्मा (विद्वान्)	८१
सुहडाईवी (महं तेजपाल द्वितीयभार्या)	७३,७४	सोहगा (वस्तुपाल-तेजपाल-भगिनी)	६०,७३
,, (सुहडसीह पत्नी)	७५	सोहि (अएसवाल ज्ञा० श्रे०)	६६
सूमिग (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६	सोहिय (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
सूर (मंत्री, चण्डप्रसाद ज्येष्ठपुत्र)	९७६ १	सौवर्णगिरि (पर्वत)	६९
सूहवदेवि (जयतसिंहभार्या)	७०,९८	स्तम्भतीर्थ (पुर. नगर, स्थान)	१२,२७ २८,४४,
सेत्तुज (शत्रुंजय)	१०५		४६,५१,५३,५४,५५,
सोखु (मह वस्तुपाल द्वितीयभार्या)	५८		५६, ५७, ७६-३, ९६
सोलुका (, ,)	४६,४८,५०, ५१,५८-६९	स्तम्भनक (प्राम)	१६,२६
सोभनदिति (शोभनदेव, सूत्रधार)	१०६	स्तम्भनकतीर्थ (स्तम्भतीर्थ)	४८
सोभनदेउ (,, ,)	१०६	स्तम्भनकपुर (प्राम)	४४,४६,४८,५१,५४,५६
सोभा (भाण्डागारिक)	७६-३	स्तम्भनपुर (स्थानविशेष)	१५
सोम (मंत्री चण्डप्रसाद-द्वितीयपुत्र)	९,२१,२५ २८,३७	स्तम्भपुरीय ध्रुव (जयतसिंह)	४७,५०
, (मंत्री, ठकुर)	४४,४६,४८-५१,५३, ५४,५५,५६,५९,६४	ज्ञाजण (प्रा० ज्ञा० श्रे०, वीर्यपुत्र)	६७
, (महं)	६५,६९,७०,७१,७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६-१, ७६-२, ७६-३, ७६-४, ८६, ८८	हंडाउद्र (प्राम)	६६
सोम (धक्केटब्रेष्टी बहुदेवपुत्र)	६६	हंडावडा (प्राम)	१०७
सोम (नरेंद्र)	१०४,१०५	हथीयावापी	६८
सोमदेव (सूत्रधार)	४७,५०,५३	हम्मीर (नृपविशेष)	५,६
सोमशर्मा (विद्वान्)	८२	हरिभद्रसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	१४,२९,३७,६४, ६५,७६-२,७६-३, ७९,८९,९०
सोमशर्मा (सोमेश्वरदेव, पुरोहित)	४५,९०	„ (भद्रारक)	४५,४७,४८,५१,५४,५६
सोमसिंह (नृपति, धरावर्षसुत)	६२	हरिमण्डप (स्थापत्यविशेष)	४७
सोमसिंहदेव (महामण्डलेश्वर)	६५,६७	हरिया (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६
सोमेश्वरदेव (ठकुर, गूर्जेश्वर पुरोहित)	४५,५०, ६५,८५	हरिहर (कवि)	८५-९०
सोरठ (देश)	९९,१००	हर्षपुरीयगच्छ	२९



वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

फाल नं० २८३

५०४

लेखक श्री पुष्ट्यावजय

शीर्षक सेस्कृत कोटि काही दृष्टिन्यादि

लग्न वह प्राप्ति प्राप्ति साग्रह ४२३६

क्रम संख्या